आधुनिक पात्रावधारणा एवं शिवानी के उपन्यासों के पुरुष पात्र एक आलोचनात्मक अध्ययन

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
पी-एच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध
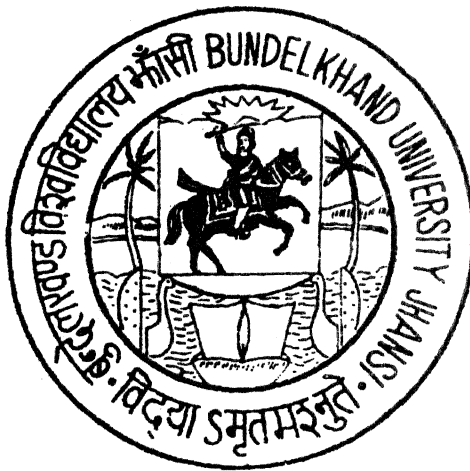
शोध निर्देशक
डॉ0 वेदप्रकाश द्विवेदी
रीडर/अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अतर्रा-बाँदा

शोधकर्ता
राजेश कुमार सिंह
एम0ए0, बी0एड0

2002

शोध केन्द्र
अतर्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)
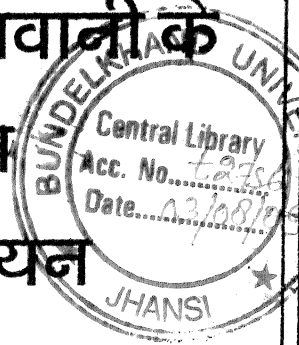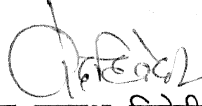
प्रमाणित किया जाता है कि श्री राजेश कुमार सिंह ने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की शोध समिति द्वारा स्वीकृति विषय " आधुनिक पात्रावधारणा एवं शिवानी के उपन्यासों के पुरुष पात्र एक आलोचनात्मक अध्ययन " पर मेरे निर्देशन में अथक परिश्रम, तन्मयता, लगन तथा अध्यवसाय से पूर्ण किया है।

इस शोध प्रबन्ध की विषय सामग्री किसी अन्य उपाय हेतु किसी भी विश्वविद्यालय में प्रयोग नहीं की गयी है।

यह शोध प्रबन्ध बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शोध अध्यादेश के प्रत्येक उपबन्धों की पूर्ति करता है। परिनियमावली में विहित प्रावधान के अनुसार इन्होनें अपनी उपस्थिति पूर्ण की है। समस्त दृष्टिकोणों से उपयुक्तता के आधार पर मैं मूल्यांकन हेतु संस्तुति करता हूँ।

(डॉ0 वेद प्रकाश द्विवेदी)
रीडर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा
बाँदा

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

किशोरावस्था में 'सती' 'लाल हवेली' और 'तर्पण' कहानियाँ पढ़कर शिवानी की सौन्दर्य भावना और अभिव्यञ्जना शैली का जो प्रच्छन्न प्रभाव मेरे किशोर मन पर पड़ा था। उसका ही प्रतिफल प्रस्तुत शोध कार्य है। एम0ए0 करते करते शिवानी के प्रायः सभी उपन्यास पढ़कर वैदग्ध भंगी भणित व वक्र व्यापार का ऐसा कथन मुझे साहित्य समझनें की दृष्टि दी है। जब शोध कार्य करनें की चर्चा उठी तो मेरे पूज्य गरूदेव निर्देशक डॉ0 वेद प्रकाश द्विवेदी रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग अतर्रा कालेज अतर्रा नें शिवानी पर कार्य करनें का परामर्श दिया।

श्रीमती गौरा पँत 'शिवानी' ऐसी महिला लेखिका है जो अपनी भाषा, सौन्दर्य, दृष्टि से कभी समझौता नहीं किया, इसीलिए उनके उपन्यास बिकते भी हैं और खूब पढ़े भी जाते हैं कुछ विश्वविद्यालयों में उनके महिला पात्रों पर कहीं काम प्रेम और सौन्दर्य की दृष्टि से शोध कार्य हुआ है। अतः शिवानी के पुरूष पात्रों को केन्द्र में रखकर मैंनें प्रस्तुत शीर्षक का चयन किया।

प्राक्तन भारतीय एवं पश्चात्य आचार्यो में नायक और प्रतिनायक की जो विशिष्ट की दृष्टि रही है, आधुनिक भौतिकतावादी युग में यह दृष्टि युग सापेक्ष रूप में परिवर्तित परिवर्धित हुई है। शिवानी के पुरूष पात्रों का अध्ययन प्रस्तुत करनें के लिए इस शोध प्रबन्ध को सात अध्यायों में बाँटा गया है।

प्रथम अध्याय पात्रावधारणा के स्वरूप से सम्बन्धित है। प्रारम्भ में पात्र-चरित्र व्यक्तित्व की व्युत्पत्ति परक अर्थ देकर उसके स्वरूप की अवधारणा प्रस्तुत की गयी है। दर्शन के क्षेत्र में प्रकृति मात्राएं क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ की चर्चा कर चरित्र और उसके मूल कारक उपादान मन को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है इसी परिप्रेक्ष्य में आधुनिक मनोवेत्ताओं द्वारा प्रस्तुत चरित्र एवं व्यक्तित्व की आधुनिक अवधारणा प्रस्तुत कर चरित्र व्यक्तित्व के कारक तत्वों प्रवृत्ति के अनुसार इनका वर्गीकरण और साहित्य में तन्निविष्ट पात्र के चरित्र एवं व्यक्तित्व निरूपण हेतु त्रिआयामी सिद्धान्तों की विस्तृत चर्चा की गयी है। भारतीय एवं पाश्चात्य आलोचकों द्वारा पात्र वर्गीकरण के स्वरूप में नायक, नायिका प्रतिनायक, प्रतिनायिका, नायक सहायक जैसें श्रेणियों का उल्लेख कर धीरोदात्त धीरोद्धत

धीरललित धीर प्रशान्त एवं साहित्य में वर्णित स्वकीया, परकीया, मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा इत्यादि नायिकाओं की चर्चा उनके अलंकार शोभा, दीप्ति, कान्ति आदि, का संक्षेप में उल्लेख कर पात्र अवतरण की प्रणालियों के रूप में अन्तरंग बहिरंग प्रणाली, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अन्तर्मुखी बहिर्मुखी व्यक्तित्व निरूपण की शैलियाँ और उनके मूल में इड, इगो, सुपर इगो के द्वन्द मन की संवेगात्मक स्थिति अन्तर्द्वन्द तथा पात्रों के नाम आंगिक सौन्दर्य, चेष्टाएं, वेश-भूषा, गुण-अवगुणों के प्रकाशक घटनाएं क्रिया व्यापार परिस्थितियों का उल्लेख किया गया है।

द्वितीय अध्याय में शिवानी के उपन्यास और पुरूष पात्रों का परिचय दिया गया है। प्रारम्भ के उपन्यास उद्भव विकास की संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत कर इस दिशा में महिला लेखिकाओं के योगदान की चर्चा की गई है। 'शिवानी' उपन्यासों की संक्षिप्त कथा वस्तु प्रस्तुत कर,यह दिखानें का प्रयास किया गया है कि उनके पात्रों की कथा भूमि, कर्म क्षेत्र, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक परिस्थितियाँ कैसी रहीं हैं। शिवानी नें लघु और बड़े दोनों प्रकार के उपन्यास लिखे हैं। इन उपन्यासों में प्रयुक्त पुरूष पात्रों का उल्लेख कर भौगोलिक दृष्टि से क्षेत्र, धर्म, अवस्था, प्रकृति, आर्थिक प्रमुख और गौण इत्यादि रूपों में वर्गीकृत किया गया है। देखा गया है कि काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लेकर सुदूरवर्ती बंगाल क्षेत्र के पात्र इन उपन्यासों में प्रयुक्त हैं इसी प्रकार शिशु, बाल, किशोर, युवा, पौढ़, वृद्ध हिन्दू, मुसलमान, इसाई, सम्पन्न, विपन्न, नेता, आई.ए.एस. पदाधिकारी, पुलिस अफसर, सचिव, अध्यापक, व्यवसायी, नौकर, ड्राइवर, माली, राजा, रंक, साधारण, आसाधारण, अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, सत्, असत् पात्र इन उपन्यासों में प्रयुक्त है।

तृतीय अध्याय में शिवानी प्रणीत उपन्यासों के प्रधान पुरूष पात्रों का चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया गया है। प्रधान या प्रमुख पुरूष पात्रों का तात्पर्य यह रहा है कि वे पात्र जो पूरे उपन्यास में प्रभावी हैं। जिनका वर्णन अधिक पृष्ठों में हुआ है या जो प्राचीन शैली के नायक परम्पराओं से आये हैं प्रमुख पात्र कहे गये हैं। इन पात्रों की संक्षिप्त सी जीवन गाथा उनके वाह्य सौन्दर्य क्रिया-कलाप व्यक्तिव निरूपक, चिन्तन, और गुण अवगुणों का सोदाहरण विवेचन किया गया है। ऐसे पात्रों में रोहित, विमलानन्द, राजकमल, रमेन्द्र,

दिनेश, रोहित, कार्तिक, माधव बाबू, कुन्दन सिंह, उमेश, मधुकर, शिवदत्त पाण्डेय कर्नल, दिनकर पाण्डेय, प्रवीर, शेखर, करसनदास कापड़िया, कौस्तुभ, रोहिताश्व दत्ता, देवेन्द्र आदि पुरूष पात्र हैं। प्रायः सभी पात्र युवा और प्रौढ़ हैं। इन पात्रों में कर्नल शिवदत्त पाण्डेय, कर्सन दास कापड़िया प्रौढ़ एवं वृद्ध पात्र हैं जिनके जीवन में उनके उतार चढ़ावों से साथ तीसरी अवांछित स्त्री के प्रेम की चर्चा है। पुरुष पात्रों के सौन्दर्य निरूपण करके यह देखा गया है कि शिवानी नें उन्हें सुदर्शन कार्तिक जैसा आकर्षक रूप का स्वामी कहकर विभिन्न पात्रस्थ आकर्षणजन्य अनुभूतियों का उल्लेख किया है। पुरूष पात्रों का ललाट, भृकुटि निक्षेप, तीखी नाक, सुभग अधर, विशाल नेत्र, कान्ति आकर्षण वेश भूषा आदि के छोटे-छोटे विवरण उनकी आर्थिक स्थिति के अनुरूप किया है। नायिकाएं प्रायः इन पात्रों पर मुग्ध हुई हैं कुछ पात्र विवाहित हैं और उनके पत्नी प्रेम उनकी एक निष्ठा और सेवा का वर्णन शिवानी नें आकर्षक रूप में किया है। प्रौढ़ पात्रों में कर्नल शिवदत्त पाण्डेय का आकर्षक, भव्य, तेजोदृप्त रूप, 'सुरंगमा' उपन्यास में कई बार आया है। यह पुरूष पात्र सदाचारी और दुराचारी भी हैं। इनके प्रेम प्रसंगों की विस्तृत चर्चा शिवानीं ने की है। सभी प्रमुख पात्रों के जीवन में आये हुए इन प्रसंगों को देखकर यह कहा जा सकता है कि कहीं दैहिक आकर्षण, कहीं साहचर्य, कहीं प्रथम दर्शन के कारण यह प्रेम उत्पन्न है। प्रिय पात्र के मरक सौन्दर्य से अभिभूत इन पुरूषों नें कहीं-कहीं सामाजिक मर्यादाओं का उलंघन किया है। आदर्श पात्रों की अपेक्षा, यथार्थवादी, कुण्ठित, विद्रोही पात्र भी प्रमुख पात्र बनकर अवतरित हुए हैं।

चतुर्थ अध्याय शिवानी के उपन्यासों में प्राप्त गौण एवं अन्य सहायक पुरूष पात्रों के चरित्र चित्रण से सम्बन्धित हैं। गौण और सहायक उन पात्रों को कहा गया है जो उपन्यास में थोड़ी सी झलक दिखाते हैं, या अपनें कार्य व्यवहार से नायक पक्ष या विपक्ष में खड़े होकर अपनी गतिविधियों को क्रिया रूप में परणित करते हैं ऐसे पात्रों में हरदत्त वैद्य, कृष्ण कमल सिंह, कवि राज गोस्वामी, भाष्करन, मि0 फोर्टीन, देवकी नाथन, माधव बाबू श्यामा चरण, रघुवर दयाल, महिम तिवारी, अवधूत गुरू भैरवानन्द, धरणीधर, रामदत्त पाण्डेय, नारायण सेन, बेनुपद, सर्वेश्वर, राजेन्द्र, गौर मोहन बरूवा, धरणी धर, रार्बट, प्रबोध रंजन राय, जानकी प्रसाद, मारवाड़ी व्यापारी गाड़ोदिया, विद्युत रंजन,

शिवदत्त, देवदत्त भट्ट, वेद मेहरा, विनायक, अविनाश, जनार्दन, केसर सिंह, अवस्था की दृष्टि से पिता, पुत्र, श्वसुर, नेता, राजा, अध्यापक, सन्यासी इत्यादि हैं। शिवानी नें इन पात्रों के रूप सौन्दर्य की चर्चा यत्र तत्र की है। इन पात्रों के क्रियाकलाप घटनाएं उनकी विशेषताओं के निरूपण हेतु प्रयुक्त हैं इनमें रातदत्त पाण्डेय, धरणीधर, राजेन्द्र, राज प्रबोध रंजन राय, वेद मेहरा, अविनाश और जनार्दन ऐसे पात्र हैं जो प्रमुख पात्रों के पिता मित्र आत्मीय हैं। जिनके परामर्श से प्रमुख पात्र कुमार्ग में जानें से बचा है या वे आवेश में आकर स्वयं पतित हो गये हैं। ऐसे पात्रों के आन्तरिक गुणों की भी चर्चा शिवानी नें की है। तात्पर्य यह है कि शिवानी के गौण पात्र कहीं-कहीं इस रूप में अवतरित हैं जिसमें उपन्यास का नायक उसकी आभा कुछ दब सी गयी है इन पात्रों में अनाम व्यवसाय प्रध ाान पात्र भी आये हैं जिनका प्रतिनिधित्व भृत्त केसर सिंह नें किया है। इनकी स्वामि भक्ति या बेइमानी का निरूपण शिवानी नें बड़ी तन्मयता से किया है।

पंचम अध्याय शिवानी के उपन्यासों में पुरूष पात्रों का सामाजिक वर्गीय रूप चित्रित हैं। वस्तुतः ये शोध के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करेगा। क्योकि चरित्र-चित्रण करते समय शोध प्रबन्धों में पात्रगत सौन्दर्य उसके आचरण, क्रिया व्यवहार, गुण, अवगगुणों की चर्चा की जाती है। उसके वर्गीय रूप का चित्राँकन उपेक्षित ही रह जाता है। हम जानते हैं कि कवि, साहित्यकार, विधाता के समकक्ष, प्रजापति, स्वयंभू होता है। उसका रचित संसार इस दृश्य संसार के समकक्ष होता है। अतः इस भौतिक संसार में सामाजिक दृष्टि से जैसे पुरूष के अनेक रूप मिलते हैं। उसी प्रकार शिवानी के विशाल औपन्यासिक संसार में प्राप्त रूपों का उल्लेख किया गया है। इन रूपों में पिता, पुत्र, प्रेमी, भाई, पति, श्वसुर, जामाता, नौकर इत्यादि सामाजिक सम्बन्ध से यह पुरूष संसार परिचालित हुआ है। शिवानी के इन उपन्यासों में प्राप्त पिता वर्ग को एक स्थान पर रखकर उसके क्रिया कलापों की पितृत्व दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है। देखा गया है कि इनमें निरूपित पिता अच्छे और बुरे दोनों रूपों में दिखाई देते है। रामदत्त पाण्डेय, प्रबोधरंजन राय, हरदत्त वैद्य, इकबाल नारायण, सुरेश भट्ट, जनार्दन ऐसे पिता रूप में भी दिखाई पड़ते हैं जो पुत्र पर अपार स्नेह प्रगट कर वत्सलता की साक्षात् मूर्ति प्रतीत होते हैं। अपने पुत्र-पुत्री के शुभ चिंतक के रूप में क्रोधी रामदत्त पाण्डेय, दूरदर्शी, शिवदत्त पाण्डेय, कर्नल दिनकर, मारवाड़ी व्यापारी गाड़ोदिया, तिवारी जी और जनार्दन,

श्यामाचरण, माधवबाबू, ऐसे ही पिता हैं। नेता माधवबाबू दुराचारी पुत्र की अबाध्यता, उदण्डता का उल्लेख कर सावधान भी करते हैं और कानून की पहुँच से दूर रखकर गुप्त प्रयास भी करते हैं। इसी प्रकार प्रेमी रूप में प्रयुक्त पात्रों के जीवन में आयी प्रेम प्रवृत्ति का उल्लेख कर यह कहा गया है कि कर्नल शिवदत्त पाण्डेय और दिनकर प्रौढ़ एवं विवाहित पुरूष हैं। जो रक्षताओं के घेरे में रहकर सामाजिक, मर्यादा या पत्नी से प्रताड़ित होते हैं। उपर्युक्त सभी पात्र अवस्था की दृष्टि में युवा और प्रौढ़ हैं, प्रेम में उदण्डता की दृष्टि से सुरेश भट्ट, दिनकर और कार्तिक विशेष उल्लेखनीय हैं। इनकी प्रणय लीलाएँ, प्रेम-याचना, विभिन्न परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में व्यंजित हैं। इसी प्रकार पुत्र रूप में पात्रों के पिता सम्बन्धी भावनाएँ पीढ़ियों के अन्तराल के कारण वैचारिक मतभेद, पितृत्व भक्ति, पिता के प्रति आक्रोश आदि की चर्चा की गयी है। पति रूप का उल्लेख करते हुए पत्नी के प्रति अन्ययता, सामाजिक समरसता, सौहार्द अधिकार प्रदान करने की उदारता आदि की चर्चा या पत्नी की उपेक्षा रक्षिता के कारण उसकी प्रताड़ना या अन्य स्त्री से शारीरिक सम्पर्क की घटनाओं का उल्लेख कर पतियों की सामाजिक मर्यादा का उल्लेख किया गया है। इस दृष्टि से रोहित, विमलानन्द, राजाराजकमल सिंह, श्यामाचरण, धरणीधर, अविनाश, जनार्दन, आदर्श पति हैं, इसी परिप्रेक्ष्य में अपने कुकृत्यों के प्रति ग्लानि प्रकट कर प्रायश्चित कर्म करने वाले देवदत्त भट्ट भी उल्लेखनीय पति हैं। मित्र रूप में उल्लिखित पात्रों में देवेन्द्र, बसन्त, आदि की संक्षिप्त चर्चा भी गयी है। शिवानी के इस विशाल संसार में नाम और अनामी नौकरों का एक विशाल वर्ग उल्लिखित हुआ है। जो स्वामी भक्त भी हैं, कर्मठ भी हैं, उदार भी हैं, रसिक भी हैं और परिस्थितिवशात् स्वार्थी भी हैं। कुल मिलाकर शिवानी के रचना संसार में प्राप्त सामाजिक वर्गीय पात्र आदर्श यथार्थ, उसके समन्वय से भव्य, आकर्षण, प्रांजल और आधुनिक युगीन समाज का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र हैं।

षष्ठ अध्याय में शिवानी के उपन्यासों में असामान्य पुरूष पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है। प्रारम्भ में असामान्य की परिभाषा, स्वरूप निर्धारण मनोविज्ञान सम्मत रूप में प्रस्तुत की गयी है। समाज के अनुरूप मोरेन या शारीरिक मोरेन या शारीरिक, मानसिक विकलांग जन्मजात होते हैं। ऐसे पात्रों के जन्म के पूर्व की घटनाओं का उल्लेख कर इन पात्रों की संक्षिप्त झाँकी अंकित की गयी है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में इड, इगो

के द्वन्द्व, दमन के कारण रूग्ण तथा कुण्ठित बने आसामान्य पात्रों की विस्तृत चर्चा की गयी है। जिसमें 'रतिविलाप' का पुत्र विक्रम कामोन्माद के कारण जंजीर में बाँध कर रखा जाता है उसका रुप पत्नी की चाहत और अवसर पाते ही उसके दुःसाहस की भी चर्चा है। इसी प्रकार 'चल खुसरो घर आपने' का कृष्ण कमल सिंह विक्षिप्त है। नारियों को देख वह अश्लील हरकतें करने लगता है। 'कस्तूरी मृग' का इकबाल नारायण अपने पुत्र को निरवंश होने का अभिशाप देता है। वंशवृद्धि की तीव्र महात्वाकाँक्षा के कारण पिता जैसे उच्च पदवी समान श्वसुर अपनी बहू पर बलात्कार कर भावी वंशधर की कामना करता है। वह निश्चय ही लज्जास्पद ही नहीं गर्हित और निन्दनीय है। इस आसामान्य चरित्र में तनबीर बेग जो समलिंगी यौनाचार का समर्थक 'कैंजा' का सुरेश भट्ट सेक्समैनीयाक्क है। 'सुरंगमा' का गजानन जोशी माता-पिता के आचरण से कुण्ठित, अवदमित पात्र है। इसी प्रकार 'पाथेय़' का विनायक अपने पूर्वजन्म की तिलोत्तमा की याद में पंचतत्व को प्राप्त होता है। तात्पर्य यह है कि शिवानी ने सामाजिक दृष्टि से नारी के शारीरिक शोषण करने वाले निकटस्थ आत्मीयों के उदाहरण देकर आज की बढ़ती यौन शोषण की ज्वलन्त समस्याओं को उजागर किया है।

सप्तम और अन्तिम अध्याय पात्रों के चरित्र-चित्रण में प्रयुक्त शैलियों का सोदाहरण विवेचन है। कहा यह गया है कि शैली का तात्पर्य भाषिक या वैयाकरणिक अध्ययन नहीं, न ही शिवानी के भाषा सौन्दर्यगत प्रकाश डालना है। अपितु पुरुष पात्रों की चरित्र-चित्रण की जो प्रणालियाँ व्यवहृत हुई हैं उनका आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। शिवानी ने इन पात्रों के नाम रूप, वेश-भूषा, आचरण, आकृति, अनुभाव आदि के वर्णन के लिए विवरणात्मक विश्लेषणात्मक, प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक शैलियों का प्रयोग किया गया है। विवरणात्मक शैली में लेखिका स्वयं या पात्र के जीवन से सम्बन्धि
ात घटनाओं, कार्य-व्यापार का सीधे ढ़ंग से चित्रांकन करती है। यह कथन संवाद के माध
यम से नाटकीय शैली में परस्पर घटनाओं के घात-प्रतिघात से पात्र के चरित्र की कोई न कोई छवि अंकित की है। इसी प्रकार प्रतीकात्मक या अलंकृत शैली में व्यंजना का उपयोग कर पात्रस्थ मनोभाव या उसके क्रिया-कलापों का उपमान वर्णन से व्यंजना करायी है। पात्रस्थ आन्तरिक आकाँक्षाएँ और वाह्य क्रिया-कलापों में आये अन्तर,

विड़म्बना, आदि के मूल्य में इड, इगो, संघर्ष, दमन, स्वप्न उनके उदात्तीकरण हेतु मार्गान्तरीकरण पद्यति का सोदाहरण विवेचन फ्रायड, एडलर, युंग, हैबिलक आदि मनोविश्लेषण शास्त्री के आलोक में किया गया है। बहिरंग प्रणाली के अन्तर्गत पात्रों के रूप-सौन्दर्य आदि का अन्तरंग प्रणाली के अन्तर्गत पात्रों के हृदयस्थ मनोभावों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इन शैलियों से पात्रों के चरित्र, व्यक्तित्व आदि का सम्यक् निरूपण हो सका है।

इस प्रबन्ध के प्रस्तुत करने में मुझे मेरे पूज्य गुरुदेव निर्देशक डॉ0 वेद प्रकाश द्विवेदी, रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा का जो सक्रिय सहयोग मार्गदर्शन मनोवैज्ञानिक आलोक में चरित्र-चित्रण समझने की पात्रता प्राप्त हुई है उनके आशीर्वाद के बिना यह सम्भव नहीं था। अतः उनके प्रति कृतज्ञता किन शब्दों में व्यक्त करूँ, शब्द नहीं हैं। इस शोध-प्रबन्ध की विश्लेषणजन्य जो अच्छाइयाँ हैं यह उनके उच्च निर्देशन का ही परिणाम है और कमियों के मूल में मेरी अज्ञानता और अध्ययन प्रमाद है। इसके साथ पूज्य गुरुमाता श्रीमती अनुराधा द्विवेदी अनुजा कु0 मंजरी द्विवेदी, गरिमा द्विवेदी का जो सहयोग मिला उसका मैं आजीवन ऋणी रहूँगा। इसके साथ अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा के विभागीय प्राध्यापक डॉ0 जी0डी0मिश्र, डा0 शशिकान्त अग्निहोत्री, डॉ0 महाबीर सिंह, प्रो0 गया प्रसाद जी 'सेनही' डॉ0 श्रीमती गीता द्विवेदी एवं संस्कृत विभाग के प्रो0 राजाराम दीक्षित, डॉ0 दिनेश कुमार गर्ग तथा अतर्रा महाविद्यालय के सभी गुरूओं ने मुझे प्रोत्साहन प्रदान कर समय पर कार्य पूर्ण करने का जो उत्साहवधर्न एवं सहयोग किया उनका मैं हृदय से आभारी हूँ।

यह कार्य अपने इस रूप में न प्रस्तुत होता यदि वयस मित्र श्री कपिल कुमार अग्निहोत्री, श्री कालीचरण बाजपेई, श्री बलराम दत्त गुप्त का सक्रिय सहयोग न मिला होता।
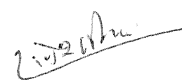
इस शोध कार्य को प्रस्तुत करते समय अपने पूज्य पिता श्री बृजमोहन सिंह एवं पूज्या माता, श्रृद्धंय चाचा जी श्री शिवमोहन सिंह, श्री शिवकुमार सिंह एवं श्री तेज कुमार सिंह, इसी श्रेणी में मेरी प्रिय अनुजा कु0 सुशीला सिंह का अकथनीय सहयोग रहा जिनको मैं श्रृद्धा पूर्वक स्मरण करता हूँ तथा राजेन्द्र कुमार अग्निहोत्री एवं भाभी जी उमेश कुमार अग्निहोत्री तथा भाभी जी उसी श्रेणी में श्रीमती नीलम गर्ग (भाभी जी) एवं कु0

आरती जी, कु0 अर्चना जी, प्रिय भागिनेय चि0 निर्भीक कुमार मिश्र और प्रिय भतीजी नन्दिनी गर्ग का आभारी हूँ जिनकी शुभकामनाएँ सदैव मेरे साथ रहती हैं।

अपनी पत्नी श्रीमती गीतांजलि सिंह का प्रेम पूर्वक स्मरण करता हूँ जिनके कान्ता सम्मिति उपदेश के कारण निश्चित समय पर पूर्णता को प्राप्त हुआ।

अन्त में मेरे साथ अर्हनिश जागरण कर श्री अखिलेश कुमार द्विवेदी एवं श्री शिव राजेश्वर सदा स्मरणीय रहने वाला सहयोग प्रदान किया। जिसका मैं हृदय से बहुत-बहुत आभारी हूँ।

शोधार्थी

(राजेश कुमार सिंह)
एम0ए0,बी0एड0
बाँदा रोड, बिसण्डा
फो. 05191 : 251656

अध्याय प्रथम

पात्रावधारणा का स्वरूप
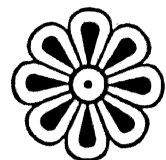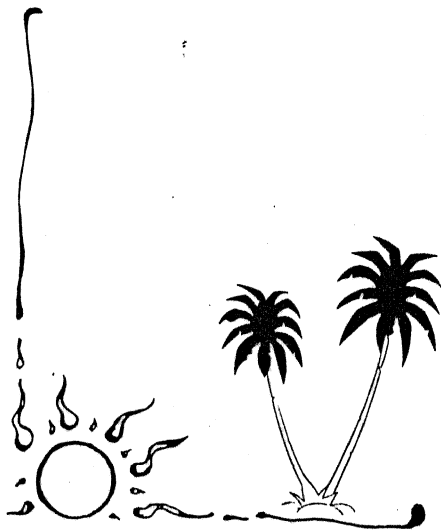
कथा प्रधान काव्य रूपों में पात्रों की रचना साहित्यकार करता है, इसीलिए वह ब्रह्मा, स्वयंभू कहलाता है। वह अपनी रुचि, प्रकृति, संस्कार के अनुसार पात्रों के शील, स्वभाव, आधार, विचार, आहार, व्यवहार, अवस्था तथा प्रकृति की विभिन्नता एवं विविधता का चित्रांकन करता है। अतः सबसे पहले हम पात्रावधारणा के स्वरूप को व्यक्त करने के पूर्व पात्र का व्युत्पत्तिपरक अर्थ, पात्र एवं चरित्र, पात्र एवं व्यक्तित्व आदि की सामान्य अवधारणा पर प्रकाश डालेंगे।

पात्र की व्युत्पत्ति एवं अर्थ :

संस्कृत की 'पा' धातु के साथ 'ष्ट्रन' प्रत्यय युक्त करने से पात्र शब्द की व्युत्पत्ति की जाती है; जिसका अर्थ है "बर्तन", जिसमें कुछ रखा जा सके, व्यक्ति या किसी कामयाब बात के लिए योग्य समझा जाय अथवा जो किसी कार्य या पद के लिए उपयुक्त होने के कारण चुना या नियुक्त किया जाता है। हमारा तात्पर्य उस पात्र से है जो कथावस्तु की घटनाओं के घटक होते हैं और जिनसे घटनाओं के रस का परिपाक होता है।

पात्र एवं चरित्र :

सामान्य अर्थ में पात्र और चरित्र में कोई अन्तर नहीं है। चरित्र में दो पक्ष होते है। एक आन्तरिक, दूसरा वाह्य। पात्र एक ओर व्यक्ति रूप में आलम्बन विभाव है और दूसरे रूप में समस्त गुण-अवगुणों का समुच्चय भी। जैसा कि विदेशी विद्वान जी0एम0 किर्कवुड ने कहा है :-

"................... But character mains also personality specially that are aspect of personality moral character".[1]

सामान्यतया चरित्र सत्य और असत्य दो भावों में मिलता है। सत् से तात्पर्य मनुष्य के उस आचरण से है जो नीति एवं समाज-सम्मत है। असत् आचरण इसके विपरीत है। इस प्रकार व्यापक अर्थ में चरित्र के अन्तर्गत मनुष्य के बर्हिरंग तथा अंतरंग

---

1. A Study of Sofo clean drama Page 99.

के प्रकाशक समस्त तत्व समाहित हो जाते हैं। जिनमें उसकी बौद्धिक क्षमताएँ उसकी इच्छा शक्तियाँ और उसकी भावनाएँ तथा कामनाएँ आती हैं।

Character in its widest semse as including all that are veals a mans personal and inner self his intellectual powers no less than the will and the emotions."[1]

वास्तव में चरित्र में किसी कुल वंश परम्परा में चला आया हुआ कार्य व्यवहार सदाचार चरितब्य कर्म व्यवहार है। अंग्रेजी में पर्याय रूप में कहा जाता है। व्यक्ति अथवा पात्र का वह विशिष्ट चिन्ह जो उसके आदर्श एवं आचरण के आधार अन्य व्यक्ति से पृथक कर दे। अंग्रेजी शब्द-कोश में लिखा है कि चरित्र में उन समस्त विशिष्टताओं अथवा गुणों का समवाय होता है जिनसे वैयक्तिक एवं राष्ट्रीय व्यक्तित्व की संरचना होती है। यद्यपि इसकी वास्तविक प्रिभाषा करना बहुत कठ्नि है।

भारतीय साहित्य में चरित्र को परिभाषित करने के अनेंक प्रकार के प्रयास हुए हैं।

नाट्यदर्पणकार रामचन्द्र गुणचन्द्र का मन्तव्य है कि - जिसका अतीत काल में आचरण किया जाता था वह चरित्र कहलाता है। इस पर टिप्पणी करते हुए डा0 सूरजकान्त शर्मा ने लिखा है कि - "इसमें चरित्र के अनुकृत पक्ष पर विशेष बल दिया है जो चरित्र का एक व्यवहारिक पक्ष है उसके समन्वित प्रभाव के गम्भीर रूप को व्यक्त करने में यह असमर्थ है।"[2]

चरित्र के आन्तरिक और बाह्य पक्ष के उद्घाटन में श्रीमद्भगवत्गीता का विशेष योगदान है। "जिसमें इस शरीर को औद जिसके अन्तर्गत पंचमहाभूत, अंहकार, बुद्धि, मूल प्रकृति, दस इन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ, तन्मात्राएँ आती हैं।[3]

इस प्रकार शरीर से इन्द्रिय, उससे परे मन तथा उससे परे बुद्धि की चर्चा कर मनुष्य की आत्मशक्ति या आन्तरिक चरित्र की चर्चा की गयी है। यह अन्तःकरण अनुभूतिशील और प्रतिक्रियाशील होता है। मनुष्य जब कोई अनुभव प्राप्त करता है तो

---

1. Aristatle theory and fine art : S.B. Bucher, Page 340

2. हिन्दी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण, पृ067

3. गीता अध्याय 13

उसके अन्तःकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। मन ज्ञानेन्द्रियों से संस्कार प्राप्त करता है। फिर बुद्धि से संस्कारों का निर्णय करता है। इसके विपरीत प्रतिक्रिया में मन बुद्धि से विचार करता है, तदुपरान्त मन उस कार्य करने को इच्छा करता है। इस प्रकार के क्रिया कलापों को व्यवसाय आत्मिकी बुद्धि और वासनात्मक बुद्धि कहा जाता है, यही सारा प्रपंच संक्षेप में चरित्र कहलाता है। क्योंकि दर्शन में जो कुछ कहा गया है, उसमें अन्तःकरण की प्रधानता है।

पाश्चात्य जगत में मनोविज्ञान के विकास होने के पश्चात् चरित्र के बहुआयामी प्रति छवियों को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि वहाँ भी यह नहीं देखा गया कि इन परिभाषाओं में चरित्र को मूल रूप से बाँध ही लिया गया है। मैगडूगल ने चरित्र को प्रज्ञात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक तत्वों का संगठन माना है। मैगडूगल के इस वर्गीकरण में मूल प्रवृत्तियाँ है। डा0 रोबेक के अनुसार – "चरित्र जन्म जात मूल प्रवृत्यात्मक उत्तेजनाओं के निग्रह वाला एक सतत् जागृत मनोवैज्ञानिक झुकाव है, जो एक व्यवस्थापक सिद्धान्त के अनुसार चलता है।"[1]

इसी प्रकार शान्य ने लिखा है – "चरित्र वह कार्य है जो सभ्यता या समाज के माध्यम से विकासोन्मुख होता है।"[2]

इस प्रकार मनुष्य के बाह्य रूप आन्तरिक सदाचार क्रियाएँ प्रतिक्रियाएँ एवं भावनाओं के रूप में चरित्र को परिभाषित किया गया है। इन भावनाओं और क्रियाओं के मूल में चरित्र की प्रेरक शक्ति और अन्तःकरण है। और इसे ही समग्र रूप से चरित्र का कारक कहा गया है।

निष्कर्ष रूप में हम डा0 रणवीर रांग्रा से सहमत हो सकते हैं कि –

"बुद्धि, अहंकार और मन इन तीनों की सम्मिलित प्रक्रिया अर्थात् अन्तःकरण का विकास ही मनुष्य का विकास है। प्रकृति के विकास होने के नाते उसके गुणों को धारण करने वाले अन्तःकरण के तत्व अर्थात् बुद्धि, अहंकार और मन, पूर्व कर्म के अनुसार पूर्व

---

1. प्रॉबलम ऑफ परसनालिटी : रोबेक, पृ0 117

2. करेक्टर इज द सेल्फ इन एक्सन इन दे प्रोसेस ऑफ कलेक्ट इज सम सेल मीडियम ह्यूमन नेचर इन मेकिंग – मैक्स साहना, पृ0 154

परम्परागत या आनुषांगिक संस्कारों के कारण अथवा शिक्षा आदि अन्य कारणों से कम या अधिक सात्विक, राजस और तामस होकर उसका विकास करते हैं, चरित्र का निर्माण करते हैं।"[1]

यहाँ इसी के पर्यायवाची या मिलते जुलते रूप में प्रयुक्त शब्द व्यक्तित्व का आँकलन उसके अंग, उसके कारक तत्वों तथा उसकी संरचना में मनोविज्ञान समान पर्यावरण आदि की भूमिका एवं चरित्र उसके साम्य वैशिष्ट्य की समीक्षा कर लेना उचित प्रतीत होता है।

व्यक्तित्व स्वरूप एवं प्रकृति :

'अंज' धातु में 'बी' उपसर्ग तथा 'क्तिन्' और 'त्त्व' प्रत्यय लगाने पर व्यक्तित्व शब्द बनता है। ज़िसे सामान्य तौर पर व्यक्त होने की अवस्था कहा जाता है। किन्तु यह परिभाषा बहुत जटिल है। इस सन्दर्भ में डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी ने लिखा है –"इसमें कहीं आकर्षक रूप सौन्दर्य एवं शारीरिक सौष्ठव की व्यंजना होती है तो, कहीं शास्य तथा सुसंस्कृत व्यवहार तथा आचरण की कमी, इसे ज्ञान तथा विवेक की कसौटी पर कसा जाता है, तो कहीं सांसारिक अनुभव और अनुकूलन शक्ति के निकष पर कभी इससे बाह्य आकृति का भाव ग्रहण किया जाता है और कभी व्यक्ति की अन्तःवृत्तियों तथा चारित्रिक विशिष्टताओं का।"[2]

इस दिशा में पाश्चात्य मनोविश्लेषकों ने गंभीर प्रयास किया है सर्वप्रथम कुछ परिभाषाएँ देकर उनके कारक तत्वों की चर्चा करेंगे।

"*1. लिण्टन के अनुसार :–* (व्यक्तित्व व्यक्ति से सम्बन्धित समस्त मनोवैज्ञानिक क्रियाओं एवं दशाओं का सम्मिलित स्वरूप है)

2. गार्डन आलपोर्ट :– (व्यक्तित्व, व्यक्ति स्वयं के अन्दर उसके मनोशरीरीय तत्वों का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसका सुसमायोजन स्थापित करता है।)

3. एच.सी.वाले :– (व्यक्तित्व, व्यक्ति के विकास की किसी भी अवस्था में होने वाला

---

1. हिन्दी उपन्यास में चरित्र–चित्रण का विकास, पृ0 22

2. शिक्षा मनोविज्ञान, बी0एन0 शर्मा, पृ0 418

समग्र मानसिक संगठन है।)

4. वाट्सन :- (हम जो करते हैं वही व्यक्तित्व है।)

5. मे. एवं हार्टशार्न :- (व्यक्तित्व, व्यक्ति का वह स्वरूप है जो उसे प्रभावशाली बनाता है और दूसरों को प्रभावित करता है)''[1]

सारांश यह है कि सामान्यतया प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व दो भागों में विभक्त रहता है। एक आन्तरिक दूसरा बाह्य।

इस सन्दर्भ में डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी का अभिमत है कि ''आन्तर व्यक्तित्व मूलतः नैसर्गिक या प्राकृतिक होता है और आध्यात्मिक, दैविक तथा दैहिक शक्तिओं का सम्मिलित रूप होता है। यह मनुष्य के अन्दर रहने वाली समस्त प्रकट तथा प्रच्छन्न प्रवृत्तियाँ और शक्तियों का प्रतीक होता है। बाह्य रूप इसी का प्रत्याभास मात्र होता है। फिर भी लोक के लिए वही गोचर या दृश्य होता है। इससे सूचित होता है कि कोई व्यक्ति अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों और शक्तियों को कहा तक कार्यान्वित एवं विकसित करने में समर्थ हो सका है।''[2]

व्यक्तित्व की रचना :-

मनोविश्लेषकों के अनुसार सामान्य व्यक्ति तीन प्रवृत्तियों से बनता है। ''इड, इगो, सुपर इगो। इड जीवन और मृत्यु तथा मनोजैविक शक्तियों का स्रोत होता है। यह प्रवृत्ति शुद्ध रूप आनन्द प्राप्ति के लिए होती है। इगो उस मनोवृत्ति का नाम है ,जो विचार निर्णय अनुभव और संकल्प करता है। इगो का सम्बन्ध सामाजिकता से होता है, जबकि सुपर इगो सामाजीकरण करने वाली प्रमुख शक्ति होती है। संस्कृति, नैतिकता आदर्श वंशानुगत नैतिक प्रवृत्ति से इसका निर्माण होता है।''[3]

तात्पर्य यह है कि मनुष्य के व्यक्तित्व निर्माण में अचेतन अंश का सर्वाधिक

---

1. पात्रावतरण की अवधारणा पृ0 21

2. पात्रावतरण की अवधारणा पृ0 23

3. इन्टोडेक्टरी लेक्सर्च आन साइको एनालसिस – फ्रायट
विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

योगदान है। उसमें निवास करने वाली प्रेरणाएँ असभ्य, अनगढ़, स्वार्थपरायण वृत्तियां, स्वतृप्ति कभी होती है। इड, इगो के इस संघर्ष से ही उसके व्यक्तित्व का निर्माण एवं सुपर इगो की चेष्टा उसे सामाजीकृत बनाती है।

व्यक्तित्व निर्माण के कारक तत्वों में शारीरिक गठन, नाडी तंत्र, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव, आनुवंशिकता और पर्यावरण एवं चारित्रिक एवं मानसिक दृष्टि मूलकारक है। इस प्रकार हम स्वभावशील और नैतिकता के आधार पर चरित्र एवं व्यक्तित्व की परख और विश्लेषण कर सकते हैं। यहाँ हम चरित्र और व्यक्तित्व के पार्थक्य करने वाले कुछ तत्वों की चर्चा करेंगे।

चरित्र एवं व्यक्तित्व से साम्य वैषम्य :

फ्राँस के विद्वान "चरित्र और व्यक्तित्व को समानार्थी मानते हैं। अमरीकी मानवशास्त्री का कहना है कि चरित्र मानवीय आचरण की विशिष्ट विधि है",[1] जबकि रोबेक ने इसका खण्डन किया है। उसकी धारणा है कि चरित्र मानवीय आचरण के विभिन्न लक्षणों से प्रकट होता है, चरित्र सामाजिक व्यवस्था तथा संगठन से निर्मित एवं नियंत्रित होता है। जबकि व्यक्तित्व का बाह्य एवं अन्तर व्यवहार एवं विशिष्टता तथा जैविक संरचना में समाहित होता है।"[2]

चरित्र और व्यक्तित्व के साम्य वैषम्य पर चर्चा करते हुए कभी-कभी स्वभाव शब्द की भी चर्चा की जाती है। चरित्र कर्म है, व्यक्तित्व चिन्तन है और स्वभाव चरित्र व्यक्तित्व दोनों से भिन्न है। इसी परिप्रेक्ष्य में शील शब्द नैतिक शास्त्र में प्रयुक्त होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'त्रिवेणी' में शील निरूपण और चरित्र चित्रण को एक मानकर उसकी व्याख्या की है। "हिन्दी" कोश में शील को परिभाषित करते हुए कहा गया है – "शील वस्तुतः शील धातु में "अच" प्रत्यय जोड़ने से बनता है। जिसका तात्पर्य मनुष्य का नैतिक आचरण और व्यवहार है।"[3]

---

1. इन साइक्लोपीडिया कूलियर्स : भाग 5 पृ0 27

2. द साइक्लोजी ऑफ कैरेक्टर, पृ0 157

3. मानक हिन्दी शब्द कोश, पाँचवा खण्ड, पृ0 180

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि शील चरित्र और व्यक्तित्व का वह अंश है जो ग्राह्य है और समाज द्वारा जिसकी प्रशंसा की जाती है। चरित्र में सत् असत् सद्सत तीनों स्थितियां हो सकती हैं। शील में सत् प्रवृत्ति ही होती है।

साहित्य में पात्र का महत्व :

पिछले पृष्ठों में यह निरूपित किया जा सका है, कि साहित्यकार अपनी रचना में घटनाओं या परिस्थितियों का ऐसा चित्रांकन करता है कि उसके वाहक पात्रों का चरित्र, उनका व्यक्तित्व और आन्तरिक सौन्दर्य भाव और मनोविकारों का समर्थ चित्रांकन होता है। वस्तुतः साहित्यकार इसीलिए कवि, मनीषी, स्वयंभू, प्रजापति और रचनाकार कहलाता है। जिस प्रकार ईश्वर की रचना यह दृश्य संसार में रहने वाले पात्र मात्र आंशिक या आवयविक समाबता को छोड़ भिन्न-भिन्न रूप रंग आकृति और व्यवहार वाले होते हैं, उसी प्रकार साहित्यकार के पात्र भी।

यहाँ संक्षिप्त में यह निरूपित किया जा रहा है कि साहित्य में इन पात्रों का प्रयोग और महत्व कैसा है।

अरस्तू की धारणा है कि बिना कार्य व्यापार के साहित्य नहीं हो सकता। उसी प्रकार चरित्र निरूपण भी साहित्यकार का प्रथम कर्तव्य है। ब्रेटले, निकाल आदि समालोचक चरित्र चित्रण को ही प्रधानता देते हैं। यहाँ यह प्रश्न उठाया जा सकता है कि लेखक के मन में पहले अथवा किसी चरित्र का कथाकार तुर्गनेव चरित्र को प्रमुखता देता है कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि कथावस्तु का महत्त्व असाधारण है, किन्तु घटनाएँ बिना पात्रों के नहीं हो सकती। अतः कथा प्रधान लेखकों के साथ पात्रों का भी ध्यान रखना पड़ता है। एक दूसरी दृष्टि से विचार करें तो पता लगेगा कि कथा के प्रख्यात उपाद्य और मिश्रभेद मुख्य रूप से पात्रों पर ही आधारित हैं। इसी तरह आदिकालिक और प्रासंगिक घटनाओं के मूल्य में चरित्रों की ही प्रमुखता दिखाई पड़ती है। डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी ने लिखा है – "कथा और कथानक को सर्वाधिक महत्व प्रदान करने वाले विद्वान सम्भवतः इस महत्व पर ध्यान नहीं दिया होगा, कि कथा किसकी होगी। कथा अन्ततः किसी न किसी चरित्र की ही होती है; चरित्र के आभाव में कथानक कल्पनातीत है।"1 इसी तरह भारतीय

1. पात्रावतरण की अवधारणा पृ0 46

नाट्यशास्त्र में कार्य की अवस्थाएँ प्रकृति और सन्धियों के उल्लेख में पात्रों की चारित्रिक अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। नाटक के अतिरिक्त अन्य काव्य विधाओं में कहीं न कहीं संवाद प्रयुक्त होते हैं। जिसे कोई न कोई पात्र ही सम्पादित करता है। इसीलिए संवाद नाटकों के प्राण और चरित्र के ज्ञापक होते हैं।

उपन्यास विधा में तो पात्रों के चरित्र और व्यवहारों की समीक्षा होती है। मुंशी प्रेमचन्द्र ने लिखा है कि "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्त मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है। अंग्रेजी और हिन्दी के उपन्यासों को देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इनके विकास क्रम में कथातन्तु क्षीण से क्षीणतः होता गया। और पात्र को सर्वाधिक महत्व मिलता गया।

यहाँ यह कहना अप्रासांगिक न होगा कि साहित्य जगत के पात्र सजीव और सामाजिक होते हुए भी साक्षात् वस्तु जगत का दृश्यमान संसार के पात्रों से भिन्न होते हैं। साहित्यगत पात्र रचयिता के मनोनुकूल उत्पन्न और लय होते हैं। परन्तु वस्तुजगत के पात्र का जीवन उन पर निर्भर नहीं रहता।

पात्रों का वर्गीकरण :

यह कहना अत्युक्तिपूर्ण नहीं होगा कि वस्तुतः उपन्यास या काव्य अपने समग्र रूप में मानवजाति या समाज का चित्र कहा जाता है। इस दृष्टि से कथा प्रधान साहित्य के पात्र अनिवार्य रूप से समाज के किसी न किसी वर्ग के प्रतिनिधि होते हैं। कथावस्तु के आधार पर पात्रों के दो भेद किये जा सकते हैं। प्रधान पात्र तथा गौड़ पात्र। पात्रों के इस विभाजन के सन्दर्भ में डॉ० रामशंकर त्रिपाठी की अवधारणा है कि "जिन पात्रों के भाग्य और नियति की परिणति तथा चरित्र एवं क्रिया विधि के प्रक्रम और विकास से कथावस्तु का बन्धान होता है, जो कथावस्तु को गति, यति और प्रेरणा प्रदान करते रहते हैं तथा जो स्वयं अपने रूपायन एवं विकास में उससे सहायता प्राप्त करते हैं। उन्हें प्रधान पात्र कहते हैं और जिन पात्रों से कथावस्तु मुख्य रूप से सम्बद्ध नहीं होती तथा जिसका समावेश साधन के रूप में होता है, वे गौड़ पात्र कहलाते हैं। गौड़ पात्र कथावस्तु को उदीप्ति करने, प्रधान पात्रों के चरित्र को अनुकूलता तथा कन्ट्रास्ट की रंगछाया से प्रकाश

में लाने, उन पर टीका टिप्पणी करने इत्यादि के लिए सन्निविष्टि किये जाते हैं।''[1]

कथा के पात्रगत महात्म्य के दृष्टि से पात्रों को नायक, नायिक, प्रतिनायक, प्रतिनायिका, अनुनायक, उपनायक, सहनायक तथा सहनायिका भेद किये जा सकते हैं।

प्रत्येक समाज में सामाजिक गतिशीलता और विकास के लिए किसी न किसी व्यक्ति को अग्रगण्य माना जाता है। कालान्तर में यही नायक बना और इसको ही साहित्य में स्थान प्राप्त हुआ। संस्कृत की 'नि'धातु में 'ण्लु' प्रत्यय जोड़ने से नायक शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है आगे ले जाने वाला। धनन्जय, विश्वनाथ, भरत, इत्यादि आचार्यो ने धीरोदात्त, धीरललित, धीरप्रशान्त और धीरोद्धत आदि की परिकल्पना की है। जिनके अन्तर्गत उनके कायिक सौष्ठव, चरित्र, प्रेम व्यापार, वीरता तथा शोभा विलास, माधुर्य, तेज, गाम्भीर्य, औदार्य आदि अलंकारों का बहुविधि वर्णन किया गया है।''[2]

इसी प्रकार प्रतिनायक में धीरोद्धत, व्यसनी, अहंकारी, आत्मसलाघा आदि गुणों का उल्लेख किया गया है। नायक के प्रमुख सहायकों में पुरोहित, मंत्री, सचिव, सेनापति, विदुषक आदि पात्रों का उल्लेख किया गया है।

''इसी तरह प्रतीच्य दृष्टि में ट्रेजडी और महाकाव्यों में नायक, खलनायक, प्रतिनायक की विस्तृत चर्चा अरस्तू, निकोल, कार्लियार्श ने विस्तृत रूप से किया है।''[3]

उक्त नायकों का महत्व महाकाव्य में अक्षुण्य रूप से दिखाई देता है किन्तु गद्य की विधाओं विशेष रूप से कहानी, उपन्यास, नाटकों में इनकी महत्ता नगण्य हो गयी है। उपन्यास को गद्यात्मक महाकाव्य कहा जाता है फिर भी उसके मूल में यथार्थ का प्रधान्य होने के कारण उसके पात्रों को महिमा मण्डित करने का प्रयास नहीं किया जाता।

आज न तो कुलीन उच्च वंशीय देववर्गीय पात्रों का युग है, न ही श्रृंगार, वीर्य रस

---

1. पात्रावतरण की अवधारणा पृ0 63

2. क. नाट्यशास्त्र, भरत, 22/33

ख. दशरूपक, 2/10

ग. साहित्य दर्पण, 3/35

3. क. अरस्तू का काव्य शास्त्र : डॉ0 नगेन्द्र

ख. दि थ्योरी ऑफ ड्रामा : ए. निकोल

के दमकते, चमचमाते औदात्य से मण्डित नायकों की आवश्यकता है। इस युग में तो भाष्वर, प्रथुल्य, सामन्तवाद का अवसान करते हुए दीन-हीन, दुर्बल आधुनिक युग बोध के प्रतीकात्मक नायक या पात्रों का युग है। ऐसे ही पात्र हमारे चारो ओर दिखाई देते हैं। पात्रों के शील को लेकर उनके वर्गीकरण का एक आधार आचार्य जगदीश पाण्डेय ने प्रस्तुत किया है "शील के आधार पर श्रेणीबद्ध करने के पूर्व ऐसे पात्रों की भूमिका के विषय में कहा जा सकता है कि नब्य, संकल्प, सापेक्ष कर्म विचार या भावों की प्रतिभा अभिव्यक्ति को शील कहते हैं। अभिव्यक्ति चाहे कर्म की हो या विचार अथवा भाव की, उसमें अन्तरिक अथवा वाह्य सक्रियता अनिवार्य है, बिना सक्रियता के अभिव्यक्ति नहीं हो सकती।"[1]

इस प्रकार पात्रों को खड्गशील, छायाशील, आधारकाष्टशील, शिवकारूढ़शील,दुर्बल एवं निर्जीवशील इत्यादि रूपों में पात्रों का विभाजन किया जा सकता है। खड्गशील पात्र आक्रामक द्वन्द्वों के बीच अपना मार्ग निर्धारित करने वाले एवं कृतफल भोग्ता होते हैं। इसी प्रकार छाया के समान आचरण करने वाले कुछ ईर्ष्यालु आदि गुणों की चर्चा शीलाश्रित पात्रों के गुण कहे गये हैं। पात्रों के वर्गीकरण के लिए एक आधार मनोविज्ञान में प्रस्तुत किया गया है। मनोविश्लेषण शास्त्र की मान्यता है कि "वाह्य जगत की अपेक्षा हमारा भीतरी मन अधिक विशाल, गहन और जटिल होता है। मनोजगत की यह गूढ़ता मनुष्य की मूल सत्, रज, तम प्रवृत्तियों पर आधारित होते हैं। फ्रायड ने इड, इगो, सुपर इगो प्रधान पात्रों का वर्गीकरण कर उनके क्रिया-कलाप, मनोभाव, गुण-अवगुण, चरित्र स्वप्न, जिज्ञासा, क्रिया व्यापार एवं इसी दृष्टि से विशिष्ट पात्र तथा द्वैध व्यक्तित्व की चर्चा की है।"[2] मनोविश्लेषण शास्त्र के अनुसार इन्हीं तीनों वृत्तियों पर केन्द्रित पात्रों के सन्दर्भ में उनकी धारणा है कि "मस्तिष्क का वह प्रदेश जहाँ मनुष्य की आरम्भिक उमंगे, प्रेरणाएँ और प्रबल इच्छाएँ निवास करती हैं, यह प्रवृत्ति इड कहलाती है। वस्तुतः यह मनुष्य की मूल आदिम प्रवृत्ति है। आगे चलकर ज्यों-ज्यों व्यक्ति का सम्पर्क समाज से होता है, उसकी दृष्टि में विस्तार एवं बिखराव आता है, इगो उसे सभ्य बना देता है। इगो वह बौद्धिक अंश है जिसकी क्रियाएँ ज्ञात रूप में और नियंत्रित होती हैं। वस्तुतः इड की

---

1. शील निरूपण सिद्धान्त और विनियोग : डॉ0 जगदीश पाण्डेय, पृ0 4

2. मनोविश्लेषण और मानसिक क्रियाएँ : डॉ0 पद्मा अग्रवाल, पृ056

भावनाएँ इगो द्वारा नियंत्रित की जाती हैं। इनके ऊपर सुपर इगो होता है जो दोनों पर नियंत्रण करता है।"[1]

"पाश्चात्य विद्वान ई0एम0फास्टर ने चरित्र को महत्व देकर पात्रों का तद्वत वर्गीकरण किया है जिन्हें हम तीन रूपों में बँटा हुआ देख सकते हैं - "स्थिर, समतल, गतिशील पात्र।"[2]

उसके अनुसार वह पात्र जिन पर चतुर्दिक या परिवार्ष का वातावरण प्रभाव नहीं डालता ऐसे पात्र आरम्भ से अन्त तक समान रूप में दिखाई पड़ते हैं। अपरिवर्तन शीलता इन चरित्रों का प्राकृत धर्म है। इस सन्दर्भ में डॉ0 रणवीर रांग्रा का अभिमत है कि "पात्रों के स्वभाव तथा चरित्र के जो गुण अवगुण प्रकट होते है वे उत्तरोत्तर स्पष्ट तो होते हैं, पर बदलते नहीं। रचनाकार पहले से ही उसकी रूप रेखा इतनी सुदृढ़ और सुस्पष्ट बना लेता है। उसकी रूचि और अरूचि, प्रेम और घृणा, प्रवृत्ति और विवृत्ति के विषयों को ऐसा निश्चित कर देता है कि उन पूर्व निर्धारित सीमाओं को तोड़ने का प्रश्न उनके लिए उठता ही नहीं।"[3]

इन पात्रों के सन्दर्भ में फास्टर का मत है, कि स्थिर पात्रों के रूप में प्रायः कोई एक भाव या गुण ही मुख्य रूप से मूर्तिमान होता है, उनके चरित्र के रूप में उस भाव या गुण की ही धीरे-धीरे व्याख्या तथा खंडन एवं मंडन होता रहता है।

In there (of flot characters) purest form they are concerntrate around a single idea are quality. when their is more than on facter in them we get the beginning of the our be towards the round.[4]

---

1. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान : डॉ0 देवराज उपाध्याय पृ0 52
2. एस्पेक्ट ऑफ नावेल : ई0एम0 फास्टर, पृ0 65
3. हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास : पृ0 56
4. एस्टपेक्ट ऑफ दि नावेल : ई0एम0 फास्टर, पृ0 100

गतिशील पात्र या विकासशील :

उपर्युक्त पूर्वोक्त स्थिर पात्रों के विपरीत गतिशील पात्र परिवर्तनशील होते हैं। परिस्थिति का प्रवाह उन्हें गतिशील रखता है। सुख-दुख, करुणा और विलास उनके जीवन में नये आयाम प्रदान करते हैं, यदि लेखक सजग नहीं रहेगा तो ऐसे पात्र अस्वाभाविक अकृतिम लग सकते हैं। उक्त दोनों प्रकारों से भिन्न मिश्रित चरित्र वाले पात्रों की भी कल्पना की गयी है। इन पात्रों में जहाँ एक ओर प्रेम, दया, दाक्षिण्य, करूणा रहती हैं, वहीं दूसरी ओर मानव सुलभ ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार निम्न प्रवृत्तियां दिखाई देती हैं।

उपर्युक्त पंक्तियाँ भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नायक और उसके सहायक एतद् सम्बन्धी आधुनिक दृष्टि मन की दृष्टि से साधारण और विशिष्ट पात्र चरित्र के आधार पर एवं शील के आधार पर पात्रों का विभाजन प्रस्तुत किया गया है। आगे पात्रों के वाह्य रूपरेखा शारीरिक संरचना, मानसिक प्रवृत्तियों की दृष्टि से पात्रों का स्वरूप निर्धारण प्रस्तुत किया जा रहा है। यद्यपि यह कहना असंगत नहीं होगा कि व्यक्ति या चरित्र निर्माण में पौरुष और प्रतीची दोनों ही दृष्टियों में पात्रों की शारीरिक संरचना और मानसिक नियति पर यथेष्ट विचार किया गया था, किन्तु उसका आधार दर्शन ही था। जबकि आधुनिक दृष्टि व्यक्ति की वाह्य संरचना, आधुनिक परिवेश और आन्तरिक चिन्तन ये तत्व महत्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। इस दृष्टि से प्लेटो ने मनुष्य या पात्रों को तीन भागों में बाटा है।

1. बुद्धिजीवी (इन्टेलेक्चुवल)

2. महात्वाकांक्षी एवं यशोलिप्सा प्रधान

3. शारीरिक आवश्यकताओं से अनुशासित एवं उत्प्रेरित।

परवर्ती विचारकों ने पृथ्वी, अग्नि, जल, आदि तत्वों के आधार पर हिप्पोप्लेटनिज्म ने मनुष्य को चार श्रेणियों में रखा है :-

1. आशावादी अथवा चुस्त एवं सक्रिय

2. क्रोधी अथवा दृढ़ एवं सद्यः उत्तेजनशील

3. फ्लेष्मिक अथवा सुस्त एवं मन्द बुद्धि

4. विष अथवा खिन्न एवं निराशावादी।

मनोवैज्ञानिक शब्दावली संवेगों के आधार पर उक्त भागों को इस रूप में

ही कहा जा सकता है। -

1. प्रफुल्ल इलेटेड

2. विषण्य अथवा उदास (डिप्रेस्ट)

3. क्रोधी एवं चिड़चिड़ा (इरीटेबुल)

4. अस्थिर एवं चंचल

कैसमर ने अपना विभाजन प्रस्तुत करते हुए मनुष्य के चार रूप इस प्रकार बताये हैं :-

"1. कृषकाय अथवा अल्पविकसित (स्थनेकटाइप)

2. पुष्टकाय व्यायामशील योद्धा अथवा पहलवान (एथलेटिक टाइप)

3. पीनकाय (पिनकनिक टाइप)

4. विषम आनुपातिक असामान्य शरीर अवयव वाले (डिस्प्लास्टिक)"[1]

मनः संगठनात्मक दृष्टि से पात्रों का वर्गीकरण :

ऊपर शारीरिक अनुपात की दृष्टि से मनुष्य या पात्रों का वर्गीकरण किया गया है। यहाँ मन के संगठन के आधार पर द्विविध पात्रों का स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। "मनोवेक्ता जेम्स ने कोमल स्वभाव वाले (टेन्डर माइन्डेड) और दूसरे कड़े स्वभाव वाले (टफ माइन्डेड) व्यक्तियों की चर्चा की है। कोमल स्वभाव वाले आदर्शवादी धार्मिक परम्पराओं में विश्वास रखने वाले जबकि कड़े स्वभाव वाले वस्तुवादी अधार्मिक और अवसरवादी होते हैं।"[2] जिस प्रकार फ्रायड ने मन के तीन भाग कर तदनुरूप पात्रों के क्रिया व्यवहार की कल्पना की थी उसी प्रकार "युंग ने दो प्रकार के व्यक्तियों की चर्चा की है। - अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और बहिर्मुखी व्यक्तित्व। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रधान व्यक्ति स्वसम्बद्ध समस्याओं पर केन्द्रित रहता है। वह संकोची, सामाजिक भागदौड़ से दूर रहने

---

1. पात्रावतरण की अवधारणा पृ0 179-180 पर उद्धत फिजिकल एण्ड कैरेक्टर पृ0 19

2. प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी (असामान्य मनोविज्ञान) डॉ0 रामकुमार राय पृ0 111

वाला अपने आन्तरिक दुनियाँ में ही लीन रहता है। इसकी अपेक्षा बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रधान व्यक्ति वाह्य संसार की वस्तुओं पर रूचि रखता है। चतुर व्यवसायी, समाज सुधारक इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। इन दोनों वर्गों के भी दो-दो उपभेद कहे गये हैं। भाव प्रधान और विचार प्रधान।''[1]

सारांश यह है कि पात्रों के चरित्र, व्यक्तित्व आंतरिक या मनोजगत के आधार पर चाहे जितने ही प्रकार के वर्गीकरण प्रस्तुत किये जायें, किन्तु व्यक्ति को भलीभाँति समझना असम्भव नहीं परन्तु कठिन अवश्य है। क्योंकि मानव को किसी एक विशेष खांचे या श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। इस प्रकार के प्रस्तुत वर्गीकरण के सम्बन्ध में विप्रतिपति करते हुए डॉ0रामशंकर त्रिपाठी ने लिखा है कि ''इन प्रकारों में से कुछ विलक्षणताओं की उत्पत्ति की कल्पना एक ही व्यक्ति में की जाती है जो सम्भव नहीं। दूसरी बात यह है कि वर्गीकरण कार्ण और कार्य में भ्रम पैदा करता है, यह कहना कि एक अर्न्तमुख व्यक्ति एकान्त में रहकर अपने को भलीभाँति व्यवस्थित कर सकता है भ्रमात्मक है। किसी एक व्यक्ति को एक विशिष्ट वर्ग में रख देना उसके व्यवहार के कारण की ओर संकेत न कर उसके व्यवहार की व्याख्या करना है। इन सारी विप्रतिपत्तियों के बावजूद फिर भी मानना पड़ेगा कि उपर्युक्त व्यक्ति प्रकारों की व्याख्यापन में पर्याप्त शक्ति है और उसके आधार पर व्यक्ति का वर्गीकरण करना असंगत नहीं।''[2]

व्यक्तित्व के लक्षण :

पहले कहा जा चुका है कि विभिन्न श्रेणीबद्ध प्रकारों में विशिष्ट गुण होते हैं, किन्तु वह बहुत कुछ वैज्ञानिक नहीं था। अतः यहाँ व्यक्तित्व के कुछ विधायक, कारक, तत्वों या लक्षणों की चर्चा की जा रही है। तत्व विश्लेषण के आधार पर आर0बी0कैटल ने व्यक्तित्व के लक्षणों की एक सूची प्रस्तुत की है, यहाँ इस सूची को प्रस्तुत किया जा रहा है, इसका आधार मन की प्रेरणा, क्रिया-कलाप, नैतिकता और तद्जन्य गुण ही है।

---

1. डेवलपमेंन्ट ऑफ परसनालिटी : युंग, बीसवाँ भाग

2. पात्रावतरण की अवधारणा पृ0 195

व्यक्तित्व के प्राथमिक लक्षण :

1.	*विश्वासमयता*	*अविश्वासमयता*
	अग्रगामी	विस्थापित
	मधुर स्वभावी	उदासीन
	अनुकूलनशील	अगतिक
2.	बुद्धि	मानसिक दोष
	बुद्धिमान	मूर्ख
	शुद्धगति	असावधान
	विचारशील	अविवेकी
3.	संवेगात्मक प्रौढ़ता	संवेगात्मक अप्रौढ़ता
	वास्तविकतावादी	चेतना प्रवाही
	सुस्थिर	अनियन्त्रित
	संतोषी	शीघ्र उत्तेजनशील
4.	प्रबलता	नमनीयता
	दुर्दम	नम्र
	आत्म गौरवशील	अपने आरोपित न करने वाला
	दृढ़	भावुक
5.	प्रसन्न चित्तता	अदासीनता
	प्रसन्न	अवसादपूर्ण
	आशावादी	निराशावादी
	सामाजिक	एकान्तसेवी
6.	भावुकता	दृढ़ता
	आदर्शवादी	झक्की
	अन्तर्ज्ञानी	तार्किक
	दयालु	क्रूर

7.	सभ्यता	असभ्यता
	विचारवान	संकुचित
	शिष्ट	साधारण
	सौन्दर्यप्रिय	रूक्ष
8.	प्रौढ़ता	अप्रौढ़ता
	स्वतंत्र	पर-निर्भर
	अध्यवसायी	अकर्मण्य
	कार्य-कुशल	अकुशल
9.	प्रशस्तता	बाधकता
	दयालु	दुराग्राही
	सहकारी	अनुदार
	स्पष्टवादी	अस्पष्टवादी
10.	ऊर्जस्विता	स्नायुदौर्बल्य
	बब्बर	शक्तिहीन
	निष्ठावान	अस्थिर, मानस
	अध्यवसायी	पलायनशील
11.	भग्नाशा-सहिष्णुता	अतिभावुकता
	सुव्यवस्थितचित्त	बाल-प्राकृतिक
	शांत	चंचल
	धीर	अधीर
12.	सदबुद्धि	असदबुद्धि
	उत्साही	भग्नाशा
	कृपालु	विरोधी
	विश्वासी	अविश्वासी।।[1]

इस प्रकार उपन्यासों में पात्रों के चरित्र या व्यक्तित्व के लिए पौरुषता एवं प्रतीची

---

1. मनोविज्ञान : सरयू प्रसाद चौबे पर उद्धृत

दृष्टियों से विभाजन प्रस्तुत कर उनके गुण-दोषों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। यहाँ यह कहा जा सकता है, कि पात्रों के चरित्र और व्यक्तित्व को समझने के लिए शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक, चारित्रिक, आदि दृष्टियों से जो उसमें चरित्र या व्यक्तित्व को समझा जा सकता है इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि वैदिक प्रतिभा, ज्ञान एवं विचारधारा, अर्जित एवं जन्मजात गुण एवं संस्कार तथा व्यक्ति का स्वास्थ्य एवं सौन्दर्य, स्वरूप उसके व्यक्तित्व या चरित्र के निर्माण में कारक हैं।

पात्रावतरण :

पिछले पृष्ठों में भारतीय और पाश्चात्य साहित्य और सिद्धान्त की दृष्टि से पात्र चरित्र और उसके तत्व व्यक्तित्व और उसके कारक तत्व, पात्रों की महत्ता, पात्रों का विभिन्न आधारों पर वर्गीकरण, प्रस्तुत किया गया है। यहाँ साहित्य में पात्रों के अवतरण एतद् सम्बन्धी सिद्धान्तों की चर्चा की जा रही है।

पात्रों के प्रयोग सम्बन्धी सिद्धान्तों को पात्रावतरण सिद्धान्त कहते हैं। इसके अन्तर्गत पात्रों के शारीरिक चेष्टा और बाह्य आकृति वर्णन, कार्य, प्रेरणा अथवा अन्य किसी विधि से पात्रों के व्यक्तित्व का प्रस्तुतीकरण ही पात्रावतरण है। प्रश्न यह उठता है कि साहित्यकार अपनी रचना में तन्नविष्ट पात्रों को किस प्रकार पृथक-पृथक स्वरूप देता है। यदि यह कहा जाय, कि लेखक उसका नाम, उसका रूप सौन्दर्य, उसकी क्रिया कलापों, को अलग-अलग निरूपित करता है तो यह सिद्धान्त अपनी मूलरूप में बहुत अधिक उपयुक्त नहीं है। क्योंकि "पात्रों" को एक दूसरे से न्यारा दिखलाना चरित्र चित्रण का साध्य नहीं उसका साध्य तो उनके चरित्र का प्रकाशन है।"[1]

यहाँ डॉ0 राँग्रा के विचार से सहमत हुआ जा सकता है "क्या पात्रों के केवल न्यारे गुण या स्वभाव के प्रकाश से उनका चरित्र चित्रण अप्रकृत और अधूरा न रह जायेगा क्योंकि मनुष्य मात्र का मूल्य एक होने से उनमें भिन्नता होते हुए भी कुछ न कुछ समानता अवश्य रहती है। इस प्रकार आदमियों के चरित्र में समानताएँ विभिन्नताएँ दिखाना उपन्यास का मुख्य कर्तव्य है।"2

---

1. हिन्दी उपन्यास में चरित्र-चित्रण का विकास : डॉ0 रणवीर रांग्रा, पृ027

2. वही, पृ0 28

पात्रावतरण की व्याख्या करते हुए रॉबिसंन ने कहा है, कि कथा में पात्रों को पर्याप्त मूर्तिमत्ता ओर स्वाभाविकता के साथ चित्रित करना कि वे पाठ्कों के लिए छाया नाम न रहकर पुस्तक के समतल पन्नों से उभर आवे और कम से कम उस समय के लिए तो व्यक्तित्व के मूल तत्वों से सम्पन्न हो जाये।

The characterization mains briefly the sitting of people in the story with a sufficient degree of visiability and posbility show that they may for the readers cambrifge from the flat page are more then shadowy mans and possess for the time at least the rudements of personality.[1]

इस प्रकार पात्रों का चरित्र चित्रण करना की वे व्यक्तित्व धारण कर पाठ्कों की कल्पना में सजीव होकर उभरना चरित्र चित्रण या पात्रावतरण की सर्वाधिक सफलता है। इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए डॉ0 राँग्रा ने लिखा है कि – "रचनाकार को अपने पात्र के अन्तःकरण के सम्पूर्ण समाज उसके आसपास की परिस्थिति को उसके मन पर होने वाली प्रतिक्रिया उस प्रतिक्रिया की उसके अन्तःकरण पर संस्कार डालने की शक्यता, आवश्यकता और विभिन्न प्रसंगों में उसके अन्तःकरण में उत्पन्न विचारों और प्रकट होने वाले विचारों के कम या अधिक सात्विक, राजस, तामस होने का पूरा-पूरा चित्रण करना होगा।[2]

बात यह है, कि पात्रों का चरित्र-चित्रण या पात्रावतरण नाटक, उपन्यास का प्रमुख स्थायी तत्व है। पात्रों की सजीवता और उनकी वास्तविकता पर साहित्यकार की सफलता आश्रित रहती है। इस प्रकार पात्रावतरण से तटस्थ रहकर कोई भी रचनाकार अपने पाठ्कों को उद्वेलित नहीं कर सकता।

पात्रावतरण का भारतीय सिद्धान्त :

भारतीय साहित्यशास्त्र में वस्तु, नेता तथा रस के आधार पर कथावस्तु की सफलता का वरीयान आधार नेता अथवा नायक या पात्रावतरण को माना गया है। भारतीय

---

1. राइटिंग फार यंग पीपुल : राबिन्सन, पृ0 11

2. उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास, पृ029

सिद्धान्त के मूल में 'यतो धर्मस्य ततो जयः'' का सिद्धान्त कार्य करता रहा है। कर्म फल के इस सिद्धान्त की स्वीकृत का तात्पर्य यह है कि बुरा करने वाले को बुरा और भला करने वाले को भला परिणाम मिलना आवश्यक है।

इस प्रकार साहित्य में रस को चरम स्थिति या फल मानकर उसकी प्राप्ति हेतु ''नायक, उपनायक इत्यादि 48 भेद किये गये हैं। इस हेतु नायकों के नाम उनकी वर्ण वंश परम्परा के अनुकूल होना चाहिए और इस नाम को अंगीरस के अनुकूल भी होना चाहिए। उनका चरित्र परम्परा अनुमोदित आनुवांशिकवृत्ति व्यवसाय सामयिक सम्बन्धों पर आद्रित होना चाहिए, इसी को भारतीय आचार्यो ने प्रकृति कहा है। एक बात और ध्यान देने योग्य है, विशेष रूप से नाटकों में कि पात्र कथोपकथन के मध्य जिन सम्बोधनों का प्रयोग करता है, वे भी उसके चरित्र चित्रण को सूचित करते हैं। प्रायः नाटकों में ब्राह्मण, आदित्य, वैश्य, .शूद्र या ऋषि, राजा, सेनापति, मंत्री इत्यादि से सम्बन्धित सम्बोधन व्यवसाय और शिल्प को सूचित करते हैं। इसी चरित्र चित्रण के मूल में पात्रों के कायिक, वाचिक सात्विक या मानसिक व्यापार चेष्टा का वृत्ति रूप में उल्लिखित किया गया है। आनन्द वर्धन, भोज, राजशेषर, अथवा भरत सभी आचार्यो ने भारतीय सात्विकी, कौसकी, आर्यभटी, वृत्तियों का उल्लेखकर पात्रों के आन्तरिक और बाह्य व्यापार को सूचित करते हैं।''[1]

तात्पर्य यह है, कि भारतीय पात्रावतरण विधान पर दृष्टिपात करने से यह निष्कर्ष सहज ही उपलब्ध होता है, कि प्राचीन भारतीय पात्रावतरण विधान रस सिद्धि को अन्तिम लक्ष्य मानता रहा है इसलिए वह इतना संकीर्ण या वर्गवद्ध हो गया कि परवर्ती साहित्यकारी में उससे बाहर जाना कठिन हो गया क्योंकि रस को केन्द्र बिन्दु बनाकर नायकों के वंश उनके नाम सम्बोधन आभूषण शारीरिक, मानसिक, चेष्टाएँ, वृत्तियाँ वाक् व्यापार के रूप हेतु वेश-भूषा, देशानुराग वर्ण की रचना, अंग प्रत्यंग, की सजावट हेतु उपादनों की इतनी विस्तृत चर्चा हुई है कि वे पात्र स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं रख पाये।

---

1. विस्तृत अध्ययन हेतु नाट्यशास्त्र, ध्वन्यालोक, काव्य मीमांसा, दशरूपक, अभिनव भारती और साहित्य दर्पण द्रष्टब्य है।

पात्रावतरण या पाश्चात्य सिद्धान्त :

यद्यपि पाश्चात्य समालोचन के चरित्र चित्रण की अनेंक सीमाएँ निर्धारित की गयीं थी। डॉ0 नगेन्द्र ने अरस्तू के षट सिद्धान्तों की चर्चा की है।

1. भद्रता 2. औचित्य 3. जीवानानुकूलता 4. एकरूपता 5. सम्भाव्यता 6 . श्रेष्ठ चित्रकारों का आदर्श''[1]

यहाँ यह कहा जा सकता है, कि इस चरित्र चित्रण के आधार फलक पर आदर्शमयता का अत्यधिक रंग चढ़ा हुआ है। वस्तुतः चरित्र को उत्कृष्ट और आदर्श बनाने के लिए जरूरी नहीं है, कि वह निर्दोष हो। बड़े से बड़े लोगों में भी कुछ न कुछ कमजोरियाँ होती ही हैं। इसलिए चरित्र को जीवन्त और भव्य बनाने के लिए उन कमजोरियों या दोषों का दिग्दर्शन कराने से कोई हानि नहीं होती। इसके विपरीत आदर्श ही आदर्श रूप प्रस्तुत करने पर पात्र देवता हो जायेगा और मानव चरित्र से उसका सम्बन्ध ही छूट जायेगा। यहाँ यह अवश्य विचारणीय है, कि किसी की कमजोरियों को इस रूप में नहीं चित्रण करना चाहिए कि औदात्य का सद्भाव समाप्त हो जाय। यथार्थ चित्रण में छुद्रता का कोई स्थान नहीं है। इसी चरित्र चित्रण के स्वरूप का निर्धारण मैरेन एलवुड ने निम्नलिखित छः रूपों में प्रस्तुत किया है। इस हेतु वह तीन चरणों का उल्लेख करता है। प्रथमतः साहित्यकार अपने चरित्र के चित्र को मस्तिष्क में स्पष्ट रूप से सुरक्षित करता है। दूसरे चरण में पात्र की एक दो प्रधान विशेषताओं का संकलन या उल्लेख करता है और अन्तिम चरण में उन विशेषताओं के सम्पूर्ण प्रभाव का प्रदर्शन करता है।''[2]

इस प्रकार एलवुड ने पात्र के लिए छः आधार प्रस्तुत किये हैं। चरित्र को जीवन्त बनाकर उसके लिए ज्वलन्त समस्या देकर पात्र के व्यवहार को तार्किक स्थिति में रखकर पात्र के गुण एवं चारित्रिक विशेषताओं को तर्कसंगत और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत कर पात्र से सम्बन्धित कथा आवेगों एवं विचारधाराओं की स्वाभाविक योजना कर और पात्र के कार्य के लिए कारण और अवस्था देकर उसका चित्रण करना चाहिए।''[3]

---

1. अरस्तू का काव्य शास्त्र, पृ0 40

2. कैरेक्टर्स मे प्योर स्टोरी, पृ0 20

3. वही, पृ0 118

होरिस ने "औचित्य सिद्धान्त को उपवृहित कर पात्रावतरण के प्रतिमान के रूप में प्रस्तुत किया है। जिसमें पात्रों की अवस्था तदनुकूल गुण परम्परा, पालन और जीवनानुकूलता आदि बातों की चर्चा की है।"[1] पाश्चात्य साहित्य में पात्रावतरण के सिद्धान्त और व्यवहार के रूप में जिन प्रतिमानों का उल्लेख किया गया है उनमें त्रिआयामी सिद्धान्त प्रमुख है। इसकी संक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है :-

त्रिआयामी सिद्धान्त :

प्रसिद्ध समीक्षक लाजस एग्री ने क्रियात्मक सिद्धान्त की चर्चा की है

1. शारीरिक 2. सामाजिक 3. मनोवैज्ञानिक[2]

इनके आभाव में श्रेष्ठ जीवन्त प्रभावी चरित्र चित्रण नहीं हो सकता।"3यहाँ उसकी संक्षिप्त प्रक्रिया प्रस्तुत की जा रही है।

1. शारीरिक आयाम :-

योनि, अवस्था, ऊँचाई, वजन, बाल, आँखों एवं त्वचा का रंग हाव-भाव, वाह्य आवृत्त, सिर का आकार, चेहरा, उंगलियाँ, जन्मजात चिन्ह, रोग, अनियमितता, कुरूपता एवं वंश परम्परा प्राप्त गुण-अवगुण।

2. सामाजिक आयाम :-

क. श्रमिक, शासक, मध्यम।

ख. आजीविका - कार्य के प्रकार, अवधि, आय, कार्य की शक्ति।

ग. शिक्षा - इच्छित विषय, योग्यता, विद्यालय का नाम।

घ. गार्हस्थ्य जीवन - अभिभावक, जीवित या मृत, आय के स्रोत या सीमा अभिभावकों की आदतें।

ङ. धर्म

च. जाति और राष्ट्रीयता

छ. जाति-विरादरी, मित्र, क्लब इत्यादि।

---

1. पाश्चात्य काव्य शास्त्र की परम्परा : डॉ0 सावित्री सिन्हा, पृ0 64

2. द आर्ट ऑफ ड्रेमेटिक राइटिंग, पृ0 33

ज. राजनीतिक पहुँच या योग्यता।

झ. मनोविनोद, रूचियाँ, पठित पुस्तकें, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ।

3. मनोवैज्ञानिक आयाम :-

1. यौवन जीवन, नैतिक स्तर,

2. वैयक्तिक महत्वाकाँक्षा

3. नैराश्य प्रमुख निराशाएं।

4. स्वभाव (क्लारिक इजीगोइंग पेसीमिस्टिक)

5. जीवन के प्रति दृष्टिकोंण

6. जटिलताएँ - प्रेम बाधा, अंधविश्वास आदि।

7. वाह्योन्मुखता - अन्तरोमुखता, उभयोन्मुखता।

8. योग्यताएँ - भाषाएँ, ज्ञान-विज्ञान, कला कौशल

9. गुण - कल्पना, निर्णय, रूचि।"[1]

इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी का अभिमत है कि "उपर्युक्त सूची के अनुसार पात्रों के शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अध्ययनोपरान्त उनका चरित्र अधिक सम्पन्नता से चित्रित किया जा सकता है। सामान्य परिस्थिति में भी शारीरिक अथवा सामाजिक मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोंण से भिन्न पात्रों की प्रतिक्रियाएँ असमान होंगी। उनकी प्रतिक्रियाओं, चेष्टाओं, अर्न्तद्वन्द आदि के सफल चित्रण के लिए उपर्युक्त तथ्यों का ज्ञान अनिवार्य है।"[2]

सम्बद्ध बनाम निःसंग सिद्धान्त :

यहाँ स्मरणीय यह है कि प्रत्येक रचनाकार अपने पात्रों को नया रूप एक नया आकार भिन्न व्यक्तित्व और एक चरित्र रूप में प्रस्तुत करना चाहता है। इस हेतु रचनाकार एक निश्चिन्त प्रक्रिया नहीं अपनाते हैं। इस दृष्टि से रचनाकर के पास एक दृष्टिकोंण होता है। उसका पात्र एक निश्चित जीवन दर्शन पर आधारित होता है। अतः चरित्र-चित्रण करते समय साहित्यकारों द्वारा प्रयुक्त प्रक्रिया को दो भागों में बाँटा जा सकता है। एक प्रकार

---

1. द आर्ट ऑफ ड्रेमेटिक राइटिंग, पृ0 373
2. पात्रावतरण की अवधारणा, पृ0 250

के वे पात्र साहित्यकार द्वारा रचित होते हैं जिनके जन्मकाल से लेकर शिक्षा-दीक्षा, आचार्य-व्यवहार के साथ रचनाकार लगा रहता है। दूसरे प्रकार के वे रचनाकार होते हैं जो पात्रों को जन्म देने के बाद उनकों आकार लेने के लिए उन्मुक्त छोड़ देते हैं। इसी सिद्धान्त को सम्बद्ध सृजन का सिद्धान्त अथवा निःसंग सृजन का सिद्धान्त कहा जाता है।

अभिज्ञान सिद्धान्त :

कोई भी साहित्यकार चाहे कितना ही उर्वरा शक्ति सम्पन्न हो, कल्पना चाहे कितनी नव-नव उन्मेषशालिनी हो, यदि उसका पात्रों का अभिज्ञान दुर्बल है, उसके पात्र पूर्णरूप से अस्तित्व में नहीं आ पाते; तो उच्च उदात्त कलादृष्टि सम्पन्न पात्रों का अवतरण नहीं कर सकता। इसलिए सफल रचनाकार को पात्रों के चुनाव उनके नामकरण और उनके उद्देश्य की पूर्ति के लिए किये गये कार्यो को चतुर्दिक परिवेश से ही चयन करना चाहिए। जैसा कि मुंशी प्रेमचन्द्र ने कहा है कि "किसी मौलिक व्यक्ति से प्रेरणा का बीज प्राप्त किये बिना जीवनदायी चरित्र का निर्माण नहीं किया जा सकता।"[1] यहाँ यह भी विचारणीय है कि मानवीय प्रकृति का यथेष्ट ज्ञान और स्पष्ट धारणा के बिना न तो जीवन्त पात्र का अवतरण हो सकता है न ही उसके चरित्र का सफल चित्राँकन। इस हेतु आवश्यक है कि अपने चुतर्दिक परिवेश में लेखक जो कुछ देखे याद रखे और अपने स्मरण शक्ति के बल पर यथासमय उसका सदुपयोग कर सके। पाश्चात्य जगत में तो लेखकों के पास डायरी या दैनन्दिनी या नोट बुक रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया था।

व्यक्ति बनाम टाइप सिद्धान्त :

प्रसिद्ध उपन्यासकार जैनेन्द्र ने टाइप और व्यक्ति में अन्तर करते हुए लिखा है कि "टाइप में चरित्र की निजता नहीं होती और व्यक्ति में निजत्व है। व्यक्ति औरों से भिन्न होता है और टाइप मिलता-जुलता।"[2] यहाँ यह प्रश्न उठ खड़ा होता है, कि साहित्यकार जिस प्रकार पात्रों का चरित्र चित्रण करता है, वह एक ओर व्यक्ति होता है अथवा टाइप

---

1. कुछ विचार : मुंशी प्रेमचन्द्र, पृ0 53
2. साहित्य का श्रेय और प्रेय, पृ0 178

होता है क्योंकि लेखक अपनी रचना में अनेंक पात्रों की सर्जना करता है। रूप, गुण, क्रिया, व्यापार सब भिन्न होते हुए वे कहीं न कहीं टाइप रूप में दिखाई पडने लगते हैं। अन्त में प्रश्न फिर वहीं आकर पहुँच जाता है, कि व्यक्ति का व्यक्तित्व कहाँ है और वह क्या है तथा टाइप व्यक्ति से भिन्न है, तो किस कमी के कारण भिन्न है।

सारांश यह है कि पात्रावतरण के लिए आयामत्रय सिद्धान्त बहुत दूर तक लेखक को चरित्र के व्यक्तित्व अंकन में सहायक होता है। आगे हम पात्रावतरण की प्रविधि पर प्रकाश डालेंगे।

पात्रावतरण की प्रविधि

1. प्रकाश प्रणाली :

पात्रावतरण की प्रथम प्रणाली प्रकाश प्रणाली कहलाती है। जिसके माध्यम से प्रस्तुत पात्र का व्यक्तित्व पूर्वांग, उसके चरित्र की निर्धारित मूल लक्षणों का परिपूर्ण विकास किया जाता है। प्रारम्भ में ही उसके व्यक्तित्व से मेल खाते सुगठित रूपरेखा प्रसूत कर बाद में अन्तरंग, बहिरंग स्थिति, अवस्थिति के घात प्रतिघात से पुष्टि किया जाता है। इस सन्दर्भ में डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी की धारणा है कि "यदि चरित्र की रेखाएँ समभाव से अद्यन्त एक जैसी रहीं तो पात्रों में अनाकर्षण उत्पन्न हो जायेगा। इस सन्दर्भ में स्कन्दगुप्त, नदी के द्वीप, गोदान उदाहरण है जिनके पात्र बहुत आकर्षण बन पड़े है।[1]

2. विकास प्रणाली :

चरित्र का विकास घटना परम्परा के अन्दर से उसके जीवन में परिवर्तन उपस्थित करना विकास प्रणाली कहलाती है। पात्रों का अवतरण या चित्रण जितना ही स्पष्ट गहरा और विकासपूर्ण होगा, उतना ही प्रभाव पढ़ने वाले पर पड़ेगा। इस प्रणाली के अन्तर्गत पात्र परिवेश से प्रभावित होकर कथानक के साथ ही विकसित होते है। इनकी कोई पूर्व सीमाएँ नहीं इंगित होती और आरम्भ से ही अपूर्ण रहते हैं। इस सम्बन्ध में डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी की अवधारणा है कि "प्रकाश पात्रों की परिस्थितियाँ उनका परिपाश तो बदलता रहता है

---

1. पात्रावतरण की अवधारणा, पृ0 272

किन्तु वे स्वयं नहीं बदलते, जबकि विकास प्रणाली के अर्न्तगत पात्रों की परिस्थितियाँ चाहे न बदले। एक दूसरे की क्रिया प्रतिक्रिया से उनका विकास होता रहता है।"[1] यहाँ यह कहना अप्रासांगिक न होगा कि विकास का अर्थ न तो अस्वाभाविक, अविश्वसनीय या चमत्कारिक परिवर्तन होता है, न ही प्रकाश का अर्थ अपरिवर्तनशीलता।

प्रकाश एवं विकास प्रणाली के दो-दो भेद किये जा सकते हैं। साक्षात् तथा परोक्ष इन्हें विश्लेषणात्मक तथा नाटकीय या अभिनयात्मक कहा जाता है।"[2]

क. साक्षात् पद्धति :-

इसके अन्तर्गत रचनाकार अपने पात्रों का निरूपण चित्राँकन स्वतः करता चलता है। वह पात्रस्थ विचारों संवेदनाओं उसकी प्रतिक्रियाओं को कार्यकारण सम्बन्ध से जोड़कर स्वाभिमत प्रकट करता है।

ख. परोक्ष पद्धति :

इसके अन्तर्गत पात्र से अपने को विलग कर पात्रों की प्रतिक्रियाएँ, कार्य व्यवहार, संवेदनाओं पर अन्य पात्रों की टीका-टिप्पणी से उसके चरित्र को स्पष्ट करता है। यह द्वितीय पद्धति नाट्य पद्धति कहलाती है। नाटक के अतिरिक्त परोक्ष पद्धति ऐतिहासिक या अन्य पुरूष वाचक आत्म चरित्रिक अथवा उत्तम पुरूष वाचक एवं पत्रात्मक तीन पद्धतियाँ प्रचलित है। नाटक एवं नाट्येत्तर विधाओं में चरित्र चित्रण की दृष्टि से मूलभूत अन्तर यह है कि नाटक के पात्रों का चरित्र चित्रण में रचनाकार का हस्तक्षेप नगण्य सा ही रहता है। अन्य विधाओं में रचनाकार को यह सुविधा उपलब्ध रहती है। वस्तुतः पात्र का चित्रण चाहे अन्य पुरूष में हो चाहे पात्र स्वयं अपना आत्मकथन कार्य व्यापार की व्याख्या करे अथवा पात्र से वह अपने कार्य का स्पष्टीकरण दे, पात्रों को ठीक-ठीक समझने के लिए उसका परिपार्श्व उसके व्यक्त यत्नज, अयत्नज, आचरण से ही उसका स्पष्ट बिन्दु उभरता है। यहाँ यह देखना है कि चाहे रचनाकार साक्षात् या विश्लेषणात्मक प्रणाली अथवा परोक्ष या नाटकीय प्रणाली चाहे जिसका उपयोग करे वह किन-किन ढ़ंगों से या उपायों का आश्रय लेता है। जिससे उसके पात्रों का आकार-प्रकार उसकी रेखाएँ स्पष्ट बिम्ब उपस्थित कर सके।

---

1. पात्रावतरण की अवधारणा, पृ0 274

2. साहित्यालोचन : बाबू श्याम सुन्दर दास, पृ0 152

1. बहिरंग चित्रण :-

क. पात्रों का नामकरण :-

इस प्रणाली के अन्तर्गत पात्रों का बहिरंग चित्रण करने हेतु रचनाकार अपने पात्रों को किसी न किसी नाम से अभिहित करता है। इससे वह दूसरे पात्रों से भिन्न हो जाता है, जिस प्रकार वस्तु जगत में माता-पिता अपने पुत्र का नाम संस्कार करते हैं । इसी प्रकार साहित्यकार अपने पात्रों का नाम रखकर उनके चरित्र विकास की एक संक्षिप्त रूपरेखा पाठकों के मन पर अंकित करने का प्रयास करता है। यद्यपि ऐतिहासिक या वैज्ञानिक नाटकों, काव्यों, उपन्यासों या आत्मकथाओं में जो नाम होते हैं उसे साहित्यकार को परम्परित रूप में प्राप्त होने पर भी उसकी रूपरेखा वह अपने ढ़ंग से प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से, उपन्यासकारों द्वारा प्रयुक्त नामों पर विचार करें तो दिखाई पड़ेगा कि देशकाल, जाति, वर्ग वृत्तियों के आधार पर नामकरण किया जाता रहा है। इस नामकरण प्रणाली के सन्दर्भ में डॉ0 रणवीर रांग्रा का मत है कि "पात्रों के नामों द्वारा उनके चरित्रोद्‌घाटन की प्रणाली बडी पुरानी है। इस प्रणाली की सार्थकता या उपयोगिता के बारे में चाहे जो मत हो किन्तु इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस प्रणाली का प्रयोग करने वाला लेखक चरित्रांकन के प्रति उदासीन नहीं हो सकता।"[1]

ख. पात्रों के प्रथम परिचय में चरित्र :-

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। अपने दैनिक जीवन में वह अनेंक लोगों से मिलता है, किन्तु वह सभी से आकृष्ट नहीं होता कभी-कभी व्यक्ति विशेष के प्रथम दर्शन से मनुष्य अप्रभावित हुए नहीं रहता। इसी प्रकार साहित्य में कोई न कोई पात्र अपने प्रथम परिचय में हमारी इतनी उत्सकुता जाग्रत कर देता है कि उनके विषय में पाठक सब कुछ जान लेना चाहता है। डॉ0 रणवीर रांग्रा ने इस भेंट के सम्बन्ध में यह कहने का प्रयास किया है कि "प्रथम भेंट की छाप में हम जो धारणा बनाते हैं कभी-कभी हमें यह बदलना पडता है। लेखक मानव मन की इस विशिष्टता से परिचित होता एतदर्थ वह पाठकों के

---

1. हिन्दी उपन्यासों में चरित्र चित्रण का विकास, पृ0 103

प्रथम भेंट में अपने मनोनुकूल छाप का उपयोग करता है।''[1]

ग. आकृति, वेश-भूषा वर्णन :

पात्रों के चरित्र चित्रण में उनके पात्रों के मध्य अन्तर निरूपित करते समय साहित्यकार उनकी आकृति और वेशभूषा का स्पष्ट सजीव चित्रांकन करता है। आलपार्ट विद्वान कहता है कि ''आकृति का चरित्र और स्वभाव से गहरा सम्बन्ध माना जाता है। यह अनुमान चाहे ठीक निकले या निकले किन्तु पाठक इस पर विश्वास करता है''[2] साहित्य जगत में नख-शिख वर्णन वेश-भूषा का वर्णन आदि से उसके सामाजिक स्तर को समझने की परम्परा अतिप्राचीन काल से रही है। लेखक पात्रों के अंग प्रत्यंग का सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन कर उसकी चारित्रिक विशिष्टता का रेखांकन करता है। उपन्यास के क्षेत्र में देवकीनन्दन खत्री से लेकर मुंशी प्रेमचन्द्र, वृन्दावनलाल वर्मा, जैनेन्द्र सभी प्रमुख उपन्यासकारों ने इस शैली का वर्णन किया है।

घ. स्थिति अंकन एवं क्रिया प्रतिक्रिया चित्रण :

पात्रों की क्रिया प्रतिक्रिया का अंकन करने के पूर्व लेखक को यह ध्यान रखना चाहिए कि स्थिति का सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण करे, क्योंकि वे ही व्यक्ति को उदीप्ति करती है। पात्रों की स्थिति के अंकन के लिए उसके परिवेश का चित्रांकन आवश्यक हो जाता है, यह परिवेश ही पर्यावरण के आस-पास के छोटे-छोटे विवरण व्यक्ति के संकल्प और उसकी प्रकृति के चित्रण के लिए बहुत आवश्यक होता है। रैन बैलेक ने इस प्रकार के चित्रण की अपनी पक्षधरता प्रकट की है।''[3]

तात्पर्य यह है कि पात्रों की क्रिया प्रतिक्रिया के मूल में परिवेश भौतिक और सामाजिक कारण में कार्य कारण का सम्बन्ध होता है। कुशल लेखक पात्रों को विभिन्न परिस्थितियों में डालकर उनको व्यक्त होने वाली क्रिया प्रतिक्रिया का ऐसा चित्रण करता है कि पाठक की कल्पना में पात्र उसका चरित्र और वो परिस्थितियाँ स्पष्ट साकार हो जाती हैं।

---

1. *हिन्दी उपन्यासों में चरित्र चित्रण का विकास*
2. *ए साइक्लॉजिक इन्टर प्रिटेशन, पृ0 66*
3. *साहित्य सिद्धान्त, अनु. बी0एस0पालीवाल, पृ0 290*

ङ. अनुभाव चित्रण :-

मनुष्य मनोवेग प्रधान जीव है। सामाजिक जीवन जीता हुआ, वह अपने मनोवेगों संवेदनाओं को प्रकट या निरूद्ध करता है। इसी स्तर के अनुकूल वह सभ्य होता जाता है। अतः अपने सृष्टि जगत में रचनाकार जब पात्रों से भेंट करता है तो उनके नाम आकृति और क्रिया प्रतिक्रिया के साथ उनके अनुभावों का भी चित्रण करता चलता है। इस अनुभाव चित्रण हेतु लेखक कायिक विकारों मुख्य संकेतों और मुद्राओं का वर्णन कर पाठ्कों के मन में पात्रगत छवि अंकित करता है क्योंकि अनुभाव व्यक्ति के आन्तरिक मन की सत्य बाह्य छवि होती है। प्रायः मनोवेक्ताओं ने इस बात में अपनी सहमति प्रकट की है कि "किसी स्थिति विशेष में व्यक्ति के चेहरे के बदलते रंग उसकी भ्रू-भंगिमा या भृकुटि निक्षेप व्यक्त विभिन्न शारीरिक चेष्टाओं मुद्राओं के आधार पर उसकी तात्कालिक मनोदशा और भक्तिव्य में होने वाली उसकी प्रतिक्रिया का कुछ न कुछ अनुमान लगाया जा सकता है।"[1]

च. अनुभावों का आवरण :-

पहले कहा गया है कि आवेगों पर नियंत्रण या सामाजिक वर्जनाओं का पालन सभ्यता के सोपान माने जाते हैं। वैयक्तिक, सामाजिक, क्रिया कलाप व्यवस्थिति और नियंत्रित रूप में सुदया सम्पन्नता और संस्कारशीलता का परिचय देते हैं। इसीलिए मनुष्य अपने औगिक चेष्टाओं, हाव-भाव पर अंकुश भी रखते हैं। यद्यपि हृदयस्थ उद्दाम मनोभावों का अवरोध साधारण जन के वश की बात नहीं है। कुशल अभिनेता, बेइमान, धूर्त, प्रवंचक अपने संयत आचरण से इन मनोभावों पर अंकुश लगा लेता है और झूठा प्रेम प्रदर्शन, झूठी संवेदना, करूणा, दया प्रदर्शन कर अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

छ. सुप्तावस्था के अनुभाव :-

फ्रायड सहित सभी मनोविश्लेषकों ने मनुष्य की सुप्तावस्था की मुद्राओं का अध्ययन कर उसके चरित्रगत विशिष्टता या वैषम्य का अध्ययन किया है। जागृत अवस्था में नहीं, अपितु सुप्त अवस्था में मनुष्य के अनुभाव प्रकट होते रहते हैं। साहित्यकार भी स्वप्न अवस्था का सुप्ताअवस्था में पात्रस्थ अनुभूतियों संवेगों उसकी उत्तेजनाओं और विकारों का

1. साइकोलॉजी ऑफ परसनालिटी : रोज स्टेगनर, पृ0 225

परिचय देकर पात्र की मनोदशा का अंकन करता है।निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि साहित्यकार पात्रों के चरित्र के उद्घाटन के लिए अन्तर्मुखी या बहुर्मुखी अथवा मनोभावों के गोपन में निपुण पात्रों की कृतिमता को उद्धरित करने के लिए इस विश्लेषणात्मक पद्धति हेतु बहिरंग चित्रण करता है।

2. अन्तः प्रेरणाओं का चित्रण :-

साहित्यकार के पात्र अपने जीवन में जो आचरण, रूप और व्यवहार प्रकट करता है, यह आवश्यक नहीं कि वह उसका व्यक्ति रूप हो। प्रत्यक्ष व्यवहार के चित्रण के साथ ही शेष का तो उसकी चेष्टाओं से आभास तो नहीं होता किन्तु पाठक आगे पीछे की घटनाओं से तारतम्य जोड़कर पात्र की अन्तः प्रेरणाओं का पता लगा ही लेता है। विदेशी विद्वान रिच की धारणा है कि "रचनाकार स्थिति अंकन के पश्चात् अपने पात्रों की व्यक्त क्रिया-प्रतिक्रियाओं के चित्रण में ही नहीं उलझता, प्रत्युत् उनके मानसिक संघर्ष को अपने आसपास के वातावरण के प्रति निरन्तर विकसित होते रहने वाले उनके दृष्टि तथा उनके प्रकट व्यवहार की अन्तः प्रेरणाओं को प्रकाश में लाता रहता है।"[1]

यद्यपि व्यक्ति के व्यक्त आचरण में अन्तर निहित अन्तरीण प्रेरक का अभिज्ञान दुष्तर कार्य है, फिर भी रचनाकार पात्रों की क्रिया प्रतिक्रिया अनुभाव चित्रण के साथ ही साथ प्रेरक अन्तः प्रेरणाओं को भी प्रकाशित करता रहता है। इस सम्बन्ध में हेनिश का कथन है कि "पात्रों के चरित्र चित्रण की स्वाभाविकता उनके व्यक्त आचरण की समानरूपता पर निर्भर नहीं करती जितना उसके पीछे काम करने वाली प्रेरणाओं की एकसूत्रता पर।"[2]

साहित्यकार पात्रस्थ प्रतिक्रियाओं को जन्म देने वाली अन्तः प्रेरणाओं के चित्रण में संगति लाने का प्रयास करता है। इस सन्दर्भ में डा0 रणवीर राँग्रा का अभिमत है-

"चरित्रांकन की सफलता पात्र के बहुरूपी क्रिया-कलापों में तर्क संगत तालमेल बिठाने में है चरित्र चित्रण में शिथिलता प्रायः तभी आया करती है या रचनाकार के

---

1. साइक्लोज एण्ड लाइफ, पृ0 113

2. लिविंग विद बुक्स, पृ0 526

कथानक की आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपनी मूल प्रकृति के विरूद्ध आचरण करने लगता है और रचनाकार उनके परस्पर विरोधी आचरण का युक्त-युक्ति कारण उपस्थिति नहीं कर पाता।''[1]

आवेशाविष्ठ आचरण का चित्रण :

मनोविज्ञान वेत्ता रिच ने लिखा है कि – ''आवेगाविष्ट मनःस्थिति में कोई व्यक्ति क्या कर डालेगा यह अनुमान लगा सकना कठिन होता है। आवेश में मनुष्य असंतुलित होकर आस्वाभाविक और आसाधारण प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करता है।[2]

दृश्य जगत की भाँति साहित्य निमिष्ट पात्र भी उत्तेजित होकर अकरणीय कार्य करते हैं। अन्तर इतना होता है कि रचनाकार का पात्र ऐसी प्रतिक्रिया सोद्देश्य करता है इससे कथा का विकास पात्र के चरित्र, गुण व अवगुणों का चित्रण करता है।

अन्तर्द्वन्द्ध :-

डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी ने लिखा है ''जब कोई पात्र जीवन के किसी ऐसे मोड़ पर आ पहुँचता है जब उसके समक्ष परस्पर विरोधी दिशा में ले जाने वाले दो मार्ग आ पड़े हो और वह परिस्थिति वश दोनों को समान उपयोगी तथा अनुपयोगी समझ कर यह निश्चय नहीं कर पाता है कि वह किसे अपनाये और किसे त्यागे, तब उसके मन में एक अकथनीय द्वन्द्व छिड़ जाता है जो उसे प्रतिक्षण बेचैन किये रहता है।''[3]

इस विरोधी क्रिया-कलापों में यह अनिर्णय के स्थिति में एक तानता लाने के लिए साहित्यकार अन्तर्द्वन्द शैली का उपयोग करता है।

वस्तुतः इच्छा शक्ति, प्राबल्य आत्मबल की श्रेष्ठता, सुस्पष्ट सामाजिक मूल्य युक्त व्यक्ति के समक्ष अन्तर्द्वन्द प्रबल नहीं हो पाते, ऐसे व्यक्ति परिस्थितियों का दृढ़ता से

---

1. *हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास, पृ0 74*
2. *साइक्लोजी एण्ड लाइफ, पृ0 60*
3. *पात्रावतरण की अवधारणा, पृ0 305*

सामना करते हैं। किंकर्तव्यविमूढ़ता से निर्द्वन्द होकर उदग्त रूप प्रस्तुत करते हैं। क्योंकि दैहिक जीह्वालौल्य, या लोभ संवरण न करने वाले नर पशु या जड़ व्यक्ति ही अचेतन, मस्तिष्क के प्रभाव में आकर अर्न्तद्वन्द ग्रस्त होते हैं।

अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण :

उपर्युक्त पंक्तियों में जो कहा गया है उसका तात्पर्य यह नहीं कि चेतना सम्पन्न पात्रों में अन्तर्द्वन्द्व नहीं होता वस्तुतः चेतन और अचेतन का अन्तर्द्वन्द्व तो व्यक्ति को सतत क्रियाशील बनाये रखता है, चेतन संघर्ष वह है, जो पात्र या व्यक्ति जागरूक रहता है। इसके विपरीत अचेतन संघर्ष वह है जो पात्रों के अचेतन मन में सक्रिय होता है। स्वाभाव के इस विरोधाभास के कारण वह मानसिक संतुलन न स्थापित करने के कारण उसके भाव और विचार प्रभावित होते हैं। इस चित्रण के लिए साहित्यकार एक विश्लेषणकर्ता की भाँति पात्र के अर्न्तद्वन्द्व चित्रण के लिए स्वप्न विश्लेषण, निराधार प्रत्यक्षीकरण विश्लेषण, पूर्ववृत्त प्रणाली, शब्द सस्मृति परीक्षण के साथ लेखक पात्रों की मनोस्थिति का चित्राँकन, गीत-भाषण, चित्र आदि प्रतीकात्मक शैली का उपयोग करता है।''[1]

इनका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। क्योंकि शिवानी के उपन्यासों में पात्रों के अचेतन मस्तिष्क जनित अर्न्तद्वन्द्व के चित्रण में इस शैली का उपयोग किया जायेगा। अतः सैद्धान्तिक निरूपण एवं क्रमबद्धता के लिए मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रयुक्त उपर्युक्त प्रणाली का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

अन्तरविवाद :-

अन्तर्द्वन्द्व या पात्रस्थ अन्तर्विवाद मुख्य रूप से अन्तर्मुखी पात्रों में मिलता है। इसमें पात्र छोटे-छोटे सरल सीधे वाक्यों में बिना किसी युक्ति-युक्त प्रबन्ध के अपने अन्दर के उस विचारों को व्यक्त करता जाता है, जो उसके मन में उठ रहे होते हैं।''[2]

ऐसे चित्रण में लेखक अलग हो जाता है और पात्र आवेग से युक्त होकर स्वगत

---

1. विस्तृत अध्ययन – फ्रायडिज्म एण्ड लिटरेरी माइन्ड, पृ0 93

2. द साइक्लोजिकल नावेल : इडल, पृ0 80

कथन से प्रयुक्त कुछ भिन्न होता है। क्योंकि नाटकों में आकाशभाषिक, अपवारित, सीमितवृत्ति, रूप में यह स्वगत कथन होता था जबकि एकालाप अपने व्यक्तित्व के दोनों खण्डों को करणीय अकरणीय का कथन करता है।

मनोविश्लेषण :

पात्र के मनोजगत का चित्रांकन मनोविश्लेषण से जितनी सफलता पूर्वक होता है अन्य किसी प्रणाली को कम ही सफलता मिलती है। फ्रायड ने कहा है "बाल्यावस्था के दुखद संघर्ष, बिना सुलझे ही दमित होकर अचेतन में प्रविष्ट हो जाते हैं। व्यक्ति के भाव-विचार-आचरण को प्रभावित करते हैं। इससे कुंठा और तनाव तथा मानसिक असंतुलन उत्पन्न होता है। साहित्यकार पात्र के अचेतन से निकालकर चेतन में लाकर कारक तत्वों का निराकरण कर उसके व्यक्तित्व के सुखद पक्ष को उभारता है।"[1]

इस हेतु जिस प्रकार मनोविश्लेषण मुक्त आसंग (फ्री ऐसोसिएशन) बाधकता विश्लेषण (एसोसिएशन आफ रेजिस्टेन्ट), संक्रमण (एनालिसिस आफ ट्रान्सफरेन्स) और स्वप्न विशेलषण (ड्रीम एनालिसिस) प्रणाली अपनाता है इनका उपयोग पाठकों की समझ को वृहत्तर बनाना है।"[2]

मुक्त आसंग प्रणाली :

इसके अन्तर्गत पात्र आराम से लेट जाता है, उन्मुक्त मन जो चिंतन और अभिलाषाएँ व्यक्त करता है, मनोविश्लेषक उसे सुनता और लिखता जाता है। इससे उसकी अतृप्त महात्वाकाँक्षाएँ उभर आती हैं। अपने मन के गुप्त भावों को व्यवहार जगत में रोगी तभी डाक्टर से बताता है, जब डाक्टर उसका बहुत विश्वसनीय होगा। साहित्यकार पात्र से उसके आन्तरिक भावों की स्वीकृति कराकर पाठकों के समक्ष उसका विश्लेषण करता है।

---

1. इन्ट्रोडक्टरी लेक्चर ऑन साइको एनालिसिस : फ्रायड, 112

2. हिन्दी उपन्यासों में चरित्र चित्रण का विकास : डॉ0 रणवीर रांग्रा, पृ0 78

बाधकता विश्लेषण :

मनोविश्लेषक युक्त आसंग के पूर्व ही पात्र से यह आश्वासन लेता और देता है, कि पात्र कुछ भी नहीं छिपायें, क्योंकि वह उसका मित्र है और बातें गोपनीय ही रहेंगी। फिर भी ऐसे मनोरोगी अपने जीवन के लज्जास्पद या अश्लील प्रसंगों के कहने में हिचकिचाता रहता है। ऐसे समय मनोविश्लेषक अपनी इस बाधकता को दूर कर उन स्थितियों को चेतन मन में लाकर उसकी उलझनों को सुलझा देते हैं।

स्वप्न विश्लेषण :

फ्रायड की स्वप्न विश्लेषण पद्धति पात्र के आन्तरिक व्यक्तित्व के समझने में बहुत सहायक है। कुंठित मन अपने दैनन्दिन व्यवहार में अपनी उच्च आकाँक्षाओं की पूर्ति दिन या रात में सोते समय स्वप्नों के माध्यम से करता है। साहित्यकार अपने पात्रों के स्वप्नों के माध्यम से उनकी कुंठाओं की अभिव्यक्ति करता है।

स्वप्न संघटन :

फ्रायड की धारणा है अद्‌भुत असम्बद्ध और अकल्पनीय स्वप्नों की युक्ति-युक्त व्याख्या की जा सकती है। अचेतन का संघर्ष उसकी कुंठा स्वप्न के समय अभिव्यकत होती है। फ्रायड ने मुख्य रूप से पांच प्रकार के स्वप्न संघटन माने हैं।

"1. संघटन (कन्डेन्सेसन)

2. विस्थापन (डिमेटाइजेशन)

3. प्रतीकीकरण (सिंबलाइजेशन)

4. सेकेन्डरी इलेबोरेशन "[1]

5. नाटकीय करण (ड्रिमेटाइजेशन)

---

1. इन्टरपोटेशन ऑफ ड्रीम्स : फ्रायड, पृ0 559

विस्तृत विश्लेषण एवं उदाहरण - व्यवहार निरूपण वाले अध्याय में प्रस्तुत किया जायेगा।

निराधार प्रत्यक्षीकरण :

कई बार हम अपने वास्तविक जीवन में जब आँख बन्द कर लेते हैं। तो मनोरचना के कारण कुछ वस्तुएँ हमें सत्यवत दिखाई देती है जबकि छोटी के मिथ्या इसी को हेल्यूसीनेशन कहा जाता है। साहित्यकार पात्र के कथन में वस्तुओं को दिखाना ध्वनियों का श्रवण वर्णित करता है।

सम्मोह विश्लेषण :

मानसिक रोगों के इलाज में सम्मोहन प्रक्रिया का बहुत महत्व कहा गया है। पात्र को सम्मोह निद्रा में ले जाकर उसके विगत जीवन की जटिल, गुप्त अनुभूतियों की जानकारी मनोविश्लेषक करता है और सम्मोहन से मुक्त होते ही पात्र को कुछ पता ही नहीं लगता। यह सम्मोहन कोई जादू नहीं एक प्रकार का सुझावपूर्ण पद्धति है। मनोविश्लेषक अपने वातावरण जनित ध्वनि से पात्र को शिथिल अवस्था में ले जाता है।[1]

प्रत्यावलोकन विश्लेषणः-(एनालिसिस आफ रिलेशन्स):

"मनोवैज्ञानिक की धारणा है कि जीवन मे असंगतियो एवं विकृतियों का मूल कारण बाल्यावस्था में दमित भावनाएँ है। पात्र के अचेतन मस्तिष्क को उद्‌घाटित करने के लिए प्रत्यावलोकन विश्लेषण का बहुत प्रयोग होता है। इस प्रणाली का एक नाम प्रर्वदीप्ति(फलेशबैंक पद्धति) कहा जाता है।"[2]

पूर्ववृत्तात्मक प्रणाली :

व्यक्तित्व अध्ययन के लिए यह प्रणाली अच्छी समझी जाती है, क्योंकि पहले कही गयी प्रणालियाँ विश्लेषणात्मक होती है। जबकि यह संश्लेषणात्मक होती है। मनोवेत्ता पात्र की वर्तमान अवस्था हेतु उसकी पूर्वकालिक अनुभूतियों और प्रवृत्तियों को एकद करता है

---

1. हिन्दी उपन्यासों में चरित्र चित्रण का विकास, पृ0 83
2. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ0 देवराज उपाध्याय पृ0 309

और तदनुसार वह उसका निष्कर्ष निकालता है। इसी प्रकार साहित्यकार अपने पात्रों के इष्ट,मित्र,कुटुम्बियों से यह विवरण प्रस्तुत करता है। यद्यपि ऐसे विवरण कही न कही पुर्वाग्रह से ग्रस्त या संदिग्ध होते है।

शब्दसह स्मृति परीक्षण :

मनोवैज्ञानिक पात्र को सम्बद्ध शब्द श्रृंखला पढ़ाता या सुनाता है और उससे पूछता जाता है कि इन विभिन्न शब्दों की प्रतिक्रिया स्वरूप उसके मन में जो कुछ भी आ रहा है, वह निःसंकोच बतावें। रचनाकार इस प्रकार के पद्धति में गति या कुछ ध्वनियों का भी उपयोग कर लेता है।

सारांश यह कि पात्रस्थ आन्तरिक व्यक्तित्व के उद्घाटन में मनोविश्लेषणशास्त्र मे जिन प्रणालियों क़ा सैद्धान्तिक एवं व्याहारिक विस्तृत विश्लेषण किया गया है। हिन्दी साहित्य के मनोवैज्ञानिक उक्यासों में इन सबका व्यवहारिक और विस्तृत उपयोग हुआ है। जैनेन्द्र,इलाचंद जोशी, अज्ञेय, के उपन्यासों में विशेष रूप से कल्याणी, त्यागपत्र, परदे की रानी, जहाज का पंछी, शेखर एक जीवनी इस शैली के विख्यात उपन्यास है। इसके साथ ही पात्रों के व्यक्तित्व निरूपण हेतु अन्तरंग और बहिरंग प्रणाली के अलावा नाट्कीय प्रणाली भी बहुप्रचलित है, इसका संक्षिप्त विवेचन यहाँ प्रस्तुत है।

नाट्कीय प्रणालीः

पूर्व पृष्ठों में विश्लेषणात्मक प्रणाली के अन्तर्गत बहिरंग एवं आन्तरिक चित्रण की कुछ प्रणालियों का उल्लेख किया गया है। "यह प्रणाली महत्वपूर्ण तो है, किन्तु अस्वाभाविक और आरोपित प्रतीत होती है। इसके विपरीत नाट्कीय प्रणाली स्वाभाविक लगती है क्योंकि पात्र के वार्तालाप एवं क्रियाकलापों में लेखक तटस्थ रहता है और पाठ्क हस्तान्तरित ज्ञान न प्राप्त कर प्रत्यक्ष पात्र से परिचय करता है। वस्तुतः परिवर्तनशील मन की अधिक जानकारी नाट्कीय प्रणाली से होती है।"[1]

---

1. हिन्दी उपन्यासो में नायक : डॉ0 कुसुम वार्ष्णेय, पृ0 54

घटनाओं द्वारा चरित्र चित्रणः

पाश्चात्य समीक्षक, हेनरी जेम्स ने कहा है कि "चरित्र यदि घटनाओं का परिणाम नही है तो और क्या है? तथा घटना चरित्र की व्याख्या के अतिरिक्त और क्या है? घटनाएँ उसके चरित्र को उभारती और निखारती है।"[1]

प्रतिपक्ष विधान द्वारा चरित्र चित्रणः

यह परम्परा अति प्राचीन काल से चली आ रही है। खल, असज्जन, कदाचारी पात्र का पराभव शास्त्र सम्मत है, किन्तु उसकी सुनियोजित व्यवस्था लेखकीय कौशल को प्रदर्शित करता है। प्रारम्भ में प्रतिनायक या विपक्ष की शक्तियों की सफलता दिखाकर अन्त में उसका पराभव नाट्कीय कौतूहल और चरित्र प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

कथोपकथन द्वारा चरित्र चित्रणः

डॉ0 श्याम सुन्दर दास ने लिखा है कि "संवाद या कथोपकथन द्वारा राग,द्वेष,मनोवेग आदि का प्रस्फुटन पात्रों की स्थिति का घटनाओं के अनुकूल परिवर्तन और उनका एक दूसरे पर प्रभाव बहुत अच्छी तरह दिखाया जा सकता हैं। यदि ऐसा करने में स्वाभाविकता बनी रहे तो सोने में सुगंध आ जाती है।।"[2]

कथोपकथन की महत्ता पाश्चात्य नाट्य समीक्षको ने उन्मुक्त कंठ से की है, हरमन होल्ड,ब्रेकर, एडीसन,अरस्तू,निकोल सभी ने उन सम्भाषणों की प्रशंसा की है। जो चरित्र की अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण योगदान करते है।।"[3]

अन्य प्रणालियाँः- उक्त दोनो प्रणाली के अतिरिक्त उपन्यास, नाटकों में ऐसी प्रणालियाँ भी प्रयुक्त है। जिनसे पात्रों का व्यक्तित्व दिखाई देता है, डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी ने वर्णनात्मक

---

1. एन इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ लिटरेचर, पृ0 190
2. साहित्यालोचन, पृ0 254
3. क. ड्रेमेटिक तकनीक, ब्रेकर, पृ0 328
   ख. द आर्ट ऑफ प्ले हरमन होल्ड, पृ0 75
   ग. द थ्योरी ऑफ ड्रामा, पृ0 182

प्रणाली, आत्मकथात्मक प्रणाली उद्धरण प्रणाली, डायरी प्रणाली, पत्रात्मक प्रणाली का उल्लेख किया है।''[1]

1. वर्णनात्मक प्रणाली: -

इसमें लेखक इतिहासकार की तरह घटना एवं पात्र कृमिक वर्णन करता है।

2. आत्मकथात्मक प्रणाली:-

साहित्य में मनोविज्ञान के प्रयोग से इस प्रणाली का प्रचलन हुआ है। इसमें प्रधान या प्रमुख पात्र अपनी तथा अन्य केन्दीय पात्रों के सन्दर्भ में आख्यान का वर्णन करता है।

3. उद्धरण प्रणाली:-

लेखक अपने पात्रों के मुख से दूसरो के गद्य या पद्य के माध्यम से पात्रस्थ आन्तरिक कारणों.को अभिव्यक्ति कराया करता है।

4. डायरी प्रणाली:-

पात्रों के मनोभावों को जानने के लिए डायरी प्रणाली सशक्त माध्यम है। मनुष्य अपनी दैनिक क्रिया कलापों को लिपिबद्ध करता है। इससे उसकी मानसिक समस्याओं का आभास हो जाता है। ऐसे पात्र प्रायः अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले होते है।

5. पात्रात्मक प्रणाली:-

कई बार लेखक अपने पात्रों के विशेष पक्ष को उद्घाटित करने के लिए इस शैली का आश्रय लेता है। अन्तरंग मित्र,सम्बन्धी दूर रहने पर परस्पर परिवर्तन विचारो का सम्प्रेषण पत्रो से ही करते है।

सारांश

सारांश यह है कि सृष्टि निर्माता की भाँति साहित्यकार,लेखक या रचनाकार अपने कल्पना के आश्रय से जिस संसार की सर्जना करता है। वह रचना जागतिक मानव का पुनर्रचित प्रतिरूप है। सामाजिक परिस्थितियों, राजनीतिक,सांस्कृतिक संक्रमण का प्रभाव, उसकी घटनाओं और चरित्रों में किसी न किसी अंश मे दिखाई देता है। इस सन्दर्भ में

---

1. पात्रावतरण की अवधारणा, पृ0 305

ऐसे चरित्रों की भी पुनर्रचना होती है, जो सार्वादिक, सार्वजनिक एवं सार्वकालिक बन जाते है।

साहित्यकार ने राजतंत्र से प्रभावित होकर धीरोदात्त नायक की परिकल्पना की बाद में

लोकवाद तथा समाजवाद के प्रादुर्वभाव का प्रभाव अच्छी नायक परिकल्पना पर पड़ा और वह धीरोदात्त अलौकिक महापुरूष से उतरकर नायक प्रमुख पात्र लघुमानव, कुंठित नायक रूप मे विकसित होते गये। साथ ही मनोविश्लेषण शास्त्र के विकसित होते ही ये नायक, कुंठित, अहमन्य, दमित, जागतिक स्वार्थ लिप्त, उत्कृष्ठ दुद्धता, सामवायिक पुंज बने, जिसमें सत् और असत एक साथ दिखाई देते है।

उक्त धारणा का यह बिल्कुल अर्थ नहीं है कि नायक अपने उच्च गुणों से पद्दलित, छुंद्र और नगण्य. हो गया है। उसमें साहित्यकार के पात्र चरित्र और व्यक्तित्व के नौकर बनने लगे। समाज में इनसे यह धारणा रूढ़ होती चली गई कि पाठ्क को राम के समान आचरण करना चाहिए, रावण के समान नहीं और इस प्रकार पात्रों के प्रतिमान समाज के अनुसार बदलने लगे।

उक्त उपपत्ति को पुष्ट करने हेतु प्रारम्भ में पात्र शब्द की व्युपत्ति अर्थ, उसमें सामानार्थी शब्द के रूप में चरित्र की व्याख्या, उसके तत्व, उसके कारक तत्वों में अन्तःकरण का उल्लेख एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रचलित चरित्र की परिभाषाएँ पात्र का निर्मित व्यक्तित्व, उसकी परिभाषाएँ, संरचना, व्यक्तित्व निर्माण के तत्व, आनुवंशिकता,पर्यावरण

सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव चरित्रक दृढ़ता, शील एवं चरित्र तथा व्यक्तित्व का साम्य वैषम्य निरूपित कर साहित्य मे निविष्ट कथा-वस्तु एवं पात्रों की महत्ता, पाश्चात्य एवं प्रतीच्य साहित्यकार में पात्र स्वरूप नायक और उसके धीरोदात्त आदि भेद, प्रतिनायक सहनायक, खलनायक, नायक, सहायक आदि का शास्त्रीय दृष्टि से चिन्तन कर अभिजात, मध्यवर्गीय श्रमजीवी, समाजोन्मुख, आत्मलीन, कर्मठ आदि आधुनिक नायकों की संक्षिप्त चर्चा कर विभिन्न दृष्टियों से पात्रों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है। अन्तः आधार, बुद्धि का आधार, चरित्र आधारित, स्थिर, समतल, विकासशील, गतिशील, के आधार पर और मनोवैज्ञानिक आधार पर आधुनिक पात्रावधारणा का स्वरूप व्यक्त करते हुए त्रिआयामी चरित्र की परिकल्पना अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व्यक्तित्व के लक्षण प्रस्तुत कर चरित्र को स्पष्ट

किया गया है। और कहा गया है कि चरित्र के मूल में अन्तःकाल (भारतीय दर्शन के अनुसार) तदनुसार पात्रों के नाम क्रिया कलाप वृत्ति भेद के साथ पात्रों की प्रवृत्तियाँ उल्लिखित है। इसी परिप्रेक्ष्य में पात्रावतरण के लिए अरस्तू प्रोक्त भद्रता, औचित्य, जीवनानुकूलता, एकरूपता, सम्भाव्यता, श्रेष्ठ आदर्श, मैनल एलबुड के षट सिद्धान्त और इसके औचित्य सिद्धान्त की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत कर शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आयामों से चरित्र और पात्र के आन्तरिक बाह्य गुणों की विस्तृत व्याख्या की गयी है। वही आधुनिक परिप्रेक्ष्य में निसंग, व्यक्ति बनाम टाइप सिद्धान्त, मनोविज्ञान परक सिद्धान्त इड, इगो, सुपरइगो आधारित पात्रों की शील गुण आचरणों का उल्लेख किया गया है।

पात्रावतरण की प्रणालियों को प्रकार और विकास प्रणाली में बांटकर विश्लेषणात्मक नाटकीय के अर्न्तगत बहिरंग, चित्रण में पात्रों के नामकरण प्रथम परिचय, आवृति, वेश-भूषा, पात्रस्थ, क्रिया, प्रतिक्रिया, अनुभाव चित्रण मौखिक मुद्राओं का महत्व अन्तरंग अन्तर्द्वन्द्व उसके कारक तत्व चेतन अचेतन का द्वन्द्व, अन्तरविवाद, मनोविश्लेषण, मुक्त आसंग प्रणाली और मनोविज्ञान समस्त स्वप्न विश्लेषण, स्वप्न संघनन, सम्मोह निराधार, प्रत्यक्षीकरण तथा नाटकीय प्रणाली के अन्तर्गत, घटना विपक्ष, कथोपकथन एवं वर्णनात्मक आत्मकथात्मक उद्धरण आदि साहित्यकार द्वारा प्रयुक्त कर पात्रों का चरित्र व्यक्तित्व विषयक सिद्धान्त निरूपित किये गये हैं।

वस्तुतः सृष्टि और समाज जितना परिवर्तनशील है, उतना ही रहस्यमय, गतिशील, मूढ़ और अकल्प्य मानव मन या उसका चरित्र है। वस्तुतः यह सिद्धान्त विवेचन आगामी अध्याय की पृष्ठभूमि मात्र है। इन्हीं प्रमुख सिद्धान्तों के आधार पर शिवानी रचित उपन्यासों के पुरूष पात्रों का वर्गीकरण और उनके चरित्र व्यक्तित्व का मूल्याँकन किया जाएगा।

अध्याय द्वितीय

शिवानी के उपन्यास
एवं
पुरूष पात्र
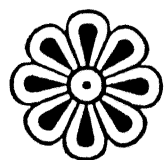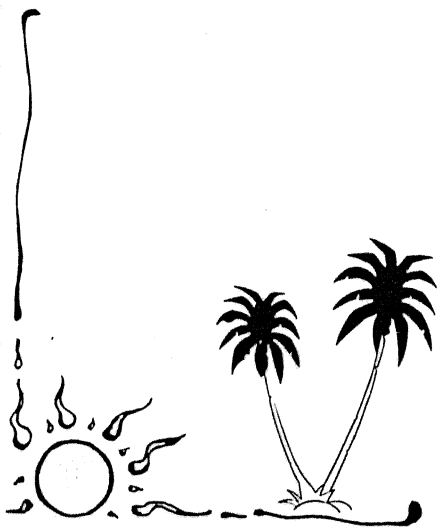
हिन्दी उपन्यास साहित्य का उद्भव

उपन्यास शब्द का व्युत्पत्ति- लभ्य अर्थ है - उपनिकट, न्यास - रखा हुआ, अर्थात् साहित्य का वह अंग जिसका विकास अपेक्षाकृत आधुनिक काल में हुआ। हिन्दी में इस शब्द का व्यवहार योरोपीय साहित्य के प्रभाव स्वरूप हुआ है। किन्तु इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि सत्ता थी ही नहीं। संस्कृत साहित्य में हितोपदेश, पंचतत्रकथा, सरित्सागर, आदि। ब्रहकचा, बैताल पंचविभूति, वासवदत्ता, दशकुमार चरित तथा कादाम्बरी आदि यत्किंचित रूप में विकसित हो चुकी थी। हाँ, यह दूसरी बात है कि उक्त ग्रन्थों में आधुनिक उपन्यासों के सारे गुण और योग्यताएँ मिलनी सम्भव नहीं है। कतिपय विद्वानों के अनुसार वाण की कादम्बरी भारत का पहला उपन्यास है। इसका प्रमाण यह है कि मराठी साहित्य में उपन्यास शब्द का पर्यायवाची शब्द कादम्बरी आज भी प्रचलित है। किन्तु कादम्बरी में अलौकिकता, भावात्मकता और अलंकारिकता के अत्यधिक आग्रह के कारण उसे आधुनिक उपन्यास की परिभाषा के अर्थ में ग्रहण करना असंगत होगा। दसकुमार चरित्त में आधुनिक उपन्यास की बहुत सारी योग्यताएँ विद्यमान हैं किन्तु उसकी भिन्न-भिन्न कथाओं को मूल कथा वस्तु के क्षीण तन्तूओं से जोड़ने का प्रयत्न किया गया है, जो कि आधुनिक उपन्यास की दृष्टि से एक दोष है अस्तु दस कुमार चरित्त में कतिपय दोषों के होते हुए भी उसमें औपन्यासिक योग्यतायें असंदिग्ध हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य के अन्य अंगों के समान उपन्यास का विकास भी अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव और सम्पर्क से हुआ है यूरोप में उपन्यास साहित्य का विकास रोमांटिक कथा साहित्य से हुआ है यूरोप का रोमांटिक कथा साहित्य भारतीय प्रेमाख्यानों की अरबों की मध्य से विश्व यात्रा के समय उनसे निश्चित रूप में प्रभावित हुआ होगा इस प्रकार भारतीय कथा साहित्य अपने थोड़े बहुत रूप परिष्करण और परिवर्तन के पश्चात् उपन्यास के रूप में पुनः भारत लौटा निःसंदेह भारतीय साहित्य में आधुनिक उपन्यासों के बहुत से उपकरण विद्यमान थे किन्तु उन्नीसवीं सदी के हिन्दी साहित्य में उपन्यास का उद्भव विकास अंग्रेजी साहित्य के परिणाम स्वरूप हुआ भारत के जो प्रदेश अंग्रेजी सम्पर्क में पहले आये उनमें उपन्यासों का प्रचलन अपेक्षाकृत कुछ पहले हुआ यही कारण है कि बंगला में उपन्यासों

की रचना हिन्दी से पूर्व आरम्भ हुई अतः हिन्दी उपन्यास साहित्य पर बंगला के अनेंक लेखकों का प्रभाव पड़ा।

हिन्दी गद्य साहित्य के अन्य अंगों के समान उपन्यासों का उद्भव आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रारम्भ में भारतेन्दु काल में हुआ यह ठीक है कि आधुनिक उपन्यास का विका यूरोप में हुआ भारत में नहीं, किन्तु हिन्दी में उपन्यासों का विकास पाश्चात्य उपन्यास साहित्य के अनुकरण पर नहीं हुआ। हिन्दी में उपन्यासों के पूर्व बंगला साहित्य में यह अंग काफी विकसित हो चुका था और कदाचित बंगला साहित्य की देखादेखी में भी उपन्यासों का सूत्रपात हुआ।

हिन्दी उपन्यास की विकास परम्परा को हम तीन भागों – भारतेन्दु युग, प्रेमचन्द्र, युग और प्रेमचन्द्रोत्तर युग में विभाजित करके इस परम्परा का अध्ययन करेंगे।

भारतेन्दु युगीन उपन्यास :

हिन्दी उपन्यास का आविर्भाव भारतेन्दु युग में हुआ। इसे हिन्दी उपन्यास का प्रथम विकासकाल कहा जा सकता है। इस युग में उपन्यास की जो मुख्य प्रक्रिया विकसित हुई उनमें सामाजिक ऐतिहासिक, जासूसी तथा तिरिस्मी आदि मुख्य हैं।

सामाजिक उपन्यास :

हिन्दी उपन्यास का आरम्भ सामाजिक रचनाओं से हुआ भारतेन्दु युग एक प्रकार के नव जागरण या जन जीवन के विविध क्षेत्रों में इस समय अनेंक प्रकार के क्रान्तिकारी आन्दोलन हो रहे थे। इन आन्दोलनों के फलस्वरूप सामाजिक मान्यताओं और दृष्टिकोंण में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई दे रहे थे। भारतेन्दु युगीन सामाजिक उपन्यासकारों ने अपनी कृतियों में इन सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप उत्पन्न हुई समस्याओं को विवेचित किया और इनके प्रति एक निर्णयात्मक दृष्टिकोंण प्रस्तुत किया। इनमें से अधिकांश प्रमुख्र लेखकों की औपन्यासिक कृतियों का परिचय हम प्रस्तुत कर रहे हैं।

डॉ0 प्रकाश नारायण तंडन के अनुसार ''पंडित श्रद्धाराम फुल्लैरी हिन्दी के सर्वप्रथम

मौलिक सामाजिक उपन्यासकार होने के साथ एक भाषा प्रचारक के रूप में प्रसिद्ध हैं। "भाग्यवती" हिन्दी का सर्वप्रथम मौलिक सामाजिक उपन्यास है। जिसका प्रकाशन सन् 1877 में हुआ था। भाग्यवती में लेखक का दृष्टिकोंण समाज सुधार का रहा है।"[1] परन्तु डा0 शिवकुमार शर्मा के अनुसार "हिन्दी का सर्वप्रथम उपन्यास श्री निवासदास कृत "परीक्षागुरू" है। इस रचना में दिल्ली के एक सेठ-पुत्री की कहानी है। सेठ पुत्र कुसंगत में पड़ जाता है और अन्त में उसका एक सज्जन मित्र द्वारा उद्धार हो जाता है। इसमें उपदेशात्मकता की प्रवृत्ति प्रधान है।"[2]

इस काल के अन्य सामाजिक उपन्यास रत्नचन्द्र लीटर का "नूतन चरित्र" बालकृष्ण भट्ट का "नूतन ब्रह्मचारी" तथा "सौ अजान तथा एक सुजान" राधाकृष्णदास का "निःसहायहिन्दू किशोरी लाल गोस्वामी का 'लवंगलता" और "कुसुम कुमारी" बालमुकुन्द गुप्त का "कामिनी" आदि में उल्लेखनीय है।

तिलस्मी एवं जासूसी उपन्यास :

इस काल में मौलिक उपन्यास लेखकों में देवकी नन्दन खत्री, गोपाल राम गहमरी और किशोरी लाल गोस्वामी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। खत्री तथा गहमरी के तिलस्मी और ऐयारी उपन्यासों ने हिन्दी जगत में धूम मचा दी। इनके अनुकरण पर देवी प्रसाद वर्मा, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी आदि अनेंक लेखकों ने जासूसी उपन्यासों का एक ताता बाँध दिया। खत्री जी के चंद्रकान्ता संतति इतने लोकप्रिय हुए कि अनेंक हिन्दी न जानने वालों को केवल इन उपन्यासों को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखनी पड़ी। भले ही खत्री जी के उपन्यासों का कलात्मक महत्व न हो, किन्तु उनका ऐतिहासिक महत्व भी अक्षुण्ण है।

इसके उपन्यास "नरेन्द्र मोहनी", 'कुसुम कुमारी', 'वीरेन्द्र वीर' 'चन्द्रकान्ता' और चन्द्रकान्ता संतति 'देवकी नन्दन खत्री' के उपन्यास हैं। गुलाबदास की लिखी एकमात्र

---

1. *हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास - खण्ड 2, पृ0 511*
2. *हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, पृ0 614*

तिलस्मी औपन्यासिक कृति 'तिलसमी बुर्ज' है।

मुंशी प्रेमचन्द्र तथा इन जासूसी लेखकों के बीच की कड़ी के रूप में अयोध्या सिंह उपाध्याय, लज्जाराम मेहता तथा कुछ अनुवादकर्ताओं का नाम लिया जा सकता है। हरिऔध ने 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'अधखिला फूल' उपन्यास लिखे जिनमें जवाबदानी तथा मुहावरों का ठाठ है।

विषय एवं शैली का विवेचन :

इस काल में सामाजिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी तथा प्रेम प्रधान उपन्यास लिखे गये। प्रेमाख्यान उपन्यासों में व्यक्ति के अन्तर के विश्लेषण का अभाव है। इन उपन्यासो का प्रेम रीतिबद्ध, श्रृंगार, परम्परा से ऊपर नहीं उठ सका है। सामाजिक उपन्यासों में नैतिक शिक्षा समाज सुधार भारतीय आदर्श तथा पश्चिमी सभ्यता की कटु आलोचना है। इस युग के उपन्यासों में औपन्यासिक कलात्मकता का अभाव है। तिरस्मी उपन्यासों में मनोरंजन की प्रधानता है। उनका जन जीवन के साथ कुछ सरकार नहीं उनमें अस्वाभाविकता और अतिमानवीयता है। ऐतिहासिक उपन्यास केवल नामधारी ऐतिहासिक उपन्यास हैं। हाँ, इस काल के अनुदित उपन्यासों का स्तर उस समय के मौलिक उपन्यासों से कुछ ऊँचा है। प्रेमचन्द्र के पूर्व इस काल की स्थायी सम्पत्ति बनने के योग्य है। प्रेमचन्द्र पूर्व के उपन्यासों का ऐतिहासिक महत्व अवश्य है।

इन उपन्यासों में वर्णनात्मक आत्मकथात्मक तथा संभाषण तीन प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया गया है। भाषा के तीन रूप अपनायें गये हैं। संस्कृत मिश्रित हिन्दी उर्दू मिश्रित तथा सरल भाषा। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि इस काल के उपन्यसों में जीवन की आलोचना और गम्भीर दृष्टि का अभाव है।

प्रेमचन्द्र युग :-

हिन्दी उपन्यासों के विकास क्रम में प्रेमचन्द्र युग का विशेष महत्व है। प्रेम चन्द्र युग की 'मर्यादा' 1918 ई0 से लेकर 1936 ई0 तक मान्य है। उपन्यासकार सम्राट मुंशी

प्रेमचन्द्र के पदार्पण से उपन्यास साहित्य की रिक्तता की पूर्ण अर्थों में पूर्ति हुई वस्तुतः वे हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यासकार तथा युग प्रवर्तक है। इनके उपन्यासों में प्रथम बार जन सामान्य की वाणी मिली और कला केवल मनोरंजन का खिलवाड़ न रहकर जीवन मरणों को उद्घाटित करने वाली बनी। उनके उपन्यासों में विशाल जन जीवन और विशेषकर भारतीय किसान और मध्यम् वर्गीय जीवन की अनेक ऊँची समस्यायें कलात्मक रूप से चित्रित हुई है। उनके उपन्यासों की सी व्यापक पटभूमि हिन्दी तो क्या किसी भी भारतीय भाषा के उपन्यासकार में नहीं है। प्रेमचन्द्र ने दो प्रकार के उपन्यास लिखे हैं, राजनीतिक और सामाजिक इनमें समग्र रूप से भारतीय जीवन की समस्याएं चित्रित की हैं। प्रेमचन्द्र पर गाँधीवाद का विशेष प्रभाव था। प्रेमचन्द्र युग की गतिशील जीवन दृष्टि के निर्माण में आर्य समाज तिलक और गाँधी की विचार धाराओं का ही योग था। उस समय गाँधी जी के रचनात्मक कार्यो के मूल में उनकी मानवतावादी विचारधारा कार्य कर रही थी। प्रेमचन्द्र भी मानवतावाद से प्रभावित थे। उन्होंने जीवन में साहित्य का स्थान विषय पर विचार करते हुए लिखा है – "आदिकाल से मनुष्य के लिए सबसे समीप मनुष्य है हम जिसके सुख दुख असमय रोने का मर्म समझ सकते हैं उसी से हमारी आत्मा का अधिक मेल होता है। हमारी मानवता जैसे विशाल और विराट होकर समस्त मानव जाति पर चर और अचर, जड़ और चेतन सभी उसके अधिकार में आ जाते हैं।"[1]

उनके उपन्यासों में व्यक्ति चेतना, समाज मंगल यथार्थ की अनुभूति, आदर्श की कल्पना, बाह्य घटना, वयविद्ध, आन्तरिक मनोमन्थन एवं भावद्वन्द्व सभी कुछ मिल जाता है। सेवासदन, प्रेमाश्रय, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान और मंगलसूत्र प्रेमचन्द्र के प्रसिद्ध उपन्यास हैं। इन उपन्यासों में हिन्दी भाषी जनता का मानसिक संस्कार किया है। इनके माध्यम से प्रेमचन्द्र जी ने अपने युग की सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों का पूर्ण चित्र अंकित किया है।

प्रेमचन्द्र युग में अन्य भी अनेक प्रतिभाओं का उदय हुआ है जैसे जयशंकर प्रसाद

---

1. कुछ विचार : मुंशी प्रेमचन्द्र, पृ0 145

– कंकाल, तितली, इरावती, शिवपूजन सहाय – देहाती दुनियाँ, विश्वम्भर नाथ कौशिक – माँ भिखारिणी, बेचन शर्मा उग्र – दिल्ली का दलाल, चन्द्र हसीनों के खतूत आदि । चण्डी प्रसाद 'हृदयेश' मंगल प्रभात तथा मनोरमा राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह – राम-रहीम, पुरूष और नारी, संस्कार आदि, भगवती प्रसाद बाजपेयी – प्रेमपथ, मीठी चुटकी, अनाथ पत्नी, मुस्कान, त्यागमयी, प्रेम निर्वाह, लालिमा आदि। सियाराम शरण गुप्त – गोद, रसभचरण जैन, जी0पी0 श्रीवास्तव, सुदर्शन निराला आदि और भी प्रसिद्ध उपन्यासकार इस युग में हुए।

विशम्भर नाथ कौशिक और सुदर्शन प्रेमचन्द्र की परम्परा के अनुयायी हैं। उनके माँ और भिखारिणी सामाजिक उपन्यास है। उपन्यासकार प्रसाद में एक विलक्षण विरोधाभास दृष्टि गोचर होता है वे अपने काव्य और नाटकों में आदर्शवादी हैं। किन्तु उपन्यासों में परमयथार्थ वादी हैं। प्रेमचन्द्र युग में उपन्यास रचना में प्रवक्त होने वाले अनेंक उपन्यासकार आज भी जीवित हैं और निरन्तर उपन्यास साहित्य की समृद्धि करते जा रहे हैं।

प्रेम चंद्रोत्तर युग :

प्रेमचन्द्र के बाद विश्व में बहुत बड़े-बड़े परिवर्तन हो चुके हैं। 1939 से 1945 ई0 तक सम्पूर्ण विश्व को अपनी लपेट में लेकर ध्वंस-लीला करने वाला महायुद्ध इसके बीच भारत में घटित होने वाली अनेंक घटनाएँ – 1940-41ई0 में कांग्रेस का व्यक्तिगत सत्याग्रह, बंगाल का भीषण अकाल, 1942 ई0 में गाँधी जी का "भारत छोड़ो ऐतिहासिक नारा" जनता का विद्रोह, अंग्रेजों का भीषण दमन चक्र : 1946ई0 में बम्बई में भारत के समुद्री सेना की बगावत, अगस्त 1946 में नेहरू के नेतृत्व में अन्तर्कालनीसंस्कार का संघटन और मुस्लिम लीग का प्रत्यक्ष संघर्ष, 15 अगस्त 1947 ई0 को पूरे देश का भारत और पाकिस्तान में बँटवारा और भारत की स्वतंत्रता, 26 नवम्बर, 1949 ई0 में भारत के संवैधान का निर्माण, 26 जनवरी, 1950 ई0 को भारत का "सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य के रूप में उदय, तब से आज तक कांग्रेस का शासन, विश्व राजनीति में सहअस्तित्व और पंचशील की मान्यता और उसका तिरस्कार, आर्थिक समृद्धि के

लिए कार्यान्वित होने वाली योजनाएँ और उनकी विफलता, चीन का आक्रमण, आदर्शवादी नेताओं का मोहभंग, पाकिस्तान और भारत का युद्ध, ताशकन्दवार्ता, देश के सामने अनेक समस्याएँ विघटन की प्रवृत्तियों का उन्मेष और सब मिलाकर देश की नयी पीढ़ी के सामने निराशा, कुण्ठा, दृष्टहीनता, लक्ष्यहीनता, शून्यता, परमुखापेक्षिता, आत्महीनता का वातावरण इन सबका सामूहिक प्रभाव साहित्यकारों की रचना प्रेरणा को प्रभावित करता रहा है।

जिस प्रकार उत्तर छायावादी युग में कविता-क्षेत्र में कुछ नवीन प्रवृत्तियाँ जन्मी, उसी प्रकार प्रेमचन्दोत्तर युग में कथा साहित्य में भी मनोवैज्ञानिक, यथातथ्यवाद घोर नग्न यथार्थवाद, अवचेतनावाद, प्रकृतिवाद की प्रवत्तियों का समावेश हुआ। प्रेमचन्द के बाद का उपन्यास, साहित्य निश्चित रूप से प्रेमचन्द के पूर्ववर्ती साहित्य से उच्च है, और कदाचित बाह्य शिल्प विधान् में प्रेमचन्द के साहित्य से भी कुछ आगे है, किन्तु इसमें वह भीतरी गहराई नहीं हैं जो कि प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्य में प्रेमचन्द का गोदान केवल हिन्दी की ही नहीं, विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है। गोदान के अनन्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य के पास ऐसी कोई भी वर्दान्य कृति नहीं है। जिसे वह अपनी स्थायी सम्पदा समझे। प्रेमचन्दोत्तर कालीन लेखकों की रचनाओं को एक निश्चित प्रवृत्ति के अन्तर्गत रखना यद्यपि कठिन व्यापार है, परन्तु अध्ययन की सुविधा के लिए उन्हें प्रवृत्यात्मक वर्गो में विभाजित करके इस विकास परम्परा को समझना अपेक्षाकृत श्रेष्ठ होगा।

सामाजिक उपन्यास :

प्रसाद और कौशिक के अतिरिक्त सामाजिक समस्याओं पर लिखने वाले उपन्यासकारों में उग्र, चुतरसेन शास्त्री, उपेन्द्रनाथ अश्क, भगवतीचरण वर्मा, भगवती प्रसाद बाजपेई, अमृतलाल नागर, उदयशंकर भट्ट, शियारामशरण गुप्ता, विश्वम्भर नाथ कौशिक, सेठ गोविन्द दास तथा विष्णु प्रभाकर आदि हैं।

प्रसाद के समान उग्र में भी एक विलक्षण विरोधाभास के दर्शन होते हैं। साहित्य में जोश की दुहाई देने वाले तथा सुधार की भावना से लिखने की प्रतिज्ञा करने वाले उग्र ने घासलेटी साहित्य को सृजा है। इन्होंने सामाजिक सुधार के नाम पर यथार्थवाद की आड में

वर्जित विषयों पर लिखकर वीभत्स अश्लीलता का चित्रण किया है। ''बुधुवा की बेटी'' ''दिल्ली का दलाल'' चाकलेट, ''चन्द हसीनों के खतूत'' ''शराबी'' 'सरकार तुम्हारी आँखों में'' 'जीजी जी' आदि प्रसिद्ध हैं। चतुरसेन शास्त्री ने अपने सामाजिक उपन्यासों में यह देखने का प्रयास किया है कि वासना मनुष्य को कहाँ तक पतित व नीच बना देती है। ''हृदय की प्यास'' में इन्होंने विधवाग्रन्थों में छिपकर किये जाने वाले दुराचारों का नग्न चित्रण किया है। इन नग्नता को उभारने के लिए इन्होंने कई विश्रृंखल काल्पनिक प्रसंगों की योजना की है। जहाँ वे आत्म संयम खो बैठे हैं। अश्क जी का ''सितारों के खेल रोमानी वातावरण का उपन्यास है। उनके गिरती दीवारें निम्न मध्यवर्ग का यथार्थ चित्रण है। इसी प्रकार इनके अन्य उपन्यास 'गरम राख' 'बड़ी-बड़ी आँखे' 'पत्थर अल पत्थर' आदि हैं।

भगवती चरण वर्मा औपन्यासिक कृतियाँ हैं - 'चित्रलेखा' 'पतन' 'तीन वर्ष' 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' 'आखिरी दाँव' 'भूले बिसरे चित्र' 'रेखा' 'सीधी सच्ची बातें' तथा सबहि नचावत राम गुसाई'। उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला उनका उपन्यास 'चित्ररेखा' है।

भगवती प्रसाद बाजपेई के उल्लेखनीय उपन्यास हैं - चलते-चलते, निमन्त्रण, यथार्थ के आगे, टूटा टी सेट, विश्वास का बल, सपना बिक गया, तथा सूनी राह। सामाजिक उपन्यास लेखकों में अमृतलाल सागर का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रेमचन्द्र के समान नागर जी भी व्यक्ति और समाज को अन्योन्याश्रित मानते हैं, 'बूँद और समुद्र' इनका बहुचर्चित तथा लब्ध प्रतिष्ठ उपन्यास हैं। इसमें बूँद और समुद्र व्यक्ति और समष्टि के प्रतीक हैं। इस प्रकार सामाजिक उपन्यासों की श्रृंखला में सियाराम शरण गुप्त 'गोद', अन्तिम आकांक्षा और नारी। रामेश्वर शुक्ल 'अंलच' के उल्का और महाद्वीप तथा प्रसिद्ध नाटककार सेठ गोविन्द दास का इन्दुमती आचार्य चतुरसेन शास्त्री के धर्मपुत्र, खग्रास और गोली विष्णु प्रभाकर के 'निशिकान्त' और तटबन्ध आदि विशेष उल्लेखनीय है।

मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास :

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों में बाह्य संघर्ष ने व्यक्ति के अन्तः संघर्ष का स्थान ले लिया और उपन्यासकार अनुभूति व कल्पना के बारे में व्यक्ति मानस में होने वाले संघर्षो

उसके अवचेतन तथा उपचेतन की परते उखाड़ चीड़-फाड़ करने लगा। इस दिशा में फ्रायड, युँग, एडलर, स्टेकेल, एलिस हेवलाक के सिद्धान्त तथा मान्यताएं उसकी पथ प्रदर्शक बनी। वह मनोविश्लेषण की नाना प्रणालियों - स्वप्न विश्लेषण, प्रव्यावलोकन, विश्लेषण, सम्मोह विश्लेषण, शब्द सह स्मृति परीक्षा और इतिवृत्तात्मक आदि के आश्रय से व्यक्ति मानस की गहराइयों को नापने लगा। इस धारा के प्रमुख उपन्यासकार हैं - जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, भगवती चरण वर्मा, डा0 देवराज आदि।

इलाचन्द्र जोशी के 'मुक्तिपथ' और 'सुबह के भूले' उपन्यासों को छोड़कर शेष सभी में फ्रायड के मनोविश्लेषण विज्ञान के सिद्धान्त का चित्रण है। कदाचित् वे इन सिद्धान्तों को प्रयोगात्मक रूप देने के लिए नाना रूग्ण पात्रों और कथाओं की कल्पना कर लेते हैं। जोशी और अज्ञेय के व्यक्तिवादी मनोविश्लेषण का एक ही मूलमंत्र हैं - "मनुष्य जो कुछ भी करता है, वह अपनी दमित कामवासना या अपरितुष्ट अहं की क्षतिपूर्ति के लिए करता है। मानव के समस्त कार्य कलाप के मूल में उसके अवचेतन मन की प्रेरणा रहती है।"[1]

जैनेन्द्र गाँधीवाद के अध्यात्म पक्ष पर जोर देते हुए आत्मपीड़न के द्वारा हृदय परिवर्तन में दो मूल प्रवृत्तियाँ हैं स्पर्धा और समर्पण स्पर्धा अहम का सजन करती है।, समर्पणवृतिस्व के पर के लिए उत्सर्ग कर देने में अपनी सार्थकता अनुभव करती है। जैनेन्द्र ने अहम् की निस्सारता दिखाकर समर्पण द्वारा 'स्व' और 'पर' में अभेद स्थापित करने में पीड़ा और व्यथा ही समर्तित है। व्यथा का तीव्रतम रूप काम गति यातना में प्राप्त होता है। इसीलिए जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों से काम पीड़ा और समर्पण का चित्रण करके अहं का विसर्जन किया है। मानव की मूल वृत्तियों के संघर्ष को समझने और उभारने के लिए जैनेन्द्र को अन्तमुखी होना पड़ा है। वे व्यक्ति मन की अतल गहराई में उतरे हैं, थोड़े अबूझ और रहस्यमय हुए हैं, स्वयं उन्हीं के शब्दों में - "जो एकदम वास्तविकता में लिप्त हैं - वह फिर चाहे जितना भी बड़ा आदमी समझा जाता है। सफल उपन्यासकार नहीं हो सकता। एकदम जरूरी है कि

---

1. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ0 शिवकुमार शर्मा, पृ0 618

वह कुछ अबोध भी हो, मिस्टिक हो।''[1] जैनेन्द्र के परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, विवर्त, व्यतीत, जयवर्धन, मुक्तिबोध, अनन्तर अनाम स्वामी और दर्शाक। प्रायः इन सभी उपन्यासों में काम पीड़ा का दर्शन स्वीकार किया गया है। ''काम अमुक्ति मानव को खण्डित कर देती है वह भटकने लगता है। विद्रोही और उच्छ्खल हो जाता है इसका दृष्टिकोंण ध्वसांत्मक हो जाता है। नारी के समर्पण से ही वह संतुलित हो जाता है।''[2] अग्येय जी पर फ्रायड, ती एक इलियट और डी एच लारेन्स का प्रभाव है। इनके शेखर एक जीवनी नदी, केन्द्रीय अपने अपने अजनवी उपन्यास हैं इनमें अत्यन्त जटिल सूक्ष्म और गम्भीर शैली में यौन प्रवृत्तियों का चित्रण किया गया है। जो हृदय को आह्लादित करने के स्थान पर इनकी कविता के समान बुद्धि को कुदेरती है।

डॉ0 देवराज् के उपन्यासों पथ की खोज, बाहर भीतर, रोडे और पत्थर तथा अजय की डायरी में शिक्षित मध्य वर्ग के करूणा यथार्थ का मनोवैज्ञानिक चित्रण है इस धारा की नवीन रचनाओं में धर्मवीर भारती के गुनाहों का देवता, सूरज का सातवॉं घोड़ा, प्रभाकर माचवे के तीन छोटे-छोटे उपन्यास परन्तु द्वाभा, तथा सॉंचा नरेश मेहता का डूबतो मस्तूल, डा0 रघुवंश का तन्तु जाल सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का सोया हुआ जल भारत भूषण अग्रवाल का लौटती लहरों की बॉंसुरी और निर्मल वर्मा का वे दिन उल्लेखनीय है।

साम्यवादी उपन्यास :

राहुल सांकृत्यायन के 'सिंह', 'सेनापति', 'बोल्गा से गंगा' तक तथा यशपाल के दादा कामरेड, आदि उपन्यास इस कोटि में आते हैं। यशपाल के उपन्यासों में युग जीवन के संघर्ष का वर्णन है। वे वर्तमान समाज की जर्जर मान्यताओं के खोखले पन को यथार्थवादी ढ़ंग से प्रस्तुत करते हैं। इस यथार्थवाद के साथ-साथ वे रोमानी पुट भी देते हैं। जो कि प्रायः अस्वाभाविक सा लगता है यशपाल की इस प्रवृत्ति को कुछ आलोचकों ने राजनीति रोमांस

---

1. उपन्यास में वास्तविकता : वीणा, सन् 1942

2. हिन्दी का गद्य साहित्य : डॉ0 रामचन्द्र तिवारी

की संज्ञा दी है। दिव्या इनका 'ऐतिहासिक उपन्यास है। नागार्जुन के प्रमुख उपन्यास है - बाबा बटेश्वर नाथ, वरूण के बेटे, रतिनाथ की चाची तथा दुःख मोचन आंचलिक उपन्यास बलचतमा में मध्यवर्गीय किसानों की दुःखभरी कहानी है। बाबा बटेश्वर नाथ में जमीदारों के शोषणात्मक हथकण्डों का उल्लेख है। राघेय राघव के घरौंदा सीधा सादा रास्ता विसाद मठ हुजूर और कब तक पुकार आंचलिक उपन्यास हैं तथा मुर्दो का टीला ऐतिहासिक। इनके साम्यवादी उपन्यासों में वर्ग वैशभ्य और आर्थिक शोषण मुख्य विषय है भैरव प्रसाद गुप्त क मसाल गंगा मैया और सत्ती मैया का चौंरा नामक उपन्यसों ने मार्क्सवादी सिद्धान्तों के आधार पर वर्ग संघर्ष का चित्रण है अमृत राय के उपन्यासों बीज नागफनी का देश और हाथी के दाँत में साम्यवादी चेतना है। लक्ष्मी नारायण लाल के उपन्यासों में धरती की आँखे और रूपा जीवा विशेष उल्लेखनीय हैं। राजेन्द्र यादव के प्रेत बोलते हैं (संशोधित संस्करण - सारा आकाश) उखड़े हुए लोग, कुलटा, सह और मात तथा मुखर चिन्तन उपन्यास उपलब्ध होते हैं। यादव प्रारम्भ में सम्न्वयवादी विचारधारा से प्रभावित थे किन्तु अब इन पर यह प्रभाव कम तो हो गया है।

ऐतिहासिक उपन्यास :

यद्यपि हिन्दी में उपन्यासों की यह धारा बहुत क्षीण सी है फिर भी विचार करने योग्य है। पूर्व-प्रेमचन्द्र युग में जो ऐतिहासिक उपन्यास मिलते हैं वे केवल इतिहास नामधारी उपन्यास हैं। इस क्षेत्र में बृन्दावनलाल वर्मा, निराला, सांकृत्यायन, हजारी प्रसाद द्विवेदी और चतुरसेन का नाम उल्लेखनीय है। चतुरसेन की नैशाली की नगर वधू एक सुगठित ऐतिहासिक रचना है। इनकी काव्य रचनायें हैं - रक्त की प्यास, मन्दिर की नर्तकी, सोमनाथ, अमर सिंह, आलमगीर, वयंरक्षामः, सोना और खून, तथा सहयाद्रि की चट्टानें आदि। आचार्य चतुरसेन की भारतीय पुरातन इतिहास और संस्कृति के प्रति अगाध आस्था थी और उनके चित्रण में वे इतिहास-रस की सृष्टि करना चाहते थे। इनका दृष्टिकोंण सर्वदा आदर्शोन्मुख और प्रगतिशील बना रहा है। ऐतिहासिक उपन्यसों की परम्परा में वृन्दावन लाल वर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनके गढ़ कुंडार' विराट की पद्मिनी, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई, और

मृगनयनी ऐतिहासिक उपन्यास है। जिनमें बुन्देखण्ड के ऐतिहासिक विस्मृत प्रसंगों को सजीव किया गया है। वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों की विशेषता को प्रभाकर माचवे ने इन शब्दों में प्रकट किया है –"उनकी रचनाओं में हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसा वाग्वैग्ध्य या यशपाल या राहुल का सोद्देश्य गत प्रचार नहीं मिलता, तो भी उनकी सबसे अच्छी विशेषता यह है कि वे अपनी भूमि से निकट का ही विषय चुनते हैं, उससे बाहर नहीं जाते।"[1]

अमृतलाल नागर के शतरंज के मोहरे, और 'सुहाग के नुपूर', ऐतिहासिक उपन्यास हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी उपन्यास जगत में जयदेव के गीत गोविन्द की भाँति एक नया संदर्भ उपस्थित किया है। इनके उपन्यासों में इतिहास, कल्पना, धर्म दर्शन, संस्कृति, मिथक, प्रतीकबिंब एवं निजधरी कथाओं एक अनूठा समिश्रण है। वाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्रलेख, पुनर्नवा, और अनाभदास का पीथा इनकी औपन्यासिक कृतियाँ हैं। राहुल सांकृत्यायन के "सिंह सेनापति" "जय मौधेय' मधुर स्वप्न, और विस्मृत यात्री, ऐतिहासिक उपन्यास हैं। यशपाल की दिव्या में बौद्धकालीन वर्ण व्यवस्था और उससे उत्पन्न वर्ग संघर्ष का चित्रण है। इस पर मार्क्सवाद का स्पष्ट प्रभाव है। यशपाल का 'अमित' भी एक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसमें अशोक की कलिंग विजय की ऐतिहासिक विजय गाथा का निरूपण हैं। रांगेय राघव के मुर्दो का टीला, प्रतिदान, अँधेरे के जुगनू और राह न रूकी, ऐतिहासिक उपन्यास हैं। शिव प्रसाद रूद्र का बहती गंगा ऐतिहासिक उपन्यास क्षेत्र में एक नया प्रयोग है। वीरेन्द्र कुमार जैन का मुक्तिदूत एक सशक्त ऐतिहासिक उपन्यास है। इसके अतिरिक्त यादवेन्द्र शर्मा का सन्यासी और सुन्दरी तथा बनकाम सुशील के धूलि और बर्तन, सामन्त बीजगुप्त तथा इरावती उल्लेखनीय है। भगवती चरण वर्मा जी के चित्रलेखा के कथानक का जहाँ अन्त होता है, वहाँ से सामन्त बीजगुप्त का कथानक आरम्भ होता है। इरावती के लेखक ने जयशंकर प्रसाद के अधूरे उपन्यास को पूरा किया है।

---

1. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ : डॉ0 शिवकुमार शर्मा, पृ0 621

आधुनिकता बोध के उपन्यास :

औद्योगीकरण वौद्धिकता के अतिरेक, मन्त्रीकरण अस्तित्व की पाश्चात्य विचारधाराओं के फलस्वरूप आधुनिकता की जो स्थिति उत्पन्न हुई, उसका प्रतिबिम्ब साहित्य भी अन्य विधाओं के समान हिन्दी उपन्यास पर भी पड़ा। मोहन राकेश के अंधेरे बंद कमरे तथा आने वाला कल आधुनिकता से अधिक प्रभावित है। इनमें आस्थाहीन समाज और त्रिशंकु, सरोखे इंसानों का चित्रण हैं। निर्मल वर्मा का वे दिन, आधुनिक संवेदना से सम्पन्न उपन्यास है। राजकमल चौधरी के उपन्यास मछली मरी हुई में समलैंगिक यौन सुख में लिप्त स्त्रियों की कहानी है। यह अपने कथ्य और शैली की दृष्टि से एक अपनी कोटि का अलग उपन्यास है। उपर्युक्त श्रेणी के उपन्यासकारों में श्रीकान्त वर्मा, कमलेश्वर, नरेश मेहता, मन्नू भंडारी, उष प्रियंवदा, गौरादंत शिवानी, रजनी पनिक्कर, कृष्ण बल्देव वैद्य, गिरिराज किशोर, भीष्म साहनी, रामकुमार भ्रमर, मधुकर गंगाधर, उदयराज सिंह, तथा बाल गौरिरेलि विशेष है।

महिला उपन्यासकार :

यो तो प्रेमचन्द्र युग में ही हिन्दी कथा रचना के क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हो चुका था किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद नारी जागरण और स्त्री-शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप इस क्षेत्र में महिला रचनाकारो की एक सशक्त पीढ़ी का उदय हुआ।

शशिप्रभा शास्त्री(1923 ई), गौरा पंत शिवानी (1923ई0), कृष्णा सोबती (1925ई0) दीप्ति खण्डेलवाल (1930ई.) मन्नू भण्डारी (1931 ई0), उषा प्रियंबदा (1931ई.) राजी सेठ (1935ई), मंजुल भगत(1936ई.) मृदुला गर्ग (1938) ममता का लिया (1940), दिनेश नंदिनी डालमिया, निरूप्रभा सोवती, मेहरून्निसा परवेज (1944) चन्द्रकान्ता, सोननिशा, चित्रा मुद्गिल (1944), कान्ता भारती कुसुम कुमार, मृणाल पाण्डेय (1946), नासिरा शर्मा, सूर्यबाला आदि महिला उपन्यासकारों ने समकालीन लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

शिवानी के उपन्यास :-

हिन्दी उपन्यासों का संक्षिप्त विहगावलोकन करते हुए पहले कहा जा चुका है कि हिन्दी

में कथा प्रधान, चरित्र प्रधान, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, समस्या प्रधान, सामाजिक, आदर्शवादी उपन्यास, यथार्थवादी उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास आदि प्रमुख रूपों में विभक्त हुआ है। इसी क्रम में महिला लेखन की भी चर्चा हुई है।

श्रीमती गौरा पंत 'शिवानी' महिला लेखिका हैं उन्होंने मुख्य रूप से बड़े और लघु उपन्यास लिखे हैं। लघु उपन्यास वास्तव में उपन्यास का ही एक ऐसा रूप है जिसकी उससे मुख्य अन्तर परिस्थितिगत विस्तार में हैं, इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता। ये लघु उपन्यास व्यस्ततम् जीवन की मांग है, ये लघु उपन्यास आन्तरिक अनुभूति की तीव्रता और गहराई की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लघु उपन्यास और बड़े उपन्यास के सन्दर्भ में डॉ0 प्रताप नारायण टण्डन का मत है – " कि लघु उपन्यास रचयिता के जीवन में घटित होने वाली किन्हीं विशिष्ट घटनाओं का संवेदनशील और अनुभूतिबद्ध लेखा-जोखा होता है। इस दृष्टि से उसमें वैयक्तिकता का समावेश हो जाता है। उसका छोटा भाई और ग्रथित कथानक और उसकी सीमित पात्र संख्या उसे एक सृजनात्मक रूप से ठोस स्वरूप प्रदान करता है।"[1]

कहना नहीं होगा कि अपने स्वरूप में उपन्यास अपेक्षाकृत नवीन विधा है। उसकी कथा किसी भी जीवन के क्षेत्र से हो सकती है। क्योंकि कथानक ही उपन्यास का मूल आधार है जिस पर उपन्यासकार अपने भवन को खड़ा करता है। शिवानी ने अपने लघु उपन्यासों में कथा तत्व घटनाओं का आरोह-अवरोह बड़े कुतुहलता से कियाहै। यहाँ हम उनके लघु और बड़े उपन्यासों की संक्षिप्त कथा देकर तदुपरान्त प्रयुक्त पात्रों का वर्गीकरण करेंगे।

1. विषकन्या[2] :-

दो जुडवा बहनों की मार्मिक व्यथा कथा इसमे संकलित हैं इनमें एक-माता-पिता की आँखों की पुतली थी, तो दूसरी परिस्थितिवशार्थ यथार्थ किरकिरी बन गयी। शिवानी ने अपने प्रतिवेशिनी कुतूहल प्रिया नायिका की चर्चा करते हुए उसके सामीप्य प्राप्ति हेतु लालायित नारी

---

1. हिन्दी उपन्यास कला, पृ0 27

2. प्रकाशक सरस्वती विहार, संस्करण 1994

समाज उत्सुकता से कथा का प्रारंम्भ किया है। अचानक वह दुःसाहसी नायिका लेखिका को अपने घर आमंत्रित करती है और भोजनोपरान्त अपने जीवन के उलझे-सुलझे सूत्र भी थमा देती है। पहाड़ स्थिति डाक्टर के घर में कामिनी और दामिनी दो जुड़वा बहनें उत्पन्न हुई। दामिनी संयत, शिष्ट और धीर, तो कामिनी विद्रोहिणी थी। शिक्षोपरान्त कामिनी हवाई परिचारिका बन जाती है।

जुड़वा वहनों की भाभी को ससुराल भेजने उसका भाई रोहित घर आता है। ज्वराक्रान्त के कारण सम्पूर्ण घर उसकी सुश्रुषा करता है, दामिनी की परिचर्या से प्रसन्न होकर रोहित ने उसे अपना परिणीता बनाया जबकि किसी हवाई यात्रा के मध्य रोहित कामिनी से अपना प्रेम निवेदन कर चुका था।

कामिनी की दृष्टि में कुछ आस्वाभिक तत्व आ गया था कि वह प्रसन्न होकर जिस वस्तुत की प्रशंसा कर दे वह वस्तु नष्ट हो जाती थी। दुर्भाग्यवश हवाई यात्रा पूर्ण कर उश्रृंखला कामिनी अपनी दीदी से मिलने कलकत्ता पहुँचती है। घर में गृहस्वामिनी न होने पर भी घर के नौकर-चाकर दरबान आदि ने उसे दामिनी के रूप में ही गृहस्वामिनी मान लिया। यहाँ तक उसका जीजा रोहित भी उसे नहीं पहचान सका और वह उसे पत्नी की तरह अंकशायिनी बना लिया। अचानक तीसरे दिन गृहस्वामिनी आ गई और बदली हुई परिस्थिति में दामिनी रूष्ट होकर मायके चली गई तभी उसकी माँ आकर कामिनी को दामिनी समझकर समझाती है, कि कामिनी अपना कैसा सर्वस्व लुटाकर कुमारी माँ बन गई है।

कामिनी के साथ उसे रोहित संशयग्रस्त हो गया, उसने रात्रि में झील में तैरने का कार्यक्रम बनाया उसके मधुर आह्वान पर कामिनी भूल गई कि उसकी बड़ी बहन दामिनी तैरना नहीं जानती थी और वह रोहित के छलावे में मूर्खा बन गयी। सद्यःस्नात रोहित के सौन्दर्य पर मोहित होकर कामिनी विषकन्या बनकर उसके सौन्दर्य की प्रशंसा करती ही है कि कोबरे के दंश से रोहित की मृत्यु हो जाती है। स्वसुर डा0 ने धन्वन्तर बनकर भी अपने जमाता की रक्षा नहीं कर सका और उसकी दामिनी पहाड़ खाकर गिर पड़ी। अंत में विषकन्या बनी कामिनी उपन्यास लेखिका से आग्रह करती है कि उसका मकान अत्यन्त भव्य एवं सुन्दर है एवं उनकी लिखी हुई कहानियां अद्वितीय होती हैं इसका जहर लेखिका को तीसरे दिन

मिला। बदली के फरमान के रूप में और लेखनी न जाने कब से पंगु हो गयी थी।

2. रथ्या :-[1]

रथ्या वैश्याओं के मुहल्ले तक जाने वाली पतली गली को कहते हैं। इस उपन्यास में शिवानी ने एक अल्हड़ मासूम ग्रामीण युवती की कसक भरी प्रेम गाथा निरूपित की है; जो अपने प्रेमी का सानिध्य न पाने के कारण महानगर में कैबरे ड्रान्सर बन जाती है। इसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है – हरदत्त वैद्य पहाड़ के प्रसिद्ध ज्योतिषी भी थे विमलानंद उनका पुत्र था। उसी गाँव में हरदत्त के दिवंगत मित्र विष्णुदत्त की अनाथा दुहिता बसंती का बाल्यकाल जीवन्ती बुआ के सानिध्य में कटा जो गाँव में बारात के समय भोजन बनाकर अपना जीवन-यापन करती थी। धीरे-धीरे बसंती उदण्ड होकर हरदत्त वैद्य से पूजा के समय ही चूरण मांगने जाती थी। भाग्यवशात् अपनी दीर्घ शिखा हिलाहिलाकर सूत्र रटने वाले विमलानन्द से वह दुर्दान्त किशोरी चूरण लेने आ गयी। अचानक बसंती के कुर्ती में डंक उठाये चलने वाले बिच्छू को विमलानन्द ने मार गिराया तभी वह उसके अस्पष्ट यौवन जनित हस्ताक्षरों को देखकर लज्जारुष हो गया। इसी समय अल्मोड़ा में आये हुए सर्कस में अपने दुःसाहिक कृत्यों से सर्कस की लड़कियों ने बसंती का मन मोह लिया और वह उन्हीं के साथ गाँव छोड़कर शहर पहुँच गयी। फिर क्रमशः वह अपने रूप सौन्दर्य के बल पर कैबरे नृतकी बन गयी। क्योंकि बसन्ती के अनाथा होने के कारण हरदत्त वैद्य ने नाड़ी दोष के कारण विमलानन्द का विवाह बसंती से नहीं कर सके थे और एक कर्कशा कन्या से विमलानन्द का विवाह सम्पन्न हो गया। दैववशा विमलानन्द सर्वश्रेष्ठ अध्यापक का राज्य पुरस्कार प्राप्त करने जब वह लखनऊ गया वहीं से वह बसंती से मिलने के लिए दिल्ली पहुँच गया। उसके साथ चाक्-चक्क वैभव से भयाक्रान्त विमल बसन्ती के मोहक स्वागत से इतना अभिभूत हुआ कि वह बसन्ती के स्नेहभरे आमंत्रण में फिसलने वाला ही था तभी बसन्ती अपने निष्क्रमण की महागाथा और अपने वैभव की जो कथा सुनाई और कैसे नर्तकी बनी, साथ ही अपने घर

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994

तक आने वाली गली के नामकरण के विषय में विमल से पूछा रथ्या और उसका वास्तविक अर्थ जानकर बसन्ती क्रुद्ध हो गयी अपनी वास्तविकता का बोध होते ही वह खिन्ना बन गयी। यहाँ तक विमलानन्द के दूसरे विवाह प्रस्ताव को खोटे सिक्के सा लौटा दिया। सजग विमलानन्द चुपचाप बसन्ती के दामी उपहारों को छोड़कर अपनी पारम्परिक वेशभूषा में ही रथ्या को रौदता हुआ तीर सा निकल गया।

3. चल खुसरो घर आपने[1] :

यह उपन्यास आमिर खुसरों के सेर पर आधारित है। इसमें उस नारी की अन्तर्व्यथा है जो शिक्षित है, जिसमें सेवा, परायणता और कर्तव्यभाव कूट-कूट भरा है। लेकिन घटनाचक्र उसके जीवन को उस मोड पर लाकर खड़ा करता है जिसमें उसकी व्यथा घुटन के रूप में व्यक्त होती है। लखनऊ के सामान्य मध्यम श्रेणी के परिवार में कुमुद उसकी माँ, बहन उमा तथा भाई लालू रहते हैं। पिता की मृत्यु के पश्चात् पारिवारिक उत्तरदायित्व का वहन जितनी तत्पर से कुमुद ने किया उसके कारण उसका भाई लालू उदण्ड और स्वेरमी बन गई। परिणाम स्वरूप कुमुद राजा राजकमल सिंह के विज्ञापन से आकृष्ट होकर उसकी पत्नी की परिचर्या हेतु बाहर चली जाती है। राजा राजकमल सिंह, उनकी पत्नी मालती, उनका पुत्र जीवन यापन कर ही रहे थे कि अचानक पुत्र स्वीमिंग पुल में डूबकर कर मर जाता है। मालती मानसिक रूग्णा बन जाती है। उसकी परिचर्या हेतु पूर्व काल में मरियम नाम की अनाथा ईसाई थी जो राजा राजकमल सिंह के रूप से आकृष्ट होकर प्रेम करने लगी थी जिसे राजा ने अपने सौम्य व्यक्तित्व से उसे डाट दिया था। दुर्भाग्यवशा यही मरियम राजकमल सिंह के धोखे कृष्णकमल सिंह के बाहुपाश में बध जाती है। परिणाम स्वरूप कुमारिका मातृत्व के लक्षणों को देख वह पंखे में झूल आत्महत्या कर लेती है। राजा राजकमल सिंह ने इस घटना का उल्लेख करते हुए कुमुद को अपने परिवारिकजनों से दूर रहने का निर्देश दिया था। कुमुद की सेवा से मालकिन कुछ ठीक ही हो रही थी कि अचानक बाहर से लौटे राजा राजकमल

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 2001

सिंह गम्भीर अस्वस्थ हो गये मुमूर्ष अवस्था में कुमुद का हाथ पकड मालती के धोखे प्रेम भरी वातें बड़बडाने लगे जिसे मालती पुनः अपने उग्र उनमादी रूप में आ गयी और एक दिन वह पास आये कुमुद का गला दबा दिया। राजा राजकमल सिंह अस्वस्थ्य होते हुए भी कुमुद की रक्षा की और भयभीत कुमुद कविराज गोस्वामी के घर जाकर अपनी व्यथा-कथा सुना उचित परामर्श माँगती है, उसके मन में यह अर्न्द्वन्द था कि राजा ने उसे सभी प्रकार के धन वैभव में सहायता की थी जबकि आज उसे कुमुद की सेवा की आवश्यकत है। पूरा परिवार कुमुद को व्यभिचार मे मानने लगा था। अतः क्षमा भरा पत्र लिखकर वह शिथिल शरीर अवसन्नचित्त लेकर अपने घर वापस लौट आती है। मरियम के कमरे में प्रतीकात्मक रूप में वह अपना निष्प्राण मन अदृश्य रूप में टाँग आयी थी।

4. माणिक - [1]

माणिक रत्न पर केन्द्रित यह लघु उपन्यास अविवाहित बड़ी वहन के प्रेम और कुंठाओं की व्यथित कर देने वाली रोचक कथा है। नलिनी और रम्भा दो सगी वहने थी पिता ने अपनी सम्पत्ति का वँटवारा आधा-आधा कर दिया था। केवल माणिक की अँगूठी के विषय में उनका विचित्र आदेश था। कि जो भी उनकी लड़की अविवाहित रहेगी माणिक उसे मिलेगी और दोनों के विवाहित होने पर माणिक का विक्रय कर दोनों बहनों में समान रूप से बाँट दिया जाय।

नलिनी छात्राओं के स्कूल में प्रधानाध्यापिका थी जिसका अनुशासन बहुत कठोर था। यहाँ तक की छोटी बहन रम्भा भी उससे अछूती नहीं रही। पिता के न रहने पर नलिनी ने रम्भा को पाला-पोशा ठेकेदार पिता नें धन संचय कर उन्हें सम्पन्न अवश्य बना दिया था। रम्भा अपनी संगीत अध्यापक के साथ प्रेम विवाह कर अपनी गृहस्थी बसा लिया, उसका एक छोटा सा पुत्र भी था। सेवा निवृत्त के पश्चात् नलिनी ने अपनी समस्त पूँजी से वाटिका नाम का पिरामिड़ जैसा भव्य मकान बनवाया, मधुमेह उक्त रक्तचाप और अपनी वृद्धा नौकरानी

---

1. *हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 2000*

को लेकर उस निवृत्त प्रासाद में रहने आ गयी। अचानक एक अद्वितीय सुन्दरी वर्षा से बचने के लिए नलिनी से आश्रय माँगती है। अपनी वाक्य पटुता से यह अतिथि दीनावाट्लीवाला नलिनी के मकान के स्थापत्य की ऐसी प्रशंसा करती है जिससे वह अभिभूत हो वह अपरिचिता होट्ल से उसके घर और अतिथिकक्ष से उसके सैन्य कक्ष में प्रविष्ट हो गयी। फिर तो नलिनी और दीना वाट्लीवाला की क्रिया-कलाप देख लक्ष्मी भी हतप्रद रह गयी उसकी इस प्रकार की आस्वाभाविक क्रिया-कलापों को सुनकर रम्भा मिलने आती है, किन्तु दोनों को निभृत्त कुंज में ठहाके लगाते हुए देख आश्चर्य चकित रह जाती है। नलिनी ने दीनावाट्लीवाला को अपनी छोटी बहन बना लिया था। जो रम्भा को सह नहीं था। कथा का उपसंहार रामसहाय और चौकीदार के पत्र में उल्लिखित वीमारी से होता है। रम्भा पति के साथ जब वाटिका पहुँचती है तब लक्ष्मी और नलिनी दोनों की मृत्यु हो चुकी थी। नलिनी ने अपनी वसीयत में दीना वाट्लीवाला को बैंक की राशि दे गयी थी और माणिक रम्भा के नाम किन्तु जब वे बैंक लाकर खोलने गये तो डिबिया में माणिकहीन अँगूठी किसी कंकाल के शून्य नयन कोटर सी अपने सोने के नन्हें पंख फैलाए विवश पड़ी थी।

5. कस्तूरी मृग[1] :

कस्तूरी मृग एक प्रतीकात्मक लघु उपन्यास है। हरिण की नाभिक में जब कस्तूरी बनती है; उस गंध से मोहाविष होकर वह बाह्य संसार में वन-वन भटकता है इसमें भी एक ऐसी तरूण की व्यथा-कथा जो कस्तूरी मृग की तरह गंध की तलाश में भटकता रहा एक पिता जो एक तरूणी रूपशी गायिका के मोह में ऐसे डूबे की घर बार पत्नी-पुत्र को भूल दूर रहने लगे। पत्नी की अकाल मृत्यु हो गयी और पुत्र स्वावलम्बी होकर शासकीय बन गया। नन्हें अपने मित्र दिनेश से अपने संकल्प को व्यक्त करता है कि जिसने बचपन से लेकर यौवन तक तिल तिलकर मारा है उससे सूद सहित ऋण वसूल कर ही दम लेगा। कथा कुछ इस प्रकार है :-

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994

कथानक :

नन्हें के बाबा जमीदार संगीत प्रेमी थे उनके दरबार में ख्यातिलब्ध संगीतकारों के साथ-साथ प्रख्यात वैश्याएँ सम्मिलित होती थीं। नन्हें के जन्म के साथ राजेश्वर नाम की गायिका उनके पिता से लग गयी उन्होंने उसके लिए गंगापार आलीशान कोठी बना दी और वहीं रहने लगे। जमीदार का कार्य घोष बाबू देखते। नन्हें के बीमार होने पर भी पिता अपनी मेनका को लिए कश्मीर घूमते रहे घर के एक-एक करके आभूषण उसी के उदार खजाने में विलीन होते गये। माँ दमा की मरीज बन सिनिटेरियम में भर्ती हुई तब नन्हे के फूफा और वुआ भतीजी लेकर नन्हें का पालन-पोषण करते रहे यही किशोरी कनक से नन्हें का परिचय हुआ: अफसर बनकर नन्हें जब अपनी कोठी में लौटा तो वहाँ गलित कुष्ठ से विकृत उसका पिता असहाय पड़ा मिला, किसी तरह अपने पिता को कुष्ठ आश्रम भेज, नन्हें अपने फूफा से मिलने उनके गाँव गया और कनक को अविवाहित सुनकर स्वयं विवाह का उत्सुक हो गया। फूफा अवधनारायण के मना करने पर भी नन्हें अपने अफसरी रथ में सवार होकर कनक के गाँव पहुँचता है और उसके माता-पिता से अपना प्रस्ताव रखता है। तभी कनक के पिता यह ताना देते हैं कि जिसका बाप जिन्दगी भर वैश्या के कोठे में रहा हो गलित अंगों के कारण कुत्ते की तरह मृत्यु पायी हो। उसके पुत्र से कनक का विवाह नहीं हो सकता। आहत कुपित नन्हें उस राजेश्वरी की बहु विधि खोज करता है जिसके नयन सर से विध हो पिता ने अपनी गृहस्थी ही नहीं उजाड़ी अपितु पुत्र को अविवाहित रहने का शाप भी दिया था। अन्त में वह राजेश्वरी के पास पहुँचता है, उसकी पुत्री बृंदा को गायिका बनते देख उसे थोड़ी सी राहत मिलती है अन्धी दीन-हीन पद-दलित-राजेश्वरी को देख नन्हें का प्रतिशोध शान्त हो गया और वह चुपचाप वापस लौट आता है वह कस्तूरी मृग के समान अपनी ही गंध के लिए भटकता रहता है।

6. कैंजा[1] :- (कथानक)

कैंजा का अर्थ है सौतेली माँ ये एक ऐसी युवती की कहानी है जो कुँवारी होकर दूसरे

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1996

के पुत्र का मातृव्रत् पालन करती है और अन्त में उसे लगता है ये उसका अपना ही है। नन्दीतर्रे बालक रोहित के साथ पहाड़ आती है रोहित को पिता से मिलवाने के लिए क्योंकि गुजरात में बालकों के स्कूल में पढ़ते हुए अन्य बालकों के समान अपने पिता का नाम नहीं लिख पा रहा था। कुमायूँ निवासी सुरेश भट्ट ब्राम्हणों का सिरमौर तो था ही शिक्षा और प्रवृत्ति से वह अपने को ऊँचा समझने लगा था। नन्दी के पिता हेमचन्द तिवारी नेपाल के राणाओं के राजज्योतिषी थे। जो वहाँ से आकर कुमायूँ में बस गये थे। छोटी नन्दी रामलीला में राम बनती अचानक बालिका से किशोरी बनी नन्दी को देख सुरेश भट्ट मुग्ध हो गया और वह स्कूल आते जाते नन्दी को मेनका कहकर छेडने लगा। नन्दी का जन्मांक वैधव्य की सूचना दे रहा था। इससे उसके पिता नन्दी को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे। सुरेश भट्ट के चाचा गदाधर भट्ट के प्रस्ताव को नन्दी के पिता ने अस्वीकार कर दिया तब उदण्ड शरारती सुरेश भट्ट स्वयं अपने धृष्ट प्रस्ताव को लेकर नन्दी के पिता के पास पहुँच गया। अस्वीकृत सुनते ही सुरेशभट्ट ने धमकी दी कि उसके अलावा नन्दी का विवाह किसी से नही हो सकेगा। नन्दी उच्च शिक्षा के लिए बाहर चली गयी, इस बीच सुरेश भट्ट का विवाह भी हुआ और वह असमय विधुर बन गया। सुरेश भट्ट अनेंक दुर्गुणों की खान बन गया। नन्दी डाक्टरी परीक्षा उत्तीर्ण की और वह शहर में हाउस सर्जन का कार्य कर ही रही थी कि पिता की मृत्यु की सूचना सुन जब कुमायूँ पहुँची उसकी मुखरा ताई ने सुरेश भट्ट के अमानषिक दुर्दान्त घृण्य कार्यो का विवरण दिया कि उसके गाँव की रहने वाली मालदारिन बिरादरी से बहिस्कृत की उसकी कन्या जो मानसिक एवं शारीरिक रूप से विकलांग थी, वह पगली जब बड़ी हुई सुरेश भट्ट के अमानुषिक दुराचार की शिकार हो गयी। रस्सी से बँधी उस बालिका का पाप धीरे-धीरे उजागर होने लगा और समय पर नन्दी के पहुँच जाने पर उसके बच्चे को तो बचा लिया गया किन्तु पगली मर गयी। इस अवैध संतान को उसकी नानी भी पालना नहीं चाहती थी, इसीलिए नन्दी ने उसे गोद लेने का दृढ़ संकल्प व्यक्त किया। आगे चलकर यही बालक रोहित कहलाया। असमय शारीरिक अत्याचार से सुरेश भट्ट अपने गाँव वापस लौटा तभी नन्दी अपने रोहित को लेकर यहाँ इस आशय से आयी थी कि समाज की लांक्षना, विद्रप व्यंग्य झेलकर वह रोहित के पिता को अपना पति बनाकर साथ ले जायेगी। पहाड़ में

पहुँचते नन्दी का अद्‌भुत स्वागत हुआ। नन्दी निरतब्ध रात्रि में समीपस्थ शिव मंदिर में जाकर अपने संकल्प की पूर्ति के लिए मृत्युंजीवी लिंग से मनौती मानकर लौट्ते समय कौतूहल वश सुरेश भट्ट के अध्ययन कक्ष के बाहर खड़ी हुई हतप्रभ सुरेश भट्ट के आह्वान पर नन्दी उसके छाती पर सिर रखकर फूट-2 कर रोने लगी। नन्दी ने सुरेश से अपना अकल्पनीय किन्तु सुविचारित मंतव्य व्यक्त किया। वह सुरेशभट्ट से विवाह कर उसे रोहित के पिता के पद पर अभिशप्त कर अपने साथ ले जाना चाहती थी। दूसरे दिन रोहित को लेकर वह सुरेश भट्ट के पास गयी। उसे इंजेक्शन लगाया, उसकी दाढ़ी बनायी और रोहित से परिचय कराते हुए ये कहा कि अब दोनों का मेल हो गया है।

रोहित को खिलौने लेने के बहाने ताई के भान्जे के साथ उसे दो दिन के लिए नैनीताल भेज दिया और गाँव वालों से अपनी योजना बताते हुए सुरेश भट्ट के साथ विवाह कर उसके पूर्व जीवन के कलंक को ब्रम्हकुंड की पवित्र धारा में प्रवाहित कर वह रोहित को यह पता नहीं लगने देना चाहती थी कि वह किसी पगली का अवैध पुत्र है। उसकी नानी हत्यारिन और पिता शराबी था। विवाह के समय ताई ने कन्यादान किया। फेरों के मध्य मूर्छित सुरेश को इन्जेक्शन लगाकर ऐन-केन-प्रकारेण नन्दी ने अग्नि की प्रदक्षिणा की। अचानक रात्रि में सुरेश भट्ट की तबियत खराब हो गयी कण्ठ से घरघराती हुई अजान को सुनकर ताई ने उसके अन्तिम समय में गले मे डालने के लिए तुलसीदल ले आयी तभी नन्दी ने यह स्वीकार किया कि नन्दी सुरेश से ही प्यार करती थी उसकी परूषता, मुखरता और उदण्डता पर वह रीझ गयी थी। सुरेश भट्ट के सर्वनाश के मूल में नन्दी ही थी।

कथा का समापन अत्यन्त कारूणिक, मार्मिक और हृदय द्रावक है। सुरेश भट्ट की मृत्यु पर नन्दी की कब चूड़ियाँ टूटी उसने मंगलसूत्र झटक दिया। तीसरे दिन नन्दी पुत्र रोहित को लेकर जाने के लिए तैयार हो गयी। रोहित की नानी मालदारिन यकायक प्रकट होकर पुत्र पालन हेतु नन्दी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर रही थी रोहित के पूँछने पर वह रोहित को पगली का विवरण बताकर नन्दी को कैंजा बताया जिसे सुन रोहित जड़ हो जाता है। कप-प्लेट तोड़ने लगता है और नन्दी की छाती में मुँह छिपाकर वह कहता है कि नन्दी उसकी कैंजा नहीं है।

7. कृष्ण वेणी[1] :

कृष्ण वेणी उपन्यास में शिवानी ने भविष्य के अतल गहराई या अन्धकार में छिपी घटनाओं को जानने वाली नायिका के चातुर्दिक परिवेश को चित्रित किया है, जो सबका भविष्य तो देख सकती है। किन्तु अपने जीवन को नहीं देख सकी। इसका कथा सारांश इस प्रकार है –

कथानक :

दक्षिण के कपालेश्वर मंदिर की स्थापत्य कला मूर्ति का आकर्षण एवं आरती के समय उपस्थित होने का सौभाग्य मानने वाली उपन्यास की कथावाचिका कृष्णवेणी को देखती है। किन्तु भीड़ के प्रवाह में वह चाहकर उससे भेंट नहीं कर सकी सन् 1941 में मद्रास के समुद्र के किनारे अतल जलराशि को देखती-देखती कथा वाचिका इसी अतिन्द्रिय लोक में पहुँच गई थी कि कृष्णवेणी के मिलन की घटना को याद करती हुई महायुद्ध की विभीषिका और छात्रावास में रहने वाली सहपाठियों के बीच की गयी कृष्ण वेणी की भविष्यवाणी सार्थक सिद्ध हुई। वात यह है कि कृष्ण वेणी को कभी-कभी ऐसी दिव्य दृष्टि प्राप्ति हो जाती थी कि वह भविष्य की घटनाओं का हस्तामलक कर लेती थी। कृष्णवेणी ने परिक्षाओं की सम्पन्नता की सूचना दी थी और इस प्रकार उसकी इस शान्ति का पता उसकी सहेली को लगा। कृष्ण वेणी के मामा के आपरेशन एवं घोड़ों की रेश में पिता के द्वारा पूँछे गये नामों को सही उतरने पर उनकी पिता की सम्पन्नता बढ़ने लगी। कृष्णवेणी का विवाह उसके जन्म के तीसरे वर्ष उसके मामा से होना निश्चित हो गया था क्योंकि उनकी कुल परम्परा यही थी। दुर्भाग्यवश शान्ति निकेतन में पढ़ने के लिए आयी हुई वेणी के व्यक्तित्व से आश्रमवासी अप्रभावित हुए बिना नहीं रहे वेणी धीरे-धीरे बाँसुरीवादक भाष्करन के निपुणता पर मोहित हो गयी। माता-पिता द्वारा वेणी के आकर्षण की बात सुनकर उन्होंने उसे घर में बन्दी बना दिया क्योंकि वे जानते थे कि भाष्करन के पिता छूत वाले गलित कुष्ठ रोगी थे। पिता की मृत्यु के वाद वेणी ने भागकर भाष्करन से विवाह कर लिया उसे कोढ़ हो गया। और वह अपने

1. *हिन्द पाकेट बुक्स, संस्करण 2001*

पति भास्करन को लेकर इसी कपालेश्वर मंदिर के पास कुटिया बनाकर रहने लगी थी। वेणी की आत्मकथा सुनकर उसकी यह सहपाठिनी कथा वाचिका वेणी के घर मिलने गयी तो पता लगा कि माँ को आँखों से दिखाई नहीं देता कुछ ऊँचा सुनने भी लगी थी और उसे इस बात का विश्वास नहीं था कि वेणी अभी जीवित है।

इस प्रकार शिवानी ने कृष्ण वेणी के रहस्यमय संसार को चित्रित कर इसका समापन बड़ी नाट्कीयता से किया है। बात यह है कि वेणी की माँ और उसके मामा उसे जीवित नहीं समझते जबकि यह सहपाठिनी चौबीस घंटे पहले ही कृष्ण वेणी की आत्मकथा सुन चुकी थी।

8. अतिथि[1] :-

अतिथि की कहानी स्वावलम्वी सबला स्त्री के स्वाभिमान और संकल्प की यशोगाथा है जो कोरी भावुकता और परम्परित गुलामी में विश्वास नहीं रखती। वह सिसकियों में घुट-घुट कर जीने वाली नारी नहीं अपितु सवलावलीयशी का प्रत्यक्ष उदाहरण है। हिन्द पाकेट बुक्स के 1993 के संस्कर ण से इसकी कथावस्तु दी जा रही है।

कथावस्तु :-

श्यामाचरण और माधव सहपाठी थे। श्यामाचरण तेजस्वी प्रतिभावान छात्र था जबकि माधव उसका अनुगामी था। माधव अध्ययन के दौरान महात्मा गाँधी के अहिंसापरात्मक आन्दोलन से प्रभावित होकर राजनीति में कूद पड़ा जेल गये और पुलिस के डंडे भी खाये परिणाम स्वरूप देश स्वतंत्र होते ही वे विधायक और बढ़ते-बढ़ते मंत्री बन गये। कार्तिक और लीना उसकी संतानें हैं। चन्द्रा उसकी पत्नी है। जो आधुनिका बन राजनीतिक क्षेत्र में इतनी व्यस्त हो गयी कि उनकी संताने पतन के किस गर्त में गिर रहीं है पता ही नहीं लगा। सत्ता, वैभव, यश और ख्याति से मदान्ध होकर उनका पुत्र मद्यपी, दुःसाहसी, हत्यारा, बलात्कारी बन गया तो पुत्री लीना चरस की शिकार हो गयी। डिस्कोचिक बनकर वह उन्मुक्त यौवनाचार करने लगी इन सबसे आहत माधव बाबू पारिवारिक जीवन से हताश और कुंठित थे तभी

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण, 1994

उनकी दृष्टि में अध्यापक श्यामाचरण की पुत्री अप्रतिम सुन्दरी जया पर पड़ी वे राजनीतिक कार्यक्रम के मध्य उससे परिचय करते हैं तथा अपने बाल्यसखा की पुत्रीजान को अपने घर जलपान पर आमंत्रित ही नहीं करते अपितु पुत्र कार्तिक के लिए पुत्रवधू बनाने का संकल्प करते हैं। सम्भवतः रूप का चुग्गाचुग कर कार्तिक सभ्य और शिष्ट बन जाय। चन्द्रा और लीना के विरोध के बावूजद भी जया और श्यामाचरण उनके यहाँ आते हैं। और इसी मध्य माधवबाबू पुत्रवधू बनाने का प्रस्ताव रखते हैं। कार्तिक जया की अपरूप सौन्दर्य से मुग्ध होकर उसे घर भेजनें ही नहीं जाता अपितु एक दिन रास्तें में उसे अतिसय आग्रह से गाड़ी में बैठाकर ठण्डा भी पिलाता है और विल्लेश्वर महादेव के दर्शन करा अपने अनुराग की पुष्टि करता है। इस प्रकार के परिचय के दृश्य को श्यामाचरण की बड़ी भाभी, ताई श्यामाचरण से उलहना देती है। जिसे जया और उसकी माँ माया में अनबन हो जाती है।

इसी मध्य लीना में कुँआरी माँ के आसन्न लक्षण देख माधव उसका विवाह निश्चित करते हैं और इस मध्य महिला संगीत में जया को आमंत्रित कर उत्सव के अनुरूप दामी हार और रेशमी साड़ी भेजते हैं जिसे देख चन्द्रा और लीना कुपित ही नहीं होती अपुति जया का अपमान भी करती हैं तभी कार्तिक बहू होने की पुष्टि दृढ़ता से करता है।

लीना का विवाह जिस विषम परिस्थितियों में हुआ था उसके श्वसुर हंसराज ओबराय ने मंत्रीपद के कोटे से अपने लिए विशिष्ट छूट चाहते थे, किन्तु ईमानदार माधव बाबू ने पद के दुरूपयोग की स्वीकृति नहीं दी परिणाम स्वरूप आसन्न प्रसवा लीना को वे मायके छोड़ गये। लीना नशे की गोलियों की इतनी अभ्यस्त हो गई थी कि वह अपने या घर के पैसों को चुराकर अपनी नशे की पूर्ति करती थी। इसी मध्य माधव बाबू ने सादे समारोह में जया और कार्तिक को प्रणय ग्रंथि में आबद्ध कर दिया। जया ससुराल पहुँची ही थी कि लीना को प्रसव पूर्व दर्द प्रारम्भ हुआ। एकाकी चन्द्रा कार्तिक को लेकर अस्पताल गयी जहाँ अध रात्रि के बाद आपरेशन से विकृत शिशु का जन्म हुआ।

ससुराल में प्रथम दिन जिस रूखे स्वागत का आभास जया को मिला उससे वह हतप्रभ रह गयी। तभी चोरी छिपे कार्तिक आता है और उसकी जेठानी मालती दोनों को बाहर भेजने में सफल हो जाती है।

तिरुपति मंदिर के भव्य ऐश्वर्यशाली होटल में जया और कार्तिक अपने प्रणय निवेदन में आकण्ठ डूबे ही थे कि तभी मित्र को भेजकर लौटा कार्तिक नशे में चूर जया से अशिष्ट, असभ्य भाषा में बात करता है। हतप्रभ जया निरण्य, निर्जल रहकर दूसरे दिन कार्तिक से लौटने का रूक्ष आदेश करती है। घर आते ही जया की बुआ उसके मायके पर कटाक्ष करती है।

स्वाभिमानी जया विवाह के सभी आभूषण वस्त्र माधवबाबू को देकर अपने पितृ गृह में आ जाती है। तभी लीना उसके पलायन की बात सुन उसके मायके पहुँच गहनों की माँग कर बैठी। इस विचित्र दुरागमन को देख श्यामाचरण माया और उनकी ताई हतप्रभ रह जाते हैं। जया के मिथ्या कलंक की बात सुन माधव को हृदयाघात पड़ता है। बहुत मुश्किल से वे बचते हैं। माधवबाबू के अतिशय आग्रह पर जया पिता के साथ अस्पताल जाकर सामान्य शिष्टाचार संवेदना व्यक्त कर वापस लौट आयी है।

जया ने स्वावलम्बी बनने का संकल्प लिया कि ताई उसे अपने बहनोई रघुवर दयाल के पास दक्षिण ले जाती है। जहाँ धनाढ्य शेखर से उसका परिचय होता है और वह आँखों से प्रेम का निवेदन करता है। ताई और जया के लौटते ही जया को पता लगता है कि माधवबाबू कार्तिक का दूसरा विवाह करने का जा रहे हैं तभी जया भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करती है। माधव बाबू बधाई देने श्यामाचरण के पास पहुँचते हैं और वहीं शेखर के जया के पास आगमन और प्रणय निवेदन की बात करते हैं। जया उनका रूखा स्वागत कर इन सबका खण्डन करती है। वह अपनी ट्रेनिंग कर उड़ीसा के किसी दूरवर्ती जिले में जिलाधीश के रूप में कार्यभार ग्रहण करती है। उसकी नौकरानी कुसमा पति-पत्नी सम्बन्धों की एक नयी व्याख्या करती है। तभी दूर की जेठानी मालती विदेश से उसके पास आने की सूचना भेजती है। नियति तिथि पर वह नहीं आती अतः जया प्रशासनिक दौरे पर बाहर चली जाती है। तभी उसकी नौकरानी फोन पर सूचित करती है कि उसके मेहमान आ गये हैं। उल्लसित तरंगित जया अर्द्धरात्रि को कार से अपने निवास स्थान पर आती है और अपने अन्तः कक्ष में चद्दर तान कर सोने वाले को मालती मान कर जैसे ही आलिंगन बद्ध करती है कि सहसा दो पुष्ट बाहों ने उसे बाहुप्राश में बांधकर अपनी दसनदुति से उसे हतप्रभ

करता हुआ अपने अतिथि होने की सूचना देता है। यह अतिथि उसका सुदर्शन उग्र प्रणयी कार्तिक ही था।

9. उपप्रेती[1] :

उपप्रेती शिवानी का बहुत छोटा सा उपन्यास है। इसकी कथावस्तु की मूल में एक पहाड़ी लोकगाथा किवदन्ती के रूप में प्रचलित है। पहाड़ में गर्भवती किसी गृहिणी के प्राण पखेरू प्रसव पीड़ा के कारण उड़ जाते हैं। और शिशु भूमिगत नहीं होता तब घाट में ले जाने के पूर्व संतान को जननी से अलग किया जाता है ऐसे ही कभी कोई संतान जीवित निकल आया उसी पुत्र का नाम उपप्रेती हुआ। और यह नामकरण आज भी चल रहा है। इसका कथानक इस प्रकार है –

कथानक :

रमा अपनी पिता की काली कलूटी संतान थी। यक्ष्मा से उसकी माँ मर गयी और पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। कैंजा या विमाता रमा पर काम का इतना बोझ लाद दिया कि उसकी पढ़ाई बन्द हो गयी। इसी तरह से रमा का विवाह उपप्रेती के कुल में हुआ। उसका पति गोरा, चौड़ा ललाट, फौजी अन्दाज में विच्छू के डंक सी उठी उर्ध्व मुखी मूँछे थीं। उसने पत्नी का साँवला हाथ देखकर उसका मुँह नहीं देखा और वह अपनी नौकरी में चला गया। पति परितक्यता रमा ससुराल में वैधब्य जीवन व्यतीत करती हुई परिवारजनों को अपने गुणों से वशीभूत कर लिया। अचानक उसके देवर का विवाह निश्चित हो गया और वधू रूप में रमा की सहेली नन्दी वारात के साथ वापस लौट ही रही थी कि मर्मान्तक दुर्घट्ना में बस खड्ड में नीचे जा गिरी और उपप्रेती वंश की बेलि ही जड़ से उखड़ गयी।

बस में बैठे सभी बाराती मृत्यु को प्राप्त हुए किन्तु घट्नावशात् रमा का पति और उसके भाई पत्नी सद्यःविवाहिता नन्दी किसी तरह से बच गये। लाशों के अम्बार में उपप्रेती नन्दी को जिस तरह से बचाता है और नन्दी उसे ही अपना पति मान लेती है और इस प्रकार

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 2000

ये मुमूर्ष अवस्था में बौद्धों के किसी दल के हांथ पड़ते हैं, जो उनकी सेवा कर प्राण बचाते हैं। बच जाने पर नन्दी घर चलने के लिए आग्रह करती है, किन्तु समाज की स्थिति देख वह नन्दी को लेकर अनजाने शहर में पहुँच जाता है और यह शहर साइबेरिया के सीमान्त पर बसा बड़ा प्रसिद्ध शहर है। जहाँ की लेखिका साहित्यिक शिष्ट मण्डल में प्रतिनिधि स्थिति से भाग लेने पहुँच जाती है। और नाट्कीय घटनाक्रम के रूप में उपप्रेती की मेहमान बनती हैं यह उपप्रेती दूसरे दिन लेखिका के पास पहुँच कर अपनी मर्मतुन्द दुर्घटना तथा अनुज बधू को पत्नी रूप में स्वीकार करने की विवशता तद जन्य अपराध बोध की स्वीकृत कर अपने परिवार जनों से अपने जीवित होने की बात गुप्त रखने की प्रार्थना करता है।

बेचारी रमा आनन्द माँ के आश्रम में साध्वी बनकर निरण्य जीवन यापन करती है। और कनखल के गंगा में जल समाधि ले लेती है। लेखिका उपप्रेती जी से करूण गाथा सुना वचन देती है कि वह भारत जाकर किसी से कुछ न कहेगी। लेखिका कि दृष्टि में उमेश उपप्रेती होने की पुनरावृत्ति का जीवन्त उदाहरण है।

10. श्मशान चम्पा[1] :

काव्य जगत में यह रूढ़ि चली आ रही है कि चम्पक पुष्प रूप, रंग और सुगन्ध से समृद्ध होता है। फिर भी उसमें पता नहीं क्या अवगुण है, कि भ्रमर उसके पास मकरन्द पान हेतु नहीं जाता और फिर श्मशान में खिले चम्पक के पास कौन जाना चाहेगा। प्रस्तुत उपन्यास में नायिका के जीवन दर्शन को इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया गया है। संवेदनशील चम्पा मोहक व्यक्तित्व की स्वामिनी थी किन्तु समीप आया मधुकर किस प्रकार दूर होता गया इसका विन्यास शिवानी ने बड़े सहज और स्वाभाविक ढ़ंग से किया है। इसका कथानक इस प्रकार है :-

कथानक :

कुमायूँ निवासी धरणीधर मंत्रिमण्डल कार्यालय में वरिष्ठ अधिकारी था और सरकारी

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 2000

धन का दुरुपयोग कर उसने अपनी भव्य कोठी का निर्माण विशाल नेपाली मन्दिर के अनुरूप किया था और वे भ्रष्टाचार विरोधी प्रक्रिया के तहत पद से अपदस्थ हो गये। जूही और चम्पा उनकी दो आकर्षक पुत्रियाँ थी जूही दूध से धुले रंग के समान गोरी, तो चम्पा की गढ़न यूनानी जैसी लगती थी। चम्पा ने डाक्टरी परीक्षा हेतु मेडिकल कालेज में प्रवेश लिया कि अचानक उनकी बुआ उसके लिए विवाह हेतु अपने भतीजे आई.ए.एस. अफसर मधुकर को लेकर चम्पा के पास बिना किसी पूर्व सूचना के भगवती के पास पहुँच जाती है। कुपित चम्पा माँ से रूठ कर छात्रावास में रहनें लगती है और जूही अपने राखी बन्द धर्म भाई तनवीर वेग के साथ गृहस्थी बसानें दिल्ली चली गई इस आकस्मिक धक्के ने धरणीधर के प्राण हर लिए और भगवती पति का अन्तिम संस्कार कर अपनें भाई के पास चली गयी। जिसकी आर्थिक अवस्था बहुत दयनीय थी। फाइनल परीक्षा देकर चम्पा अपनें घर में माँ को लिवा लाती है। तभी रूक्की बुआ नें उन्हें लाँछित करते हुए जूही के भाग जानें की सूचना पानें से मधुकर के साथ सगाई तोड़ देनें की बात कही गयी। चम्पा डाक्टरनी बन गई और वर्धमान के सुदूर जमीदार की फैक्ट्री के अस्पताल में नौकरी करनें माँ को लेकर पहुँच जाती है। इस फैक्ट्री का मालिक नारायण सेन था जिसनें चम्पा को नियुक्ति पत्र देते हुए कहा था कि उनके परिवार के सदस्यों की देखभाल के लिए उन्हें महल में जाना होगा। दुर्भाग्यवशा रात में उनकी पत्नी को दौरा पड़ा और चम्पा को महल में आकर उनकी परिचर्या करनी पड़ी नारायणसेन की पत्नी कमलेश्वरी और उनकी पुत्री मयूरी की दिनचर्या बड़ी आस्वाभाविक थी। कमलेश्वरी ने जिस प्रकार चम्पा से ममत्व दिखलाया वह उसे हतप्रभ कर देने लायक था। कमलेश्वरी की नानी पेशेदार बनारस घरानें की प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना की पुत्री थी वैभव, सम्पत्ति, विलासिता उसके रक्त में प्रवाहित था किन्तु वह किसी औघड़ गुरू केनाराम की अधमदासी बन गयी थी।

चम्पा की माँ भगवती का राजयोग यक्ष्मा वर्धमान की सड़ी गर्मियों में बढ़ने लगा। अतः चम्पा उसे भुसाली के सेनेटोरियम में भर्ती कर आयी और लौटकर रानी कमलेश्वरी के आग्रह पर उन्हीं के महल में रहने लगी तभी अचानक एक दिन रानी को दौड़ा पड़ा और चम्पा कमलेश्वरी की सेवा सुश्रुषा करते-करते उनकी पुत्री बन गयी। क्योंकि मयूरी माँ से

रुष्ट होकर बाहर चली गयी थी। बात यह है कि एक दिन मयूरी अपनी सहेली को समस्या से निजात दिलाने के लिए चम्पा के पास लायी थी और यह सहेली रिनी खाँ कोई दूसरी नहीं चम्पा की छोटी बहन जूही थी। जो दिल्ली जाकर पति से तलाक मिलने के कारण कैबरे डान्सर बन गयी थी और असमय गर्भवती हो गयी। गर्भभार से मुक्ति दिलाने के कार्य को चम्पा ने स्वीकार नहीं किया अतः वे अपनी सहायिका मिनी के सहयोग से बेनुपद चित्रकार के पास पहुँचती है जो उसे अपनी बैलगाड़ी में बैठाकर कलकत्ता पहुँचा देता है जहाँ से चम्पा बम्बई में आयेजित होने वाली सेमिनार में मिनी का स्थानापन्न होने के कारण उसके परिचितों के लिए पत्र लेकर ट्रेन में सवार होती है। दैववसात् पूर्व काल के कटे घाव में टिटनिस का संक्रमण चम्पा के शरीर में होता है और वह मर्मान्तक पीड़ा से छटपटाने लगती है तभी उसका सहयात्री मधुकर जो स्वयं डाक्टर था रोग को पहचान कर अपनी पूर्व वाग्दत्ता चम्पा को अपने घर लाता है। मधुकर की कड़ी मेहनत, केशर सिंह नौकर की सेवा से चम्पा उस रोग को जीत लेती है और मधुकर अपने हृदयस्थ उद्गारों को चम्पा से व्यक्त कर कुछ दिनों में विवाह करने की बात कहता है। एकाकी केशर सिंह चम्पा के मनोविनोद के लिए मधुकर के सिरहाने रखी किसी मेमसाहब के चित्र की चर्चा करता है और चम्पा उसके दराज में रखे चित्र एवं पत्रों को पढ़कर हतप्रभ रह जाती है। क्योंकि मधुकर के पिता रामदत्त पाण्डेय ने यह चेतावनी दी थी कि यदि मधुकर रुक्की के पुत्री जया से विवाह नहीं करेगा तो वे आत्महत्या कर लेगें। साथ ही उद्दाम प्रेम-भावना से आप्लावित जूही के किशोर भावुक मन के उद्गार भरे पत्र भी थे कि यदि मधुकर ने उससे विवाह नहीं किया तो वह प्राणान्त कर लेगी।

इधर एक साक्षात्कार हेतु मधुकर दिल्ली गया तो चम्पा उसके बम्बई वाले मकान से भागकर वही अस्पताल पहुँच जाती है जिसे कमलेश्वरी अपनी दत्तक पुत्री बनाकर सम्पूर्ण सम्पत्ति अधिकारिणी बना देती है। अचानक चम्पा से मिलने मधुकर के पिता रामदत्त पाण्डेय आते हैं चम्पा की माँ भगवती से झूठ बोलकर ही उन्होंने चम्पा का पता प्राप्त किया था और उसकी यशोगाथा पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि उसे वैश्या ने दत्तक पुत्री बनाया, पिता नौकरी से निकाले गये, बहन मुसलमान के साथ भागी और हत्या के अपराध में जेल काट

रही है और चम्पा अविवाहित होकर उनके पुत्र मधुकर के पास बम्बई में रहकर लौटी है, किन्तु मृक्षकटिक में गणिका व वसन्त सेना के लिए जो मैत्रेय विदूषक कहता है कि यह उज्ज्वल स्निग्ध सुगन्धित श्मशान बीथी में विकसित चम्पक लोगों द्वारा अभिगमनीय नहीं है वे चम्पा को सावधान करते हुए कहते हैं कि आठवें दिन बाद उसके पुत्र मधुकर का विवाह जूही से होने जा रहा है। चम्पा उसके पुत्र का अनिष्ट न करे और चम्पा रामदत्त के जाने पर अपनी बाँह में लिख रही थी जिसे कमलेश्वरी ने पढ़ा – श्री श्री गुरू केनाराम की अधम दासी .... यहीं उपन्यास समाप्त हो जाता है।

11. चौदह फेरे[1] :- (कथानक)

यह शिवानी का विशिष्ट उपन्यास है। इसमें कुमायूँ की प्रसिद्ध प्राकृतिक सुषमा के परिप्रेक्ष्य में कथा को विकसित किया गया है। शिवदत्त के पिता जज एवं माता ज्योतिष शास्त्र की विदुषी थी शिवदत्त की प्रारम्भिक शिक्षा नैनीताल के साहबी स्कूल में हुई। पारिवारिक संस्कारों की रक्षा हेतु शिवदत्त के साथ रसोइया भेजा गया। उसने इलाहाबाद से एम0ए0 कर वकालत की शिक्षा प्राप्त की। तभी उसके पिता की मित्र ने कलकत्ते के प्रमुख व्यवसायी विल्सन के नाम पत्र लिखकर शिवदत्त को कलकत्ता भेज दिया। युवा शिवदत्त के छः फुटा शरीर और गम्भीरता से प्रभावित होकर पटसन व्यवसायी कर्नल ने उसे अपने व्यवसाय का सारा उत्तरदायित्व सौंप दिया। विल्सन की मृत्यु बाद शिवदत्त उस साम्राज्य का एक छत्र अधिकारी हुआ। उसका विवाह कुमायूँ के नहान परिवार में हुआ। उसकी पत्नी अद्वितीय सुन्दरी थी किन्तु उसके शीतल व्यवहार से क्षुब्ध कर्नल उसे छोड़कर एकाकी कलकत्ता चला गया। दुर्भाग्यवशात् कर्नल के पिता की मृत्यु हो गयी। तब नन्दी को उसके मायके भेज कर्नल एकाकी लौट गया। मायके में नन्दी और उसकी पुत्री अहल्या का अपमान नित्य उसकी कर्कशा भाभी करने लगी। इससे नन्दी पुत्री लेकर भाई के साथ पति के पास कलकत्ता आई।

पति के विशाल महलनुमा प्रासाद नन्दी को देख वह हतप्रभ रह गयी। कर्नल उसे

1. *विश्वविद्यालय प्रकाशन, संस्करण 1992*

अपनी शर्त पर यहाँ रहने देता है और अहल्या को छात्रावास में रखकर उसकी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करता है। कर्नल ने अपने इष्ट मित्रों को अहिल्या के जन्म दिन पर विशाल पार्टी दी। वहीं नन्दी से प्रथम परिचय कर्नल की रक्षिता मल्लिका से हुआ। मल्लिका एवं कर्नल के व्यवहार से दुःखी नन्दी ने सन्यास हेतु अपने गुरू के पास चली आयी। कर्नल उसे मनाने नहीं गया।

अहल्या छुट्टियों में घर आती मल्लिका मौसी लाड़, प्यार के सर्वथा नवीन लटके झटके में वह अपनी माँ को याद ही नहीं करती मल्लिका के पति राखाल सरकार मोटर दुर्घटना में अपंग हो गया। अब मल्लिका ही कर्नल की प्राइवेट सेक्रेटरी बनी। वह अहल्या को नित्य नये-नये रूपों में सजाती, उसे परिवेश में बाँध लिया। मल्लिका चाहती थी कि अहल्या का विवाह ,अपने बहन के पुत्र रौरेन से करे। मल्लिका दौलत उसका भाई रूसी, जापानी छात्र रैक्सी, समीर गांगुली पिकनिक में गये। कर्नल अहिल्या को लेकर अपनी जन्मभूमि कुमायूँ पहुँचता है। जहाँ उसकी भतीजी बसन्ती का विवाह होता है। उन्मुक्त अहल्या अपने संकीर्ण ग्रामीण परिवेश को देख असहज सी अनुभव करती है। किन्तु तुहिना भाभी और बसन्ती के आत्मीय व्यवहार से वह शीघ्र ही सहज हो जाती है। बसन्ती का विवाह डाक्टर से हुआ था। जो बहुत हँसमुख और परिहासप्रिय था। इसी विवाह में सम्मिलित होने उसका चचेरा भाई राजेन्द्र भी आया था। जो सेना का उच्च अफसर था। बसन्ती ससुराल से लौटकर अहल्या राजेन्द्र और अपने पति के साथ मिलकर नानी से मिलने जाती है सुदूर अंचल का वह क्षेत्र अहल्या के लिए इसलिए भी आकर्षण मय था कि पास के आश्रम में सन्यस्त जीवन व्यतीत कर रही उसकी माँ नन्दी रहती थी। वृद्धा नानी नेपाल के राजवंश से सम्बन्धित थी। घर का वैभव एकाकी रहने के कारण धीरे-धीरे भूमिसात् हो रहा था। नानी को दिखाई और सुनाई कम पड़ता था। इस कारण वह सबका स्वागत करते हुए अहल्या को राजेन्द्र की पत्नी मानकर बहू जैसा स्वागत करती है। दूसरे दिन सभी लोग नन्दी को देखने आश्रम पहुँचते हैं। अहल्या एवं बसन्ती आश्रम के अन्दर पहुँच जाती हैं किन्तु पुरूष प्रवेश वर्जित होने के कारण बसन्ती का पति धरणीधर और राजेन्द्र भोजन बना रहे साधु के साथ मनोरंजन करते अहल्या अपनी माँ को ध्यान जन्य मूर्छा अवस्था में देखती है किन्तु बात नहीं कर पाती है।

दोनों बाहर के कमरे में आकर फलाहार करती हैं और धरणीधर, बसंन्ती साधु को अपना हाथ दिखाने लगते हैं। राजेन्द्र इन्हें छोड़कर पहले चला आया। एकाकी अहल्या मार्ग में भटक जाती है। तभी दोनों सुन्दरियों की खोज में वे साधु वार्तालाप करते हुए निकल जाते हैं कि किस प्रकार दूसरे साधु की असावधानी से वे सुन्दरियाँ छिटक गयीं। बसन्ती धरणीधर और राजू अहल्या की खोज में पुनः लौटते हैं तभी राजू अहल्या को लाता दिखाई पड़ता है। वहाँ से लौटकर राजेन्द्र अपने मित्रों से मिलने चला जाता है और कर्नल अहल्या के समक्ष उसके विवाह का प्रस्ताव शिरोमणि के पुत्र से करते हैं जिसे पुत्री ने खोटे सिक्के सा ठुकरा दिया।

कर्नल और उसकी पुत्री अहल्या निराश कलकत्ता लौट आते हैं जहाँ अहल्या को पता लगता है कि दौलत रैक्सी ने विवाह कर लिया है। चीनी आक्रमण के कारण उसके पिता का व्यवसाय बन्द होता जा रहा है। घर के नीरस उबाऊ वातावरण से ऊबकर बंग्लौर के स्कूल में पिता के स्वीकृति के विरूद्ध शिक्षिका की नौकरी कर लेती है। और अपने वाक् चातुर्य से वहाँ की उदण्ड छात्राओं पर प्रभुत्व जमा लेती है। शैक्षिक टूर में निकली अहल्या और उसकी छात्राएँ दिल्ली जा रहीं थी कि रास्तें में उसे अपरिचिता किशोरी शरण माँगने डिब्बे में आ जाती है। जिसका नाम जैवलीन है और अपने वाक्जाल में अहल्या को मुग्ध कर दिल्ली प्रवास में अपने साथ ठहरने का अनुरोध करती है अहल्या को लेकर जिस बंगले में पहुँचती है और अहल्या को उपहार स्वरूप जिस महिला को सौंपती है वह उसकी मल्लिका मौसी है। जो पति की मृत्यु के बाद कर्नल से रूष्ट होकर दिल्ली आ गयी थी। अहल्या वहाँ से रात में ही भाग खड़ी होती है जिसे एक सहृदय पंजाबी परिवार आश्रय देता है। टूर से लौटकर अहल्या ने देखा कि उसे लेने के लिए उसके पिता के मित्र गौर मोहन बाबू आये हुए हैं। अहल्या उनके साथ लौटकर कलकत्ता आती है कि उसी समय अहल्या को देखने के लिए सर्वेश्वर आता है। जिसे कर्नल अपना जमाता बनाकर सगुन के रूप में हीरे की अँगूठी पहनाता है। इसी समय बसन्ती और धरणीधर भी अहल्या के घर ठहरते हैं तभी बातचीत के मध्य राजेन्द्र की लापता होने की खबर अहल्या को मिलती है यहीं कलकत्ता में धरणीधर अपनी बहन का विवाह निश्चित करता है बातचीत के मध्य सर्वेश्वर अपने हस्तरेखा विशेषज्ञ होने की बात कहता है और अहल्या का हांथ देखकर स्तब्ध हो जाता है। सबके चले जाने

पर अहल्या फिर अपनी नौकरी में चली जाती है। यहीं उसकी प्रिया शिष्या और उसको सम्मोहित कर विवाह करने हेतु जोर देने वाले रामनाथन का परिचय अहल्या से होता है। वह अहल्या से सहयोग का आकाँक्षी है तभी ललिता स्वीमिंग पुल में डूब जाती है। सारी दुर्घटना देखकर अहल्या का जी उचट जाता है। उसे सर्वेश्वर का पत्र मिलता है जिसमें दोनों के विवाह की तिथि ज्येष्ठ मास में थी। अहल्या को लेने उसके पिता कर्नल आये। दोनों मिलकर दिल्ली से खरीददारी करते हुए कलकत्ता लौटते हैं। कलकत्ता में अहल्या के विवाह की तैयारी होने लगती है। इष्ट, मित्र, नाते रिश्तेदार कर्नल के वैभव को देख आश्चर्यचकित हो जाते हैं। कर्नल की भाभी सुभद्रा, ताई बड़े लाड़ प्यार से अहल्या के अन्यमनस्क होने का कारण पूछती है और भावावेश में अहल्या अपने मन की दुरावस्था का वर्णन करती है। तभी ताई को अपने दामाद का रसिकता भरा परिहास याद आता है कि अहल्या का विवाह राजेन्द्र से कर दिया जाना चाहिए और ताई मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से उसकी पुष्टि करा अपने पास से रूपये देकर बसन्ती के पास भेज देती है। उधर कलकत्ता में विवाह की तैयारी बड़े जोर शोर से चल रही थी कि अहल्या के भाग जाने की सूचना से सारा वातावरण नीरस और उदास, मातमी माहौल में बदल गया। धरणीधर और बसन्ती अहल्या को लेकर राजेन्द्र के गाँव पहुँचते हैं। जहाँ वह स्वास्थ्य लाभ करने हेतु आया था। धरणीधर ही अहल्या के विवाह के दिन ही जबरजस्ती पण्डित को लाकर राजेन्द्र को बैठाकर स्वयं कन्यादान हेतु तत्पर होता है। तभी उसकी दादी कहती है कि इसका विवाह तो पहले ही हो गया था। अब कौन सा नाटक हो रहा है। धरणीधर उसे समझाता है कि राजू दुश्मन की गोली से बचकर पुनः जीवित हुआ है। अतः जिस प्रकार इसका जन्म दिवस और यज्ञोपवीत हुआ है, इसके विवाह में चौदह फेरे लगवाये जा रहे हैं क्योंकि शादी के दिन भाग जाने की इसकी आदत पुरानी है।

12. सुरंगमा[1] :-

सुरंगमा नारी जीवन की व्यथा-कथा का सशक्त दस्तावेज है। इसमें नारी की राजनीतिक जीवन की महागाथा ही नहीं उसकी विवशता, परिस्थितियों के झंझावत से जूझने

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1998

तथा अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत नारी का चित्रण है।

कथानक :

बंगाल के राजा प्रबोधरंजन राय चौधरी का वैभव असीम था। उनकी पत्नी राजयक्ष्मा थी। उसकी देखभाल करने के लिए मादम क्रिस्टीन कब उनके घर की स्वामिनी बन गयी यह पता ही नहीं लगा। पत्नी के मरने पर रूप जीवा गौहरजान एवं मादम ही गृहस्वामिनी बन उसकी पुत्री राज्यलक्ष्मी की देखभाल करने लगी। गौहर जान के आग्रह पर राजलक्ष्मी को संगीत सिखाने गजानन जोशी आया जो वैश्या नवाब जान के कोठे में रहकर उसे गाना सिखाता था। पिता एवं गौहर जान तथा गर्वनेस से छिपकर गजानन बालिका राजलक्ष्मी को वय सन्धि की सीढ़ी पर चढ़ने से पूर्व ही प्रेम संगीत की दुरूह अलियों गलियाँ घुमाकर उसे सत्रह वर्ष की अवस्था में भगाकर पर्वतीय ग्राम्य अंचल में जाकर बस गया; जहाँ उसे कोई पकड़ नही सका। अपने सुरीले कण्ठ से कथा बाँचकर वह जीवन यापन करता था। तभी राजलक्ष्मी पर संदेह कर वह उसे गाली-गलौज, मारपीट करने लगा। परिणाम स्वरूप भय ग्रस्त राज लक्ष्मी पिछ्वाडे से कूदकर रेलवे की मालगाड़ी में सवार हो गयी। मालगाड़ी से पटरी पार कर ही रही थी कि उसे धक्का देकर बचाने वाले ने बताया कि मेल से उसका शरीर कट जाता। वह उसे आत्महत्या करती प्रतीत हुई। अतः वह मेल ड्राइवर/टी0टी0 उसे अपने कमरे ले आता है। तीसरे दिन वह राजलक्ष्मी को लेकर लखनऊ अपनी बहन बैरोनिका के पास ले जाता है। बैरोनिका पहले अपने भाई राबर्ट से रूष्ट हो जाती है। क्योंकि वह लक्ष्मी सगर्भा प्रतीत होती है और वह कुँआरी मातृत्व वाली लड़कियों को क्षमाँ नहीं करती, किन्तु लक्ष्मी की कथा-व्यथा सुन प्रसवकाल तक अपने पास रखने के लिए तत्पर हो जाती है और सम्मान रक्षा हेतु वह चर्च जाकर राबर्ट्स से उसका विवाह कर हनीमून हेतु बाहर भेज देती है। लौटकर लक्ष्मी बैरोनिका के पास रहती है। समय पर कन्या का जन्म होता है जिसका नाम सुरंगमा रखा गया। बैरोनिका के अन्तस्तल में यह भावना थी कि लक्ष्मी के रूप सौन्दर्य एवं कन्या सुरंगमा के मोह जाल में उसका संत भाई बँधकर गृहस्थ जीवन प्रारम्भ कर देगा। किन्तु राबर्ट उसके रूप सौन्दर्य से अभिभूत प्रतिज्ञाबद्ध होने के कारण वह गोआ चला जाता है। काफी दिनों बाद वह लौट्ता है तभी लक्ष्मी का पति गजानन उसे ढूँढ़कर बैरोनिका एवं

राबर्ट को पत्नी के अपरहण का आरापे लगता है। निराश हताश लक्ष्मी सुरंगमा के साथ लखनऊ में गजानन के साथ रहने लगती है। वह अध्यापिका बनकर सुरंगमा का लालन-पालन करती है। गजानन कुछ अपराध बोध का अनुभव कर लक्ष्मी को मनाता है किन्तु अनुकूल उत्तर न पाकर पुनः शराब के नशे में डूबने लगता है।

लक्ष्मी का राजयोग असाध्य हो जाता है। अतः सुरंगमा उसे कलकत्ता ले जाकर होम्योपैथ को दिखाती है। सुरंगमा की सहेली मीरा के मामा गौर प्रसन्न एवं नानी उनका आतिथ्य ही नहीं करते अपने परिवार जनों जैसी आत्मीयता प्रदर्शित करते हैं। अचानक राजलक्ष्मी का रोग बढ़ गया और वह सुरंगमा को एकाकी छोड़ अनन्त मार्ग की ओर प्रस्थान कर गयी। सुरंगमा स्नेही परिवार से विदा होकर लखनऊ लौट आयी। उसे बैंक में नौकरी मिल गयी।

आगे सुरंगमा के जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ होता है। जब वह प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री दिनकर की पुत्री का ट्यूटर बनती है। प्रथम दिन परिचय एवं पारिवारिक अहंकार प्रदर्शन से रूष्ट सुरंगमा ट्यूशन को छोड़ने का मन बनाती है किन्तु दिनकर के आत्मीय आग्रह से वह फिर अपनी अस्वीकृति संकोचवश नहीं दे पाती और इस प्रकार चाहे अनचाहे उसके जीवन में राजनीति झंझावात आने लगे।

दिनकर मंत्रिमण्डल के जगमगाते सितारे थे उनकी पत्नी विनीता, उनकी पूर्व प्रेमिका ही नहीं राजनीतिक क्रिया कलापों के चेकों को कैसा भुनाया जा सकता है इसे भली भाँति जानने वाली थी। मारवाड़ी कन्या विनीता ने अपने पिता गाड़ोदिया के संरक्षण एवं परामर्श से दिनकर के धूमिल रत्नों को ऐसे जौहरी के पास ले गयी जिसने उसे झाड़ पोछकर मंत्रिमण्डल में प्रतिष्ठित कर दिया। दिनकर के आकर्षक व्यक्तित्व, ओजस्वी वाणी, रहस्यमय मुसकान और दूरदर्शिता को उखाड़ फेंका।

सुरंगमा और दिनकर की पुत्री मिनी लगभग समवयसिनी होने के कारण मित्र बन गई। माता विनीता सामाजिक कार्यकर्ती होने के कारण प्रायः घर से बाहर रहती। अतः सुरंगमा पुत्री के बाहर भ्रमण के कार्यक्रम में सम्मिलित होने लगी। ऐसा ही एक कार्यक्रम

दिनकर के ग्राम अँचल का बना जहाँ के उग्र तेजी चिते के ग्वाल देव के दर्शन हेतु तीनों अपने सचिव से छिपकर जाते हैं। दिनकर के सामीप्य के कारण सुरंगमा उसके प्रति आकृष्ट हो जाती है। दिनकर सुरंगमा को अपने बाल्यकाल के संस्मरण सुनाकर मुग्ध कर लेता है। असमय वर्षा के कारण भींगी सुरंगमा के सौन्दर्य को देखकर दिनकर प्रणय निवेदन कर उसे आलिंगन बद्ध कर लेता है। यात्रा से लौटकर सुरंगमा अपनी सहेली मीरा के विवाह में व्यस्त हो जाती है। इसी प्रकार अन्य परिवारीजनों या अपरिचितों के मध्य दिनकर सुरंगमा की अवहेलना करता है जिसे सुरंगमा सुन रूष्ट होकर अपने निवास लौट आती है।

दिनकर के विरोधी पक्ष से उसके एवं सुरंगमा के नैकट्य सम्बन्धी पत्र को पाकर उसकी पत्नी विनीता विदेश प्रवास के मध्य में ही लौट आती है। पुत्री मिनी से पिता का दुर्व्यवहार सुन विनीता मिनी को लेकर सुरंगमा के घर जाती है। वहाँ पति सम्बन्धी कोई वस्तु न पाकर विनीता के हृदय से सापल्य भाव हट सा जाता है। वह मिनी को पढ़ाने के लिए सुरंगमा के घर आने का प्रस्ताव करती है। ससुराल से लौटकर उसकी सहेली मीरा उसे दिनकर के सामीप्य के प्रति जन भावनाओं का परिचय कर सावधान करती है। सुरंगमा मिनी के जन्म दिवस उत्सव पर भी उसके घर नहीं जाती। अचानक मिनी को ज्वराक्रान्त सुनकर सुरंगमा उसके घर जाती है। तभी दिनकर उसे संकेत रूप में बंगाली चित्रकार निर्मित चित्र की याद दिलाकर अपने अनुराग भावना का उल्लेख करता है।

अचानक एक रात्रि सुरंगमा के कपाट बज उठते हैं। अन्दर आकर दिनकर अपने अर्न्तद्वन्द्व सुरंगमा के प्रति तीव्र आकर्षण की चर्चा करता है। रक्षिता बनाने के प्रस्ताव को सुनकर सुरंगमा उसे घर से बाहर जाने के लिए कहती है। किन्तु धृष्ट दिनकर रात्रि व्यतीत कर ही जाता है और फिर उसका दुरूसाहस प्रतिदिन दुरदम्य दृढ़ता से बढ़ता ही गया। सुरंगमा एवं दिनकर की रंगरेलियाँ असीम रूपों में व्यंजित होने लगीं। दामी उपहारों से सुरंगमा को लाद दिया दिनकर ने। एक दिन सुरंगमा उसकी स्थिति मिनी को ज्ञात होने पर अपनी दुरावस्था का उल्लेख कर उसे आने के लिए मना करती है। वह अनयत्र जन संकुल स्थान में मकान लेने के लिए घर से निकलती ही है कि तेजस्वी रौद्रमूर्ति रूपा विनीता उसके घर आकर उसके कुकृत्य के लिए धिक्कारती है। विनीता उसे वैश्या कह दिनकर द्वारा दत्त

उपहारों की जानकारी उसे देती है तथा अनयत्र स्थानान्तरण कराने का आदेश करती है चूँकि दिनकर उससे प्रेम करता है और सुरंगमा की मृत्यु या कुरूपा बना देने पर वह विनीता से प्रतिशोध लेता रहेगा। सुरंगमा दिनकर के सभी प्रणयोपहारों को विनीता को वापस करती है विनीता उन उपहारों को देखकर रोने लगती हैं। क्योंकि इनमें दिनकर का स्पर्श है तथा उसने पत्नी को कभी भी इस प्रकार के प्रणयोंपहार नहीं दिये। दूसरे दिन त्याग पत्र देकर राबर्ट के पास गोवा जाने का विचार करती है कि दिनकर का काव्यमय पत्र पाकर कुछ उद्विग्न होकर गोमती के किनारे खड़ी हो गयी। सायंकाल घर लौटती है तो देखती है कि उसका पिता गजानन जोशी नशे से चूर बेहोश दरवाजे में पड़ा।

13. कृष्णकली[1] :-

कृष्णकली शिवानी की मानस पुत्री है। वह सौन्दर्य और कौमार्य की अग्नि शिखा से मण्डित ऐसी नारी है जिसके मदीले यौवन में पुरूषों को नयन विद्ध ही नहीं किया अपितु दुःसाहसी दस्यु बन उन्हें, छलता भी रहा है। वह पद्म पत्र मीवाम्मसा की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी, अपनी जन्मजाति ग्लानि और अपावनता के पंख से प्रस्फुटित ऐसा कमल है, जो सौल सा महकता है और मादक पराग सा अपने सारे परिवेश को मोहाविष्ट कर लेता है। कथासार संक्षेप में इस प्रकार है –

कथासार :-

पहाड़ के कुष्ठाश्रम में डॉ0 पैद्रिक असमय मूसलाधार वर्षा से चिन्तित हो उठती है क्योंकि कुष्ठ रोगिणी पार्वती प्रसवासन्न है और वह इस शिशु की हत्या करने का संकल्प पूर्व ही व्यक्त कर चुकी है। वर्षा के थमते ही डा0 पैद्रिक चुपचाप पार्वती के पास से मुमूर्ष शिशु को झपट लेती है। क्योंकि पार्वती इस अवैध सन्तान का गला घोंट रही थी। अथक प्रयास से बच्ची को पुर्नजीवन देकर डॉ0 पैद्रिक उसे ले पन्ना के पास जाती है। क्योंकि तीन दिन पूर्व ही पन्ना का नवजात शिशु मर गया था। डॉ0 ने इस शिशु बालिका के पालन-पोषण

---

1. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, सोलहवाँ संस्करण

का उत्तरदायित्व पन्ना पर डालकर निश्चिन्त होना चाहती थी। किसी प्रकार पन्ना इस दायित्व को स्वीकार कर अत्यन्त विनम्र शब्दों में अपनी बड़ी बहन से क्षमा माँग पुनः उनके समीप जा पहुँचती है। क्योंकि वह इस प्रसव को अपनी बड़ी बहन से छिपाना चाहती थी। अतः उससे लड़कर इस एकान्त स्थल का चयन किया था।

पन्ना की बड़ी बहन माणिक विख्यात पीली कोठी की मालकिन ही नहीं देह व्यापार चलाने वाली वैश्या मुनीर जान की लाडली पुत्री भी थी। पन्ना का प्रेमी विद्युतरंजन मजूमदार बंगाल का प्रसिद्ध जोतदार ही नहीं था वरन् स्वभाव से रसिक भी था। मुनीर जान का प्रेमी एक नेपाल का राणा था। माणिक उसकी पुत्री थी हीरालाट साहब के भृत्य एवं पन्ना उसके ए0डी0सी0 की कन्या थी। मुनीर जान की मृत्यु के बाद माणिक ने माँ का सारा व्यवसार सम्भाला था। पुत्री एवं पन्ना का स्वागत कोठी में अभूतपूर्व ढ़ंग से हुआ। वाणी सेन ने इसका नाम कृष्णकली रखा। पाँच वर्ष बाद डा0 पैद्रिक कृष्ण कली को लेने आ गयी वह कली को मिशन स्कूल में भर्ती कर पन्ना को उत्तरदायित्व से मुक्त करना चाहती थी। किन्तु माणिक कृष्ण कली की भावी रूप रेखा उस स्वर लय नटिनी के सहारे अपना बुढ़ापा काटने का देख रही थी। अतः पन्ना को, लड़कर गृह त्याग कर, डा0 पैद्रिक के साथ जाना पड़ा।

कृष्ण कली मिशन स्कूल प्रवास में उदण्ड एवं दुःसाहसी बन गयी थी। अतः डा0 रोजी के आग्रह से पन्ना कली को अपने पास रखकर पढ़ाने लगी। अचानक पन्ना की भेंट पूर्व प्रेमी विद्युतरंजन मजूमदार से हो जाती है। घूमकर लौटी कली ने पन्ना एवं मजूमदार की प्रणय लीला देख और अपने माता-पिता की जानकारी पाकर कुपित हो माँ को छोड़ जाती है। विद्युतरंजन पन्ना को बताता है कि उसकी बड़ी दी बेगम रहमत उल्ला बनकर अफगानिस्तान चली गयी है और वाणी दिल्ली में ब्यूटी पार्लर खोलर छद्म रूप जीवा बनी हुई है।

पन्ना के गृह से महामिनिष्क्रमण कर कली के जीवन का दूसरा अध्याय प्रारम्भ हुआ। वह अपने मारक सौन्दर्य और वाक पटुता के कारण स्मगलिंग जैसा निकृपट धन्धा करने लगी और अचानक पुलिस के छापे से डरकर भाग निकली। दुर्भाग्यवशात् वह प्रवीर के फ्लैट में छिपती है। वहाँ से निकल कर कली विमान परिचारिका बनती है और किराये के मकान में

रहने के लिए श्री रेवती शरण तिवारी के कलकत्ता स्थित मकान में पहुँच जाती है। तिवारी की बड़ी पुत्रवधू विधवा थी। अतः श्वसुर उसे कलकत्ता ले जाते हैं। जहाँ की ठग, धूर्त, स्वामी के वाक्जाल में फँसकर उसके साथ बद्रीनाथ की ओर चली जाती है। उनका बड़ा पुत्र सुबीर देश के लिए शहीद हो गया था, दूसरा पुत्र प्रवीर विदेश विभाग में उच्च पदस्थ अधिकारी था। पुत्रियाँ जया आदि ससुराल चली गयीं। अतः एकाकी माँ के लिए कली का आगमन वरदान सिद्ध हुआ। वे उसे पुत्रीवत स्नेह करती थी। सुवीर का रिक्त कमरा कली को दिया गया। उसकी यायावरी वृत्ति के कारण परिवार को उसके जाने में कोई परेशानी नहीं थी।

शरत्कालिक अवकाश के समय अम्मा की दोनों पुत्रियाँ दामाद आयें। दामाद कली के सौन्दर्य पर रीझ गये तथा पुत्रियों ने अम्मा से कली को गृह में न रखने का आग्रह करने लगी। प्रवीर जब विदेश से लौटा तो पिता ने उसे विवाह के लिए विवश किया। अतः परिचित मित्र पाण्डेय जी की तृतीय स्वयंबरा पुत्री कुन्नी को देखकर उसकी स्वीकृति माँगी गयी। कुन्नी के रूप रंग पर आकृष्ट होकर इस शर्त पर स्वीकृत देता है कि विवाह के पूर्व ही माता कली को अपने घर से खदेड़ कर भगा देगी। किन्तु इसकी नौबत ही नहीं आयी। किसी विदेशी हिप्पी नुमा छोकरों को लेकर स्वयं ही एक मास के लिए निकल गयी। किन्तु दुर्घटनाएँ क्या पहले से कह कर आती है। अचानक प्रवासी दल में किसी विदेशी की तबियत खराब होने के कारण कली घर वापस लौट आयी। घर में ताला बन्द होने के कारण बाहर ही बेहोश पड़ी रह गयी। लौटते समय किसी का ध्यान उसकी ओर गया ही नहीं। प्रवीर जब वाग्दत्ता कुन्नी से मिलकर लौटा तो मुर्दो से बाजी लगाकर सोती हुई कली मुसीबत के रूप में पड़ी मिली. वह न तो उसको छोड़कर कमरे जा सकता था। क्योंकि जया, माया के पतियों के लिए वह छप्पन व्यंजन युक्त थाली थी और जगाने पर वह हिली डुली नहीं अतः प्रवीर चुपके से कली को उठाकर उसके कमरे में लिटा आता है। वहाँ उसक अँगूठी गिर जाती है कली इस अँगूठी को लेकर प्रवीर से परिहास करती है वह उसे काबुली वाला कहकर सम्बोधित करती है और अपने बेहोश होनें की किफायत भी देती है। अब किसी न किसी बहाने कली जितने नजदीक प्रवीर के पास पहुँचने का प्रयास करती प्रवीर उससे उतना ही दूर भागने का प्रयास करता। इधर पाण्डेय जी ने सभी को पुनः चाय पर आमंत्रित किया। लौटने पर कली प्रवीर

के झोले से काजू निकालकर बड़ी अंतरंगता से खाती हुई उसकी हँसी भी उड़ाती है प्रवीर उसे अन्यत्र मकान लेकर रहने का आग्रह करता है। तभी कली मुखर रूप में अपने हृदय के उद्गारों को प्रकट करती है कि वह जिस वातावरण में पली है अपने रूप की उपेक्षाउसे सह नहीं। प्रवीर ने अपने दुरूह व्यक्तित्व की चारूता संयम और उसके प्रति उपेक्षा का भाव दिखाया। उसके मन में प्रवीर के प्रति संयम दुर्ग ढ़हा देने की भावना पनपने लगी और इस प्रकार कली ने अपने जीवन के पूर्व इतिवृत्त-पठान और पार्वती प्रेम, सुन्दरी पन्ना और विद्युतरंजन का प्रेम, देशी विदेशी मौसी के धुँधले चेहर आज की कथा बिना किसी संकोच के सुना गयी। इस कथा को सुन प्रवीर के मन में उसके प्रति सहानुभूति जगी और उसने प्रवीर को अपनी बाँहों में बाध लिया। कली ने कहा कि वह निश्चिन्त रहे। वह अपने रक्त की कुष्ठ सम्बन्धी ,जाँच हर महीने कराती रहती है। घर में विवाह की तैयारी और प्रसन्नता छा गयी। कली अपनी सहेली विवियन से मिलने इलाहाबाद चली गयी। लौटते समय ट्रेन में उसे संत और संतनी मिले जिसे कली ने तानी मौसी के रूप में पहचान लिया। कुन्नी और प्रवीर के विवाह के पश्चात् के जीवन का अध्याय ही समाप्त हो जाता है कि अचानक प्रवीर को कली का पत्र मिलता है जिसमें तानी मौसी की चर्चा कर वह अपनी बीमारी की सूचना देती है। प्रवीर अस्पताल जाकर कली को देखता है। कली को मज्जा का कैंसर हो गया था। वह लौरन आन्टी के घर में रहने लगी थी। प्रवीर कली को देखकर हतप्रभ रह गया। दिन भर प्रवीर कली के पास रहकर उसे धैर्य बँधाता है। उसके जाने की बात सुनकर कली निराश होकर सोने की गोली की ओवरडोज खाकर मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। प्रवीर कली की आत्मा की शान्ति के लिए संगम जाकर उसे तिलांजलि देता है। यहीं उपन्यास समाप्त हो जाता है।

14 अभिनय[1]:-

यह लघु उपन्यास 'रति विलाप' के साथ प्रकाशित हुआ है। जिसमें पुरूष और नारी मन के अनछुये पक्षों का मार्मिक रहस्योद्घाटन है। इसमें कथा नायिका जयन्ती फिल्म

1. *रति विलाप में संग्रहीत - हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994*

अभिनेत्री उर्वशी बनकर अपने पति शेखर के सामने जिस प्रकार का आचरण और फिल्मी जीवन में जो अभिनय करती है उसका चमत्कारिक वर्णन शिवानी ने किया है। इसकी कथा संक्षेप में इस प्रकार है।

कथासार :

किसी राजा के दीवान की बहू शान्ता थी। इसका पति कलक्टर असमय काल कवलित हो गया। उदार राजा ने विधवा शान्ता को आशय देकर उसके पुत्रों को अच्छी शिक्षा-दीक्षा दी। परिणामस्वरूप शान्ता का ज्येष्ट पुत्र सतेन्द्र डाक्टर होकर प्रेम विवाह किया। और दुर्घटना में दिवंगत हो गया। शान्ता का दूसरा पुत्र शेखर व्यवहार से चंचल और उदण्ड था जिसने कलक्टरी परीक्षा में सर्वोच्च अंक पाकर कुल मर्यादा की वृद्धि की। शेखर चंचल, विलासी, दुःसाहसी, नारीदेह लोलुप था। उसकी भाभी रजनी डाक्टर होते हुए भी शेखर से प्रेमकर गर्भवती हो जाती है और शान्ता की आशंका निराधार सिद्ध करने के लिए लम्बी यात्रा के बहाने गर्भपात करा लेती है। शान्ता रजनी और शेखर के इस अनैतिक वासनापरक व्यापार पर क्रुद्ध हो समाज सेविका अपनी बहन कान्ता से शेखर के विवाह की बात कहती है। कान्ता शेखर को अपने आश्रम में आने का निमंत्रण ही नहीं देती अपितु वयः सन्धि की देहरी पर खड़ी किशोरी जीवन्ती को उसके लिए लोभ का चारा बनाकर प्रस्तुत भी करती है। शेखर जीवन्ती को तैरना सिखाने के बहाने उसके अंगों से छेड़छाड़ करने ही जा रहा था कि कान्ता जीवन्ती को अपने साथ ले जाती है और शेखर के सामने विवाह करने की शर्त रखती है। शेखर उस सलोनी देहकान्ति के सौन्दर्य से अभिभूत हो रजनी के प्रेम और रूप आकर्षण को भुलाकर विवाह जीवन्ती से कर लेता है। विवाहता वधू को लेकर जब अपनी माँ शान्ता के पास आता है तो एकान्त में रजनी उसकी विवाहिता के समक्ष उसके पतन की कहानी सुनाती है। जिसे सुनकर किशोरी जीवन्ती अन्न पानी छोड़ पिता के घर वापस लौटने का हठ ठान लेती है। जीवन्ती के चले जाने पर शेखर रजनी के प्रति तटस्थ होकर दुःसाहसी कामोन्माद से ग्रस्त रूप पिपासु दुराचारी बन जाता है और जिस जिले में स्थान्तरित होकर जाता है। अपने सुदर्शन शरीर मोहक वागजाल में युवतियों की फँसाकर देह की प्यास तृप्त करता रहा। इसी परिप्रेक्ष्य में अपनी अर्दली की नव विवाहिता पत्नी को आलिंगनबद्ध कर ही रहा था कि

रोशनदान से कैमरे द्वारा उसके कुकृत्य के साक्ष्य खींचकर सरकार में प्रेषित कर दिये गये। कलंक कालिमा की गहरे जाल में फँसा शेखर पदच्युत होकर भयानक जंगल के एक भुतहे मकान में एकान्त वास करने लगा। तभी उसे किसी पुरानी पुस्तक के श्लोक ने उसके विवेक को जागृत कर दिया और वह बैरिस्टर से पैरवी हेतु परामर्श लेने गया। बैरिस्टर के आश्वासन और तीस हजार रूपये की माँग पर वह निराश ही हो रहा था कि मूँगफली के लिफाफे में अपनी पत्नी का चित्र और श्रेष्ठ अभिनेत्री होने के प्रशंसा पत्रो को पढ़कर उसके नेत्रों में चमक आ गयी। वह बम्बई पहुँचकर अपने रूप को सँवार पूर्व पत्नी जयन्ती वर्तमान की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री उर्वशी से मिलने पहुँचता है उर्वशी को जिस दृश्य का अभिनय प्रस्तुत करना था उसमें थोड़ा विलम्ब था। अतः वह शेखर से मिलने की अनुमति देकर उससे उसके आने का प्रयोजन पूँछती है। उर्वशी के दमकते अद्वितीय सौन्दर्य सेट की भव्य रूप रेखा देख शेखर काँपने लगा और वह मात्र तीस हजार रूपये की याचना करता है उर्वशी सहर्ष रूपये देकर शेखर और उसकी भाभी रजनी के प्रति अपने प्रति किये गये उपालम्ब देकर कृतज्ञता ज्ञापित कर अभिनय के लिए प्रस्तुत हो जाती है। जिसमें सुहागरात में प्रतीक्षारता नव वधू के वैश्यागामी पति के न आने पर अपने फूलों के माला को कुचल कर अश्रुपात करती नायिका का अभिनय करना था। उर्वशी के जीवन की यह वास्तविक घटना थी। जिसका उसने अभिनय न कर जीवन्त अश्रुधार बहाती रही। जिसे लोगों ने उसे अभूतपूर्व अभिनेत्री के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया।

15. रतिविलाप[1] :

नारी मन के दुखात्मक अनुभूतियों की विवृत्ति जितनी प्रगल्भता के साथ शिवानी ने किया है, जितनी नवीन आश्चर्यजनक किन्तु उत्तेजक परिस्थितियों का सृजन जितनी घटनाओं में आरोहा-अवरोह एवं नाटकीयता शिवानी निर्मित कर सकती हैं कम साहित्यकार इसमें समर्थ होते हैं। 'रति विलाप' एक ऐसा ही लघु उपन्यास है। जिसमें अनुसुइया पटेल विगत जीवन के कथा सूत्र बड़े संकोच वश अपनी सहेली को थमाती है। क्योकि वे उन्हें भूल जाना

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994

चाहती थी। जबकि आगे की घटनाएँ जितनी अविश्वसनीय ढ़ंग से घटती हैं उन्हें चाहकर भी अनुसुइया पटेल भूल नहीं पाती और उनका यह कर्मकन्दन न तो किसी कानून के दायरे में आ पाता है न ही वे इस गोपनीय किन्तु मधुर सम्बन्धों को किसी से व्यक्त भी नहीं कर पाते। इसका घटनासार इस प्रकार है –

कथावस्तु :

विश्व प्रसिद्ध कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर के विद्यालय में भिन्न-भिन्न प्रान्त निवासी छात्र-छात्राएँ अध्ययन करते थे। गुजरात की अनुसुइया पटेल और कथा लेखिका सहपाठी थे। अचानक अनुसुइया पटेल के पिता दिवंगत हो गये और वह शापवश भ्रष्ट गन्धर्व कन्या अनुसुइया पटेल अध्ययन बीच में ही छोड़ चली जाती है। और लगभग 25 वर्षो बाद लेखिका को कैसरबाग लखनऊ में अनायास ही मिल जाती है और वहाँ वह अपने अनुसुइया कापड़िया बनने की व्यथा-कथा और वर्तमान में बम्बई में बिजनेस करने सम्बन्धी क्रिया कलापों का विवरण इस प्रकार देती है

वह कहती है कि पिता की मृत्यु के पश्चात् उसके मामा ने उसके व्यापार को ही नहीं सम्भाला अपितु अनुसुइया पटेल का विवाह अपने समृद्ध मित्र के अकर्मण्य मित्र की एक झलक दिखा विवाह सम्पन्न करा दिया। वह ग्रीक देवता सा सुदर्शन तरूण मिर्गी से रोगग्रस्त था और उसके ससुर करसनदास भोगीदास कापड़िया ने जब यह बताया कि उन्होनें मामा से सब कुछ बताकर तुम्हारी सहमति लेने की बात की थी अनुसुइया के अज्ञात भाव को देखकर ससुर का स्वर धीमा और चिन्ताग्रस्त हो गया। उन्होंने सोंच रखा था कि सुन्दरी, सुशील लड़की को वधू रूप में पाकर जैसे ही उनका पुत्र ठीक होगा वे संसार से विरक्त हो जायेंगे। किन्तु इस निकष्टतम पाप का प्रायश्चित वे निश्चित रूप से करेंगे। अब अनुसुइया इस अटूट सम्पत्ति की एकमात्र उत्तराधिकारणी और वे उसकी स्वच्छन्दता में बाधक नहीं बनेंगें।

अनुसुइया कापड़िया का यह उन्माद ग्रस्त पति भवन की निचली मंजिल में रातदिन श्रृंखलाबद्ध रूप में रखा जाता था। जंगले से हाथ बाहर निकाल सुन्दरी पत्नी के लिए विकार ग्रस्त भावनाओं को स्वर लय में व्यक्त करता। घर के पुराने नौकरों के द्वारा जबरजस्ती उसे

नहलाया धुलाया जाता कि अचानक वह अपने ससुर के साथ अपनी फुफिया सास को देखने गॉव चली गयी और जैसे ही वहॉं से लौटी कि बाल्टी में नहा रहा उसका उन्मत्त पति छलांग लगाकर अनुसुइया को अपनी बॉंहो में उठाकर मत्त गयन्त की भॉंति सीढ़िया फॉंदता ऊपर छत क मुडेर में चढ़ गया और पीछे पिता सहित लम्बी कतार बद्ध अनुचर उससे नीचे उतर आने का आग्रह करने लगे तभी वह उन्मत प्रणयी पत्नी सहित नीचे कूदने का प्रयत्न ही कर रहा था कि पिता ने अनुसुइया को तो पकड़ लिया और इस धक्के में पुत्र अतल गहराई में गिर निर्जीव हो गया।

अन्त्येष्टि संस्कार के पश्चात् मामा अनुसुइया को साथ ले जाने का आग्रह करने लगे किन्तु अनुसुइया को मामा से घृणा हो गयी थी। अतः वह वहीं रहना स्वीकार कर लिया और निस्तब्ध हवेली में, जीवन-यापन करते ससुर ने नौकरों के मध्य लोक अपवाद को सुन सम्पत्ति बेंचकर बम्बई बसने का निश्चय किया। बम्बई आकर अनुसुइया कापड़िया ने 'इन्द्रधनुष' नामक बुटीक खोल दी जिसमें उच्च, सम्पन्न, समृद्ध महिलाएँ फिल्मी तारिकाओं के मॉंग पर मन चाहे दामों पर साड़ियॉं आपूर्ति करने लगी। घर में श्वसुर एकाकी रहकर गार्हस्थिक कार्यो में बहू की सहायता करते इसी बीच कार्य बढ़ जाने के कारण अनुसुइया पति की हत्या के अपराध के कारण सजा काटकर जेल से निकली हीरा नामक सलोनी आदिवासी बालिका को अपने दुकान ओर घर की सहायता के लिए रख लेती है। श्वसुर हीरा के बनाये भोजन और उसकी सेवाओं को नहीं स्वीकार करते थे। अचाकर अनुसुइया को हरजाना बेगम की बहुमूल्य साड़ियों के आपूर्ति हेतु दक्षिण जाना पड़ा और बहू ने श्वसुर से आग्रह किया कि वे सेवाएँ स्वीकार कर ले। बड़े मुश्किल से मनाने पर ही श्वसुर ने यह आग्रह स्वीकार किया। अनुसुइया पटेल लम्बी खरीददारी और सुदीर्घ प्रवास से जब वापस लौटी तो हीरा के लिए दामी साड़ी और श्वसुर के लिए बढ़िया नीलम उपहार में लाई थी। अनुसुइया हीरा पर इसलिए प्रसन्न थी कि उसने अपनी सेवा से उनके श्वसुर को सजीव, चैतन्य और स्वास्थ्य की लालिमा लौटा दी थी। दूसरे दिन दुकान जाते समय हरजाना बेगम की साडियों को घर में ही रख हीरा सहित वह दुकान पहुँची की हीरा अस्वस्थ होने का बहान बनाकर घर लौट आयी और जब अनुसुइया सायंकाल घर लौटी तो उसे घर में ताला बन्द

श्वसुर और हीरा का कहीं पता नहीं था। अन्दर जाते ही श्वसुर का पत्र प्रतीक्षा करते मिला कि उन्हें इस वयस मे निर्दोष किशोरी का पावन प्रेम मिला है और वे इसे लेकर अज्ञात स्थान को जा रहे हैं। बाकी सब अनुसुइया कापड़िया का यथावत रहेगा। स्तब्ध अनुसुइया कापड़िया इस दुर्घटना से मर्माहत ही नहीं हुई कि एक सप्ताह बाद गुप्तचर विभाग का वरिष्ठ अधिकारी उसे खोजता हुआ आया और बताया कि बनारस के एक होटल के कमरे में करसनदास की हत्या कर वह युवती फरार थी। अनुसुइया कापड़िया ने अपने श्वसुर को पहचान वहीं उनका अन्त्येष्टि संस्कार कर दिया।

किसी आवश्यक कार्य से अनुसुइया कापड़िया दिल्ली के एक कुख्यात होटल में खाना खा रही थी कि गोरे लम्बे युवक के साथ बैठी सहचरी को हीरा के रूप में उसने पहचान लिया तभी एक छोटा गुलगोथना गोरा चिट्ठा बालक अनुसुइया कापड़िया को हतप्रभ करता खड़ा होकर देखने लगा कि अचानक हीरा पुत्र और पति को झपट कर तेजी से बाहर निकल गयी। अनुसुइया कापड़िया हीरा की जघन्य अपराधिक कार्यो के लिए इसलिए पुलिस को नहीं पकड़ा सकी क्योकि क्षण भर पहले ही उसका नन्हा देवर अपनी पिता के परिचित आँखों के भिक्षा पात्र में दया की भीख माँग गया था। इस प्रकार अपनी बालसखी से विदा होकर अनुसुइया कापड़िया अपनी गन्तब्य की ओर चली गयी और उसकी रति विलाप की करूण गूँज लेखिका के कानों में गूँजती रही।

16. स्वयं सिद्धा[1] :-

स्वयं सिद्धा का शाब्दिक अर्थ है ऐसी नारी जो अपनी क्रिया कलापों से बिना किसी सहारे के कार्य सिद्ध हो गयी हो बात यह है कि ईश्वर ने नारी को अनन्त शक्ति का अक्षय भण्डार रूप में निर्माण किया है यदि वह संकल्पवान हो जाय तो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में उसे विलम्ब नहीं लगता। यह अवश्य है कि उसके बदले में उसे कुछ न कुछ बलिदान अवश्य करना पड़ता है। नारी चरित्र के इस पक्ष को शिवानी ने स्वयं सिद्धा में बडे मार्मिक

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994

ढ़ंग से चित्रित किया है इसका कथा सार इस प्रकार है -

कथावस्तु -

माधुरी उच्च पदस्थ प्रशासनिक अफसर है पद की गरिमा और अहंकारी स्वभाव ने उसे और भी अबाध्य बना दिया है। अचानक उसे अपने पिता शिवदत्त का पत्र मिलता है कि उसका पति कौस्तुभ मृत्यु शैय्या पर है और कन्यादान के समय माधुरी द्वारा दत्त वर का वह साक्षी रहा है। 'आर्ते आर्ता भविष्यामि सुखदुःखानुगामिनी'' माधुरी अपने पिता के पत्र को पाकर पति को देखने के लिए चुपचाप जाती है। वह याद करती है कि किस प्रकार सुहागरात के दिन ससुराल से भाग आने पर पिता ने कैसे उसे घर से निकाल दिया था। वह जिद्दी अहमन्य, माधुरी वहाँ से मद्रास अपनी सहपाठी रेचल एन्ड्रयूज के पास गयी और उसी के साथ पढ़कर वह भारत सरकार की उच्च प्रशासनिक सेवा में सर्वोत्तम अंक पाकर स्वयं सिद्धा बन बैठी। कार, फ्रिज, स्टीरियो, वैभव के द्योतक नौकर, अर्दली सभी कुछ से सहज रूप में प्राप्त था।

माधुरी अपने विवाह पूर्व स्मृतियों को टटोलती है तो उसे याद आता है कि पति के साथ चलते समय उसे किसी राधिका का पत्र मिलता है कि उसने सुदर्शन कौस्तुभ को अपने रूप की घातक वारूणी पिलाकर मदालस बना चुकी है। ससुराल में मुँह दिखाई की रश्म में यही राधिका उसे सौत कहकर परिचय देती है और रात्रि को पलंग पर अपने लिये स्थान रिक्त रखने का आग्रह भी करती है। पति कौस्तुभ ने अपने और राधिका के परिहास प्रिय सम्बन्धों का उल्लेख कर माधुरी को सुझाव देता है किन्तु उसी समय उस परिहास रसिका ने खिड़की से कूदकर उसके कमरे में प्रविष्ट हो गयी। इस अप्रत्याशित, अकल्पनीय घटना से क्षुब्ध माधुरी रात को ही पिता के घर भाग आयी। किन्तु पिता से हताश होकर मद्रास पहुँच गयी। इस प्रकार प्रशासनिक स्थानान्तरण में वह प्रौढ़ हो चली थी कि अचानक मद्रास से लौटते समय रिजर्वेशन कन्डेक्टर ने किसी पति-पत्नी को उसका सहयात्री बना दिया। प्रातःकाल माधुरी ने देखा कि हिडिम्बा के समान पसरी कोई महिला उसकी सौत है। क्योंकि ऊपर बर्थ पर उसका पूर्व पति कौस्तुभ लेटा था। प्रच्छन्न व्यंग से राधिका के विषय में जब माधुरी ने पूछा तो कौस्तुभ ने बड़े ही वितृष्ण भाव से उसके मरने की सूचना दी। अपने सौत

के इस रूप को देख माधुरी को हार्दिक प्रसन्नता होती है तभी वह महिला जगकर चाय, नाश्ते और ढीले ढ़ाले कार्य व्यवहार से अपनी लापरवाही और अलमस्तता व्यक्त करती है। कौस्तुभ के लाड़ प्यार को देखकर माधुरी की रक्त मज्जा दग्ध हो उठती है कोई भला ऐसी मुटल्ली, बेसउर पत्नी को कैसे इतना लाड़-प्यार कर सकता है और इस प्रकार इस क्षणिक यात्रा में माधुरी को अपने अहम् दीप्ति संतुष्टि ही प्रदान करता है।

इस प्रकार माधुरी पिता द्वारा पति के मुमूर्ष अवस्था की सूचना सुनकर छिपकर ससुराल जाती है और वहाँ उसी महिला के करूण प्रलाप को सुनकर अपने डाक बंगला में वापस आ जाती है तथा गहरी निद्रा सुलाने वाली दवा की सप्ताह भर की मात्रा को अपने शरीर में इन्जेक्शन से पहुँचा देती है साथ ही पिता को पत्र लिखती है कि उसने जो सप्तपदी के समय वर दिया, था .... आर्ते आर्ता भविष्याभि सुख-दुखानुगामिनी की महिमा का अक्षुण्य रखकर ऊपर की अदालत में अपनी निष्कलुषता सिद्ध करने जा रही है।

17. किशुनली[1] (रति विलाप में संग्रहीत) :-

नारी चरित्र को केन्द्र में रखकर विभिन्न कोणों से उसके चरित्र का प्रकाशन शिवानी की सबसे बड़ी विशेषता है। किशोर वय में उन्मादिनी बनी अतीव सुन्दरी किशुनली का मातृत्व और उसके रहस्य का उद्घाटन इस उपन्यास की मुख्य घटना है। इसका कथासार इस प्रकार है :-

कथावस्तु :-

अल्मोड़ा के सम्भ्रान्त मुहल्ले में पगली उन्दादिनी युवती को मनचले छिछोल युवक छीटाकशी करते थे और आस पास की महिलाएँ उसकी इस घातक रूप की चर्चा कर शोक व्यक्त करती थी। यह युवती ठीक सात बजे सामने बनें टंकी के नल में नग्न नहाती और कभी मन चले छोकरों पर पत्थर फेंककर भागती रहती। यही समय परमानन्द पाण्डेय के स्नान और पूजन का समय होता। शास्त्री जी नहाकर उस उन्मादिनी किशोरी को हडि-हडि

1. *हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994*

कहकर दुरदुराते थे। लेखिका इन्हीं शास्त्री जी के पास संस्कृत पढ़ने आती थी। गुरू पत्नी के स्नेह पगे आतिथ्य से और देश विदेश की विचित्र लोक कथाओं को सुनकर कथा लेखिका वयस अन्तर के बावजूद सहेली बन गयी थी। ऐसे ही पठन पाठन के समय में यह उन्मादिनी जब नग्न नहा रही थी तथा छोकरों की अश्लील हरकतें देख सबको डाँटकर भगाकर उस युवती को अपने घर ले आती हैं। पुराने फटे जीर्ण शीर्ण कपड़े की जगह अच्छी चोली लहगा पहना सजा सवारकर उसका नाम किशुनली कर लिया और उसमें अपने मातृत्व की तुष्टि करने लगी क्योंकि गुरू पत्नी काखी निःसंतान थी। किशुनली उसके दिये गये कपड़ो का तार–तार कर यत्न से सँवारे केश–विन्यास को खोलकर घर से भाग जाती और दो–चार दिन बाद वापस लौट आती। काखी उसे लाड़ दुलार से समझाती बुझाती, नहलाती और कभी कभी उदण्डता करने पर चिमटे से पीट्ती भी और इस प्रकार किशुनली उसके मातृत्व के समुद्र में डूबने उतराने लगी। शास्त्री जी उससे बहुत चिढ़ते थे। पत्नी पर गर्जन तर्जन भी करते किन्तु किशुनली को अन्ततः निकाल नहीं पाये। क्योंकि किशना के गाँव के एक मनिहार ने उसे पहिचान कर बताया कि वह पुजारी देवदत्त भट्ट की पुत्री थी माँ बाप दोनो मर गये उसके दो मामा पागल थे इसलिए गाँव के प्रधान ने उसे अल्मोड़ा लाकर छोड़ दिया। काखी उसे अपनी साथ रखती। कमरे में बाहर ताला लगाकर ही बाहर जाती। धीरे–धीरे किशनुली सभ्य होने लगी थी कि अचानक दरवाजा खुला पाकर वह अपना पेटीकोट घुटनों तक उठाये तीर सी भाग गयी। काखी रोती रही दुःखी होती रही कि वह पगली न जाने किसके द्वारा दुरदुरायी जा रही होगी। अचानक की आहत किशनुली पुनः काखी के पास लौट आयी। किन्तु यह प्रत्यागमन बहुत कुछ सुखद नहीं रहा। काखी ने उसके लिए स्वेटर बनाया था जिसे उसने आग में जला दिया। शास्त्री के रौद्र रूप को देखकर वह किशनुली फिर भाग खड़ी हुई। इस बार प्रत्यागमन सात मास बाद हुआ। किशुनली कुछ स्वस्थ दिखती थी पता लगा कलंक से आपाद मस्तक डूब गयी है अब वह कुँआरी माँ के मार्ग पर चल पड़ी थी परिणाम स्वरूप यजमानों ने शास्त्री जी से उसे घर से बाहर निकाल देने का अनुरोध करने लगे। काखी की ध्रष्टता के कारण यजमान स्वयं शास्त्री जी से दूर चले गये। किशुनली के पुत्र हुआ। जिसका नाम कर्ण किया गया। समाज से बहिष्कृत काखी संतान हीना होने के कारण अपनी गोद

में उसे समेट लिया तो समाज ने बन्दूकें ताने ली सब लोग उसे बच्चे को किशुनली की डाँट (अवैध सन्तान) कहते। काखी उसे बड़े लाड़ प्यार से रखती। अचानक उसने देखा कि शास्त्री जी बच्चे को गाल से लगाये आँख बन्द किये दुलराते हुए आँसू गिरा रहे थे। लेखिका फिर अन्यत्र चली गयी और उसकी भेंट सम्मान समारोह में शास्त्री से हुई बाद में उसे मृत्यु के बाद शास्त्री का पत्र मिला जिसमें यह आग्रह किया गया था कि उच्च पदस्थ अधिकारी बना कर्ण किशनुली की डाँट नहीं, उनका ही पुत्र था और इस पूरे घटनाक्रम का संक्षेप में इस प्रकार उल्लेख किया है -

हुआ यह कि छोटा कर्ण शास्त्री जी से पढ़ता और वह धीरे-धीरे डाँट का अर्थ शास्त्री जी से पूँछता। शास्त्री जी उसे क्या बताते? किशुनली कभी कभार अपने क्रिया कलापों से शास्त्री जी के विवेक को भ्रष्ट करती और जितनी ही उसे दुरदुराते, दूर भगाते उतनी ही तेजी से चतुरा अभिसारिका काखी की अनुपस्थिति में उनके संयम के दुर्ग को ढ़हाने रात्रि में चुपचाप उनके पलंग में आ जाती। और ऐसे ही किसी समय उनका विवेक भ्रष्ट हो गया जिसकी उन्हें बहुत ग्लानि रही। वे ऋषिकेश जाकर सन्यासी हो गये। किन्तु उनके मन को शान्ति नहीं मिली। उन्होंने सती लक्ष्मी काखी को ठगा है अतः उनके मरते उनकी आत्मा की शान्ति हेतु उनके पापों की क्षमा पत्र लेखिका घटना का सत्य विवरण काखी से बताकर गुरू ऋण से उरण हो जायेगी। लेखिका जब काखी के पास पहुँची, जीर्ण शीर्ण घर दीन-हीन काखी उस घर के ममत्व को छोड़ना नहीं चाहती थी यद्यपि कर्ण कई बार आकर ले चलने का हठ भी कर चुका था। काखी ने बताया कि शास्त्री के चले जाने पर किशुनली द्वार पकड़ एकटक सड़क को देखती एकदम शान्त हो गयी थी और धीरे-धीरे उसे क्षय रोग हो गया किशुनली की मृत्यु पर कर्ण ने उसका संस्कार किया और वह काखी को भी ले जाने का आग्रह करने लगा। लेखिका शास्त्री कक्का की आत्मग्लानि से युक्त उस कुकृत्य की सूचना काखी को नहीं दे सकी। क्योंकि काखी स्वयं अपराधी के पास पहुँच के पास गयी है।

18. गैंड़ा[1] :

प्रेम और प्रतिशोध के कारण कितनी घटनाएं दुर्घटनाएँ बन जाती हैं। प्रतिशोध की

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994

सीमा तक जाकर नृसंश और क्रूर हो उठता है। इसका अनुमान लगाना बहुत कठिन होता है। 'गैंडा' की कथा दो सहेलियों की कथा है जिसमें एक का पति बदसूरत है किन्तु अपनी पत्नी को वह प्राणाधिक प्रिय है। संक्षेप में इसका कथा सार इस प्रकार है।

कथावस्तु :-

सुपर्णा और राज दो सहेलियाँ थी। सुपर्णा का पति मेजर रोहिताश्वदत्ता फौजी अनुशासन में स्वयं एवं अपनी परिवार को बाँधकर अपने आभिजात्य होने का परिचय देता तो राज का पति वेद बदसूरत और बेडौल आकार का था। राज होटल में रिशेप्सनिस्ट की नौकरी करती। यद्यपि उसका पति लक्षाधीश था। राज के दो लड़कियाँ थीं जबकि सुपर्णा के एक बेटा और एक बेटी थी। दोनों परिवार आपस में मिलते। युवा अवस्था की घटनाओं को याद कर खूब हँसते। ऐसे ही किसी अंतरंग क्षणों में सुपर्णा ने राज से पूछा कि उसके पुत्र कब होगा, मुहफट राज कहती है कि ये दोनों चुड़ैले बाप पर गयी हैं। अब एक और गैंडे को धरती पर लाकर वह कया करेगी। राज अपना जीवन दर्शन व्यक्त करती है कि बदसूरत पति की सुन्दरी पत्नी बनने में बड़ा सुख होता है। पति हथेली पर ही काँच की गुड़िया के समान रखता है। जिसे सुनकर सुपर्णा इर्ष्यालु होकर सोंचती है कि उसका फौजी अफसर अपने आँख के इशारे से सिक्ख और गोरखे सैनिकों की भाँति उसे भी उठाता बैठाता है। ऐसे ही किसी क्षणों में मेजर दत्ता वेद की निन्दा कर उसकी कायरता निवीर्यता, नंगा कर गोली मार देने की बात कहता है और वह कहता है कि एक दिन इस गैंडे को पुरूष बनाकर उसे जीना सिखा देगा। इस प्रकार राज और वेद सुपर्णा के परिवार के अभिन्न मित्र बन गये कि अचानक राज ने अपने पति वेद की स्थान बदली की सूचना दी और राज यहीं रहकर अपनी नौकरी करेगी। उसने सुपर्णा के साथ ही रनहे की बात कही। इसी बीच एकान्त पाकर सुपर्णा वेद का तिरस्कार करती हुई राज को अपने साथ ले जाने के लिए समझाती है वे अचानक भावुक होकर फूट-फूट कर रोने लगता है और कहता है कि वह राज के बिना जी ही नहीं सकता। किन्तु वह इस बात में विवश है सपुर्णा उसे समझाती ही है कि अचानक राज बीच में आकर बड़ी कुटिल ढ़ंग से मुस्कराकर कहती है कि उसने दोनों को प्रेम करते हुए पकड़ लिया हैं वेद के चले जाने पर राज बहुत शिष्ट और शान्त रही। अचानक ब्रिगेडियर घर की

मुखरा पत्नी, धीरा सुपर्णा को समझाती है कि सारी छावनी के लोग बेहया राज पर थूँकते हैं उसने अपने होटल में उसके पति के लिए एक कमरा ले रखा है यदि सुपर्णा चाहती हो तो दोनों को रंगे हाथ पकड़ सकती है। किन्तु इसका अवसर नहीं आया। राज ने सुपर्णा को द्विमुखी वैभव सम्पन्न रिवर्सिवल मीना के सहित नवरत्न जड़े चौकोर चोकर को दिखाते हुए बताया कि यह चौक की एक छोटी दुकान से दो हजार में खरीदा है। आभूषण प्रिया सुपर्णा, राज के उतारे कपड़ों को व्यवस्थित कर रही थी कि अचानक उसे चोकर के जौहरी का पता मिला और उसे सहज ही पता लगा लिया कि इसे रोहिताश्व दत्ता ने खरीदा था। अपने पति के इस व्यवहार से हतप्रभ सुपर्णा पीली मस्जिद के मौलवी साहब के पास जाकर फाल खुलवाने पहुँच जाती है। दुर्बल, विपन्न, जीर्ण शीर्ण गृह के मालिक मौलवी को देख वह दुविधाग्रस्त हो जाती है। तभी मौलवी अप्रत्यक्ष रूप से उसकी खोई, कीमती वस्तु और चोर का हुलिया स्पष्ट बता देता है। वह उसे छोटी सी ताबीज देकर कहता है कि चोर घर का ही है। अतः ये ताबीज ऐसे स्थान पर छिपा दो जिसे एक बार सबसे पहले चोर ही लाँघे और यदि उसे वस्तु वापस मिल जाये तो वह अपनी लड़की के विवाह के लिए तोले भर सोने का आग्रह करता है। ताबीज लेकर सुपर्णा घर आती है और द्वार पर ताबीज को छिपा राज की प्रतीक्षा करती है। तभी हवा के झोंके से राज घर आकर होटल से लाये हुए खाना खा कर विश्राम कर सायं काल सुपर्णा के हांथ से एक कप चाय पीकर होटल चली जाती है। अचानक रात्रि को होटल से फोन आता है कि राज गम्भीर रूप से अस्वस्थ्य है। रोहिताश्व उसे लेकर अस्पताल पहुँचता है। किन्तु डाक्टर उसे बचा नहीं पाते। रोहिताश्व सुपर्णा को संदिग्ध दृष्टि से देखता है किन्तु सुपर्णा राज की सौगन्ध खाकर अपने को निर्दोष सिद्ध करती है। वेद ने आकर राज का अन्तिम संस्कार किया और उसकी सारी सामाग्री को दान में दे दिया। सुपर्णा और रोहित के मध्य बोलचाल बन्द हो गयी। वह वही बहुमूल्य चोकर लेकर मौलवी के पास देने पहुँच जाती है और कहती है कि उन्होंने चोर को बहुत बड़ी सजा दी। गहना देखकर मौलवी हतप्रभ हो जाता है कि उसकी चीज कितनी कीमती रही होगी जिसके मिलने पर वह यह दौलत लुटा रही है। सुपर्णा मौलवी उसकी पत्नी वसीरन और उसकी पुत्री के आह्लादित चेहरे को देख बाहर निकली तभी उसको ये चौथा चेहरा गैंडे बेद का याद आ गया जो किसी

अरण्य में भटक राज के बिना रो रहा होगा।

19. पाथेय[1] : (मेरा भाई में संकलित)

पाथेय का अर्थ है रास्ते का आश्रय, सम्बल, सहारा, इस लघु उपन्यास में तिलोत्तमा ठाकुर के अपरूप सौन्दर्य के साथ इतनी त्रासद्, लोमार्षक घटनाएँ जुडी है। जो उसे एक अलौकिक संसार में ले जाकर फिर यथार्थ के धरातल पर पटक देती है। पुराणा प्रसिद्ध तिलोत्तमा अप्सरा के समान, डाक्टर तिलोत्तमा ठाकुर की अविश्वसनीयता किन्तु सत्य गाथा लिखने जा रही लेखिका कहती है कि तिलोत्तमा की ममेरी बहन छन्दा लेखिका की सहपाठी रही है। उसका पत्र लेकर लेखिका कलकत्ते जा परीक्षा दे तिलोत्तमा से परिचय करती है और तिलोत्तमा के साथ उसकी जमींदारी भी देखती है। जहाँ उसे पता लगता है कि शीघ्र ही तिलोत्तमा का विवाह होने वाला है। संक्षिप्त में पाथेय का कथा सार इस प्रकार है :-

कथासार :-

कथा लेखिका अपने संरक्षक लोहाणी जी के साथ रानी धारा की ओर प्रातः भ्रमण में निकलती ही है कि तिलोत्तमा अपने बीमार पति का उल्लेख कर अपने साथ चलने का आग्रह करती है किन्तु सहेली भयभीत होकर वहाँ नहीं जाती क्योंकि यह पूरा महल ही टी0वी0 के मरीजों से भर गया था। इसके बाद कई अन्तराल वर्षो के पश्चात् हवाई जहाज में यात्रा करते हुए लेखिका डॉ0 तिलोत्तमा ठाकुर मिल जाती हैं। वहीं अपने जीवन की दुःखद गाथा के सूत्र लेखिका को थमा देती है। तिलोत्तमा बताती है कि रानी धारा में भेंट के बाद उसके पति का देहान्त हो गया और वह फिर असहाय हो गयी। इस प्रकार हवाई यात्रा के मध्य ही तिलोत्तमा कहती है कि जब वह ब्याह कर ससुराल पहुँची तो सब औरतें उसे देखकर फुसफुसाने लगती थी तभी एक काली भुजंगी औरत ने रहस्य का उद्घाटन किया कि क्या उसके बाप को कोई दूसरा वर नहीं मिला इससे तो अच्छा था कि उसे पत्थर बाँधकर कुएँ में डाल दिया जाता है। तिलोत्तमा की सास पागलखाने में बन्द थी। तिलोत्तमा के पति की मौसी सोना वैभव की स्वामिनी ही नहीं श्वसुर के हृदय की भी स्वामनी थी और पुत्र पढ़ते समय छात्रावास से ही यह संक्रामक बीमार की दुःसाध्य रोग ले आया था। डाक्टरों के

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1995

अनुसार उसके फेफड़े छलनी थे। स्त्री सामीप्य से उसे दूर ही रहना था। फिर भी श्वसुर वंशधर की चाह में अपने पुत्र प्रतुल का विवाह तिलोत्तमा से स्वीकार करता है। और मौसी तिलोत्तमा को प्रतुल के पास जाने नहीं देती। प्रतुल के आग्रह पर तिलोत्तमा प्रतुल के पास बैठ्ती है। दिन भर पति-पत्नी चैतन्य हो हँसते, खिलखिलाते वासना से शून्य कभी-कभी आलिंगन बद्ध भी होते। तभी अचानक प्रतुल को रक्त वमन हुआ और उसे पहाड़ ले आये। एक दिन प्रतुल और तिलोत्तमा सायंकाल बिना बताये घूमने निकले और वहाँ कि शान्ति से बहुत प्रभावित हुआ। लौटने पर सोना मौसी ने तिलोत्तमा को अपमानित ही नहीं किया उस पर हाथ भी उठाया जिसे देख कुपित होकर मौसी की दुःश्चरित्रता पर कटाक्ष करने लगा और तीसरे दिन उसका वह प्रणयी अपनी प्यास लिए ही अनन्त पथ का सहयात्री बन गय। पुत्र की आत्मा की शान्ति हेतु गया जाकर पिण्डदान की तैयारी की जाने लगी। उसी रात्रि तिलोत्तमा स्वप्न में प्रतुल को देखा किन्तु उसे अपनी छाती पर किसी का भार प्रतीत हुआ जिसे वह हटाने लगी। तभी टार्च हाथ में आते ही तिलोत्तमा ने उस पर प्रहार किया और प्रकाश में देखा कि उसके श्वसुर कामातुर होकर वंशवृद्धि हेतु जघन्य पशुवत आचरण पर उतर आये हैं। किसी प्रकार तिलोत्तमा घर से भाग खड़ी हुई जिसे इसाई जान ने अपने घर शरण दी और वे दूसरे दिन तिलोत्तका को लेकर उसके माता-पिता के पास पहुँचा दिया। पिता ने बताया कि दामाद के असाध्य रोग की सूचना उन्हें विवाह के बाद ही मिली। फिर पिता ने ही तिलोत्तमा को बुआ के पास भेजकर उसे शिक्षित कराने का संकल्प व्यक्त किया। तिलोत्तमा ने एम0ए0 किया लन्दन से डाक्टरेट ली। वहीं लेक्चरर भी बनी और बुआ की सेवा सुश्रूषा हेतु भारत लौट आयी। बुआ के मृत्यु के पश्चात् तिलोत्तमा ही एकमात्र वारिश थी। अब तिलोत्तमा के पास एक से एक सुदर्शन उद्योगपति विवाह हेतु हाथ मांगने आने लगे किन्तु वह अपने निश्चय पर अडिग ही रही। अचानक एक वृद्ध तिलोत्तमा के पास आकर मृत्यु शैय्या में पड़े अपने बेटे को एक बार चलकर देख लेने की प्रार्थना करता है। तिलोत्तमा उसे समझाती है कि वह उस प्रकार की डाक्टर नहीं है। तब वह वृद्ध अपना परिचय देकर अपने पुत्र विनायक की बाल क्रीड़ाओं की चर्चा कर पूर्व जन्म में प्रतुल होने की कुछ घटनाओं का उल्लेख कर अपनी पत्नी तिलोत्तमा का उल्लेख करता है। कुशाग्र प्रतिभावान विनायक

आई0आई0टी0 में इंजीनियर बनता है। आकर विवाह की चर्चा होते ही फिर से तिलोत्तमा की चर्चा करता है। नौकरी के कार्यकाल में अचानक विनायक बिमार पड़ जाता है। ओर पता लगता है कि उसे ल्यूकोमिया है और इस असाध्य रोगग्रस्त वह आज मृत्यु शैय्या पर पड़ा हुआ पूर्व जन्म की पत्नी तिलोत्तमा से मिलना चाहता है। तिलोत्तमा संकोचवश विनायक के पास पहुँचती है। उसकी आँखों में उसे पृतुल का ही आभास होता है और वह मृत्यु पथ के यात्री विनायक के बाहों के आमन्त्रण को अस्वीकार नहीं कर पाती रात्रि भर उसके साथ आलिंगनबद्ध तिलोत्तमा प्रातः बिना किसे बताए चुपचाप अपनें घर वापस लौट आती है। विनायक की मृत्यु के पश्चात् उसके पिता को वह अपनें पास लाकर उनकी सेवा सुश्रुशा करती है। उसकी सम्पत्ति से एक अस्पताल खोल देती है और अपनें घर की देहरी में दीपक जला कर मरनें वाले को यमद्वार तक प्रकाश देनें के लिए पाथेय तैयार करती है। और अन्त में दोनों सहेलियाँ वायुयान से उतर कर अपनें-अपनें गन्तव्य की ओर चली जाती हैं।

20. कालिन्दी[1] :-

नारी संवेदना, उसकी नियत, सीमा और सामर्थ्य का जितना बहुआयामी चित्राँकन शिवानी ने किया है ऐसी सामर्थ्य कम साहित्यकारों में होती है। दहेज दानव से निपटनें के लिए कालिन्दी का उग्र तेज जिस प्रकार दर्प, दृप्त होकर मुखरित हुआ था वह पाठकों को भी अभिभूत करता है। विवाह की वितृष्णा और उसके खिलाफ पुरूष मोह के विरूद्ध जो आक्रोश नायिका के मन मं उत्पन्न हुआ वही इस उपन्यास के तानें बानें के सूत्र हैं।

शिवानी अपनें उपन्यासों में भूमिका बहुत कम लिखती हैं कालिन्दी इसका अपवाद है, जिसमें लेखिका में भाषा और नारी सौन्दर्य के प्रति लगाये गये समीक्षकों के आरोपों का खण्डन कर कालिन्दी की प्रवाह महता और पाठको द्वारा स्थानीय रंग की पहचान का उल्लेख इस प्रकार किया है। कालिन्दी को लिखना प्रारम्भ किया तो पहाड़ी झरनें से बहती चली गयी। शायद इसका यह स्वछन्द प्रवाह इस लिए भी शहज बन गया कि मैनें इसमें अपनें बचपन कैशोर्य के अनुभवों का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं तो नाम भी नहीं बदले इसका कथा सार इस प्रकार है।

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 2000

कथावस्तु :-

अल्मोड़े के पण्डित रूद्रदत्त दैवज्ञ मार्तण्ड थे, उनकी पुत्री अन्ना थी, जिसका किशोरावस्था में विवाह सम्पन्न घर में किया था। अन्ना तीन महीनें ससुराल में रह कर वहाँ के अत्याचारों से ऊबकर पितृगृह वापस लौट आयी। यद्यपि पंचायत में अन्ना के साथ हुए अत्याचार को अन्याय माना किन्तु अन्ना ससुराल न जानें में दृढ़ प्रतिज्ञ रही। सहृदय पिता नें अन्ना को ज्योतिष का ज्ञान पढ़ाया अन्ना की दादी नें आकर उसकी खेती बाड़ी सम्भाली तभी उन्हें पता लगा कि अन्ना ससुराल से गर्भभार लेकर भी आयी है। यही कन्या आगे चलकर कालिन्दी कहलाई। कालिन्दी के मामा देवेन्द्र, नरेन्द्र, महेन्द्र उसका लालन पालन करते बड़ा मामा देवेन्द्र पुलिस विभाग में उच्च पदस्थ अवसर था और वह अन्ना और कालिन्दी को अपनें साथ ले जाकर कालिन्दी की शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था की तभी देवेन्द्र की पत्नी शीला की बड़ी बहन मीरा नें कालिन्दी के हेतु एक वर का प्रस्ताव किया और वर के पिता रामेश्वर जोशी डाक्टरी परीक्षा पढ़ रही कालिन्दी को अपनी बहू बनानें की स्वीकृति दे गये। कालिन्दी के विवाह में प्रारम्भ से ही व्यवधान पड़ गया क्यों कि शराबी, जुआड़ी कालिन्दी के पिता नशें में चूर होकर विवाह पूर्व कन्यादान के लिए देवेन्द्र के घर पहुँच गये किसी तरह विदेशी शराब का उत्कोच के बहानें महेन्द्र उसे टालता है कि कालिन्दी कन्यादान में पिता के नाम कमलावल्लभ की जगह अपनें मामा देवेन्द्र भट्ट का उल्लेख करती है। द्वाराचार के पूर्व श्वसुर ने पूर्व निर्धारित राशि की माँग जिस तुच्छता से की कालिन्दी द्वारचार में ही खड़ीहोकर बारात को खाली हाथ वापस लौटा देती है। बाद में देवेन्द्र बताता है कि वह यथा समय सम्मान सहित वह रूपये देनें की आकाँक्षा रखता था। बारात के निष्फल लौट जानें पर देवेन्द्र अन्ना, शीला और कालिन्दी में अनबोला हो गया। अतः सब लोग अपनें मूल घर अल्मोड़ा लौट आये। देवेन्द्र पैतृक निवास में आकर उसकी मरम्मत करा यहीं रहनें का विचार व्यक्त करता है क्योंकि नौकरी से सेवानिवृत्त होनें में कुछ ही दिन शेष थे। अल्मोड़े के इस प्रवास में देवेन्द्र अपनें बालकाल के मित्रों सहचरों की खोज करनें निकलता है और उसे बालपन का एलफी मिल जाता है। दोनों अपनें अपनें युवाजीवन की घटनाएं सुनाते हैं। एल्फी अपनी स्वीट हार्ट विक्टोरिया की प्रेम चर्चा और वेवफाई की बात कहकर अपने दुःख

को भुला देता है। देवेन्द्र का दूसरा मित्र बसन्त था, जिसकी पत्नी पक्षाघात से पंगु बन गयी थी। उसका एक मात्र पुत्र स्कालर शिप पाकर अमेरिका बस गया और विदेशी बहू ने उसे एक बार भारत आने की अनुमति दी पुत्र नये वर्ष के कार्ड और मनी आर्डर भर भेजता और बसन्त की पत्नी उसकी याद में रोती रहती।

कालिन्दी डाक्टरी परीक्षा उत्तीर्ण करकर वही इन्टर्न शिप कर रही थी और अपनी सहेली माधुरी के साथ रहती थी तभी माधुरी का विवाह अखिलेश के साथ तय हो गया अखिलेश के पिता माधुरी के बाप के बैंक बैलेन्स को देखकर ही इस विवाह की स्वीकृति दी थी। नहा धोकर माधुरी एक दिन बाहर गयी थी कि इसी बीच अखिलेश आ गया और उसने कालिन्दी के सौन्दर्य की प्रशंसा कर वासनाविभूत हो लौह बाहुपाश में बाँध लिया कालिन्दी के तिरस्कार करने पर अखिलेश अपने प्रणय निवेदन को माधुरी से न बताने का आग्रह करता है। किन्तु अखिलेश ने कुछ ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर दी कि कलंक डा0 कालिन्दी के मत्थे ही लगा। इस प्रकार डा0 कालिन्दी बिना सूचना दिये माधुरी को छोड़ पहाड अपने मामा-मामी के पास लौट आयी। एक बार पुनः पहाड़ में देवेन्द्र शीला अन्ना और कालिन्दी के सम्मिलित कुछ शिष्ट, कुछ अट्टहास गूँजने लगे। इसी बीच बसन्त की पत्नी को पुनः अटैक पड़ा और डाक्टरनी कालिन्दी उसकी सेवा करने पहुँच गयी। वहीं बसन्त कहता है कि वह अपने पुत्र पिंटू से उससे विवाह की कल्पना करता था किन्तु भाग्य में यह लिखा ही नहीं था। पिंटू किशोर अवस्था में कालिन्दी की तरफ आकृष्ट अवश्य ही था किन्तु लजीले स्वभाव के कारण अपने हृदय की गाथा कालिन्दी को सुना नहीं सका और फिर पिंटू अमेरिका चला गया। और इस प्रणय गाथा की बेल सूख गयी। कालिन्दी ने पिंटू को अमेरिका फोन भी किया, किन्तु वह नहीं लौटा। अचानक बसंन्त की पत्नी का देहावसान हो गया। कालिन्दी अपनी नौकरी करने पुनः दिल्ली आयी वहीं उसे एक लिफाफा मिला जो सम्भवतः कालिन्दी के तथाकथित पति द्वारा लिखा गया था। जिसे कालिन्दी ने बिना पढ़े ही टुकड़े कर के फेंक दिया। विवाहिता माधुरी को देखकर कालिन्दी ने उसे बधाई अपने अचानक जाने के कार्यक्रम की सफाई देती हुई डा0 कालिन्दी को माधुरी ने बड़े तिरस्कार ढ़ंग से देखकर कहा कि

अखिलेश ने उसे बताया है कि डा0 कालिन्दी अखिलेश से विवाह स्वयं करना चाहती थी। हतप्रभ कालिन्दी माधुरी को छोड़ तेजी से निकलती है तभी सामने से आता अखिलेश दिखा जिसे कालिन्दी नीच, घटिया कहकर अपमानित करती है। डा0 कालिन्दी को इस बात से भय लगने लगा कि माधुरी और अखिलेश दोनों उसके शत्रु बन गये हैं और गुण्डा अखिलेश उसे बदनाम करने पर तुला है। क्या वह नौकरी छोड़कर अन्यत्र कहीं चली जाय। कालिन्दी जिस मकान में रहती थी, मकान मालिक कुलभूषण और उसकी पत्नी दोनों के मध्य किसी अदृश्य अकल्पनीय सम्बन्धों की बात करती रहती है। कालिन्दी को बड़े पशोपेश में पड़ी कि उसके पिता के उम्र के मि0 कुलभूषण को लेकर घटिया बात कैसी सोंची जा रही है। हताश कालिन्दी जन कोलाहल से शून्य स्थान की खोज में बाहर निकल पड़ी। उसका मन बहुत अशान्त था। उसकी दृष्टि में तृप्तजन्य शून्य एक मकान को देख किराये में रहने के लिए वहाँ पहुँच जाती है। कुलभूषण उनकी पुत्री रंजना उनके दामाद आविद कालिन्दी को समझाते हैं कि वह उनके ही मकान में रहे। यहाँ अकेले जन शून्य मकान में रहते हुए उसे डर लगेगा।

21. मायापुरी[1] :

मायापुरी आज के अर्थ प्रधान युग में टूटते बनते सम्बन्धों की व्याख्या इस उपन्यास में हुई है इसमें आज के स्त्री पुरूषों की सहज कमजोरी गहरी आशक्ति और नया कुछ करने का संकल्प जीवंत रूप में वर्णित है। शोभा सामान्य परिवार की स्नातक युवती लखनऊ आकर जिस परिवेश में रहती है उसके मारक सौन्दर्य ने सबको प्रभावित किया है। वह असहज कर देता है। परिणाम हताशा, दुःख, ग्लानि और क्रूर मानवीय भाव देख वह आहत हो उठती है। इसका संक्षिप्त कथासार इस प्रकार है।

कथासार :-

शोभा के पिता लखनऊ सेक्रेटिएट में क्लर्क थे। वहीं सपरिवार रहते, अचानक लू की लपेट में आ जाने से देवीदत्त पत्नी और चार बच्चों को बिलखता छोड़ गये। अतः सभी लोग

1. *हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 1994*

अपने पैतृक निवास पहाड़ आ गये। शोभा की माँ दुर्गा ने खेती में मन लगाया तभी एक दिन उसकी सहेली गोदावरी का पत्र प्राप्त हुआ। जिसमें शोभा की आगे पढ़ाई का आश्वासन था। गोदावरी के पति इंजीनियर थे। सतीश और मंजरी उनकी संताने थीं। सतीश डाक्टरी पढ़ने विदेश गया था। उसकी प्रतिभा से तिवारी जी आकृष्ट हो दामाद बनाने का प्रस्ताव लेकर सतीश के पिता जनार्दन जी के पास आये और सतीश की सहमत से यह विवाह होना स्वीकृत हो गया। शोभा और मंजरी साथ विश्वविद्यालय जातीं तभी सतीश के आने की तार से सूचना मिली, शोभा लकवाग्रस्त मौसी गोदावरी की सेवा करती। सतीश के आने की सूचना सुनकर उसका मित्र अविनाश भी आ गया। यह अविनाश सतीश का बाल सखा था। वह कम्न्यूस्त हो गया, अपने प्रारम्भिक युवावस्था में तन्वी युवती से प्रेम करता था किन्तु विदेश लौटने पर तन्वी के विवाह की सूचना पाकर इसने अविवाहित रहने का संकल्प ले लिया था। महामहिम तिवारी जी सहित सब लोग स्टेशन पहुँचकर सतीश का स्वागत करते हैं। सतीश सबके लिए उपहार की सामग्री लाया था, शोभा को जब कुछ नहीं मिलता तो गोदावरी सतीश द्वारा लायी प्लेटिनियम की अँगूठी शोभा को पहना देती है। दूसरे दिन कथा का आयोजन होता है। तिवारी जी आकर इस पुण्य अवसर पर अपनी पुत्री सविता का वाग्दान और जामाता सतीश को आशीर्वाद देते हैं। सतीश की माँ और उनके पिता जनार्दन बहू सविता को आशीर्वाद स्वरूप कुछ देने का विचार करते हैं तभी चतुरा शोभा मौसी से प्राप्त अँगूठी जनार्दन जी को दे देती है। सभी लोग रात्रि में ताश खेलते हैं।

शोभा वृद्ध मौसा जनार्दन के साथ नित्य संध्या भ्रमण पर जाती थी उसके जाने और आने के समय सतीश पर्दे की ओट से भावुक त्रषार्त मुग्ध दृष्टि से शोभा को देखता इस चोरी को अविनाश देख लेता है। वह सतीश को सावधान करता है। अबोध, अनाथ, सरला, शोभा को सतीश व्यर्थ में स्वर्ग का द्वार दिखा रहा है। वह तो राजदूत का जमाता बनकर स्वीटजरलैण्ड चला जायेगा और शोभा तारे गिनती रहेगी। घर मे एकान्त अवसर पाकर सतीश माँ के पास बैठता है गोदावरी तिवारी जी की महिमा उदारता और अपने कर्ज के उद्धार की बात करती है। तभी सतीश हँसी में सविता से विवाह न करने की बात करता है। जिसे सुनकर माँ हतप्रभ हो उसे अपनी सौगन्ध देती है। सतीश के आगमन के उपलक्ष्य में तिवारी

जी ने एक पार्टी आयोजित की थी जिसमें शोभा भी पहुँचती है। उसके सौन्दर्य को देख सविता और उसकी सहेलियों का चेहरा मलिन हो जाता है। उस प्रीतिभोज में स्वादिष्ट पकवानों का आनन्द शोभा नहीं ले पाती क्योंकि उसे अपने छोटे-छोटे भूख से विलखते भाइयों की याद आ जाती है। पार्टी से लौटकर शोभा मंजरी के कहने पर सतीश कमरे में काफी देने जाती है। सतीश पागलों की तरह शोभा को आलिंगनबद्ध कर लेता है। तिवारी जी के यहाँ से लौटते समय मंजरी के पैर में मोच आ जाती है शोभा और अविनाश उसकी बड़ी सेवा करते हैं सतीश भी बार शोभा से व्याकुल होकर मूक प्रणय याचना करता रहता था। दूसरे दिन सविता मंजरी को देखने आती है। सतीश और सविता को एकान्त में बात करने का अवसर मिलता है। अविनाश और मंजरी इस बात की चर्चा करते हैं कि लगता है सतीश इस विवाह से प्रसन्न नहीं है तभी अविनाश मंजरी से शोभा के प्रति सतीश की आसक्ति की सूचना देता है और यह प्रेम की बेल मंजरी के साहस के बिना परवान नहीं चढ़ेगी। अतिशय जागरण और श्रम के कारण शोभा को बुखार आ गया। सतीश और अविनाश उसकी देखभाल करते हैं। रात्रि में शोभा सतीश का हाथ पकड़कर बड़बड़ाने लगती है। उसके स्वस्थ्य होने पर शोभा के असम्बद्ध प्रलाप को लेकर सतीश उससे हँसी करता है। सतीश शोभा को विश्वविद्यालय के मार्ग से ही अपनी गाड़ी में बिठाकर अपने प्रणय निवेदन हेतु एकान्त स्थल की ओर ले जाता है। वह शोभा से कहता है कि तिवारी जी का सम्बन्ध तोड़ देगा और पिता के सम्मुख शोभा से विवाह की बात कहेगा। शोभा के इन्कार करने पर सतीश उसे कायर कह चल देता है और उसे रास्ते में ही छोड़कर अन्यत्र चला जाता है। घर बिलम्ब पहुँचने पर उसे ज्ञात होता है कि सतीश की नियुक्ति बेल्लौर में हो गयी है और वह उत्साह पूर्वक सबसे विदा लेकर वहाँ पहुँच जाता है। अविनाश शोभा को एक पत्र देता है जो सतीश का लिखा हुआ था कि अचानक राजनीतिज्ञ तिवारी जनार्दन जी से कहते हैं कि सतीश पर उनकी राजसी मुहर लग चुकी है और उसका अन्य किसी के साथ घूमना उन्हें अच्छा नहीं लगा। वे अपनी कन्या का विवाह शीघ्र करना चाहते हैं। तिवारी जी के चले जाने पर गोदावरी शोभा से अनुनय विनय करती, कहती है कि शोभा कुछ ऐसा प्रयास करे कि सतीश का विवाह सविता से हो सके। अन्त में दोनों समधी एक माह के अन्त ही सतीश-सविता के विवाह के लिए सहमत हो जाते

हैं। परीक्षा समाप्ति के बाद शोभा गोदावरी से अनुमति लेकर पहाड़ जाना चाहती है। गोदावरी उसे सोमवार तक रूकने की बात कहती है। सतीश के आने पर शोभा उसके प्रणय निवेदन से अत्यन्त व्यथित हो जाती है। अतः शोभा सतीश के जेब से कुछ पैसे निकालकर अधूरी चाय बनाना छोड़ चुपचाप बिना किसी को बताये स्टेशन पहुँच कर पहाड़ जाने वाली गाड़ी में बैठ जाती है। घर पहुँचते ही शोभा को पता लगता है कि उसकी माँ विक्षिप्त हो उठी है गाँव की प्रधान दादी ने शोभा और बच्चों को धैर्य बँधाया। माँ की मृत्यु के पश्चात् शोभा को अविनाश का पत्र मिला। जिसमें उसने उसकी कायरता को लताड़ा था। सतीश ने एक दिन अपनी माँ से शोभा के अचानक पलायन का रहस्य जान लिया।

22. भैरवी[1] :

शिवानी का कथाफलक व्यापक और अनेंक आयामी है। बौद्ध धर्म की विकृत स्वरूप उद्भूत तांतिक या बाममार्ग भारतीय साधना में एकांतिक साधना के रूप में विकसित हुई है। जिससे समाज के लोग लाभ तो उठाना चाहते हैं किन्तु उनकी साधना परक क्रियाओं से भयभीत भी रहते हैं।

भैरवी तन्त्रशास्त्र में परिभाषिक शब्द है। यह उस स्त्री का बोधक है जो श्मसान में शव साधनाकर सिद्ध जाने वाले भैरव की सहायता एवं गुह्य साधना में शक्ति का काम करती है।

प्रस्तुत उपन्यास में अपरूपा सुन्दरी चन्दन की प्रेम गाथा और बलात्कार से बचने के लिए चलती ट्रेन से कूदकर श्मशान साधकों के मध्य पहुँच जाती है। इसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है :-

कथानक -

विशाड़ के महिम चन्द्र तिवारी सम्पन्न पहाड़ी ब्राम्हण थे। राज राजेश्वरी उनकी सुन्दरी कन्या थी जो अपनी सहेली के साथ गाहे बगाहे उसके घर के वैभव को देख उसकी माँ

---

1. हिन्द पॉकेट बुक्स, संस्करण 2001

रामप्यारी के पुत्र कुंदन के रूप-जाल में आबद्ध हो गयी। रामप्यारी वेश्यापुत्री थी, जिसके प्रेमी ने उसे राजसी वैभव तथा ऐश्वर्य से पूर्ण प्रसाद उपहार में दिया था। अपने सुदर्शन पुत्र और राज राजेश्वरी के क्षीण प्रेम सूत्र को रामप्यारी जानबूझकर ढ़ील देने लगी क्योंकि यदि बेटा उच्च ब्राम्हण कुल की लड़की को ले आये तो अभिमानी महीनचन्द्र तिवारी के मुँह में जोरदार तमाचा लगेगा क्योंकि कभी महीनचन्द्र तिवारी अपनी सुन्दरी पत्नी का विधुमख देखते ही अपने शिखासूत्र का झोला थैला बटोर उसके रूप यौवन की रत्नगर्भा मंजूषा को निर्ममता से ठुकरा कर चलार गया था। एक बर्ष में कुंदन नौकरी पा जायेगा और यदि राज राजेश्वरी के पिता के कठोर चक्रव्यूह के सप्तद्वारा पार कर आयी तो तरूण प्रेमी उसे अपनी परणीता बना लेगा। भला इश्क और मुश्क कहीं छिपाए छिपती है। भगोड़े प्रेमियों को राज राजेश्वरी के पिता ने अपनी सूझ-बूझ से लाल बुआ स्टेशन पर ही पकड़ लिया। कुंदन को देखकर महीन चन्द्र तिवारी उसे गोली से उड़ा देना चाहते थे किन्तु चतुर कुंदन जुजुत्स का घिस्सा देकर भाग गया। पुत्री की कलंक कथा घर के बाहर न जाय इसलिए महीन तिवारी ने अपने दरिद्र मित्र के पैरों में टोपी भी रखी और असफल होने पर अन्धा, लूला, लंगड़ा जो भी मिलेगा अपनी कुल बोरनी पुत्री को बाँधकर विदा करने का संकल्प लेकर निकले। तिवारी को जमाता कुल का धनवान पात्र मिल गया जो दुहाजू, सन्तानहीन, और शाहजहाँ के मिष्ठान विक्रेता थे। राज राजेश्वरी के मिष्ठान लोभी मक्खियाँ परिक्रमा करती उसकी कलंक गाथा की भनक पाते ही अपनी सुन्दरी पत्नी को ताले में ही बन्द कर दुकान जाते। एक वर्ष बाद चन्दन का जन्म हुआ और दूसरे वर्ष राज राजेश्वरी विधवा हो गयी। अपनी अंधी सास और सम्पति हीन राजेश्वरी के सामने जीवन यापन की कठिन समस्याएँ खड़ी हुई उसने चन्दन को शिक्षा तो दिलाई किन्तु उसके अप्रतिम सौन्दर्य से वह भयाक्रान्त होने लगी क्योंकि प्रतिवंशी के रूप में रोहिला पठान के किशोर असमय सीटियाँ बजाते और उसके मकान के चक्कर लगाते। राज राजेश्वरी ने अपने विशाल भवन में एक स्कूल खोल दिया था और वहीं वह शिक्षिका भी बन गयी थी।

चन्दन की किशोरी बनने पर उसके विवाह की समस्या खड़ी हुई। तब राज राजेश्वरी अवकाश ले अल्मोड़ा पहुँचती है और वहाँ अपनी जिस सहेली के घर में ठहरती है उसक घर

की मालकिन डॉ0 चन्दिका विष्ट थी जो कभी कुन्दन और राज राजेश्वरी के प्रणय प्रसंग में माध्यम रही है। दोनों सहेलियाँ पूर्व प्रणय गाथा की स्मृति ताजी करती हैं, तभी चन्दन को देख वह उसके विवाह हेतु राजेश्वरी को सतर्क कर देती है। राजेश्वरी और चन्दन अपने घर में रहती ही हैं कि अचानक एक रात दस-बारह पहाड़ी लड़के वर्षा तूफान से विषदाग्रस्त होकर शरण माँगने पहुँच जाते हैं। विवश हो राजेश्वरी उन्हें शरण ही नहीं देती अतिथि सत्कार भी करती है। तभी नाटकीय ढ़ंग से वे किशोर बालक के वेश में एक किशोरी राज राजेश्वरी के साथ ही सोने का आग्रह करती है क्योंकि युवकों के बीच में वे युवती कैसे सो सकती है। हर प्रकार से आश्वस्त होकर राज राजेश्वरी उसे अपने निजी शयन कक्ष में आने देती है। दूसरे दिन पर्वतारोही के विदा होने के पन्द्रह दिन बाद सम्पन्न सोनिया की माँ अपने पुत्र के लिए चन्दन का हाथ माँगने उनके घर पहुँच जाती है राज राजेश्वरी अपने दूरस्थ मामा पीताम्बर से उनके कुल गोत्र की पुष्टि कर चन्दन का विवाह सोनिया के भाई विक्रम से सम्पन्न हो जाता है। विक्रम चन्दन को प्रेम की अटपटी गलियों से परिचित करा ही रहा था तभी यात्रा के दौरान ट्रेन में एकायक रात्रि में पाँच फौजी अफसर घुस आये। ऐसी सुन्दरी को देख वे पाँचों उसके पति विक्रम को बाँधकर चन्दन से बलात्कार करने का प्रयास करते हैं। छटपटाती चन्दन दरवाजा खोल ट्रेन से छलाँग लगा देती है। और संयोग या दुर्योग से जलती चिता के पास शव साधना करने वाले माया और उसके महागुरू सिद्ध भैरव के पास पहुँच जाती है। सिद्ध अघोरी मुमूर्ष चन्दन को लाकर उसकी सेवा सुश्रूषा करते है और कई दिनों के बाद चन्दन को होश आता है।

महागुरु की भैरवी माया साधक की कपाल साधना में सहायिका थी और चरन दोनों को गाँजा, अफीम के चिलिम की आग प्रज्जवलित करती। धीरे-धीरे चरन के साथ रहकर चन्दन कापालिक साधना की अभ्यस्त हो रही थी। कि निर्विकार गुरू के द्वारा अंग्रेजी भाषा में दी गयी कुछ कविताओं के हिन्दी अनुवाद को चन्दन के मुख से सुनकर माया स्तम्भित रह जाती है क्योंकि उसे लगा कि यह महागुरू माया को छोड़ सुन्दरी चन्दन को अपनी भैरवी बनायेगा। अचानक सर्पदंश से मृत माया के शरीर को नदी में प्रवाहित करने हेतु वह कापालिक गया ही था कि चन्दन खिड़की से कूदकर किसी तरह से छिपती अपने पति विक्रम

के द्वार पर पहुँचती है कि विक्रम अपनी दूसरी पत्नी को सुख पूर्वक प्रसव कराकर लौटा ही था कि चन्दन उसे दिखाई पड़ी। चन्द्रन के कलंक कथा को विस्मृत कर विक्रम उसे आलिंगन बद्ध कर अपने प्रेम की पुष्टि करता है। तभी उसकी माँ पुत्र रत्न की सूचना पाकर जो प्रसन्नता व्यक्त करती है। उसे चन्दन भी सुन लेती है और फिर वह पुनः अनजान चौराहे पर आकर खड़ी हो जाती है। कि वह अब कहाँ जाये।

उपन्यासों के पुरूष पात्रों का वर्गीकरण

पिछले पृष्ठों में शिवानी के उपन्यासों की कथावस्तु देकर पात्रों की सूची प्रस्तुत की गयी है। यहाँ इस सूची का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रमुख और गौण पुरूष पात्र :

साहित्यकार अपनी रचना में जिस समाज की सृष्टि करता है। उसकी रक्षा उसके संचालन के लिए विधि निषाधों का भी उल्लेख करता है। समाज के संचालन में नायक नेता या प्रमुख पात्रों का योगदान आसाधरण रूप से महत्वपूर्ण होता है। गौण या अन्य सहायक पात्र प्रधान पात्र के अंगुल निर्देश या उसकी महत्ता के पूरक होते हैं। जो पात्र कथानक में आद्यन्त वर्तमान रहतें हैं। उन्हें नायक या प्रमुख पात्र माना जाता है। ऐसे पात्रों के क्रिया कलाप उपन्यास या साहित्य में बिखरा रहता है। किसी न किसी रूप में वह ग्रंथ का अधिक स्थान घेरता है। यहाँ शिवानी के उपन्यासों के प्रमुख पात्रों की सूची प्रस्तुत की जा रही है।

रोहित, विमलानन्द, राजा राजकमल सिंह, रमेन्द्र, नन्हें, रोहित, भाष्करन, माधव बाबू, कार्तिक, कुन्दन सिंह उमेश, मधुकर, शिवदत्त पाण्डेय कर्नल, दिनकर पाण्डेय, प्रवीर, विद्युतरंजन, शेखर, करसनदास कापड़िया, कौश्तुभ, देवदत्त भट्ट, रोहिताश्व दत्ता, प्रतुल, सतीश, देवेन्द्र भट्ट, इत्यादि। यह प्रधान व प्रमुख पुरूष पात्र हैं जिनका उल्लेख या क्रियाकलाप का वर्णन अधिक पृष्ठ लेता है।

गौण पात्र :-

साहित्य में गौण पात्र वे होते हैं जो अपनी क्षणिक छटा दिखाकर विलरन हो जाते

हैं। ऐसे पात्र अपनें चरित्र क्रिया कलाप सद् असद् व्यवहार से पाठ्कों के मन थोड़ी देर अमिर प्रभाव छोड़मे हैं। यह गौण पात्र भी दो प्रकार के हो सकते हैं प्रमुख पात्र के सहायक अथवा परिस्थितिवशात् उल्लिखित होते हैं या उनके माध्यम से घटना व्यापार में बहुत थोड़ी सहायता मिलती है। प्रथम प्रकार पात्रों के रथ्या उपन्यास का हरदत्त वैद्य, चल खुसरो घर आपने का कविराज गोस्वामी, कस्तूरी मृगा का इकबाल नारायण, कैंजा का सुरेश भट्ट, कृष्णवेणी का मि0 फोर्टीन, अतिथि का श्यामाचरण, रघुरवर दयाल, भैरवी उपन्यास का कुन्दन सिंह, अवधूत गुरू, श्मशान चम्पा का धरणीधर, रामदत्त पाण्डेय, तनवीर वेग, चौदह फेरे का सर्वेश्वर, समीर गाँगुली, धरणीधर रामनाथन, सुरंगमा राबर्ट, गजानन जोशी, जानकी प्रसाद, कृष्णकली का विद्युतरंजन मजूमदार, स्व्यंसिद्धा का शिवदत्त, गैंडा का वेद मेहरा, मायापुरी का सतीश और जनार्दन्न, कालिंदी का बसंत इत्यादि पात्र गौण सहायक पात्रों के अन्तर्गत आते हैं। इसी प्रकार केशर सिंह, बेनुपद पटवा, गुरूकेना राम (श्मशान चम्पा, रौरेश वसु, शिवदत्त के पिता, रूसी गौर मोहन, बरूवा (चौदह फेरे), गाडोदिया (सुरंगमा), करसनदास कापड़िया का पुत्र (रतिविलाप), मौलवी (गैंडा), प्रतुल के पिता (पाथेय), बृजेश शाह, पिन्टू, महेन्द्र (कालिन्दी) इत्यादि पात्र हैं।

आर्थिक दृष्टि से :-

साहित्यकार अपने साहित्य में जिन पात्रों का वर्णन करता है उनकी आर्थिक स्थिति, रहन-सहन का स्तर, आहार व्यवहार, का भी उल्लेख करना चाहता है। शिवानी के उपन्यासों में उच्च वर्ग, अभिजात्य वर्ग का विशेष वर्णन है, ऐसे पात्रों के महल उसकी शिल्पकला, गवाक्ष एवं महल के अन्दर नौकर, दरबान, माली, उनके खाने-पीने के बहुमूल्य बर्तनों का उल्लेख शिवानी ने बड़ी कुशलता से कर वातावरण को आकर्षक रूप दिया है। ऐसे पात्रों में राजकमल सिंह, शिवकमल सिंह, कृष्ण कमल सिंह (चल खुसरो घर आपने), माधव बाबू कार्तिक, रघुबर दयाल(अतिथि), राजेश्वरी के नाना (भैरवी), नारायण सेन (श्मशान चम्पा), शिवदत्त पाण्डेय कर्नल, गौर मोहन बरूआ, रौरेन वसु(चौदह फेरे), राजा प्रबोध रंजन राय, गाडोदिया (सुरंगमा), विद्युतरंजन मजूमदार (कृष्णकली), करणदास कपाडिया (रति विलाप),

राजनीतिक दृष्टि से -

शिवानी ने कुछ उपन्यासों में राजनीतिक नेताओं की गतिविधियों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है। ऐसे नेता जो अपने स्वार्थसिद्ध के लिए पद सत्ता का उपयोग ही नहीं करते जनता को दिगभ्रमित भी करते हैं। माधवबाबू (अतिथि), दिनकर पाण्डेय (सुरंगमा), विद्युतरंजन मजूमदार (कृष्णकली), महामहिम तिवारी जी (मायापुरी) प्रमुख पात्र है।

धार्मिक दृष्टि से -

शिवानी ने अपने उपन्यासों में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई धर्मो के पुरोहित, सम्प्रदाय प्रवर्तक, गुरू, सन्यासी, मौलवी पादरी इत्यादि के क्रिया कलापों का उल्लेख कर अपने समाज को प्रतिबिम्बित किया है। गुरू केनाराम के पुरोहित, सम्प्रदाय, प्रवर्तक गुरू, सन्यासी, मौलवी, पादरी इत्यादि के क्रिया कलापों का उल्लेख कर अपने समाज को प्रतिबिम्बित किया है। गुरूकेनाराम(श्मशान चम्पा), परमानन्द और उसका चेला (चौदह फेरे), ग्वालदेव के मंदिर का पुजारी (सुरंगमा) भास्करन (कृष्णावेली) अवधूत शुदभै (भैरवी) मौलवी (गेंडा) फादर मायिक (सुरंगमा) पादरी डा0 (कृष्णकली), उल्लेखनीय पात्र हैं।

क्षेत्र विशेष के पात्र :-

शिवानी ने अपने उपन्यासों विस्तृत क्षेत्रफलक, प्रस्तुत किया है। उनके अधिकांश पात्र पहाड़ी, विशेषरूप से कुमायूँ अचंल के रहने वाले हैं। कलकत्ता, बंगाल के अभिजात्य का इन पात्रों पर प्रभाव है। साथ ही उत्तर-प्रदेश, मध्य प्रदेश आदिवासी इलाकों, गुजरात, महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक सभी क्षेत्रों के पात्र हैं। सुरेश भट्ट, राघव भट्ट, गजाधर भट्ट, हेमचन्द्र तिवारी (कैंजा), महिमा तिवारी (भैरवी) उमेश, महेश दिनेश (उपप्रेती), कर्नल पाण्डेय, शिवदत्त, धरणीधर, राजेन्द्र (चौदह फेरे), दिनकर पाण्डेय, गजानन जोशी, प्रबोधरंजन राय (सुरंगमा) तथा विदुशेखर बनर्जी, देवेश वर्मन, राखालदास, समीर गांगुली, ध्रुव सरकार (चौदह फेरे), वरुण

कक्का सुनील गुहा, जीवानन्द जोशी, भोसखोड़ो, कुमुदरंजन मंडल, पहाड़ी और बंगाली पात्र है। अन्य प्रान्तीय पात्रों में भास्करन करूणा करन, रंगनाथन, रामनाथन, श्री निवासन, कृष्ण नम्बूदरी, दक्षिण के केरल कर्नाटक आदि के पात्र हैं।

करसनदास कपाड़िया, गाड़ोदिया, वेद मेहरा, गुजराती एवं मारवाड़ी पात्र है।

प्रौढ़ पात्र :

शिवानी के पुरूष पात्र विभिन्न आयु वर्ग के हैं। यहाँ कुछ प्रौढ़ एवं बृद्ध पात्रों का उल्लेख किया जा रहा है। हरदत्त वैद्य, मुत्थू स्वामी (रथ्या), बद्री काका, कविराज, गोस्वामी (चल खुसरो घर आपने), इकबाल नारायण (कस्तूरी मृग), गदाधर भट्ट, हेमचन्द्र तिवारी (कैंजा), माधव बाबू, श्यामाचरण, गुरूदेव, रघुवर दयाल (अतिथि), पीताम्बर, अवधूत गुरू (भैरवी), शिवदत्त .(स्वयंसिद्धा), देवदत्त भट्ट (किशुनली), मौलवी (गेंडा), प्रतुल के पिता शिवशंकर (पाथेय), तिवारी जी (मायापुरी) इत्यादि।

बाल पात्र -

शिवानी के उपन्यासों में बाल पात्र भी प्रयुक्त है। रोहित का पुत्र (विषकन्या), रम्भा का पुत्र बिल्लू (मणिक), रोहित (कैंजा) बंटी (अतिथि) बैरोनिका का अनाम पुत्र (सुरंगमा), सुवर्णा के बच्चे (गेंडा) देवेन्द्र, महेन्द्र नरेन्द्र का बाल रूप (कालिंदी) इत्यादि।

आसाधारण एवं साधारण असामान्य पात्र

मनोविज्ञान क्षेत्र में यह उपत्तिबद्ध मूल है कि उच्च महात्वाकांक्षी को दमित रूप में बनाए रखने के कारण व्यक्ति अपने व्यवहारिक जीवन में आस्वाभाविक आचरण करने लगता है। कुछ देवदत्त प्रतिभा के कारण भी अपने जीवन में आसाधारण और अस्वाभाविक कार्य करते दिखते हैं। यही स्थिति विकलांग या जन्मजात विकृति के पात्रों के क्रिया कलाप की असमान्यता का वर्णन शिवानी ने किया है। मुत्थू स्वामी सर्कर्स मैनेजर (रथ्या), शिवकमल सिंह (चल खुसरो घर आपने), इकबाल नारायण (कस्तूरी मृग), सुरेश भट्ट (कैंजा), रघुवर दयाल (अतिथि), तनवीर वेग (श्मशान चम्पा), रामनाथन (चौदह फेरे), मयूरी बैरोनिका का

अनाम पुत्र, करसन दास कापड़िया का पुत्र (रति विलाप), प्रतुल के पिता (पाथेय), असाधारण एवं अस्वाभाविक या असामान्य पात्र हैं।

तात्पर्य यह है कि गाथा, कथा, चरित्र आदि घटनाओं से विकसित उपन्यास विदेशी शैली से प्रभावित होकर आज के स्वरूप को प्राप्त हुआ है। जिसमें आँचलिकता, मनोविज्ञान, तथा विभिन्न प्रवृत्तियों का समावेश है। पिछले कुछ वर्षो से यह मान्यता दृढ़ होने लगी कि महिलाओं की वास्तविक समस्याएँ उनकी अनुभूतियाँ, शोषण आदि भुक्तभोगे यथार्थ का चित्रांकन महिला ही कर सकती हैं। परिणाम स्वरूप महिला लेखन की विस्तृत परम्परा मिलने लगी। शिवानी उस युग की लेखिका हैं जिनके पीछे इस प्रकार का चिन्तन और उसकी छाप नहीं है। उनके उपन्यास लघु और बड़े दोनों रूपों में मिलते हैं। उनके उपन्यासों की नायिकाओं पर यह.आरोप लगाया जाता है कि वह एक से एक अपरूप सुन्दरी है किन्तु ऐसा आरोप पुरूष पात्रों पर नहीं लगाया जा सकता। उनकी नायिकाओं के प्रेमी या पति युवा भी हैं प्रौढ़ व्यक्ति, अविवाहित और विवाहित भी है। शिवानी के पुरूष पात्रों का संसार बहुत विस्तृत हैं। यदि यह कहा जाय क्षेत्र के दृष्टि से समग्र भारत वर्ष के आँचलिक क्षेत्रों का बात वह प्रतिनिधित्व करते हैं तो इसमें कोई अतियुक्त नहीं। इन उपन्यासों में चित्रित हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, धर्म सम्प्रदाय के साथ-साथ, विरक्त सन्यासी, प्रवंचक, साधु भी मिलते हैं। उच्च वर्ग राजा, सामन्त, जागीरदार, नवाब भी हैं। मध्यमवर्ग में अध्यापक, अफसर, व्यवसायी, नौकरपेशा एवं निम्नवर्ग में सेवक, दरबान, माली, दरबान, ड्राइवर वर्ग के लोग आये हैं। इन पुरूष पात्रों में सामान्य, असामान्य, अर्न्तमुखी, बुहिर्मुखी, अपराधी, नेता, चरित्रवान, दुराचारी, भ्रष्टाचारी, संत, दुर्जन, स्वस्थ्य, रोगी, पात्र भी प्रयुक्त हैं।

सारांश यह है कि शिवानी का पुरूष संसार आधुनिक, प्राचीन, रूढ़, प्रगतिशील, सम्पन्न, विपन्न हर दृष्टि से समृद्ध है। इन पात्रों के विवरण देने में परिस्थितियाँ, पृष्ठ भूमि, चिन्तन, की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। यह पात्र भव्य, आकर्षक, जीवन्त, प्रेरणादायक, नेतृत्वगुण सम्पन्न भी हैं।

अध्याय तृतीय

शिवानी के उपन्यासों के प्रधान पुरूष पात्र
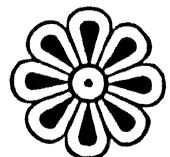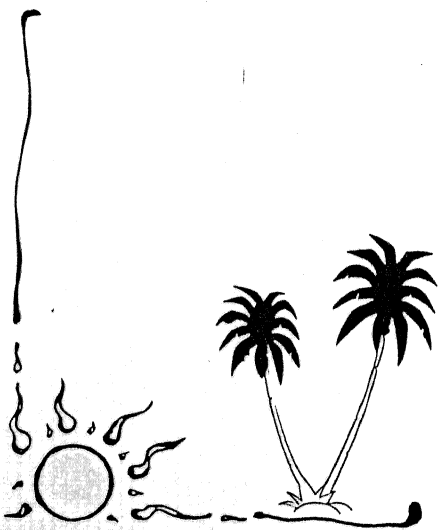
रोहित, नायिका के भाभी का भाई है। वह एक कुशल विमान परिचालक उसका विवाह दामिनी से हुआ, किन्तु जुड़वा बहन कामिनी के रूप जाल एवं परिस्थिति के कारण वह अपनी साली कामिनी से सम्बन्ध बना बैठता है और उसकी विषदृष्टि का शिकार बनकर मृत्यु को प्राप्त होता है।

लेखिका ने उसके वाहय सौन्दर्य का चित्रांकन चित्राकर्षक रूप में किया है।

1. बाह्य सौन्दर्य :

शिवानी ने रोहित के बाह्य सौन्दर्य का चित्रांकन कथोपकथन शैली में किया है। कामिनी उसके चेहरे को लाखों में एक बताती है– "इतने ही दिनो में चेहरा जैसे ओर भी लुभावना बन गया था इन किशोरी के से कमनीय कपोलो में अभी किसी ब्लेड का स्पर्श भी नहीं किया सुतवा नाक के नीचे उसके रसीले अधर उस लुभावने अतिथि के सलोने चेहरे की मीठी स्मृति मेरे हृदय कक्ष में किसी गोदने सी ही उभर आयी थी।"[1]

दामिनी की दृष्टि में रोहित सुदर्शन युवक है। "उसकी पलके लडकियों सी रेशमी पलके थी सुनहरे सेहरे की रूपहली सुनहरी लटकनो के बीच उसका कश्मीरी गौर वर्ण लपटे सी मार रहा था।"[2]

2. शर्मिला:-

रोहित शर्मिला युवक था पहली बार अद्वितीय सुन्दरी कामिनी को परिचारिका के रूप मे देखकर वह शर्मा जाता है– "इस अतिथि के पास से जब-जब मै गुजरती हूँ वह लाल पड़ जाता इसका पल-पल में लाल पड़ता और बुझता चेहरा मुझे न्यून रंगीन बत्तियों के प्रकाश में चमकता शिष्ट, सौम्यता का विज्ञापन सा ही लगा था। जब मै इधर-उधर देखती या अन्य अतिथियों की अभ्यर्थना में भटकती घूमती यह मुग्ध दृष्टि से मुझे देखने लगता। मै चट से अपनी दृष्टि फेर इसकी चोर नजर को पकड़कर बाँध लेती।"[3]

---

1. विषकन्या, पृ0 24-26

2. वही, पृ0 37

3. वही, पृ0 25

3. उनमत्त प्रणयीः-

लेखिका ने रोहित को उन्मत प्रणयी के रूप में चित्रित करते हुए लिखा है हवाई यात्रा के दौरान कामिनी से वह अपना प्रणय निवेदन कर चुका था। दामिनी से विवाहित होने पर उसके प्रेम की सीमा का कोई आर-पार नहीं था। कामिनी कहती है- "हाय यह क्या वही शर्मीला छोकरा है, जिसके मुँह से बोल नहीं फूटता था और जो मुझे देखकर उस दिन लाल पड़ता किसी नवेली दुल्हन को भी मात कर गया था। मैं तब यह क्या जानती थी कि पुरूष संयमी-संस्कारी होने पर भी रात्रि की नीरव निस्तब्धता में कभी सुन्दरी सहचरी का साहचर्य पाते ही बन उठता है। बार बनिता सा धृष्ट, मुखर एवं निर्लज्ज?"[1]

इस प्रकार दामिनी के स्थान पर कामिनी के आ जाने पर उसकी प्रणय भावना अत्यन्त उन्मादक हो बैठी।. लेखिका कहती है -"सहसा सोने वाले ने लपककर मुझे फिर पलंग पर खींच लिया और पागलों की तरह चूमने लगा। दिन भर छुट्टी लेकर फिर मुझे उस प्रेम रस के सागर में डुबकियाँ दिलाता यथार्थ के धरातल से किसी जनशून्य एकान्त में खीच ले गया। यहाँ न पैरो तले धरती थी न सिर के ऊपर आकाश।"[2]

4. चतुर :-

रोहित को दैनन्दिनी क्रिया कलापों में कामिनी के प्रति संदेह होने लगा। उसके मन का अर्न्तद्वन्द क्रिया-कलापों से व्यक्त होने लगा - "रात को चुपचाप आकर मेरे पास आकर लेट गया, न उसने मुझे पुकारा, न अपने स्वाभाविक अधैर्य से मुझे बाँहों में ही खीचा। रातभर उसकी बदलती करवटों, बड़े-बड़े यत्न से दबाकर ली गई जमुहाइयों एवं लम्बी-लम्बी सासों को सनुते ही मैं समझ गयी कि मेरे बगल में सोने वाले की आँखों में भी मेरी तरह मायावी निद्रा छल रही है।"[3]

रोहित ने बड़े कौशल से पटाक्षेप करने का प्रयत्न किया वह दामिनी बनी कामिनी को तैरने हेतु प्रस्तावित किया और उसके मधुर आह्वान पर कामिनी के जल में प्रवेश होते ही

---

1. *विषकन्या, पृ0 40*
2. *वही, पृ0 41*
3. *वही, पृ0 46*

वह वस्तुस्थिति को समझकर कहता है "दोनों काँपते हाथों से उसने मुझे उसी क्षण दूर ढ़केल दिया तुमने मुझे छला है तुम वह नहीं, तुम वह नहीं है कहता वह तेजी से तैरता किनारे की ओर बढ़ गया।"[1]

इस प्रकार लेखिका ने बड़ी दक्षता से रोहित के बाह्य सौन्दर्य के साथ ही उसके आन्तरिक गुणों का उद्घाटन विभिन्न परिस्थितियों के माध्यम से किया है।

डिसूजा

पायलट डिसूजा कामिनी के सौन्दर्य से अभिभूत एक प्रणयी और कामी के रूप में चित्रित हुआ है। उसकी माँ इतावली और पिता एक गोवानी था। डिसूजा के घने काले केश भूरी आँखें और स्वस्थ्य दाँत विरासत में मिले थे। कामिनी उसके सौन्दर्य पर मुग्ध होकर कहती है –

"मेरे सौभाग्य से उस दिन उसकी उत्तेजित शिराओं की तमतमाहट से सुदर्शन चेहरा ताम्रवर्णी होकर चमक रहा था। धुँधली चाँदनी में वह माइकेल इन्जेलो की प्रस्तर मूर्ति सा ही निर्दोष लग रहा था।"[2]

1. उद्घोषक :-

पायलट डिसूजा कि आकर्षक रूप रेखा के साथ उसके कण्ठ माधुर्य जन्य आकर्षण का भी चर्चा लेखिका ने की है – "उसके भारी कण्ठ के अनुपम आकर्षण का ही मैं लोहा मान चुकी थी, इस नौकरी से पूर्व वह आकाशवाणी के केन्द्रों का एक अत्यन्त लोकप्रिय समाचार प्रस्तुतकर्ता था। उसके कण्ठ के इसी जादू पर मेरी अन्य सहकर्मचारिणियाँ मर मिटती थी।"[3]

2. कामी :-

डिसूजा के वासानाविभूत रूप का चित्रांकन लेखिका ने किया है। यहाँ पर लेखिका ने मनोवैज्ञानिक गुत्थी को सुलझाते हुए, कामनापूर्ति में व्यवधान आने पर कामी व्यक्ति कितना घातक हो जाता है इसका चित्रांकन किया है।

---

1. विषकन्या, पृ0 50
2. वही, पृ0 34
3. वही, पृ0 33

– "जो निस्सीम शून्य नक्षत्र, खचित गगन के बीच में ही अपने वासनामय प्रेम का प्रतिदान न पा मेरे प्राणों का प्यासा बना बैठा था। जिस फ्लाइट में मेरी ड्यूटी लगती अभागा हड़के कुत्ते सा ही अपनी विषैली लार टपकाता मुझे काट खाने को दौड़ता।"[1]

दुर्घटनाग्रस्त वायुयान, चारो तरफ छितरायी हुई लाशों के बीच पायलेट डिसूजा अपना हनीमून कामिनी के साथ मनाना चाहता था।[2]

सारांश यह है कि शिवानी ने डिसूजा के असामान्य व्यक्तित्व और उसके मूल में फ्रायड द्वारा निर्धारित काम ग्रन्थि लिबड़ों के प्रकाशन में उसके चरित्र का चित्रांकन किया।

विमलानन्द

यह 'रथ्या' उपन्यास का नायक है। पिता हरदत्त वैद्य से चिकित्सा सीखकर विवाहित होकर अध्यापक बन जाता है। अपने वैदुष्य और अध्यापन कुशलता के कारण राजकीय श्रेष्ठ अध्यापक के सम्मान से सम्मानित होता है। युवावस्था के पूर्व बसंती के रूप लावण्य से आकृष्ट भी होता है। अन्त में कैबरे नर्तकी बसंती के मोहजाल में फँसकर उसे अपनी दूसरी पत्नी बनाना चाहता है, किन्तु स्वाभिमान के कारण वह उसका तिरस्कार कर अपने पूर्व जीवन में लौट आता है।

लेखिका नें उसके वाह्य और आन्तरिक सौन्दर्य का त्रिआयामी रूप प्रस्तुत किया है।

1. वेश भूषा :

वैद्यक एवं संस्कृत सीखने वाले विमलानन्द की दीर्घ शिखा और अध्यापक बने उसकी वेश भूषा का चित्रांकन लेखिका ने इस प्रकार किया है –

"पहाड़ी पट्टा का खुरदरा बादामी गोर घने बालों की स्वाभाविक तरंगों के बीच संस्कारों की सजग प्रहरी बन नन्हीं गाँठ लगी शिखा। धूल सने जूते, हाथ में पत्नी की साड़ी की लाल कन्नियों को जोड़कर बनाया गया थैला।"[3]

लज्जाशील अध्ययन प्रिय विमलानंद अत्यन्त संकोची स्वभाव का था। युवावस्था के पूर्व

---

1. *विषकन्या, पृ0 23*
2. *वही, पृ0 33*
3. *रथ्या, पृ0 23*

बसंती छोटे वैद्य जू का सम्बोधन सुन वह हड़बड़ा जाता था। बिना उसकी ओर आँख उठाये वह जोर-जोर से पुस्तक पढ़ने लगता।[1]

"बसंती के गोरे कंधों की चम्पयी पीठ की स्फटिक द्रुति को पहली बार इतने निकट से देख उसका चेहरा लज्जा से लाल पड़ गया।[2] इसी प्रकार वारवनिता बसंती के वैभव से हतप्रभ विमलानन्द अत्यन्त छुई मुई सा बन जाता।

2. प्रथम प्रेम की अनुभूति :-

नित्य प्रति छोटे वैद्य जू से चूरण माँगने वाली किशोरी बसंती के निरावृत तनद्रुति देख विमलानन्द प्रेम की मधुर अनुभूति से आप्लावित हो गया। प्रथम स्पर्श को विमल अपने नीरस क्लान्तिकर जीवन के अँधेरे क्षणों को अतीत के उस क्षणिक मधुर स्पर्श के उजाले से सँवार सा आया था।"[3] सर्कस देखने गया विमलानन्द सामने बैठी राजमहिषी सी बसंती को पूरे तीन घंटो तक वह उसकी चन्द्रबिम्ब को एकटक देखता रहा।"[4] शेरनी के पास खड़ी बसंती को देख रसिक विमलानन्द परिहास प्रेम भरी बात करता है - "पिंजड़े से ऐसे सटकर मत खड़ी हो बसंती जानती नहीं सुन्दरी पहाड़ियों को देखकर वनराज की कैसी लार टपकती है।"[5]

3. श्रेष्ठ आध्यापक :-

पिता की मृत्यु के बाद विमलानन्द का जीवन अलकनंदा के तीव्र प्रवाह में लकड़ी के तने की भाँति इधर-उधर बहता रहा इसी से किसी भाँति 'प्राइवेट परीक्षाएँ पास कर वह ग्राम की ही पाठशाला में संस्कृत का अध्यापक बनकर रह गया था। अपने अध्यापक कौशल से उसकी धाक आस-पास के क्षेत्रों में फैल गयी। उसे सर्वश्रेष्ठ अध्यापक का राज्य पुरुस्कार प्राप्त हुआ।[6]

---

1. *रथ्या, पृ0 14*
2. *वही, पृ0 15*
3. *वही, पृ0 16*
4. *वही, पृ0 18*
5. *वही पृ0 18*
6. *वही, पृ0 23*

4. कामी एवं प्रणयी :-

मनोविज्ञान में यह वद्धमूल धारणा व्यक्त की गयी है कि प्रेमी अपने प्रथम प्रेम को कभी विस्मृत नहीं कर सकता। विमलानन्द दिल्ली में बसंती को देखकर अपने पुराने आकर्षण को पुनः याद करने लगा। "बसंती के अस्फुट मौन निमंत्रण को पहचान कर विमलानन्द के मन में वर्षो से दबी चिनगारी सुलग उठी"[1] उसके स्पर्श से आवेश के कारण विमल का हाथ पीपल के पत्ते सा थर-थर काँप रहा था। वह न जाने कब गहन सहानुभूति की प्रेरणा से खिंचा उसके कोमल केशों को सहलाने लगा था।"[2]

बसंती उसे यत्न से सजाती नौशे से सँवारकर अपना नृत्य दिखाने ले जाती गाड़ी में धक्के से उचक-उचक कर वह उसकी गोद में गिर जाता और अन्त में वह मोहक प्रस्ताव रखते हुए कहता है "बसंती बिलम्बित मौन को विमलानन्द के निष्कपट हृदय के सरल निवेदन ने स्वयं भंग कर दिया। तू यह सब छोड़ बसुली मेरी साथ गाँव चल।"[3] बसुली से यह सुनकर की ऐसा भी रिश्ता होता है जिसमें हिस्सा बाँट नहीं चलता निराश विमलानन्द को बसंती उसे अपने मधुर आहवान में निविद्ध कर लेती है। "उस मधुर आह्वान में डूबा विमलानन्द फिर असहाय तिनके सा बहकर बड़ी दूर निकल गया था। आधी रात को एकबार नींद टूटी तो पास में सोये गहन निद्रामग्ना सहचरी के शान्त निरूद्वेग चेहरे को देखते ही आँखे छलछला उठी। बड़ी ममता से उसे खींचकर उसने छाती से चिपटा लिया ललाट पर मत्त प्रणयी के होंठो के तप्त स्पर्श"[4] रूष्टावसन्ती को मनाने के लिए वह कहता है - "हाँ तू चल तो सही बसंती गायत्री की सौं मैने तेरा अँगूठा पकड़ तुझे जिन्दगी भर न खिलाया तो मुझे दस जूते मारना।"[5]

---

1. रक्या, पृ0 27
2. वही, पृ0 28
3. वही, पृ0 38
4. वही, पृ0 38-39
5. वही, पृ0 42

5. पितृत्व :-

विमलानन्द का मासिक वेतन 10 रूपये था। इससे वह अपनी पत्नी और पुत्र की इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता था। बसंती के 56 प्रकार के व्यंजनों को देखकर उसका पितृत्व जाग उठा –''विमलानन्द की आँखों में नन्हें भोले पुत्र का चेहरा तैर गया । पन्द्रह बीस दिन पहले जब वह उसे गोद में बिठाकर ईसब की खट्टे अंगूर वाली कहानी सुना रहा था तो अपने देवदूत से चेहरे को पिता की ओर उठाकर पूछा था – ''क्या अंगूर बहुत मीठे होते हैं बाबू''[1]

6. स्वाभिमानी :-

बसंती ने प्रेमी के दारिद्र को देख उसे अपनी वैभव से भाराक्रान्त करना चाहती थी। टसर का सिला सिलाया कुर्ता, पत्नी के लिए रेशमी साड़ी पुत्र के लिए चाभी देकर लड़ने वाली मुर्गे की जोडी, रेल मोटर, स्वेटर, मोजे और नये जूते आदि उपहारों से उसने लाद दिया। किन्तु जब वह उसके मधुर आह्वान को छोड़ गाँव जाने को तैयार नहीं हुई तो मूर्ख विमलानन्द का स्वाभिमान जागृत हो उठा था। ''तब क्या वह उसके लिए क्षणिक चटोरी सुधा बुझाने का साधन मात्र था और इसी छोकरी के लिए वह क्षण भर पूर्व धरती सी सहिष्णु पत्नी और अबोध पुत्रों की निरीह गर्दनों पर स्वयं छुरी रखने को तत्पर था। पितरों के पूर्व कुलपुण्य ही शायद उसे उस अन्धे कुएँ में गिरने से बचा गये थे।''[2]

जाते समय उसका चिन्तन और अपराध उसके स्वाभिमान का उद्घोष करता है। ''सहसा बसन्ती का दिया एक-एक उपहार उसे डंक सा दे उठा। जेब में लगा फाउन्टेन पेन टसर का कुर्ता, पायजामा, पैरों में कीमती जूते, नायलोने के मोजे, सब कुछ उसने यत्न से तहाकर मेज पर धर दिये उपहारों से भरे सूटकेश का तो उसने स्पर्श भी नहीं किया था। पत्नी की साड़ी की लाल कन्नी की थैले से उसने अपने फटे मोजे निकालकर पहने थैले को हाथ से कसकर पकड़े वह धूल भरी रथ्या को अपने चमरौंधो की कड़ी कड़क से रौंदता तीर सा निकल गया।''[3]

---

1. रथ्या, पृ0 26
2. वही, पृ0 42
3. वही, पृ0 43

इस प्रकार विमलानन्द पितृभक्त अध्ययनशील सरल पहाड़ी युवक, स्वाभिमानी और वचन पालक प्रणयी और उन्मक्त कामी के रूप में चित्रित हुआ है।

राजा राजकमल सिंह

'चल खुसरो घर आपने' का प्रमुख पुरुष पात्र राजा राजकमल सिंह है। जो अपनी उन्मादिनी पत्नी मालती के साथ अपने परिवार जनों से अलग रहता है पत्नी की सेवा के लिए नियुक्त कुमुद को अपने पारिवारिक विकृतियों से उसे सतर्क कर देता है। कुमुद के सौन्दर्य से प्रभावित होकर वह उससे दूर भागना चाहता है किन्तु अन्त में वह अपना प्रणय निवेदन कुमुद से करता है। मुमूर्ष अवस्था में उसके मृत्यु का स्पष्ट उल्लेख लेखिका ने नहीं किया उसकी बाह्य वेश-भूषा और आन्तरिक चिन्तन की झलकियाँ शिवानी ने परिस्थिति सापेक्ष किया है।

1. बाह्य सौन्दर्य :-

राजाराजाकमल सिंह सचमुच में सामंती परिवेश के जीवित पुरुष हैं। उनके वाह्य सौन्दर्य का चित्रांकन करते हुए शिवानी ने लिखा है "साहस कर कुमुद ने पहली बार उस सौम्य कान्ति व्यक्ति के चेहरे को ठीक से देखा, शान्ति गम्भीर चेहरा, तीखी नाक, चौड़े कन्धे, चिबुक पर घाव का एक तिरछा निशान ऐसे सधी अन्दाज में सँवरी मूँछें जैसे किसी कलाकार की दच्छ तूलिका ने यत्न से चित्रांकित की हो पुकारने में कण्ठ स्वर जितना ही बुलन्द था, बोलने में था उतना ही मन्द। बीच-बीच में लगता फुसफुसाहट में ही आधा वाक्य डूब गया है। किन्तु आँखों में तैरती किसी अव्यक्त पीड़ा का अवसाद बीच-बीच में पूरे चेहरे को आस्वाभाविक बना रहा था। ललाट पर खिंची आकस्मिक गाँठ देखने वाले को सहमा जाती थी।"[1] कुमुद की दृष्टि में दीर्घकाय, गौरवर्ण, आयतचक्षु, सौम्यव्यक्ति (राजा राजकमल सिंह) उदार राजा था।[2] उसके रोबीले व्यक्तित्व की ओर कुमुद आँखे उठाकर नहीं देख पा रही थी।"[3]

---

1. चल खुसरों घर आपने, पृ0 21
2. वही, पृ0 27
3. वही, 56

2. विनम्रता :-

राजा होते हुए राजकमल सिंह अत्यन्त विनम्र था। कुमुद से स्टेशन न पहुँचने की क्षमाँ मांगने वाला, इसी प्रकार कुमुद से बातचीत के समय वह अत्यन्त शिष्ट शब्दों में बात करता था। नियुक्ति देते समय उसकी भाषा संयम, शिष्ट और नम्रता भरी हुई थी।

3. उदारता :-

राजा राजकमल सिंह अत्यन्त उदार था। पारिवारिक वैमनस्य होने पर भी उसने अपने भाइयों की यथेष्ट सहायता की है। यहाँ तक कि कुमुद के छोटी बहन के विवाह के समय रूपया माँगे जाने पर वह निःसंकोच होकर उसकी सहायता करता है। अपनी चेकबुक से पाँच हजार का चेक लिखकर उसने अपनी उदारता का ही परिचय दिया था।''[1]

4. पत्नी-प्रेमी :-

मालती सम्भवतः विवाह के पूर्व मिर्गी रोग से ग्रस्त थी। जिसे उसकी माँ ने झाड़-फूँक तंत्र ओझा को सौंप दिया था। जो ऐसे मरीजों को पीट-पीटकर ठीक करते हैं। इसलिए राजा इस प्रकार के चिकित्सा के लिए राजी नहीं हुआ। वह उसे नहलाता, चोटी करता, उसे गोद में उठाकर घुमाता - ''धीमें स्वर में न जाने किन शब्दों के मोह पाश में पत्नी को बाँधके राजकमल सिंह अनव्यस्त हांथों से उसके बाल बना रहे थे। नैपकिन से मुँह पोंछ रहे थे फिर उतने ही यत्न से मालती को एक प्रकार से गोद में ही उठा उन्होंने कुर्सी पर बिठाया, बिस्तर लगाया और धीमे आनन्त दुलार भरे स्वर में पूँछा मेरे कमरे में चलोगी मालती''[2]

5. प्रेमी :-

लेखिका ने राजा के प्रेमी रूप का उद्घाटन मनोवैज्ञानिक शैली मार्गान्तरीकरण के अर्न्तगत किया है। जो राजा सुन्दर मरियम के स्पष्ट प्रेम आह्वान को अस्वीकार कर अपने व्यक्तित्व की रक्षा की थी ऐसे राजा के अर्न्तमन में कुमुद के रूप की आशक्ति क्रमशः धीरे -धीरे जड़ जमाने लगी। उसके रूप के आतंक की अभिव्यक्ति राजा को उलझन में अवश बना दिया। ''कहीं न कहीं इस व्यक्ति के मन में कोई उलझन अवश्य है। यह भोली कुमुद भी

---

1. चल खुसरो घर आपने, पृ0 83
2. वही, पृ0 65-66

समझ गयी, उसे ऐसा लगा जैसे वह उससे वह कुछ कहना चाह रहा है और बावजूद अपने तेज, अपनी वैभव मण्डिता हवेली के परिवेश एवं अपने पीढ़ियों के आभिजात्य के अपने जीवन के किसी दुर्बल पक्ष की हीनता उसे उस कमनीय किशोरी सी दिख रही नव नियुक्त युवती की सम्मुख गूंगा बना रही है और चाहने पर भी जो कहना चाहता है वह कह नहीं पा रहा है।''[1] अचेतन मस्तिष्क में यह प्रेम भावना राजा को उद्वेलित करने लगी और वह इस भावना का मार्गान्तरीकरण एवं उदान्तीकरण में लग गया। मनोविज्ञान वेत्ताओं की यह मान्यता है कि चेतन मस्तिष्क में किसी प्रिय व्यक्ति के जन्माकर्षण उसकी अप्राप्ति के फलस्वरूप यह भाग अचेतन मस्तिष्क में ग्रन्थि के रूप में परिणत हो जाती है। जो दबाव वर्जना आदि रूप में प्रकट होती है। मार्गान्तरीकरण उसकी वह शैली है। जिसमें अप्रिय काम भाव को मनुष्य दूसरी धारा में बहा देता है। राजा राजकमल सिंह कहता है –''क्या अकेली मालती ही तुम्हारे बिना व्याकुल हो जाती थी। तुम्हारे प्रति अपनी यह दुर्बलता जिस दिन मैंने पहचान ली उसी दिन से मैं जानबूझकर अपने और तुम्हारे बीच की दूरी बढ़ा दी। फिर भी इस विकार के लिए मेरा अन्तःकरण मुझे निरन्तर धिक्कार रहा था। मुझे लगता मैं अपने से ही हार रहा हूँ। एक बार दूध से जल चुका हूँ इसी से मट्ठा भी फूँक-फूँक कर पीना होगा।''[2] यह प्रेम की दुर्दान्त भावना इतनी प्रबल थी कि उसने विद्रोह कर दिया और राजाराजकमल सिंह मुमूर्ष अवस्था में भी कुमुद-कुमुद तुम मेरे पास ही बैठी रहो। कुँमुद मुझे डर लग रहा है।''[3] तात्पर्य यह है कि राजाराजकमल सिंह सामन्तशाही के प्रतीक अनेंक सद्‌गुणों से सम्पन्न निश्चल विनम्र उदार पत्नी सेवक सुखी वैवाहिक जीवन से सम्पन्न व्यक्तित्व थे। जरा प्रेम की दुरूह गलियों में हँसकर भी अपने उच्च भावना की ग्रन्थि के कारण उसे दबाकर रखने में विश्वास रखते थे।

---

1. चल खुसरो घर आपने, पृ0 21
2. वही, पृ0 107
3. वही, पृ0 112

लालू

यह 'चल खुसरो घर आपने' की नायिका कुमुद का भाई है पिता धरनीधर अपनी सीमित आय के बावजूद इसे अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति का माध्यम मानते हैं। अतः उसकी शिक्षा में अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च करते हैं। पिता की मृत्यु के बाद लालू उदण्ड, आवारा, चोर, निर्लज्ज, चरसी बन गया था। उसके आन्तरिक वाह्य सौन्दर्य और रूप रेखा का चित्रांकन शिवानी ने इस प्रकार किया है –

1. उद्दण्ड :-

माँ की दृष्टि में लालू का चेहरा कार्तिकेय सा था। उसकी उद्दण्डता के अनेंक उदाहरण इस उपन्यास में बिखरे पड़े हैं। चोरी करती गौरी चाची को लगडी मारकर गिराना डाँटने पर वह कहता था। "कहने दो लालू किसी के बाप से नहीं डरता एक तो बुढ़िया घुसलखाने में ही गन्दगी करती है। इन पाखण्डी पहाड़ी बुढ़ियाओं को देख मेरा खून खौल जाता है।"[1] लकडपन से ही अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के कारण उसी परिवेश में पलकर लालू अम्मा का लाड़ला और उदण्ड बना। एक बार उसने गिटार लेने की जिद की तो अम्मा अपने कान की तरकी बेंच कर उसके लिए गिटार खरीद लायी।[2] धीरे-धीरे धरनीधर का यह बेटा लालू चोरी से सिनेमा जाने लगा। रघुबर पाण्डेय कहते हैं –"गाँजे का दम यह लगाता है, चरस यह पीता है, क्या तुमने और तुम्हारी माँ ने इसे छुट्टे साँड सा ही छोड दिया है। रात नौ बजे निसातगंज में मनहूस छोकरों के साथ देखा जाता है।"[3]

2. निर्लज्ज एवं चोर :-

ऐसा आवारा लालू अपनी छोटी-मोटी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु चोरी करने लगा। माँ के गुल्लक से रूपये बड़ी चतुराई से निकाल लेता है। "पूरे पच्चीस रूपये थे किसी ने बड़ी सफाई से रूपये निकाल उसी दक्षता से ढ़कने की कील ठोंक दी थी। यह किसके हाथ की सफाई थी वह समझ गयी।"[4]

---

1. चल खुसरो घर आपने,पृ0 18
2. वही, पृ0 33
3. वही, पृ0 35-36
4. वही, पृ0 39

3. लापरवाह एवं फक्कड़ स्वभाव :-

लालू अलमस्त परिवार की कोई चिन्ता नहीं, लापरवाही के कारण अव्यवस्था प्रिय हो गया था। "दीवार पर टँगे बेहूदी तस्वीरें, चलचित्र, तारिकाओं के दृष्टता से मुस्कराते चेहरे, बेतरतीवी से फेंकी किताबें, कापियाँ कमरे की दुर्व्यवस्था, की सारे स्वामी के फक्कड स्वभाव का परिचय देने को पर्याप्त थी। कुमुद भाई का कमरा ठीक कर जाती पर दूसरे दिन जाती तो उसे वैसा ही अव्यवस्थित मिलता।"[1]

4. क्रोधी एवं निर्लज्ज :-

शिवानी ने कुण्ठित दमित, वर्जना से ग्रस्त आधुनिक युवकों के प्रतीक के रूप में लालू का चित्रांकन किया है। जिसे किसी का भय नहीं परिवार में वह किसी की सुनता नहीं, कुमुद के द्वारा दोष दर्शन कराने पर वह थाली दूध पटककर कहता है –"हाउ हेयर यू" तुम्हें मेरे कमरे में जाकर मेरी जेब टटोलकर जासूसी करने का क्या हक है? मैं सिगरेट पीता हूँ सौ बार पियूगा तुम कौन होती हो रोकने वाली?"[2]

इस प्रकार लालू बिगडैल उददण्ड कुण्ठित व्यक्तित्व का परिचायक है जिसे पारिवारिक अभावों की कोई चिन्ता नहीं। छोटी बहन उमा के रात्रि भर न लौटने पर कोई चिन्ता नहीं। अनेंक दुर्गुणों से युक्त दाढ़ी बढ़ा हिप्पी छोकरियों के साथ नेपाल जाता है। आधी रात को झूमता-झामता घर आता है। "औघढ़ बना फिरता है। कन्धे तक बाल बढ़ा लिये हैं। फकीरों सी दाढ़ी रख ली है। महीनों तक नहीं नहाता आँखे दिन रात कपाल पर चढ़ी रहती हैं।"[3] इस प्रकार वह कुण्ठित व्यक्तित्व का परिचायक है।

यह कस्तूरी मृग का नायक है। उसका नाम पितृ पितामह के संगीत अनुराग एवं रक्षिताओं के कारण कोई भी इसे अपनी कन्या के लिए उपयुक्त वर नहीं मानता परिणाम स्वरूप यह अपनी पिता की रक्षिता के प्रति हिंसा रख उसकी हत्या कराने का प्रयास करता

---

1. चल खुसरो घर आपने, पृ0 41
2. वही, पृ0 42
3. वही, पृ0 78

है। पर इस कार्य में वह सफल नहीं होता उसके चरित्र की आन्तरिक वाह्य विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार है :-

1. सौन्दर्य :-

नन्हें को सुन्दर बनाने ने विधाता के कोई कभी नहीं रखी अपने सुदर्शन व्यक्तित्व पर उसे स्वयं घमण्ड था। कनके के पिता के सामने अपना सौन्दर्य पक्ष रखते हुए अपने रूप की प्रशंसा उसने स्वयं की थी।

2. उच्च प्रशासक :-

नन्हें अपनी शिक्षा के बल पर उच्च प्रशासक हो गया, वह कहता है – "अपने अफसरी रथ के सतासु को हाँकता ही स्वयंवर कक्ष में पहुँचूगा आज वह सतासु हिनहिनाते मेरे द्वार पर खड़े हैं अफसरी रथ भी तैयार है।"[1]

3. प्रणयी रूप :-

नन्हे के जीवन में कनक का पदार्पण हुआ जिसे वह मामा कहा करती थी किन्तु दिनेश ने उसे अपनी बाँहों में भरकर अपने प्रणयी रूप को व्यक्त किया। "मैं अपना नवीन रिश्ता स्पष्ट करता इससे पूर्व ही वह पहाड़ी झरने की सी त्वरित गति से मेरा बाहुबंधन छुडा आलोक हो गयी उस क्षणिक मोहक स्पर्श के असहय उत्ताप से मेरा सर्वांग दहक उठा।"[2]

किन्तु कनक के पिता ने उसके पारिवारिक दुर्गुण कें कारण अपनी कन्या देने को तैयार नहीं हुआ।

4. पितृ प्रेम :-

यद्यपि जमींदारी वैभव और अपनी रक्षिताओं के मध्य व्यस्त रहने के कारण दिनेश के पिता को इतना समय नहीं मिल पाया कि वह पुत्र के प्रति ममत्व व्यक्त कर सकते। किन्तु माता की सौगन्ध एवं पिता की दुर्दशा देख दिनेश अपने पितृऋण को पूर्ण करने में पीछे नहीं हटता। रायबहादुर, इकबाल नारायण के कोढ़ी हो जाने पर दिनेश ने उनकी बड़ी सेवा की–

---

1. कस्तूरी मृग, पृ0 19
2. वही, पृ0 18

"उसी दिन समझ में आया कि हिन्दू पुत्र के पिता के प्रति कर्तव्य से विमुख होना कितना कठिन है।"[1]

वह उन्हें मिशनरी अस्पताल में भर्ती कराता है। वह कहता है – "एक मिशनरी अस्पताल से मेरी लिखत पढ़त हो चुकी थी दो चार दिन में ही वे अपनी एम्बूलेन्स लाकर उन्हें ले जाएंगे उनके उपचार के लिए मुझे अग्रिम धनराशि जमा करनी होगी।"[2]

5. क्रोधी :-

नन्हें जहाँ एक तरफ उच्चाधिकारी पितृ कर्तव्य ज्ञाता था वहीं दूसरी ओर उसमें क्रोध और प्रतिहिंसा भर गयी थी। बात यह है कि कुष्ठ आश्रम में भेजते समय पिता ने उसे घर गृहस्थी के सुख से वंचित रहने का श्राप दे दिया था। इसलिए वह अपने पिता और रक्तताओं के प्रति क्रोध से भर गया था। पिता ने रूग्णा अवस्था में सफाई भी देनी चाहिए। क्रोधविष्ट नन्हें कहता है –

"चुप करिए मैं चाहने पर भी उस वीभत्स चेहरे की ओर दुबारा आँख नहीं उठा पा रहा था, किसने आपकी यह हालत की मेरी अम्मा ने या उस वेध्या वेश्या ने।"[3]

इसी प्रतिहिंसा की आग में थी की आहुति का कार्य किया। किशोरी कनक के पिता ने – "तब सुनो जिसका बाप जिन्दगी भर वैश्या के कोठी पर डेरा डाले रहा सड़-सड़ कुत्ते की मौत मरा उसके बिटवा को हम क्या, कोई भी बिटिया नहीं देगा।[4] और वह अपनी प्रतिहिंसा की पूर्ति हेतु उस वैश्या की खोज की तथा अपने मित्र दिनेश से कहता है – "जी मे आ रहा है दिनेश अभी जाकर उस वेध्या का गला टीप दूँ उसी ने मेरे पिता जी की यह दुर्गति की मेरी अम्मा को मौत के मुँह में ढकेला और आज मेरी जिन्दगी में भी जहर घोल गयी क्या अधिकार है उसे जीने का।[5] वह अपना संकल्प बार-बार दोहराता है – "मैं दृढ़ निश्चय कर चुका था कि जिसने मेरे बचपन से लेकर यौवन तक मुझे तिल-तिल कर मारा

---

1. कस्तूरी मृग, पृ0 24
2. वही, पृ0 27
3. वही, पृ0 24-25
4. वही, पृ0 34
5. वही, पृ0 35

है उससे सूद सहित ऋण चुकाकर ही दम लूँगा।[1]

उसकी इस प्रति हिंसा की पूर्ति विधाता ने स्वयं दिया वह वेश्या पल-पल मृत्यु की ओर बढ़ रही थी और अपनी पुत्री बृन्दा अखण्ड अहिवात की स्वामिनी बनी वैश्या बन गयी थी।

भाष्करन

''कष्णवेणी'' उपन्यास का यह नायक है। मूलतः वह मलयाली जाति का है उसका पिता रेलवे वर्कशाप में लोहार था। अपनी प्रतिभा के बल पर वह शान्ति निकतेन पढ़ने आया जिसकी प्रतिभा पर मुग्ध होकर नायिका वेणी उससे विवाह करती है। और उसे कोढ़ हो जाने पर भी उसका परित्याग नहीं करती। कृष्ण वेणी में उसके रूप का चित्रांकन करते हुए शिवानी ने लिखा है -''उसकी अब भी वेश-भूषा थी वही बेढ़ंग लटिका उघड़ी सीलन का कुर्ता, जीर्ण पायजामा, फटी चप्पल, कंधे पर रंगीन झोला''[2] भाष्करन में संगीत और चित्रकला की देवदत्त प्रतिभा थी। शिवानी ने लिखा है ''इस प्रतिभा के अतिरिक्त विधाता ने उसे और एक यंत्र थमाया था बंशी, एक प्रतिभा से आँखों को मोहता दूसरी से कानों को। ऐसी मादक बंशी बजाता कि आधीरात को भी कई लड़कियाँ छत पर सुनने भाग जाती।''[3] इस प्रतिभा में विलक्षणता यह थी कि भाष्करन ने वंशीवादन की किसी से विधिवत् शिक्षा नहीं पायी थी। गुणीजनों के प्रशंसा करने पर उसका चेहरा भोला देवदूत सा चेहरे को अज्ञान के निर्दोष स्मिथ से उद्‌भाषित कर लेता। इस कला पर मुग्ध होकर जब कोई प्रशंसा करता तो भाष्करन अत्यन्त विनम्र हो उठता था। शिवानी ने लिखा है -''देवदत्त प्रतिभा कलाकार बनाया नहीं जाता। बनकर आता है। बड़ी चेष्टा अनुनय, विनय के बाद एक बार जब संगीत गोष्ठी में भाष्करन को वंशी बजाने के लिए राजी किया गया जब घण्टे भर के वंशी वादन के पश्चात् वे वंशी लेकर उठा तो वंशी ही नहीं कृष्ण वेणी का धड़कता हृदय भी उसकी मुट्ठी में था।[4]

---

1. कस्तूरी मृग, पृ0 9
2. कृष्णवेणी, पृ0 25
3. वही, पृ0 24
4. वही, पृ0 24

1. भास्करन की गम्भीरता :-

शान्ति निकेतन में सर्वत्र कृष्णवेणी की सुरुचि और उसका अप्रतिम सौन्दर्य चर्चित था। भास्करन इन सबसे दूर रहता था। शिवानी ने लिखा है –"इन सबसे दूर छिटक अपने ही गम्भीर के लक्ष्मण रेखा में घिरा अलग बैठा था। केरल का छात्र भास्करन देखने में, स्वभाव में, चाल-ढ़ाल में, सिर से पैर तक, पूरा कलाकार वही उदासीनता शून्य में खोयी दृष्टि, फटी चप्पलें, रंग उड़ कुर्ता, जिसकी एक बाँह या जेब की सीवन हमेशा उखड़ी रहती, कंधे पर लटका शान्ति निकेतनी झोला और आँखो में मोटे लेन्स का चश्मा।"[1]

कृष्णवेणी ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उसके काँपते अधरों को देखकर टिप्पणी करती है। शिवानी लिखती है – "आँखों में चरित्र की दृढ़ता अवश्य है पर ओंठों ने सब गुड गोबर कर दिया। हर वक्त जैसे काँपते रहते हैं आँखों की दृष्टता यहीं पर आकर विखर जायेगी। कभी कोई निश्चय नहीं ले पायेगा अस्थिर दुर्बल स्वभाव, किसी सामान्य सी पीड़ा या आघात को पाते ही दुम दबाकर भाग ले।"[2]

2. चित्रकार :-

भास्कर में दूसरी अद्वितीय प्रतिभा चित्रकला की थी। वह किसी से अधिक बोलता न गोष्ठियों में दिखता, ओवर एक्ट बनाने में उसकी प्रतिभा अभूतपूर्व थी। शान्ति निकेतन की कला बीथिका में उसके चित्र टाँगे गये। चित्रित हुए यहँ एक असामान्य घटना थी। अपनी ख्याति से उबकर भास्करन ने कहा था –"ईश्वर ने जो चित्र एक बार बना लिया है उसे अविकल रूप से दोहरा कर यदि मुझे ख्याति मिली भी तो क्या वह ख्याति कहलायेगी।"[3] इसी चुनौती के मध्य उसने वेणी का पोर्टेट बनाया जो आश्रम के शोकेश में कई दिनों तक लगा रहा। शिवानी ने लिखा है –"पोर्टेट क्या था? लगता था स्वयं वेणी ही मुस्कराती अपनी लम्बी ग्रीवा को मराली सा मोड, शोकेश में बैठ गयी हो। न जाने रंगों का कैसा अद्‌भुत जाल

---

1. कृष्णवेणी, पृ0 22- 23
2. वही, पृ0 23
3. वही, पृ0 23

विछाया था भास्करन ने कि सुबह देखते तो स्मित्र व्यांग्यात्मक लगता, संध्या को मधुर।''[1]

3. हृदय की निश्छलता :-

शिवानी ने भास्करन के भोले चेहरे के साथ उसके हृदय की निष्कलुषता का भी चित्रण किया है। शिवानी ने लिखा है ''उसने मुझे कभी कुछ नहीं छिपाया न अपने पिता की दरिद्रता न अपना दौरबल्य कैसे कुसंगत में पड़कर एक बार 18 वर्ष की उम्र में ही वैश्यालय चला गया था। कैसे उसने एक बार चाचा की शराब चुराकर पी थी।''[2]

4. कुष्ठरोगी :-

भास्करन को पिता का छुतहा रोग विरासत रूप में मिला। उसके रोगी रूप का वर्णन इस प्रकार किया गया है -''उसके दोनों हाँथों की उँगलिया झड़कर दो अधूरी मुठ्ठियाँ मात्र रह गयी हैं। ओंठ विहीन उसका वह चेहरा वीभत्स बन गया है। जैसे कटहल का छिलका, नाक नहीं है, पलकहीन अंगारे सी दो आँखे ही दप-दप जल रही हैं पूरे चेहरे में।''[3]

कृष्णवेणी के पिता

तमिल निवासी कृष्ण वेणी के पिता अत्यन्त सम्पन्न पिता थे। वे रेश के दीवाने थे उन्हें अचानक यह पता लगा कि कृष्ण वेणी भविष्य के गर्भ में झाँक सकती है जिसका लाभ उठाकर उन्होंने अनेक बार रेश जीती। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनकी पुत्री वेणी मलयाली भास्करन से विवाह करना चाहती है जो कोढ़ी था पिता ने विरोध किया किन्तु वेणी की भर्त्सना से वे निराश हो गये उसके चरित्र की कुछ विशेषताओं का उल्लेख शिवानी ने किया है -

1. रेश प्रिय :-

वेणी के पिता समृद्ध परिवार के थे। घोड़ों में दाँव लगाना उनका प्रिय सगल था। उन्होंने अपना अस्तबल खोल रखा था। उनकी धारणा थी ''घोड़ों को समझने के लिए स्वयं अपना निजी अस्तबल होना उतना ही जरूरी है जितना अच्छे साहित्य की जानकारी के लिए अपनी निजी एक अच्छी लाइब्रेरी। वे कहा करते थे कि रेशे के किसी भी घोड़े के कान, पैर

---

1. कृष्णवेणी, पृ0 25
2. वही, पृ0 30
3. वही, पृ0 34

और पूँछ देखते ही वह जान जाते थे कि किस घोड़े पर स्टेक लगाना हितकर होगा।''[1]

2. रूढ़वादी परम्परा प्रिय :-

कृष्णवेणी के पिता कट्टर रूढ़वादी एवं परम्पराप्रिय थे। उन्होंने अपनी तीन वर्ष की बालिका वेणी का विवाह उसके छोटे मामा से परम्परया तय कर दी थी। वेणी के विरोध करने पर वे कहते हैं –''जरा पूँछ बेटी तू क्या मोरोन है तेरी माँ भी मेरी कभी सगी भांजी थी।''[2]

3. वत्सल पिता :-

वेणी के पिता वेणी को बहुत चाहते थे। अचानक जब यह खबर लगी कि वेणी को दिव्य दृष्टि प्राप्त है पिता को चिन्ता सताने लगी। शिवानी ने लिखा है ''पागल मत बनो खबरदार! इस बात का कहीं बाहर जिक्र मत करना अपनी माँ से भी नहीं मैं नहीं चाहता कि मूर्ख सपने के कारण हमारी बेटी तमाशा बन जाये।''[3]

अपनी वत्सलता की पूर्ति हेतु वे वेणी को अनेंक सुविधाएँ प्रदान की थीं। ''एक कार में स्कूल भेजते एक नौकर जूता पालिस करता दूसरा फीता बाँधता था।''[4]

4. धनलोलुप :-

वेणी के पिता की धन लिप्सा की चर्चा करते हुए शिवानी ने लिखा है कि डैडी ने खेल ही खेल में घोड़े के रेश में प्रथम आने की सूचना प्राप्त कर ली। ''क्यों वेणी कौन सा घोड़ा जीतेगा इस बार सलीम ब्लेज या सनी डैनी ने चट से उठकर दरवाजा बन्द कर दिया कहीं कोई आ ना जाय। इसके बाद पुत्री की इस शक्ति ने उन्हें वैभव से ऐसा लादा कि वे अपनी ऊँची नौकरी को स्वेच्छा से त्याग जीवन भर रेश के घोड़ों के पीछे भागते रहे।''[5] अपनी पुत्री की जिद को सुनकर वे उसे विरत करने के लिए भास्करन के पिता के पास गये वे उक्त रक्त चाप के मरीज बन गये। वेणी से भर्त्सना के वाक्य सुनते ही वे हतप्रभ रह गये। वेणी भर्त्सना

---

1. कृष्णवेणी, पृ0 17
2. वही, पृ0 19
3. वही, पृ0 18
4. वही, पृ0 16
5. वही, पृ0 18-19

करते हुए कहा था –"मैं जानती हूँ डैडी आप मुझे क्यों रोक रहे हैं। आप नहीं चाहते कि मेरी शादी हो वह व्यक्ति चाहे भास्करन हो या और कोई सोने के अण्डे देने वाली बतख हूँ आपकी भला आप मुझे इस घर से कैसे जाने देगें।"[1] अन्त में वेणी के पलायन और विवाह की घटना सुनकर उनका प्राणान्त हो गया।

माधव बाबू

माधव बाबू 'अतिथि' उपन्यास के केन्द्रीय मुख्य पुरूष पात्र है। वे राजनैतिक व्यक्ति हैं। बाल्यकाल में पढ़ने में साधारण किन्तु देश स्वातंत्रय आन्दोलन में सक्रिय योगदान किया। परिणामस्वरूप विधायक, मंत्री प्रवर और प्रधान मंत्री के निकटस्थ बने। उनका राजनीतिक जीवन आदर्शमय रहा, दाम्पत्य और पारिवारिक जीवन में वे असफल ही सिद्ध हुए। अतिथि में उनके आन्तरिक वाह्य रूप सौन्दर्य और गुणों का विस्तृत परिचय शिवानी ने प्रस्तुत किया है।

1. वेश-भूषा :-

राजनीतिक जीवन की वेश-भूषा का चित्रॉंकन शिवानी ने इस प्रकार किया है – "माधव बाबू की सफेद जरी दार मिट्‌टी कन्नी की खादी की धोती मलमल को भी मात दे रही थी। कन्धे पर था वैसा ही मेल खाता अंगवस्त्र, एक किनारा हरा और दूसरा लाल। सर पर कड़ी कलफ की गयी खद्‌दर की नुकीली टोपी।"[2] वे वैंभव प्रदर्शन पर विश्वास नहीं करते। कार्तिक के विवाह में वह कहते हैं – " माधव बाबू ने कहलाया है कि वह विवाह में कुछ भी नहीं लेंगे। बारात में किसी प्रकार का आडम्बर नहीं होगा। न बैण्ड बाजा न नाच गाना।"

2. ईमानदार नेता :-

माधव बाबू सामान्य श्रेणी के छात्र थे। गाँधी जी से प्रभावित होकर उन्होंने जेल की यात्रा भी की और उसी प्रमाण पत्र से वे नेता बने। वे जानते थे कि चरित्रहीनता की गदा किसी का भी मस्तक विदीर्ण करती है। शिवानी ने लिखा है – "उनकी ईमानदारी की जैसी

---

1. कृष्ण वेणी

2. अतिथि, पृ0 120

स्वच्छ छवि स्वयं जनता ने आँककर मजबूत चौखट में बाँध अपने हृदय भित्ति पर टाँग दी थी। उसके नीचे गिर कर टूटने का प्रश्न ही नहीं उठता था।"[1]

3. गुरू भक्त :-

अपने राजनीतिक जीवन के प्रारम्भ में माधव बाबू आदर्शवादी नेता रहे। संयोग से उन्हें ऐसा गुरू भी मिल गया था जिसने चिमटे प्रहार से उनकी जटिल समस्याओं को दूर कर दिया था। अतः जब भी विपत्ति आती या मन उद्विग्न होता वे गुरू की शरण में मानसिक रूप से पहुँच जाते। शिवानी ने लिखा है कि –"उन्होंने संशकित दृष्टि से इधर-उधर देखा और सामने धरे शीशम के बने पूजा गृह के मखमली पट खोल दिये। न वहाँ किसी देवी-देवता की मूर्ति थी न उनके चित्र। केवल एक चमचमाते फ्रेम में मढ़ा उनके अर्द्धनग्न गुरूदेव का चित्र था और एक उन्हीं की रूद्राक्ष की जप माला। वे नित्य ब्रम्ह मुहूर्त में उन्हीं का दिया गुरुमंत्र जपते और उसी फर्श पर बिछी गुदगुदी कार्बेट पर बद्ध पद्मासन लगाकर ध्यान मग्न हो बैठे रहते।"[2] वे स्वयं जया को चित्र दिखाकर कहते हैं –"आज तक मैंने जो कुछ भी पाया है जया धन, मान, यश, ख्याति, वैभव सब इन्हीं की कृपा से रत्न के रूप में तुम्हें ही दिया है मेरे गुरूदेव ने।"[3]

4. निष्प्रही :-

राजनीतिक जीवन में सत्ता मद का नशा बहुत तीव्र होता है। किन्तु माधव बाबू इस वैभव विलासता से निष्प्रह रहे। श्यामाचरण स्वयं उन्हें संत एवं निष्प्रः मानता है। अपने कन्या के श्वसुर से पद के दुरूपयोग की बात इसीलिए ठुकरा देते हैं।

5. भावुक पितृत्व :-

माधव बाबू लीना और कार्तिक के पिता हैं वे प्राप्ते सेव वर्से के अनुसार पुत्र से भी मातृत्व व्यवहार करने पर विश्वास रखते थे। उनके स्नेहिल भावुक पितृत्व की झलक कुछ ही स्थलों पर मिली है। सोते हुए मदालस कार्तिक को देखकर वे सोंचते हैं –"सचमुच में नींद

---

1. अतिथि, पृ0 8
2. वही, पृ0 19
3. वही, पृ0 50

में डूबा कार्तिक निर्दोष बालक की भाँति मुस्करा रहा था। वही बचपन का मुन्ना बन गया था माधव बाबू के कण्ठ से सहसा ममता का गह्वर अटक गया। कि इसी चेहरे को देखकर उन्होंने इसका नाम रखा था कार्तिकेय।''[1] ऐसे सुदर्शन बालक के दुराचार को देख सुन उनका पितृत्व जागृत हुआ और वे समझते थे कि जया का रूपपास उसे ठीक कर लेगा। इसी प्रकार विवश मालती को स्नेह का सम्बल प्रदान किया। दुःखी जया को देख उनका पितृत्व मन को कचोटने लगता। ''नवीना पुत्रवधू का कमनीय भोला चेहरा उनका कलेजा कचोटने लगता। उन्होंने तो उस मासूम लड़की के प्रति सबसे बड़ा अन्याय किया था। अब उसकी सुरक्षा करना उनका सबसे बड़ा कर्तव्य बन गया था।''[2] वैसे अतिथि में वर्णित सामाजिक परिस्थितियों को देख वे असफल पिता सिद्ध हुए हैं। पुत्री लीना के विवाह की बात करते ही चन्द्रा व्यंग्य करती है। ''बड़ी जल्दी याद आयी, मैं तो सोंचती थी कि आपको यह भी याद नहीं रही कि आपके एक बेटी भी है, पुत्र है।''[3]

6. गाँधीवादी विचारक :-

माधव बाबू युवावस्था में ही गाँधीवादी दर्शन से प्रभावित रहे हैं। उसी से जीवन को तुच्छ मान जेल गये। आज अस्वस्थ्य होने के साथ ही साथ राजनीतिक क्षेत्र में जो भ्रष्टाचार, छिछोरापन, स्वार्थ की भावना आ गई है वे बहुत चिंतित हैं। लेखिका ने लिखा है – ''चेष्टा करने पर भी अपनी गाँधीवादी विचारधारा को बदल नहीं पा रहे थे। जब वे अपने ऐसे सहकर्मियों के विषय में सुनते जो देश की करोडों की सम्पत्ति उदरस्थ कर मूँछों में ताव देते निगरगण्ड घूम रहे थे। तो उनका चित्त खिन्न हो उठता था। छिः छिः क्या हो रहा था? ये गाँधी के देश में क्या इसी स्वतंत्रता के स्वप्न उन्होंने देखे, अकेले ही वह क्या कर लेगें। स्वस्थ परिवेश को वे पुनः कैसे लौटा पायेंगे।[4]

---

1. अतिथि, पृ0 12
2 वही, पृ0 149
3. वही, पृ0 95
4. वही, पृ0 197

7. देश हित चिन्तक :-

माधवबाबू पुरानी पीढ़ी के राजनेता है जिन्होंने कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी का दृढ़ता से परिचय दिया है। वे राजनीति को वास्तविक अर्थों में नीति नियामक मानते हैं। बुद्धिमान राजनीतिक पार्टियों के क्रिया कलाप और भारतीय अर्थ-व्यवस्था में आयी अराजकता से चिंतित है। शिवानी ने लिखा है - "उनका दृढ़ विश्वास था कि भारतीय जीवन के मूल्य पाश्चात्य मूल्यों से भिन्न हैं भारत ग्रामीण सभ्यता से अपने को विच्छिन्न नहीं कर पायेगा। सामाजिक रचना सदैव ग्रामों में ही केन्द्रित रहेगी। पश्चिमी देशों की सर्वथा भिन्न परिस्थितियों में पनपी पाश्चात्य टेक्नोलॉजी क्या भारत में कभी सफलता से लागू हो पायेगी। यह कैसी अराजकता फैल गयी थी पूरे देश में वर्ग-वर्ग की शक्ति को श्रेणी-श्रेणी की शक्ति को विनिष्ट करने में संलग्न थी। नैतिकता श्रीहीन होकर दर-दर भीख माँगने लगी थी। बसबन्द, बाजारबन्द, रेल बन्द, पथ बन्द, आज देश के राजनीतिक शब्दकोष में केवल दो ही महत्वपूर्ण शब्द रहे गये हैं। आक्रमणकारी और आक्रान्त दलों के निजी स्वार्थ ने जन साधारण के दुःख दर्द की ओर से आँखे मूँद ली हैं।"[1]

8. मानसिक अन्तर्द्वन्द्व :-

प्रथम अध्याय में जिजीविषा अहिमन्य अहं और नैतिक अहम् के मध्य चलने वाले संघर्ष की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत की गयी थी। मनुष्य करणीय-अकरणीय के मध्य इतना अन्तर्द्वन्द्व ग्रस्त हो जाता है कि वह निर्णय ही नहीं कर पाता इस अन्तर्दशा के कारण वे तनाव ग्रस्त और चिंतित रहने लगे। "अपने निजी जीवन में वे कभी-कभी घोर नैराश्य उन्हें इधर असहाय बनानें लगा था। जीवन भर वे अपनी ईमानदारी को दाँतों के बीच जीभ सा ही सेंतते चले आये हैं। किन्तु अब उनके सत् एवं नैतिक जीवन यापन के लिए आदर्श और वास्तविकता अभिज्ञता का वैमनस्य ऐसे तीव्र बनता जा रहा था। कि उन्हें स्वयं भय होने लगा था।"[2] उदासीन होना विलासनीय पत्नी का ठण्डा होना। दुराचारिणी पुत्री की दुष्कीर्ति, पुत्र का औधात्य उनकी मानसिक दुश्चिन्ता को रक्त चाप वृद्धि में बदल देता है। "जी में आता सब

---

1. अतिथि, पृ0 196-97
2. वही, पृ0 148

कुछ त्याग कर किसी ऐसे आरण्य में चले जायें जहाँ उन्हें कोई ढूँढ़ न पाये।''[1] इस दुश्चिन्ता के कारण वे हृदय रोगी हो गये। ''कई दिनों से छाती की बायीं ओर विचित्र दर्द बाहों तक रेंगता उन्हें बेचैन किये दे रहा था। कल भाषण देते लगा कि वे मंच पर गिर पड़ेंगे। शायद रक्त चाप ही अचानक भयावह रूप से बढ़ गया था।''[2] जया के प्रति किंचित स्वार्थमय व्यवहार से वह अपराध बोधग्रस्त हो गये। ''वे चुपचाप आँख बन्द किये हुए पड़े रहे। गृह का एकएक सदस्य आज उन्हें अपना प्राणघाती शत्रु लग रहा था। उन्हीं सबकी मूर्खता ने ही तो उनके यत्न से ढूँढ़े गये रत्न को उस निरीह लड़की के साथ कितना बड़ा अन्याय हो गया। और गृह कलह के भय से वह हाँथ बाँधे खड़े देखते रहे वहीं धरातल में धँस क्यों नहीं गये।''[3]

9. दृढ़ इच्छा शक्ति प्रबल प्रधान व्यक्तित्व :-

मनोविश्लेषकों की यह धारणा है कि मनुष्य अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर विषम् परिस्थितियों को भी विजित कर लेता है। अन्तर्द्वन्द द्विचिन्ताजनित रूग्णावस्था में उनके नैतिक अहम् ने विजय पायी आखिर वे हैं तो पुराने सत्याग्रही अहिंसक नेता। दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण ही वे स्वस्थ होने लगे। चैत्रिक विकार पर उन्होंने काबू पाया। ''माधव बाबू की तबियत में आश्चर्यजनक सुधार होने लगा नहीं वे मरेंगे नहीं अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से जीवित रहेंगे। उन्हें अभी बहुत कुछ करना है। पहले अपने जीवन की सबसे बड़ी भूल का प्रतिकार करेंगे। इस दृढ़ इच्छा शक्ति ने उन्हें आत्मबली, तेजोदृप्त, बना दिया। राजनीतिक क्षेत्र में भी उनके विरूद्ध चलने वाले प्रबल आँधी को उन्होंने पीछे ढ़केल दिया। वे सोंचते हैं ''जो व्यक्ति कर्मठ होगा अपने लक्ष्य के प्रति जिसे सच्ची लगन होगी उसके जीवन में कभी विरसता आ ही नहीं सकती। वे मन ही मन स्थिर कर चुके थे कि आज राजदरबार की पेशी में वे निर्भीक होकर वे सब कहेंगे जो उन्हें बहुत पहले कह देना चाहिए था। घृणा और भय से मुक्त होने पर ही आत्म बल का उदय होता है। आज उन्हें एक बार फिर साहस कर अपने उस खोये आत्म बल को पाना होगा, मनसा, वाचा, शान्त होकर पुत्रवधू के प्रति किये गये अन्याय का

---

1. *अतिथि, पृ0 149*
2. *वही, पृ0 180*
3. *वही, पृ0 181*

अहिंसात्मक प्रतिरोध करना होगा।''[1]

माधव बाबू का अतीत स्वच्छ निर्मल था। उनके जीवन मध्यान्ह में राजनीतिक भयावह झंझाआयी वे स्वतंत्रता संग्राम के पथ पर निर्भीक बढ़े। ''तब स्वतंत्रता संग्राम के पथ पर उन्होंने कदम धरा ही था अदम्य उत्साह, विपुल आशा, समाज तंत्र की नीति निर्धारण एवं निर्वाह में नित्य नवीन दृष्टिकोंण की वे भूमिका संजोते थे। उन्हें याद है कैसे उन्होंने अपने साथियों के महीनों वन अरण्यों में नमक की डली से सूखी रोटी खाकर देश की लड़ाई लड़ी थी।''[2] अपनें आत्मबल के कारण ही चन्द्रा के उपालम्भ के उत्तर में वे कहते हैं – ''चन्द्रा तुम जानती हो मुझे लोगों के कहने की कभी काई चिन्ता नहीं होती। मैं हमेशा वही करता हूँ जिसके लिए मेरा मन गवाही देता है।''[3] इस प्रकार विपन्नता में जीवन के प्रारम्भिक दिन व्यतीत कर माधव बाबू ने देश की सेवा की। अपने स्वतंत्र चिन्तन से राजनीति को दिशा दी और मंत्री के रूप में जाँति-पाँति भाई भतीजावाद से ऊपर उठकर भ्रष्टाचार रहित प्रशासन को नैतिक स्तर से चलाया। जिसके कारण उनका पारिवारिक जीवन बहुत सफल नहीं कहा जा सकता। अपनी आत्म बल, दृढ़ इच्छा शक्ति, सरलता, ममत्वशीलता, देश-प्रेम, निष्प्रह और सात्विकता के कारण वे एक ओर भले ही असफल पति दिखाई पड़ते हो किन्तु लोकहित में श्रेष्ठ नेता और आदर्श चरित्र सम्पन्न व्यक्तित्व दिखाई देते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप उनके जीवन में ही उनका पुत्र सही रास्ते पर आ गया।

कार्तिक

अतिथि उपन्यास का दूसरा मुख्य पात्र कार्तिक है। जो माधव बाबू का पुत्र है। सत्ता के गलियारें में रहने के कारण किशोरावस्था से यह अबाध्य, उदण्ड, बलात्कारी और हत्यारा बन गया। किन्तु जया के अपरूप सौन्दर्य से हतप्रभ हो उसे पत्नी रूप में पाकर अपनी सारी अबाध्यता भूलकर एक अच्छे पति के रूप में दिखाई पड़ता है। सम्भवतः शिवानी ने गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होकर उस मनोवैज्ञानिक तथ्य का प्रतिपादन किया है कि बुरा आदमी

---

1. अतिथि, पृ0 216-217
2. वही, पृ0 215
3. वही, पृ0 239

जब अच्छा बनता है तो उसके विकार सीमित हो जाते हैं। वह श्रेष्ठ चरित्र रूप में अवतरित होता है। आखिर समाज में ईश्वरीय शक्ति के प्रतिपादन हेतु रावण था। अत्याचारी, की आवश्यकता तो होती ही है। कार्तिक विगत विकार होकर जिस रूप में उसका पर्यवसान चित्रित है वह समाजोपयोगी सिद्ध होता है। उसके आन्तरिक वाह्य सौन्दर्य सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, पृष्ठभूमि एवं तजन्य गुण अवगुणो की संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत की जा रही है।

1. वाह्य सौन्दर्य :-

यद्यपि शिवानी पर यह आरोप किया जाता है कि वे नारी सौन्दर्य के मारक शक्ति की सफल रचना करती हैं। फिर भी सौन्दर्य के बहुविधि आयामो का उन्होंने उद्घाटन किया है। कार्तिक अपने रूप सौन्दर्य से पिता को ही नहीं प्रभावित करता किशोरावस्था मे उसके व्यक्तित्व ने अनेंक युवतियों की नीद उड़ा दी है। वह पिता की दृष्टि मे कार्तिकेय सा सुन्दर, मोम का सा पुतला श्यामाचरण ओर उसकी पत्नी माया की दृष्टि में उसका चेहरा उत्फुल्ल दर्शनीय था। उसकी मद विह्वल हँसी देह परिमल से जया भी गहरे तक प्रभावित हुई है। उसके वेश के सन्दर्भ में शिवानी ने लिखा है – "सफेद बुर्राक पायजामें पर बोसकी का कुर्ता परिपाटे सी सँवरी केश सज्जा और आफ्टर सेव की तीव मत्त सुगन्ध।"[1]

"क्षणिक परिचय होने पर भी कोई भी नारी उस सुदर्शन चेहरे को नहीं भूल सकती थी।"[2] माया भी अपनी पुत्री जया को सतर्क करती हुई कहती है उसके रूप जन्य सौन्दर्य की चर्चा करती है। "क्या तू भी अपने बाबू जी की तरह उसके चिकने चुपड़े चेहरे पर रीझ गयी है।"[3] सुधा उसके रूप पर इतना मुग्ध है कि करणीय-अकरणीय का ध्यान ही नहीं रखती। कार्तिक की भाभी मालती भी उसके सौन्दर्य तजन्य प्रभाव का वर्णन जया से करती है। विवाह के समय उसके सौन्दर्य के सन्दर्भ में उपन्यासकत्री ने लिखा है "सफेद चूड़ीदार किम ख्वाब की शेरवानी राजस्थानी लहरदार साफे पर लगी कलगी और फूलों की चिलमन से कभी खुलता और कभी ढ़का जा रहा था चेहरा। चित्रों में सबसे सुन्दर चित्र उतरा था स्वयं

1. अतिथि, पृ0 23
2. वही, पृ0 39
3. वही, पृ0 62

नौसे का।''[1] उसके सौन्दर्य का प्रभाव शिवानी ने इस प्रकार अंकित किया है - यद्यपि राजकुमार सा सुदर्शन वह नौसा किसी भी जननी का हृदय असीम परितृप्त से भर सकता था। जैसा रंगरूप वैसी ही कद काठी उस पर पीले रेशमी कुर्ते और जरीदार कन्नी की खद्दर की धोती में वह पल-पल देखेने वालियों पर विजलियाँ गिराता रहा था। विदा होने तक न जाने कितनी किशोरियों के हृदय मुट्ठियों में बाँध चुका था। ताई तो उसे आँखो ही आँखों में पीती रही थी। बार-बार उनके अधरों से एक दीर्घ श्वास निकल रही थी। एक यह है साक्षात् विष्णु लक्ष्मी की जोड़ी।''[2]

तात्पर्य यह है कि शिवानी ने आत्मीय स्वजनों के साथ ईर्ष्यादग्ध ताई जैसी महिला से विष्णु जैसा सौन्दर्य कार्तिक का बताकर उसके सुदर्शन व्यक्तित्व की दुंदभी बजायी है।

2. आधुनिक युवकों का प्रतीक :-

वैभव सम्पन्न कार्तिक छत्रछाया रहित होने के कारण उसकी जीवन शैली पाश्चात्य हिप्पियों जैसी हो गयी। उसके कमरे की सजावट पर शिवानी कहती है - ''पूरी दीवाल पर नग्न विदेशी सुगन्धित चित्र पूरे कमरे में विखरे सिगरेट के अवशेष एक किनारे पत्रिकाओं के फडफड़ाते पृष्ठ औधे पडे खाली गिलास, भीम कट चौकोर हरी बोतल एक विचित्र दुर्गन्ध का भभका चेहरा ढँपे केश गुच्छ कार्तिक आनन्द लोक में डुबकियाँ लगा रहा था।''[3]

3. मद्यप :-

भारतीय नीति शास्त्र में यह मान्यता प्रचलित है कि रूप, सत्ता, धन, यौवन, और दुष्ट लोगों की संगति से दुराचारी मद्यपी बन जाता है। कार्तिक पर यह बात पूर्ण रूपेण लागू होती है। सुप्तावस्था में कार्तिक की दशा देख माधव बाबू सोंचते है। लगता है लड़का चरस, गाँजा पीने लगा है। शराब पीकर होटल में जया से अपशब्द कहना इसी का लक्षण है। इस रूप को चित्रित करते हुए शिवानी ने लिखा है ''दोनों आँखे जवाँ पुष्प सी लाल रेशमी कुर्ते

---

1. अतिथि, पृ0 256
2. वही, पृ0 122
3. वही, पृ0 13

पर पान की पीक कार्तिक उसे वेणी पकड़ाने पर लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा।"[1] इसी शराब के नशे में वह बहकता है "आज सुधा होती तो खुद भी पीती और हमें भी पिलाती नशा शायद तुंग पर पहुँच गया था। सदा का सुरीला कण्ठ मदिरा के मद से बार-बार विकृत होकर फिसल रहा था"[2]

4. दुःसाहसी :-

कार्तिक उदण्ड अबाधपुत्र बन गया था। पिता से वाद-विवाद माँ चन्द्रा के विरोध के बावजूद जया से विवाह करना जया को गाड़ी में बिठाकर गहन कान्तार में बिल्लेश्वर के दर्शन करना उसके दुःसाहस के अनेंक उदाहरण हैं।

5. हत्यारा :-

मद्यप और दुःसाहसी होने की परिणति बलात्कार में होती है। और यह बलात्कार की अंधी गुफा हत्या में बन्द होती है। शिवानी ने लिखा है - "कुछ ही दिनों पूर्व शहर के जिस वन अरण्य में एक दर्पिता युवती की नुची लाश मिली थी वही वनस्थली उनके आखेट प्रेमी पुत्र कार्तिक की प्रिय आखेट स्थली थी। माधव बाबू को भी सन्देह नहीं था कि उनका कपूत भी किसी न किसी रूप में उस जघन्य हत्याकाण्ड से जुड़ा है।"[3]

जया के विवाह की सूचना सुन माया कहती है "सुना है लड़का ठीक आदतों का नहीं है पिछले साल जिस विधायक का कत्ल हुआ था। उसमें भी इसका हाँथ था।"[4]

6. विद्रोही :-

कार्तिक में अनेंक दुर्गुण आ गये थे। वह अपने पिता से विद्रोह करता है। किसी अध्यापक की पुत्री से अपने विवाह की सूचना सुन वह उद्यत होकर कहता है कि "आप अन्धे कुएँ में गिरे तो यह जरूरी नहीं कि मैं भी गिरूँ।"[5]इस विद्रोही स्वरूप ने उसे मुँहफट

---

1. अतिथि, पृ0 151
2. वही, पृ0 152
3. वही, पृ0 11
4. वही, पृ0 22
5. वही, पृ0 16

बना दिया है वह पिता से कहता है - आप तो अपने मंत्रिमण्डल के युधिष्ठिर कहे जाते है न फिर क्यों नही दे दिया मुझे पुलिस में कहाँ गयी आपकी सत्यवादिता, देशभक्ति मैं जाता तो आपकी यह ऊँची कुर्सी, यह ठाटदार कोठी आपके तावेदार ये सब छिन जाते।"[1] यही विद्रोही पुत्र अशिष्ट हो गया। पिता के लिए काँटा बना। "देखनें में मोम का सा पुतला बेटा इधर उनके जीवन पथ का गोखरू काँटा बन गया था। बाहर भी रहते तब भी यह काँटा धप-धप कसकता।"[2] ऐसे सुदर्शन युवक कसुंगति के शिकार हो जाते हैं। शिवानी ने लिखा है कि "किसी भी दिन उनका दुःसाहसी दुर्योधन कानून की गिरफ्त में आ सकता था। नित्य ही रूमाल से चेहरा ढ़ाँके जिन देश द्रोहिया के चित्र अखबारों में बेनकाब हो रहे थे उनमें से अधिकाशं से मुन्ना की साँग गाँठ की खबर उन्हें मिल चुकी थी।[3]

7. कार्तिक की प्रेभानुभूति :-

नीति शास्त्र की यह उक्ति कार्तिक पर पूर्णरूपेण चरितार्थ होती है। कि रूपवारुणी पीकर कौन युवक उन्मत्त नहीं हो जाता। कार्तिक धीरे-धीरे अपने रूप जाल मं नवयुवतियों को आबद्ध करता और उन्हें रसहीन कर छटपटाने के लिए छोड़ देता। स्वयं माधव बाबू अपनी पत्नी चन्द्रा से कहते कि उनका पुत्र इस सुधा को नहीं दुनियाँ भर की सुधा को चाहता है ऐसा बिगडैल कार्तिक की दृष्टि में जब अपूर्व सुन्दरी जया आयी तो वह अपनी सारी उदण्डता भूल गया। वह निर्लज्ज होकर जया की ओर देखने लगा। "कार्तिक उसे निर्लज्ज दृष्टि से लील रहा था, न जान न पहचान, फिर भी यह अपरिचिता इतनी परिचित क्यों लग रही थी। उत्साह से, अदम्य कामना से, उसकी समस्त शिराएँ झनझना उठी। लड़का एकटक मुग्ध दृष्टि से जया को ही देख रहा था।"[4] यूनीवर्सिटी जाते समय जया को रोककर अपनी गाड़ी में बैठाकर वह अपने नेत्रों से अपने प्रेम का मौन निवेदन ही नहीं करता अपितु विवाहोपरान्त जिस उग्र प्रणय की अभिव्यंजना करता है उससे जया के मन में उसके विषय में धारणा ही बदलती गयी।

---

1. अतिथि, पृ0 16
2. वही, पृ0 16
3. वही, पृ0 29
4. वही, पृ0 24

"वही उसके लिए (जया) परिधान का चयनकरती उसे नाना नवीन अभिज्ञाताओं का पाठ पढ़ाती जिस सहचर की दूर की झलक ही बहुत थी। उसके निकट का सहचर्य कितना मधुर था, कितना मोहक उसकी मुग्ध दृष्टि उसका स्पर्श उसकी आवाज ने जया को पूर्ण रूप से सम्मोहित कर लिया था। कभी उसका वह अलमस्त प्रणयी उसे आधी रात को समुद्र तट पर खींच ले जाता कहीं बिना किसी पूर्व सूचना के एक समुद्र तट से डेरा डण्डा उखाड़ दूसरे समुद्र तट पर घास फूँस से छायी वातानुकूलित आधुनिक पर्ण कुटी पर खींच ले जाता।"[1] और यही प्रेमानुभूति एवं सौन्दर्यप्रियता उदण्ड अबाध्य पशु को खूँटे से बाँधने में समर्थ हो जाती है। अतिथि के रूप में जया के पास पहुँच वह कह उठता है –"कहो कलेक्टर साहब ऐसा स्वागत पहले कभी हुआ है आपका किसी जिले में कहो क्या सोंच रही हो। अब भगा पाओगी मुझे। मैं तो आज तुम्हारा अतिथि हूँ, जया और अतिथि को भला कोई आजतक घर से निकाल पाया है।"[2] इसी प्रणयानुभूति ने उसे उग्र प्रणयी बना रखा है। विवाह के बाद लीना के आपरेशन में वह जया से दूर हो गया था। घर आते ही उसका प्रेम उग्र हो उठा। "अब तक शरीर में दुबका प्रच्छन्न काम दस्यु सहसा फिर चैतन्य हो उठा पालतू पिंजरे में बन्दवनराज एक बार फिर वन्य नरभक्षी बन उठा। एक क्षण में सकुची सिमटी जया को अधैर्य से अपनी छाती से लगा लिया और अपने क्षुदातुर अधर उसके काँपते अधरों पर रख दिया।"[3]

8. परिहास प्रिय रसिक :-

जया के प्रति प्रेमानुभूति ने उसके विलक्षण व्यक्तित्व के अनेंक रूपहले पर्दे खोल दिये कार में बैठाकर ले जाते समय वह परिहासवश रूमाल देता है। विवाहोपरान्त वह बार-बार रास्ते में जया की हथेली दबा अपना निर्लज्जता और रसिकता का परिचय देता है और मालती के साथ जया को देख उसकी रसिकता चरम सीमा पर पहुँच जाती है। विवाह का पीला रेशमी कुर्ता, पहने ललाट पर रोली का लम्बा तिलक धूसर पड़नेपर भी वह कहता है "इसे कहते है भाग्य शादी की हमने कबायत करी, फेरे हमने लिये और सुहागरात मनायी हमारी भाभी

---

1. अतिथि, पृ0 149

2. वही, पृ0 260

3. वही, पृ0 139

जान ले।"[1]

9. वाकपटु :-

कार्तिक वाक्पटु नवयुवक है। अपने लच्छेदार शब्दों से वह सामने वाले को मोहित करने में पूर्ण समर्थ है जया से वह कहता है "सुनिए मै न डाकू हूँ न लड़कियों को भगाने वाले किसी गिरोह का कातिल। इस गाड़ी में मुझे ऐसी प्यास लगी है तो धूप में चलने से आपको भी अवश्य लगी होगी।"[2] जया ने अपने आँचल से अपने मस्तक को पोछा जिससे बिन्दी चारो तरफ फैल गयी हँस करके वे उसको सीसे में सूरत दिखाता है। जया को बार-बार वह अपनी वाकपटुता से प्रभावित करता है रास्तें में वह गाता है और गीत पर टिप्पणी करते हुए कहता है - "ये साली सास ननद क्यों बार-बार हमारी सुन्दर बन्दिशों में भी मूसरचन्द बनी घुसी आती हैं ज़हाँ पायलिया बजी वहीं वैरन ननद या सास खड़ी हो गयी मूसर लेकर"[3] इसी प्रकार जया के कार से उतरने में विलम्ब होने पर वह कहता है - "अरे क्या सोच रही है उतरिए न कहिए तो यह सेवक गोद में उतार दे वह हँसा"[4] इसी प्रकार विवाह के समय उसकी वाग्विद्ग्धता बहुत मुखर रूप में प्रकट होती है।

10. गिरगिटी व्यक्तित्व :-

कार्तिक एक ओर सरल तो दूसरी ओर उदण्ड एक ओर बलात्कारी तो दूसरी ओर अत्यन्त शिष्ट, विनम्र व्यक्तित्व के दोनों छोरों का स्पर्श कर उसकी चरित्र सरिता प्रवाहित होती है। माता-पिता के लिए उदण्ड किन्तु जया के सामने सभ्य शिष्ट प्रणयी बनता है। मन्दिर में जया से कहता है "बड़ा वरदायी मन्दिर माना जाता है, यहाँ आकर कोई बिना दर्शन किये लौट जाय तो उग्र महादेव अनिष्ट कर बैठते हैं। धर्म भीरू जया ने एक बार सशंकित दृष्टि से उस रहस्यमय सहचर को देखा कैसा गिरगिटी व्यक्तित्व था उसका कभी-कभी खलनायक सा भयावह और दूसरे ही क्षण देवदूत सी हँसी"[5] इसी गिरगिटी व्यक्तित्व का रूप शराब के

1. *अतिथि पृ0 49*
2. *वही, पृ0 40*
3. *वही, पृ0 43*
4. *वही, पृ0 44*
5. *वही, पृ0 46*

नशे में इस रूप में व्यक्त होता है –"तेरे बाप ने कभी देखा था ऐसा होटल तू वेणी लगाना क्या जाने। हाँथ में छूरी काँटा थामा था कभी। कल दाहिने हाँथ में काँटा थामें ऐसे गोद रही थी आमलेट को जैसे तुम्हारे बाप उस दिन गुलाब की क्यारी गोड रहे थे।"[1]

11. स्वनिर्णयी :-

शिवानी ने कार्तिक को मनोविश्लेषण शास्त्र के अनुरूप बधिर मुखी व्यक्तित्व सम्पन्न पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। ऐसा पात्र स्वा हेतु ही जीवित रहता है। कार्तिक अपने विवाह का संकल्प जया के सामने स्पष्ट रूप से करके अपने निर्णय की सूचना देता है। "तुम्हारा विवाह मुझसे नहीं हुआ तो मैं किसी और की बारात को भी कभी तुम्हारी देहरी भी नहीं लाँघने दूँगा।[2] इसी प्रकार हनीमून मनाने के लिए माता पिता को बिना बताये निकल पड़ता है। "हम दोनों आज ही हनीमून पर नहीं निकल गये तो कुछ न कुछ अड़ंगा लग जायेगा। मैं एयर टिकट ले आया हूँ मद्रास में मेरा एक दोस्त है वहाँ जाकर फिर सोचेंगे कहाँ जायेंगे।"[3] इस प्रकार माता और बहन के विरोध के बावजूद वे जया का स्वागत अपने घर में करता है और स्वनिर्णय के अनुसार उसका पाणिग्रहण भी।

12. तनावग्रस्त :-

कार्तिक के जीवन में जिस प्रकार चाहे अनचाहे घटनायें घटती हैं, सद् असद् प्रवृत्तियों का संघात उसका जीवन बन जाता है। ऐसे में अन्तर्द्वन्द या तनाव होना बहुत स्वाभाविक है। शराब के नशे में अपनी पत्नी को अपशब्द कहना पूर्व प्रेयसी सुधा की याद करना जया द्वारा उसे छोड़कर पितृगृह में आ जाना कार्तिक के जीवन में तनाव पैदा करते हैं। सुधा माधव से कहती है "पिछले तीन दिनों से मेरे यहाँ पड़ा है दिन-रात नशा कर अपना दुःख भुला रहा है, ईडियट और एक आप लोग हैं कि किसी को चिंता भी नहीं है।"[4] जया के चले जाने पर आई0ए0एस0 की परीक्षा पर उत्तीर्ण होने पर शेखर से उसके विवाह की काल्पनिक घटना

---

1. अतिथि, पृ0 156
2. वही, पृ0 45
3. वही, पृ0 140
4. वही, पृ0 199

से कार्तिक हतप्रभ और स्तब्ध हो जाता है। धीरे-धीरे दुःसाहसी नरभक्षी व्याघ्र कमरे में बन्द होकर अपने को मानसिक कष्ट ही देता है। उसका पान पर्व प्रातः से प्रारम्भ हो जाता है पिता के डॉटने पर वह अपना जया के प्रति आक्रोश व्यक्त करता है। माधव बाबू सोचते हैं "उसी दुःख को भुलाने का क्या वह ऐसी पिये चला जा रहा था। किन्तु कार्तिक क्यों ऐसे पी-पी कर सर्वनाश कर रहा था। क्या जया से सम्भावित विच्छेद की वेदना ही उसे बौरा गयी थी।"[1]और वह धीरे-धीरे पालतू बनने के सोपान में चढ़ जाता है। मालती के समझाने पर वह अपना आत्म सम्मान अपनी जिद छोड़ जंगल में मंगल करने के लिए जया के पास अतिथि बनकर पहुँच जाता था।

कुन्दन सिंह

महिम तिवारी की पुत्री राजराजेश्वरी का प्रेमी कुन्दन सिंह भैरवी उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो राजराजेश्वरी को लेकर घर छोड़ भागता है किन्तु चतुर महिम तिवारी अपनी कन्या को पकड़ घर ले आते। कुन्दन सिंह अन्यत्र अपना विवाह कर सुखी ग्रहस्थी बसाता है तभी राजराजेश्वरी को उसकी सहेली चन्द्रिका अपने भाई कुन्दन की याद दिलाती है और बताती है कि वह उसकी पूर्व प्रेम को याद कर अभी भी दुखी है शिवानी ने कुन्दन सिंह की झलक बहुत सीमित पृष्ठों पर ही अंकित की है किन्तु उससे उसके अन्तर वाह्य व्यक्तित्व का मूल्यांकन पर्याप्त रूप मे हो सका है

1. सजीला नवजवान :-

राजराजेश्वरी की सहेली चन्द्रिका जब उसे अपने घर लाती है तब राजराजेश्वरी पूर्व वेश्या रामप्यारी के पुत्र सजीले कुन्दन सिंह को देख अपना हृदय दे बैठती है।

राज राजेश्वरी नित्य ही स्कूल से लुक छिपकर आने लगी अब सखी से भी अधिक प्रिय उसे सखी का भाई सजीला कुन्दन सिंह था।"[2] उसके सुदर्शन रूप का वर्णन शिवानी ने अनेंक स्थानों पर किया है। कहीं सुदर्शन और कहीं सजीला शब्दों से कुन्दन के रूप को सँवारा गया है।

---

1. अतिथि, पृ0 251
2. अभिनय, पृ0 72

2. चतुर प्रेमी :-

राज राजेश्वरी के रूप को देख कुन्दन सिंह उससे मन ही मन प्रेम करने लगा। घूमने जाने पर वे एक स्थान पर घण्टों बैठे बात करते रहते किन्तु परिस्थिति कुछ ऐसी हुई कि प्रेमी युगल की भविष्य की सम्पूर्ण बचकानी योजनाएँ अधूरी रह गयीं। शिवानी ने लिखा है "अविवेकी किशोर के पास न अनुभव था न आगा पीछा सोंचने का समय उसके बाद की कहानी यंत्रणा और केवल यंत्रणा की कहानी थी।"[1]

3. शराबी :-

कुन्दन पकड़े जाने पर किसी तरह से बच गया किन्तु, अपने उस प्रथम प्रेम को भूल नहीं पाया राजेश्वरी से चन्द्रिका कहती है "वे तुझे भूला थोड़े ही है। इसी से तो पी पिलाकर लीवर एकदम चौपट् कर लिया है बदजात् नें।"[2]

तात्पर्य यह है कि कुन्दन सिंह अपने बड़े पुत्र को आवारागर्दी करते देख उसे डाँटता है क्योंकि उसे अपना पूर्व प्रेम भूल नहीं सका है।

अवधूत भैरवानन्द

शिवानी ने यद्यपि नायिका प्रधान उपन्यासों की सर्जना की है तथापि पुरूषों की प्रधानता सर्वत्र किसी न किसी रूप में दिखाई देती है। भैरवी उपन्यास साधिका को केन्द्रित कर लिखा अवश्य गया है किन्तु बिना भैरव के यह साधना कोई अर्थ नहीं रखती। भैरव ही अपनी साधना में सिद्धि की परीक्षा के लिए भैरवी या सुन्दरी स्त्रियों का उपयोग करता है।

अवधूत भैरवानन्द सिद्ध साधक ही नहीं ज्ञानी कापालिक और मानवीय भावों से युक्त है। कठोर तपस्चर्या के पश्चात् उसने कपाल साधना सिद्ध की। श्मसान में रहकर शव साधना, माया दीदी का उसके पीछे पड़ना, गुरू द्वारा उसका तिरस्कार, चन्दन को भैरवी बनाने का संकल्प, भैरवानन्द के जीवन की प्रमुख घटनाएँ हैं। इससे वह इस उपन्यास का नायक सिद्ध होता है। क्योंकि श्मसान साधना में कौलाचार्य को ही प्रमुखता है। शिवानी ने उसकी भेष-भूषा का चित्रांकन अनेंक स्थानों पर किया है।

---

1. *अभिनय पृ0 72*
2. *वही, पृ0 77*

1. रूप एवं वेश-भूषा :-

होश आने पर चन्दन ने पहली बार जब गुरू को देखा उसकी रूप रेखा स्निग्ध हँसी, नर कंकालों से घिरी पृष्ठभूमि चौड़ी पीठ को देख स्तब्ध रह गयी। "सन्यासी की अब अस्पष्ट आकृत स्पष्ट हो उठी। अंग भर में पुती भस्म आश्चर्यजनक रूप से लम्बा कद और बैठने की अडिग मुद्रा देखकर लग रहा था जैसे धूल गर्द के अम्बार से ढ़की कोई धातव मूर्ति हो। गम्भीर चेहरा और उस गाम्भीर्य को चीर कर पूर कमरे में फैल रही एक तेजोमय दीप्ति कैसा शान्त चेहरा लग रहा था। अद्‌भुत बाल सुलभ, स्निग्ध हँसी से रंगी भस्म पुती आँखे और उसी भस्म मस्कारा से रँगे हुए लड़कियों के से रेशमी बाल।"[1]

इसी प्रकार उसके तेजोद्रप्त विशाल शरीर एवं कंधे पर मायादीदी की लाश को देखकर चंदन सोचती है "ओह! कैसा विकट रूप था गुरू का? जैसे स्वयं साक्षात् शिव ही दक्ष कन्या की निर्जीव देह लिए सृष्टि का संहार करने निकल पड़े हो।"[2] गुरू की अद्‌भुत हँसी पर चन्दन सोंचती है "कैसी अद्‌भुत हँसी थी? जैसे किसी ने ऊँची पर्वत श्रेणी से बहुत बड़ी शिला नीचे लुढ़का दी हो सारी देह पर भस्म कंधे तक फैली उलझी कुछ सुनहली, कुछ भूरी जटाएँ, आरक्त चक्षु और नग्न देह।"[3]

इसी प्रकार अंगारे सी दहकती आँखे उलझी जटाएँ दुर्दान्त चेहरे का वर्णन शिवानी ने अवधूता नन्द के व्यक्तित्व निर्माण हेतु उल्लिखित किया है।

2. सिद्ध साधक :-

अवधूत गुरू की श्मसान साधना कर सिद्धि प्राप्त की थी। उसकी इस सिद्धि से माया दीदी उसकी ओर आकृष्ट हुई। वह गुरू की साधना सहचरी अवश्य बनी किन्तु गुरू के हृदय पर उनका कोई अधिकार नहीं था। शिवानी ने लिखा है "गुरू थे सिद्धामृतमार्ग के अनुयायी, त्रसाकान्त सिद्धि योगिनी अमृतवारूणी के स्वर्ग कलश को दूर से ही निहार सकती थी। निकट आकर स्पर्श कर भी लेती तो स्वामी के तेज से भस्मीभूत हो जाती।"[4]

1. भैरवी, पृ0 14
2. वही, पृ0 122
3. वही, पृ0 12
4. वही, पृ0 17

इस गुरू ने अपनी गुफा में एक सर्प को पिटारी में बाँध रखा था। जिसे वह अपना पुत्र समझता। कटोरे में दूध भरकर उसे पिलाता और कृतज्ञता स्वरूप गुरू के अधर से अपनी जिह्वा का स्पर्श कराता ऐसा था वह औघड़ सन्यासी। शिवानी ने लिखा है "दूध का कटोरा खाली होते ही उसने उस तक्षक की चिकनी मोटी देह ऐसी यत्न से उतारी मानों हीरों का हार उतार रहा हो। अपनी जीभ स्वामी के अधरों तक लाकर वह फिर टोकरी में दुबक गया।"[1]

3. जितेन्द्रिय :-

अपनी इस सुदीर्घ साधना का परिणाम गुरू ने इन्द्रियों को जीत लेने के रूप में पाया। वह माया दीदी के देह आकर्षण से परे था। यद्यपि माया ने अनेक बार उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने का प्रयास किया था। चरण कहती है "गुरू तो एकदम पत्थर है पत्थर आधी-आधी रात अमावस चीरती गयी हूँ श्मसान। उस पत्थर की मुठ्ठी में चिलम थमा घंण्टो खड़ी रही हूँ कभी आँख उठाकर उसने नहीं देखा।"[2]

4. ज्ञानी एव कापालिक :-

तंत्र साधना, शव साधना या कपाल साधना बड़ी कठिन होती है। गुरू ने माया दीदी से कहा शिवजी से शक्ति कहकर पुकारते हैं सांख्यपरा कृति, सूर्य पूजक, महारजनी, बौद्धतारा, जैनश्री, ब्रह्मज्ञानी स्वधा, वैदिक गायत्री और अज्ञानियों की मोहनी वही हो तुम महामाया, महाविद्या"[3]

5. मद्यप :-

कौल साधना या तन्त्र साधना में धूम्र पान, पंचमकार की अनिवार्यता कही जाती है। शायद साधना के तेज को सहन करने के लिए गाँजा, अफीम, चरस का सेवन साधक करता है। औधूत भैरवानन्द जब कुण्डलनी जागरण की अवस्था में होते तभी उन्हें इस धूम्रपान की आवश्यकता होती है। शिवानी ने भैरवी उपन्यास में धूम्रपान का वर्णन किया है। चरन की

---

1. भैरवी, पृ0 13
2. वही, पृ0 109
3. वही, पृ0 17

नियुक्ति ही इसीलिए हुई थी कि जब माया दीदी एवं गुरू इस ऐहिक संसार से ऊपर उठ जायें तो चरन अफीम की चिलम, जागृत करती रहती थी। चरन कहती है कि "बीच-बीच में चिलम भरकर मुझे वहीं पहुँचानी होती है। दोनों के हाँथों में चिलमे थमाती हूँ तो लगता है अर्थी में बँधे दो मुर्दे ही खुलकर आमने-सामने बैठ गये हों।"[1]चरण के भाग जाने पर यह कार्य चन्दन को सम्पन्न करना पड़ा वह सोंचती है "चिलम क्या वह किसी हाँड चाम, के पुतले को थमाती थी वह तो जैसे ठोस पत्थर की मूर्ति बढ़ाकर चिलम थाम लेता"[2]

6. भावुक व्यक्तित्व :-

अवधूत भैरवानन्द बनने के पूर्व गुरू दक्षिण भारतीय शिवशंकर स्वामीनाथन के अघोरी अ साधना चक्र में भैरवानन्द बने गुरू का व्यक्तित्व भावुक रहा है। जलती चिता में ट्रेन से कूदते चन्दन को मूर्च्छा अवस्था में ही अपनी गुफा में लाये थे उसके ललाट का स्पर्श किया था। उसे अपने हाथ से रूद्राक्ष की माला पहनायी और फिर उसे भैरवी नाम दिया। उसके रूप को देखकर गुरू भैरवानन्द टुकुर-टुकुर देखते रहे। अपनी उदारता से उन्होंने चन्दन को पुनर्जीवित किया। इसीलिए चरण चन्दन से कहती है "गुरू शव साधना तो नित्य करते ही रहते हैं किशोरी के शव को इस बार धूनी रमाकर घर पर ही साधेगें।"[3] सर्प को दूध पिलाना उनके व्यक्तित्व को कोमल पक्ष दिखाई देता है। समीपस्थ मन्दिर में जाते समय जब चन्दन नदी की क्षीर्ण धारा में फिसलकर गिरने ही लगती है। तभी किसी की अनजान बाहुद्वय ने उसे सीधी खड़ी कर दिया। यह कार्य गुरू के अलावा अन्य कोई नहीं कर सकता। "लपककर उसे किसी ने थाम लिया। मुड़कर देखा तो भय से आँखे मूंद ली। अजानबाहु द्वय ने उसे थामकर सीधी खड़ी कर दिया। ठीक ही तो कहते हैं साँप और सन्यासी का घर क्या एक जगह होता है लगता है हमारे पीछे-पीछे चले आ रहे थे। मखमली पंजे हैं इनके चन्दन अभी उन दो लम्बी बाँहों के स्पर्श को नहीं भुला पा रही थी। कैसी उत्प्त बाँहें थी। दोनो जैसे धूनी में तपाये चिमटें की दो फाले हों।[4]

---

1. *भैरवी, पृ0 20*
2. *वही, पृ0 10*
3. *वही, पृ0 113*
4. *वही, पृ0 29*

7. सौन्दर्यप्रिय :-

शिवानी ने अपने उपन्यासों में नारी के मारक सौन्दर्य का चित्रांकन बड़ी कुशलता से किया है "वह सौन्दर्य ही क्या जो मनुष्य को ही नहीं सिद्धों को या विकारहीन मनुष्यों को न प्रभावित करे।" चन्दन के अपूर्व सौन्दर्य से भैरवानन्द प्रभावित हुए उन्होंने अपनी डायरी में लिखा " Where could one find an other example of such beauty? The were surface of her miror is of the face. The face which is reflected like the swarms of beez fluing to the parijat like the souls of the sagis ampering to the meditation of Atman. so do the eyes of man lay a side all activity and direct themselves towards saw her alone कहाँ मिलेगा ऐसा सौन्दर्य उस सुन्दरी का दर्पण भी उसके मुँख को प्रतिबिम्बित करने की क्षमता नहीं रखता। पारिजात की सुगन्ध से खिचीं भ्रमरा विलासी आत्मन में एकाकार होने की आकाँक्षा में साधनारत् तपस्यिो की आत्मन् सी उसे देखते ही मानव मात्र की दृष्टि सब कुछ छोड़ी ऐसी की ओर खिंची चली जाती है।"[1]

8. मानवीय भाव युक्त :-

साधक गुरू की साधना सहचरी को पालित सर्प ने काट लिया। गुरू ने अपने योग बल से जानकर असमय यात्रा स्थगित कर वापस लौट आये माया को अपनी गोदी में रख गुरू कोमल स्वरों से माया माया पुकारने लगे। "मेरी भूल ही थी माया गुरू स्वयं ही बड़बड़ाने लगे मैं जानता था एकदिन यही होगा। इसे पन्द्रह दिन पहले ही जंगल में छोड़ देता तो यह अनर्थ नहीं घटता कभी उनके साँवले चेहरे की नसें तन उठती कभी थककर गर्दन माया दीदी के चेहरे पर झुक आती।"[2] और वे माया दीदी को जल समाधि देने के लिए कंधे पर लादकर चल पड़े।

इस प्रकार भैरवी उपन्यास का भैरव अपने पूर्व जीवन में पढ़ा लिखा विद्वाना दक्षिण भारतीय अवधूत कौलाचार्य भैरवानन्द बन गया। शिवानी ने उसकी साधना परक पृष्ठभूमि के

1. भैरवी, पृ0 115-116
2. वही, 121

विस्तृतफलक को प्रस्तुत कर गुरू के अन्तर्वाह व्यक्तित्व का उद्घाटन किया है।

उमेश

उमेश उपप्रेती का मुख्य पुरूष पात्र है यह रमा का पति है। अपनी पत्नी के साँवले (श्यामल) रूप से समझौता न कर सकने के कारण रूष्ट होकर बिना बोले नौकरी पर चला गया। अपनी छोटे भाई की बारात में शामिल होने के लिए पुनः घर लौटा किन्तु दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण परिस्थितियों के झंझावात में फँसकर इसे अपनी अनुजवधू को पत्नी बनाना पड़ा और यह साइबेरिया के सुदूर प्रान्त में रहने लगा। अपने इस अपराध बोध की स्वीकृत वह लेखिका से करता है। उसके चरित्र एवं व्यक्तिगत विशेषताएं इस प्रकार हैं।

1. सौन्दर्य प्रियता :-

उमेश के मन में सुन्दरी पत्नी पाने की आकाँक्षा थी किन्तु विवाह के समय रमा के हाँथ देखकर उसकी कल्पनाएँ भूमिसात हो गयीं। स्वयं उमेश तनिक से ऊँचे उठने पर आकाश के तारे तोड़ सकता था। गोरा रंग, चौड़ा ललाट था और कृष्ण पक्ष के धूमिल चन्द्रमा सी सीमित मिची कृपण मुस्कान थी। अतः वह अपनी पत्नी को देख निराश हुआ। शिवानी ने लिखा है "रमा का पति उमेश पत्नी की साँवली हथेली देखकर ही बिना मुँह देखे नौकरी पर वापस चला गया।"[1]

2. नम्र :-

उमेश अपने व्यवहारी जीवन में बहुत नम्र था। लेखिका से दूसरे मिलने पर वह अपने अशिष्टता के लिए क्षमा माँगता है "अचानक प्याला मेंज पर धर उसने निरीह मस्तक ऐसे झुका लिया जैसे कोई जघन्य अपराध किया हो।"[2]

3. जिजीविषा :-

बस के गहरे खाँई पर गिर जाने पर उसमें सवार तैतीस यात्रियों में से इक्तीस मृत्यु को प्राप्त हुए। गम्भीर रूप से आहत उमेश अपने कठिन परिश्रम से अनुज वधू नन्दी को निकाल कर लाया। शिवानी ने लिखा है – जब अन्तिम बार अन्तिम शरीर की समस्त शक्ति

---

1. *उपप्रेती, पृ0 11*
2. *वही, पृ0 22*

लगाकर उसे बाहर खींचा तो बाहर मेरे कंधे के भाव से रक्त का फब्बारा सा छूट गया। तो क्या वह बत्तीसवाँ मुसाफिर भी चल दिया। अब निश्चय ही मेरी बारी थी। कुछ भय, कुछ प्यास से मेरी जीभ तालु से ऐसी चिपक गयी थी कि चेष्टा करने पर भी मैं उसे छुड़ा नहीं पा रहा था। जैसे भी हो अब मुझे अपने प्राण बचाने होंगे। अपने लिए नहीं तो हार्ट की मरीजा अपनी रूग्णा माँ के लिए जो अपने वंश के निर्वंश होने का आघात कभी नहीं झेल पायेगी।"[1]

3. ममतालु हृदय :-

जब उमेश को नन्दी के जीवित होने का आभास हुआ। उसने बड़ी लग्न, निष्ठा और मेहनत से उसकी सेवा, सुश्रुषा कर चैतन्य बनाया वह कहता है - "कभी पानी की छीटे मारता, कभी कटीली हिसालू की झाड़ियों के हिसालू बीन उसका रस उसकी कठिनता से मिची दाँतो के बीच टपकाता तीन दिन और तीन रात मैंने उसके सिरहाने एक ही आसन में बैठकर बिता दिये।"[2]

4. निष्कलुष एवं संयमी हृदय :-

उमेश ने नन्दी की सेवा निष्कलुष और ममत्व पूर्ण वासना रहित मन से किया था। वह बारम्बार सोचता कि उसका छोटा भाई और नन्दी की जोड़ी शंकर-पार्वती की जोड़ी के समान लगती थी। उसे अपने शरीर से आलिंगन बद्ध करने के बाद भी वह लेखिका से कहता है - "आपसे गायत्री की सौं खाकर कहता हूँ सारी रात जल-सर्प के जोड़े से लिपटे रहने पर भी किसी विकार ने मुझे भ्रष्ट नहीं किया। यौनताहीन उस आलिंगन में उसके ठंड से काँपते शरीर को अपनी देह का उत्ताप देने की मेरी निःस्वार्थ भावना रही है।"[3]

5. अन्तर्द्वन्द्व :-

सामाजिक सम्बन्धों में उमेश ज्येष्ठ था और नन्दी उसकी अनुज वधू थी। युवावस्था में परिस्थिति चाहे जैसी भी नर-नारी की आलिंगनबद्ध होने पर विकार उत्पन्न न हो ऐसा सम्भव नहीं। नन्दी के निरीह कामना और निरा ज्येष्ठ होने का एहसास दोनों ने मिलकर

---

1. उपप्रेती, पृ0 26-27
2. वही, पृ0 27
3. वही, पृ0 27

अन्तर्द्वन्द्व ग्रस्त कर दिया। उमेश लेखिका को बताता है "मेरे अन्तर्द्वन्द्व की, मेरे विनिपात की मैं क्या जानता था कि दूर बैठी आदर्शी नियति ठीक मेरी छाती पर अपना अचूक निशाना साथ रही है .... मैं विवाहित न होता तो मैं नन्दी के लिए सब परम्पराएँ तोड़ सकता था। मैं नन्दी का देवर भी होता तो शायद समाज से जूझ सकता था। पर मैं तो जेठ था। जिसकी छाया भी छोटे भाई की पत्नी के लिए वर्जित है। यह क्या कर बैठा था मैं। वैधब्य के आघात से बचाने के लिए मैं उसे जीवन के कैसे घातक के मोड़ पर खड़ा कर दिया था।"[1]

6. मदिराप्रियता :-

साइबेरिया के सीमान्त प्रान्त की कड़कड़ाती ठण्ड और विदेशी मदिरा पान की प्रवृत्ति के कारण उमेश भी उसी रंग में रंग गया। नन्दी की भ्रान्ति धारणा को निर्मूल करने के लिए उसने अनजाने परिवेश में शरण ली। नन्दी की मान्यता थी कि वह अभागिनी दुर्लच्छना है। जब लेखिका उमेश की अतिथि बनती है उस समय शराब के नशे में वह अपनी बाँहे फैलाकर उसे रोकने का प्रयास करता है।

तात्पर्य यह है कि शिवानी ने उपप्रेती में घटना की आकस्मिकता का विन्यास इतने नाटकीय ढ़ंग से किया है कि उसका नायक उमेश अकरणीय कार्य भी कर लेता है और उसका दोष नियति या भाग्य पर छोड़ देता है। नन्दी के साथ उसका जीवन सुखद आदर्श दाम्पत्य प्रेम का प्रतीक बन गया।

मधुकर

श्मशान चम्पा का नायक मधुकर नायिका चम्पा से प्रेम करता हैं। परिस्थितिवशात उसकी सगाई टूट जाती है और पिता रामदत्त पाण्डेय वे अतिशय आग्रह के कारण अपने प्रेम का गला घोंट जया से विवाह के लिए तत्पर होना पड़ा। उसके चरित्र की रेखाएँ इस प्रकार लेखिका ने उट्टंकित किया है -

1. सौन्दर्य :-

कथानायिका की बुआ रूक्की अपनी दूर के देवर मधुकर को लेकर नायिका चम्पा के पास आती है। भगवती उसके रूप सौन्दर्य को देख प्रसन्न हो जाती है। शिवानी ने लिखा है

---

1. उपप्रेती, पृ0 29

"लम्बे, गठीले बदन के कुन्दन वर्णी अपरिचित युवक को देखकर भगवती हड़बड़ा गयी। अंग रंग से घुल मिल गये उसके मूँगा रेशमी कुर्ते का हिरण्यमय आभरण प्रतिभा प्रदीप्ति ललाट पर तिरछे घाव का निशान और ऊँचा कद।"[1] चम्पा भी उसके पुरूचोरित सौन्दर्य से अभिभूत थी।

"उसका मूँगा रेशम का कुर्ता किसी अनकहे व्यंग्य से चमकती आँखे ओंठो पर देव दुर्लभ स्मित के रहने पर भी भृकुटि का कठोर कटाव, प्याले में चीनी घोल रही महिमा पर चमकते पुखराज की पीताभदमक.......।"[2] मधुकर के रूप सौन्दर्य की प्रशंसा उसके सभी आत्मीय जन करते हैं। माँ भगवती उसे कार्तिकेय सा सुन्दर एवं पुजारी उसे देवदत्त बालक एवं मधुकर की माँ भी अपने पुत्र को कार्तिक सा सुन्दर कहती है।

2. मोहक व्यक्तित्व :-

मधुकर डाक्टर था। सगाई के पश्चात् उसने चम्पा को अनेंक बार पत्र लिखा। चम्पा स्वयं उसे मोहक व्यक्तित्व सम्पन्न स्वीकार करती है। "बुद्धिमान होगा तो उसे अपनी अधीर प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा। जिसने उसने उस दिन के परिधान को स्मरण कर ठीक वैसा ही रेशम जैसे छाँटकर भेजा था। वह क्या उसके मोहक व्यक्तित्व के प्रति उदासीन हो सकती थी।"[3]

3. प्रत्युत्पन्नमतित्व :-

मधुकर डाक्टर ही नहीं, अपितु इस पेशे में जितना तात्कालिक निर्णय लेने की आवश्यकता होती है वह क्षमता उसमें पूर्ण रूपेण थी। इसी से यात्रा के मध्य अचानक चम्पा को देख उसने टिटनेस रोग को तुरन्त पहचान लिया। "रोग पहचानने में मधुकर ने भूल नहीं की थी इसी से वह जब आधी रात को दक्ष यज्ञ से सती की मृत देह लटकायें रूद्र शिव के रूप में ही अपने फ्लैट की घंटी बजाकर खड़ा हुआ तो पहाड़ी नौकर स्वामी की लाल आँखे

---

1. श्मशान चम्पा, पृ0 14
2. वही, पृ0 33
3. वही, पृ0 37

देख भय से सहम दो कदम पीछे हट गया।"[1]

4. प्रणयी :-

मधुकर के प्रणयी रूप का चित्रांकन शिवानी ने बड़ी कुशलता से किया है। चम्पा को देख वह उसे पत्र लिखता है सगाई टूट जाने पर अन्य किसी ने विवाह न करने के लिए अन्य मनस्क हो जाता है। पुनः चम्पा को पाकर वह अपनी भावनाएँ अवरूद्ध नहीं कर सका "वह उसके कानों के पास झुका और उस अक्षत कौमार्य की मादक सुगन्ध महुआ की सी मदीली पुष्प गन्ध ही उसे उन्मत्त कर उठी। शत्रु बना पुष्प धनुहा अपने धनुष की डोर कान तक खींच चुका था। 'चम्पा' उसके स्वर भौंरे की सी गुनगुन सी मिठास स्वयं उतर आयी सोंचा था तुम्हे गाजे बाजे के साथ ही एक दिन यहाँ लाऊँगा। उसने अपने उलझे बालों से उसका चेहरा ढ़ाप लिया था।"[2] इस प्रेम के लिए वह अपने परिवार जनों के विरूद्ध कोर्ट मैरिज की अभिलाषा चम्पा से व्यक्त करता है वह कहता है कि "अब तुम्हें नहीं भागने दूँगा मैंने सब सोंच लिया है इसी इतवार को हम स्वयं साध लेंगें। रजिस्ट्री विवाह की मैं पूरी जानकारी रखता हूँ और फिर हम निकल जायेंगे अपने हनीमून पर।"[3]

5. परिहास प्रिय :-

चम्पा के सान्निध्य ने मधुकर को वाचाल मुखकर बना दिया है, वह हनीमून के सन्दर्भ में परिहास करता हुआ कहता है :- "जहाँ आज तक विश्वं को कोई भी रंगीन जोड़ा हनीमून मनाने नहीं गया। कालापानी ही जाकर हम हनीमून मनाएँगे 'चम्पा' इसलिए की मौत की सज पा गयी बन्दनी को छुड़ाकर लाया हूँ। मौत से छीनकर मैंने अपनी प्रियतमा को पाया है।"[4]

यद्यपि चम्पा से प्रथम दर्शन में मधुकर को निराशा ही हाथ लगी थी क्योंकि चम्पा ने कर रूखे अनमने ढ़ंग से चाय के बीच से उठकर चली गयी थी। फिर भी मधुकर ने अपनी

1. श्मशान चम्पा, पृ0 109
2. वही, पृ0 111
3. वही, पृ0 111
4. वही, पृ0 111

मुखरता, सुदर्शन व्यक्तित्व और रसिकता से चम्पा को मोहित कर लिया है।

तात्पर्य यह है कि मधुकर एक तरफ सुदर्शन एवं व्यक्तित्व सम्पन्न डाक्टर था, उसके सौन्दर्य पर जया जैसी किशोरियाँ मोहित थी। ऐसी सुन्दरी चम्पा से उसकी सगाई टूट जाने पर वह उसे अकड़बाज छोकड़ी मानता है। किन्तु ट्रेन के कूपे मे असहाय देख उसे तुरन्त अस्पताल में भर्ती कर सुश्रुषा अपने पेशे के प्रति अपनी निष्ठा प्रदर्शित करता है।

कर्नल शिवदत्त पाण्डेय

कर्नल शिवदत्त पाण्डेय "चौदह फेरे" उपन्यास का प्रमुख पात्र है यह उपन्यास की नायिका अहल्या का पिता है नन्दी का पति है वह कुशल व्यवसायी है नन्दी की रूक्ष एवं शीतल व्यवहार से एकाकी कर्नल के जीवन में उसके सचिव की पत्नी मल्लिका किस प्रकार अधिकार जमा लेती है शिवानी ने बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से चित्रित किया है। परिणामस्वरूप नन्दी अपने पति का परित्याग करने सन्यस्त जीवन व्यतीत करने चली आती है। कर्नल अपनी युवा पुत्री अहल्या का विवाह पहाड़ के निवासी सर्वेश्वर से करना चाहता है और अहल्या की अस्वीकृति से रूष्ट हो जाता है। शिवानी ने उसके वाह्य सौन्दर्य रूप रंग, कद काठी, सामाजिक परिवेश एवं उसकी आन्तरिक प्रवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से चित्रण किया है।

1.कर्नल का वाह्य व्यक्तित्व :-

शिवानी ने उसके लम्बे शरीर, चौड़े कन्धे एवं चेहरें का चित्रांकन इस प्रकार किया है। "कर्नल की छः फुटी विराट देह थी। बुद्धि दीप्ति चेहरे में तीखी दृष्टि थी। दृष्टि क्या थी अच्छी खासी सर्जन की तेज छुरी थी जो सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति के हृदय में धँसकर मन का सच्चा हाल जान लेती थी। उसके चौड़े कन्धे थे फौजी अफसर की भाँति शरीर को काठ का सा बनाकर खड़ा रहता। आँखों के ऊपर का मांस उभर का फूला-फूला सा झूल रहा था। चेहरे पर किये गये निर्मम स्याही सी फुँक गयी थी। चेहरा अभी भी भरा-भरा था। पर उस चेहरे पर स्वास्थ्य की लाली नहीं नसे की तमतमाहट थी।[1]

---

1. चौदह फेरे, पृ0 20

2. मितभाषी :-

कर्नल स्वभाव से ही मितभाषी था। शिवानी ने लिखा है "कर्नल एक रहस्यमयी चुप्पी के आवरण में डूबा रहता और जब बोलता तो प्रत्येक शब्द को विवेक के तराजू में तौलता"[1]

3. दम्भी व्यक्तित्व :-

कर्नल का नाम उसके विशालकाय शरीर, गम्भीर स्वभाव एवं मितभाषण के कारण था। इस दम्भी व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए शिवानी ने लिखा है कर्नल का दम्भ भी उसके व्यक्तित्व का एक विशेष अंग था। वह ऐसे चलता जैसे वह पूरे संसार का एक क्षत्र निरंकुश सम्राट हो। उसकी छोटी आँखों में दूसरे की खिल्ली सा उड़ाता उसका अहं उसके गर्मीले स्वभाव को और भी स्पष्ट कर देता। उसके इसी दम्भी स्वभाव ने उसके मित्रों की संख्या और भी कम कर दी थी। और अनोखी अदा से साहब की प्रशंसा ग्रहण करता परन्तु उसके गम्भीर चेहरे पर आत्मश्लाघा की एक रेखा भी नहीं उभरती।"[2]

4. सफल व्यवसायी :-

कर्नल ने मि0 विल्सन के अधीनस्थ रहकर व्यवसाय के गुरुमंत्र को सीखा है, इसी से उसके जाने के बाद उसने उसके सम्राज्य को सम्भाला ही नहीं अपितु उसके जाने के बाद उसने उसके साम्राज्य को सम्भाला ही नहीं अपितु उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि की। "धीरे-धीरे विल्सन की अनुपम शिक्षा ने उसे एक कुशल व्यवसायी बना दिया। बड़ी-बड़ी फर्म से उसके लिए बुलावे आते पर अब वह अपनी जड़ के सहारे अभिमान से खड़े होने योग्य पुष्ट तमारू तरू था। व्यापार सम्बन्धी कोई भी जटिल समस्या होती पाण्डेय उसे मिनटों में सुलझा देता।"[3] प्रारम्भ में शिवानी उसके व्यवसाय के सम्बन्ध में स्वयं लिखती हैं जूट के व्यवसायी कर्नल का नाम उसकी छः फुटी विराट देह के बूते पर ही पड़ गया था। कोई ऐसा व्यवसाय नहीं था जिसकी डोर कर्नल के हाँथ में नहीं थी।"[4] इसी व्यवसाय के कारण कर्नल ने अपने भव्य

---

1. चौदह फेरे, पृ0 03
2. वही, पृ0 03
3. वही, पृ0 04
4. वही, पृ0 02

प्रासाद नन्दी का निर्माण किया था। अपनी व्यवसायिक कुशलता का मूल मंत्र वह आये दिन आयोजित पार्टियाँ प्रीतिभोजों के माध्यम से व्यक्त करता था।

5. प्रणयी :-

कर्नल वाह्य रूप में प्रत्यक्षतः रूक्ष, गम्भीर, मित भाषी था किन्तु उसके हृदय की अन्तःसलिला स्रोतश्विनी मधुर और बहुत गहरी थी। उसकी पत्नी नन्दी दिन और रात के व्यावहारिक अन्तर देखकर हतप्रभ रह जाती। "अरसिक कर्नल का प्रणय निवेदन भी उसकी शुष्क धमकी सा ही रहता। पति की निर्लज्ज प्रणयालाप से ऊबकर नन्दी कभी-कभी कान में उँगली धर लेती, हाय राम! कैसी छिछोरी बातें करता रहता है रात भर।"[1] शिवानी ने कर्नल के आन्तरिक प्रणय भावना की विवृत्ति मनोवैज्ञानिक भित्ति पर किया है। प्रायः मनोविज्ञान की यह मान्यता सत्य प्रतीत होती है कि बाहरी रूक्षता गम्भीरता और आडम्बर व्यक्ति के अन्तर में बहने वाले प्रेम की धारा अत्यन्त प्रखर होती है। सम्भवतः इसीलिए उग्र प्रणय निवेदन में अवरोध आने पर कर्नल पत्नी से विरक्त हो गया। उसके हृदयाकाश में विल्सन की पुत्री का कौमार्य जनित देहगन्ध बसी थी। बाद में नन्दी से तृप्ति न पाकर वह परमुखापेक्षी हो गया। इसीलिए उसके व्यक्तिगत सचिव की पत्नी कर्नल की प्रेमिका बन गयी। मल्लिका कर्नल की गृहस्वामिनी बन गई। "मल्लिका कर्नल के जीवन की घड़ी की चाबी थी बिना जिसके उसका एक पल भी सार्थक नहीं था।"[2] यही मल्लिका अपने रूप के चारे में कर्नल को फँसाकर अपने बहने के लड़के का विवाह कर्नल की पुत्री अहल्या से करनी चाहती थी और असफल रहने पर वह रूष्ट हो जाती है।

6. वत्सल रूप :-

कर्नल के हृदय में अपनी पत्नी और पुत्री के प्रति प्रेम अवश्य था। किन्तु फूहड़ता और गँवार पन के कारण नन्दी की उसने उपेक्षा की जबकि अहल्या का पालन-पोषण माता-पिता दोनों दृष्टियों से किया। अच्छी शिक्षा के लिए छात्रावास में रखना, उसकी सुख सुविधाओं का ध्यान और उसके विवाह हेतु जिस सुदर्शन जामाता का चयन किया था। वह कर्नल के लिए

1. चौदह फेरे, पृ0 07
2. वही, पृ0 28

उपयुक्त था। शिवानी ने लिखा है –"अहल्या को देखते ही आँख का अखबार नीचे रखकर कर्नल मुस्करा पड़ा। पिता के अप्रत्याशित स्नेह से अहल्या आश्वस्त होकर मोड़ा खींचकर बैठ गयी।"[1] कर्नल अहल्या का विवाह अपनी जाति बिरादरी, कुल गोत्र के अनुसार करना चाहता था। जो एक पिता का श्रेष्ठ धर्म है। उसने अहल्या को खाने पीने की मित्रों से मिलने की एवं वैचारिक स्वतंत्रता पूर्ण रूप से दी और उसके लिए सर्वेश्वर आई0ए0एस0 अफसर के रूप में पति का चयन किया था। वह कहता है "मैने तुम्हें बतलाया नहीं, बेटी मेरी आर्थिक अवस्था अब उतनी सुविधा की नहीं है, कितने ही उद्योगपतियों पर कीचड़ उछाला जा रहा है। तुम्हारा ध्यान आते ही मेरी नींद, भूख प्यास भाग जाती है। कर्नल का कण्ठ स्वर थोड़ी देर तक रूँध गया। अहल्या मेरी बच्ची, बड़े प्यार से उसके माथे पर हाँथ फेरते चुप बैठे रहे।"

7. परम्परा प्रेमी :-

कर्नल भौतिक प्रकृति के चलते उदार बन गया था। प्रदर्शन प्रियता उसे प्रिय थी किन्तु अपने वैयक्तिक जीवन में वह बहुत रूढ़वादी था। अपनी पुत्री अहल्या का विवाह अपने समाज से बाहर नहीं करना चाहता। मैं चाहता हूँ तुम्हारा विवाह अपने ही समाज में हो और हमारे समाज में सर्वेश्वर ही सबसे जगमगाता रत्न है।

तात्पर्य यह है कि चौदह फेरे का शिवदत्त पाण्डेय कर्नल, स्वावलम्बी, सुदर्शन, व्यवहार कुशल और प्रदर्शन प्रिय, दम्भी व्यक्तित्व सम्पन्न नायक कहा जा सकता है। जिसमें मद्यप, कामी, क्रोधी, परदार प्रिय दुर्गुणों का भाव नहीं था।

राजेन्द्र

यह 'चौदह फेरे' का प्रधान पात्र है जिसका विवाह कथा नायिका अहल्या के साथ होता है। राजेन्द्र फौजी अफसर है। देश हित में चीनियों के साथ युद्ध कर यह घायल हो गया था। ऊपरी व्यवहार से शुष्क और कठोर है। इसके बाह्य और आन्तरिक व्यवहार का मूल्यांकन शिवानी ने इस प्रकार किया है –

---

1. चौदह फेरे, पृ0 128

1. रूप :-

प्रायः शिवानी अपनी नायिकाओं के पति या वास्तविक प्रेमी का परिचय बहुत बाद में देती हैं। प्रथम बार अहल्या ने जब राजेन्द्र को देखा; उसके पैरों की युगल टखनियाँ बतासे सी सफेद लग रही थीं। बार-बार उस अपरिचित युवक के मोहक अवयव उसे किस गोरख धंधे में फँसाये लिये जा रहे थे, उससे झुझलाहट हो रही थी।"[1] ऐसे नायकों के रूप सौन्दर्य चित्रण के लिए शिवानी ने दो प्रकार की पद्धतियों का उपयोग किया है। कहीं-कहीं विस्तृत विवरण आपादमस्तक देकर सौन्दर्य का चित्रांकन किया है तो कहीं-कहीं उस सौन्दर्य के प्रभाव का चित्रांकन कर उसे सौन्दर्य शाली बताया है। राजेन्द्र ने शिवानी में दूसरी पद्धति का उपयोग किया है। "कैसी बच्चे की सी मीठी हँसी और झक-झक करते कैसे मोती से सफेद दाँत, प्रशस्त ललाट पर भींगे बालों का गुच्छा अंगूर के गुच्छे की तरह कैसे झूल रहा था।"[2]

2. रूक्षता :-

राजेन्द्र पुरूष मण्डली में अत्यन्त परिहास प्रिय व्यक्ति चित्रित हुआ है। किन्तु अन्तर्मुखी व्यक्तित्व होने के कारण वह अपरिचित युवतियों के समक्ष बातचीत करने में संकोच करता था।

अतः उसे लोग रूखा समझते हैं। अहल्या को लेकर जब वे पहाड़ से लौट रहा था। एकाकी अहल्या काँटों में गिर गयी थी। वह येन केन प्रकारेण राजेन्द्र का सान्निध्य प्राप्त कर बातचीत करना चाहती थी किन्तु अरसिक राजेन्द्र विकारहीन होकर खड़ा रह गया। शिवानी ने लिखा है "कुछ पीछे खिसक कर राजू चुप खड़ा रह गया ऐसे क्षणों में क्या किया जाता है। वह विवेकहीन युवक एकदम ही नहीं जानता था। अहल्या की झुंझलाहट बढ़ती जा रही थी क्या यह आदमी पत्थर का बना है। सिवाय रूखी-सूखी बातों के क्या इसके पास कुछ भी नहीं है।"[3]

---

1. चौदह फेरे, पृ0 83
2. वही, पृ0 130
3. वही, पृ0 160

3. शर्मीला :-

मनोविज्ञान के क्षेत्र में अन्तर्मुखी व्यक्तित्व अत्यन्त संकोची और स्वभाव से कुछ दब्बू या शर्मीले होते हैं, विशेष अपरिचित महिलाओं के सामने राजेन्द्र कुछ इसी प्रकार का व्यक्तित्व वाला पात्र है। यहाँ एक बात अवश्य ध्यान आकृष्ट करती है कि मुखरा शिवानी की नायिकाओं के कुछ प्रेमी उसके अपरूप सौन्दर्य से अप्रभावित रहते हैं और अन्त में उनका नायिकाओं से मिलन करा शिवानी पुरूष व्यक्तित्व के आश्चर्यजनक रूप का उद्घाटन करती है जिसे अहल्या के लिए देशी विदेशी सुदर्शन सम्पन्न युवक कृपा कटाक्ष पाने के लिए याचक से दिखाई देते थे। ऐसे रूप को सहज रूप में पाकर राजेन्द्र युवकोचित व्यवहार नहीं कर पाता। इससे अहल्या के रूप गर्भिता भाव को धक्का सा लगता है। विवाह की चर्चा करते हुए शर्मीला राजू हतप्रभ रह जाता है। ''पर अपने गम्भीर चेहरे को और भी गम्भीर बनाये राजू दा चुप ही बैठे रहे बुआ मैं आपसे हजार बार कह चुका हूँ कि मुझे शादी के चक्कर में नहीं पड़ना है।'' उसकी बुआ भी उसके इस शर्मीले रूप की चर्चा करती है। ''मैं तो जानती थी, वह तो लड़कियों से भी ज्यादा शर्मावे है। शादी के नाम पर कभी नहीं आयेगा। आजकल के लड़के सुन्दरी लड़की को देखने के लिए छत, मीनारों पर चढ़े रहते हैं और ये छोरा न जाने क्यों मरी छोरियों की भीड़ देखकर दुम दबा के भाग जावे है।''

4. निर्मम :-

लोकोक्ति है करेला और उस पर नीम चढ़ा राजेन्द्र गम्भीर रूक्ष, संकोची ही नहीं, कभी-कभी प्रणय प्रेम के मादक अवसर उपलब्ध होने पर वह अत्यन्त निष्ठुर, अरसिक और निर्मम हो उठता था। सम्भवतः शिवानी की यह दृष्टि बहुत सफल रही है कि नारी उस पुरूष की ओर अधिक आकृष्ट होती है जो उसके रूप सौन्दर्य की उपेक्षा हीं नहीं करता। स्पर्श आदि के सुअवसर उपलब्ध होने पर भी बड़ी निर्ममता से उसकी उपेक्षा करता है। अहल्या बसन्ती के विवाह में जब अपने पितृभूमि पहुँची, उस समय राजेन्द्र से उसकी भेंट हुई और वह जब वापस आने लगी तब बिना मिले ही जा चुका था। बसन्ती का पति धरणीधर अपनी परिहास से सब को आनन्दित करता जा रहा था कि अहल्या की आँखों के सामने राजू का निर्मम व्यवहार उसकी उपेक्षा अश्रुसिप्त कर गयी थी। ''जिस व्यक्ति ने उसे तनिक भी प्रश्रय देने की

चेष्टा नहीं की, जिसके अजेय पौरुष को उसका सौन्दर्य केवल एक दो बार ही व्यर्थ सी चुनौती देकर हार गया। उसके प्रति उसकी खिंचाव की क्या व्याख्या हो सकती थी।'' अपनी माता के दर्शन करके लौटती अहल्या को रात्रि हो गयी। ऐसे समय पगदंडी में चलते समय राजेन्द्र एक छड़ी लेकर उसे अहल्या को पकड़ाकर मार्ग दर्शक बनकर आता है। जबकि इस परिस्थिति में अहल्या की अपेक्षा और यह स्वाभाविक ही लगता है कि कोई दूसरा युवक उसका हांथ पकड़कर रास्ता चलता बाहर आता।

5. बहादुर :-

गम्भीरता, रूक्षता, सौन्दर्य के प्रति अरसिक दृष्टि से ही नहीं अहल्या राजेन्द्र की बहादुरी सूझ-बूझ पर भी मुग्ध थी। चीनियों के आक्रमण के समय उसने बहादुरी से मोर्चा हीं नहीं लिया और गम्भीर रूप से घायल हो गया। ''पर सुना बहुत बीमार रहा। हड्डी-हड्डी रह गया है। उसी का एकाध टुकड़ा रह गया है।''

6. परिहास प्रिय :-

शिवानी ने राजेन्द्र के आन्तरिक और वाह्य व्यक्तित्व का मूल्यांकन विचित्र शैली में किया है। परिचितों परिवारी जनों के मध्य राजू का उच्च अट्टहास, ठिठोली और परिहास प्रियता जगह-जगह वर्णित है। शिवानी ने लिखा है। राजेन्द्र की अपनी कोई बहन नहीं थी। इसी से बसन्ती पर उसका विशेष स्नेह था। प्रायः उसकी चोटी खींचकर धौल धप्पा लगाता। इसी स्नेह अधिकार से वह हवा की तरह उससे लड़ने पहुँच गया। बरातियों पर व्यंग कसता हुआ वह कहता हैं ''यहाँ बरातियों को खिलाते खिलाते भुरकस बन गया वाह क्या खस्ता कचौड़ियाँ है, अब समझ में आया कि बरातियों के भूख का क्या राज था।''

तात्पर्य यह है कि राजेन्द्र स्वस्थ अप्रतिम सौन्दर्यशाली, देशप्रेमी, सैनिक, सुदर्शन युवक जिसका अन्तर्मुखी व्यक्तित्व शिवानी की सूक्ष्म दृष्टि से सजाया सँवारा गया है। और इसी से अहल्या को विवाह के दिन घर से भाग कर राजेन्द्र के साथ चौदह फेरे लेने पड़े।

शेखर

यह रतिविलाप में संग्रहीत अभिनय लघु उपन्यास का नायक है। शेखर आई0ए0एस0परीक्षा उत्तीर्ण कर जिलाधिकारी बना अपने चंचल, लापरवाह, नारी लोलुपता और विलासता के कारण

अपकीर्ति ही नहीं कमायी अपितु नौकरी भी खो दी और अपने वाक्छल से उसे पाने में सफल भी होता है। उसकी वेशभूषा, चंचलता, दुस्साहस इत्यादि वाह्य आन्तरिक चरित्र का चित्रांकन शिवानी ने इस प्रकार किया है –

1. वेशभूषा -

वर रूप में शेर के सुदर्शन रूप उसकी मीठी हँसी की चर्चा शिवानी ने इस प्रकार की है। 'ठण्ठ से थरथराता दुल्हा और शरीर से चिपका भींगा कुर्ता वर्षास्नात् मुकुट के गणेश लक्ष्मी का कच्चा गुलाबी पीला रंग, उसके गोरे चेहरे पर रंग की लम्बी-लम्बी धाराएँ बनाता चला गया।''[1]

2. चंचल -

शिवानी ने शान्ता के छोटे पुत्र शेखर की चंचलता का उल्लेख अनेंक स्थानों पर किया है। बड़े भाई के मृत्यु की समाचार सुनकर शेखर नहीं पहुँचा उसकी माँ कहती है ''शेखर ने क्या जन्म से ही उसे दिन में भी तारे नहीं दिखा दिये थे। स्वभाव से ही चपल सुन्दरी सुरा लोभी, इस छोटे पुत्र से वह क्या आशा कर सकती थी।''

3. विलासी -

अच्छी नौकरी, अच्छा कैडर मिलते ही शेखर की विलासिता आकाश को छूने लगी। शिवानी ने लिखा है खाने से साहब को कोई मतलब नहीं रहता। दिन-रात पीने पिलाने की ही दावतें चलती हैं, साथ ही कई बैचमेट समय-समय पर कभी किसी मीटिंग और कभी किसी आयोजन का बहाना बना पके फलों सी टपकती रहती हैं।''

4. नारी लोलुप :-

शेखर की कामुकता सर्वत्र, नारी की देह यष्टि ढूँढ़ती रहती। किशोरी जीवन्ती को देख ''नारी सौन्दर्य के उस जन्मजात जौहरी का अविवेकी चित्त एक दूसरे स्वाद का चटखारा लेने भी मचलने लगा।''[2] यही शेखर ने उस जीवन्ती को अलभ्य रत्न मान पानी में ही झपट लिया। ''दुस्साहसी जौहरी ने उस अलभ्य रत्न को हथियाने में एक पल का भी बिलम्ब नहीं

---

1. अभिनय, पृ0 36
2. वही, पृ0 79

किया। हाँथ पकड़कर उसने उसे इस तेजी से दोनें सहित पानी में खींच लिया कि हड़बड़ा कर उसकी छाती पर ही आ गिरी''[1] शेखर पानी में ही उससे छेड़छाड़ कर अपने उन्माद का परिचय देने लगा ''उस अक्षत् कौमार्य की कस्तूरी मृग की सी नाभि सुगन्ध शेखर को पागल बना गयी। उस अपरिचिता अनामा किशोरी को बाहुपाश में बाँध वह पागलों की भाँति चूमता चला जा रहा था।''[2]

5. पतित :-

मद्यपी शेखर इतना नारी लोलुप हो उठा कि वह रिश्तों की पवित्रता ही भूल बैठा। अपनी विधवा भाभी के साथ रंगरेलियाँ मनाने में तनिक भी संकुचित नहीं होता था। शिवानी ने लिखा है। ''शान्ता सब कुछ देखती समझती और खून का घूँट पीकर रह जाती। दोनों ने लोक लज्जा को एकदम ही तिलांजलि दे दी थी। घूमना, फिरना, उठना-बैठना, तो साथ-साथ कब से चल रहा था। इधर दोनों ही बड़ी निर्लज्जता से कन्धों पर तौलिया लटका बैग में बलिस्त भर का स्वीमिंग सूट ठूँस रेलवे क्लब में एक साथ तैरने ही खुले खजाने जाने लगे।''[3] विवाहित होकर शेखर के समक्ष रजनी अपने कुँआरे मातृत्व की सूचना देकर उसके पतन की पुष्टि भी करती है।

6. विलासी पशु -

इस विलास और मदिरा ने शेखर के विवेक पर पर्दा डाल दिया। रजनी के विदेश चले जानेपर वह पशुवत कामाचार के लिए कुख्यात हो गया। इसीलिए ''वह अब अपनी चपरासी अर्दली की किशोरी नवेली पत्नी को छल बल से अपने बंगले में बुला अविवेक मदान्त शेखर उसे बाहुपाश में बाँध भूखे शेर सा उस पर टूट पड़ा।''[4] शिवानी ने व्यंग्यात्मक वाक्यों से उसकी इस दुःसाहस को वयक्त करते हुए लिखा है ''लगता था बुभुक्षित दुःसाहसी नारी लोलुप उस नये किराये दार की उपस्थित में ही इस बार शायद स्वयं सती की आत्मा को

---

1. *अभिनय, पृ0 80*
2. *वही, पृ0 87*
3. *वही, पृ0 73*
4. *वही, पृ0 91*

सहमाकर दूर खदेड़ दिया था। कभी-कभी आनन्द अनुभूति के बीच कभी-कभी नारी संग की उत्कृष्ट कामना उन्माद का रूप ले लेती है।''[1]

7. संकल्पवान युवक :-

उपनिषदों में 'तन्में मनः शिवसंकल्पमस्तु' कहकर यह धारणा को सुदृढ़ भित्ति प्रदान की गयी है कि यदि मनुष्य अपने पापों का प्रायश्चित करने हेतु संकल्प कर ले तो वह आपत्ति में भी शुभ संकल्प वाला बन जाता है। धीर मनुष्य कष्ट पाकर भी दुःखी नहीं होते। क्या राहु से ग्रस्त चन्द्रमा फिर निर्मल, स्वच्छ, उज्जवल, ज्योत्सना विकीर्ण नहीं करता। इसीलिए बारम्बार मन को शिव संकल्प वाला बनने की कामना की जाती रही है। शेखर भी पददलित, अपमानित, पदच्युत होने पर एकान्तवासी तो बना ही था। निर्वासित जीवन व्यतीत करते हुए उसने संकल्प किया कि वह अपने इस अपकीर्ति को मिटा कर ही रहेगा। इसी संकल्प के साथ उसे अपनी पत्नी के अभिनेत्री होने का चित्र संयोग से दिखा और वह पुनः सज सँवर कर उसके पास अपना मन्तब्य लेकर पहुँचा। शिवानी ने निराशा के समय उसके म्लान, सौन्दर्य की अपेक्षा संकल्प से उर्जस्वित रूप का चित्रांकन इस प्रकार किया है ''दर्शनीय व्यक्तित्व, दाढ़ी बनने पर उसकी चिकनी परते किसी किशोरी के कपोलों की सी ही स्वाभाविक लालिमा में ही रंग जाती थीं। तीखी नाक की यूनानी ढ़लान में शताब्दियों की सीची गयी ऊँची खानदानी गरिमा थी। जूतों की चमक सॅवरे नाखूनों की लज्जा और सर्वोपरि वाणी की मिठास उस छलनामय व्यक्तित्व को बराबर अपनी नम्रता के आवरण में ढाँप-ढ़ाँप कर साथ-साथ चलती थी। उसे देखकर कौन कह सकता था कि ऐसा सुदर्शन देवाकृति सुपुरूष कभी-कभी अपने अरण्यवास में स्वयं अपने ही कुकृत्यों से प्रकम्पित होकर सारी-सारी रात बिना पलक झपकाये ही काट देता है।''[2]

इसी संकल्प के बलबूते पर जब पहली बार उर्वशी के चाक चक्क वैभव को देखता है तो उसमें हीन भावना न आकर दृढ़ता आ जाती है। ''और कोई होता तो शायद चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगती किन्तु उस मृगेन्द्र के चेहरे पर एक सिकन भी नहीं उभरी वह तो जैसे

---

1. अभिनय, पृ0 93

2. वही, पृ0 95-96

अपने जिले के मंच पर खड़ा पुलिस टुकड़ी की सलामी लेता फिर वही ठसके दार जिलाधीश बन गया था। कन्धों में स्वयं ही एकेडमी की शिक्षा का तनाव आ गया। छात्री कबूतर के सीने सी तन गयी और उन्हीं नपे तुले कदमों में लम्बी डगें भरता वह मुस्कराता आगे बढ़ा।''[1]

इस प्रकार शेखर एक ओर उच्च पदस्थ अफसर, सहकर्मियों के मध्य सुदर्शन व्यक्तित्व सम्पन्न युवक था तो दूसरी तरफ चंचल, मद्यप, लापरवाह, कामुक, नारी लोलुप, दुःसासही और अन्त में संकल्पयुक्त होकर, सुदृढ़ व्यक्तित्व होकर अपने समस्याओं से पार पा जाता है।

दिनकर पाण्डेय

शिवानी के ख्यातलब्ध उपन्यास 'सुरंगमा' का मुख्य पुरूष नायक पात्र दिनकर पाण्डेय, राजनेता और मंत्री है। वह एक किशोरी का पिता है, स्वातन्त्रय आन्दोलन में जेल के डंडे खाये हैं। मारवाड़ी विनीता से प्रेम विवाह कर राजनीतिक सोपना में चढ़कर फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। दरिद्र परिवार का दिनकर काकी के व्यवहार से भागकर शिक्षा प्राप्त की, मंत्री पद पाकर भी वह ईमानदार बना रहा, किन्तु दुर्योग से अपरूप सुन्दरी सुरंगमा उसकी पुत्री की शिक्षिका ही नहीं बनी दिनकर के प्रणय पात्री भी बनी। घटनाएँ इस प्रकार घटित हुई कि उनकी पत्नी विनीता उसके अभिसार स्थिल को जानकर सरंगमा से स्थानान्तरण कराने का आदेश करती है। इस प्रकार दिनकर के राजनीतिक, पारिवारिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को उजागर कर इसके अन्तर बाह्य सौन्दर्य का जो रूप शिवानी ने अंकित किया है। वह बहुत आकर्षक प्रभावी बन पड़ा है। यदि उसके चरित्र में गुप्त प्रणय प्रसंग चर्चा न होती तो वह आदर्श महापुंरूष की श्रेणी में होता। ऐसा नहीं है कि गुप्त प्रेम प्रसंग में उसका चरित्र पंकिल, निस्तेज हो गया हो अपितु शिवानी जिन परिस्थितियों में सुंरगमा की भेंट उसके सौन्दर्य का मारक प्रभाव दिनकर की अर्न्तद्वन्द्व पत्नी की सांस्कृतिक गतिविधियों में अधिक लिप्तता के फलस्वरूप प्रौढ़ वयस में इस प्रकार की घटनाएँ स्वाभाविक हो उठ्ती हैं। शिवानी ने दिनकर के गुण अवगुण समन्वित चरित्र के जिस कौशेय पट का निर्माण किया है उसमें प्रांजलता, कल्पनाशीलता, रंगों की अनेंक छबियाँ झिलमिलाती हुई इन्द्र धनुषी रूप में प्रकट हुई हैं। यहाँ

---

1. अभिनय, पृ0 97

उसके त्रिआया की चरित्र का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। दिनकर के चरित्र के माध्यम से शिवानी ने भारतीय नायक की पुर्नव्याख्या मनोविज्ञान और आधुनिक परिवेश के अनुरूप की है, क्या पत्नी के रहते प्रौढ़ वयस के दुष्यन्त शकुन्तला का प्रणय आवांछित अकल्पनीय और असामाजिक था। क्या पत्नी के रूक्ष प्रेम से क्षुधातुर पुरूष किसी समीपस्थ सुन्दरी के सामीप्य की चाह नहीं करने लगता। इस तरह दिनकर के मन में उठे अन्तर्द्वन्द्व और उसकी आकस्मिक उत्तेजना जिस रूप में व्यक्त हुई है क्या वह आस्वाभाविक लगती है निश्चित रूप से शिवानी ने दिनकर पाण्डेय के चरित्र में आधुनिक राजनेताओं के साथ भारतीय नायकों की पुरानी परम्परा की को युगानुरूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

1. दिनकर का बाह्य सौन्दर्य :-

शिवानी दिनकर के बाल जीवन के अभावमयी करूण गाथा, युवावस्था का सौन्दर्य एवं प्रदेश के वरिष्ठ मंत्री के रूप में उसके बाह्य सौन्दर्य, शारीरिक गठन, श्यामवर्णी चेहरा, नुकुली टोपी, समानुपातिक आंगिकविन्यास, उज्ज्वल हास्य इत्यादि का चित्रांकन कर उसके मुख मण्डल की आभा, कान्ति और उनसे व्यंजित, आन्तरिक मनोभावों की अभिव्यंजना की है। सुरंगमा ने जब पहली बार उसके रूप को देखा शिवानी ने लिखा है – "श्यामवर्णी चेहरे को सद्यः फेरी गयी ब्लेड के स्पर्श ने और भी चिकना बना दिया था चौड़ा माथा, तिखी मुड़ी नासिका, प्रथुल अधर और मूँछों की पतली रेखा, चेहरे के साँवले रँगे से घुल-मिल गयी थी। मेदहीन छँटे छरहरे शरीर को देखकर लगता था पच्चीस से छब्बीस वर्ष का कोई तरूण सामने बैठा है किन्तु लाल डोरी दार आँखों में गहन क्लान्ति की अवछन्न छाया थी।"[1] इसी प्रकार अन्य प्रसंग में उज्जवल हँसी, साँवला आकर्षित रूप, नुकुली टोपी सयत्न निकाला गया केश गुच्छ और बुद्ध दीप्ति चेहरे के आकर्षण का शिवानी ने उल्लेख इस प्रकार किया है – "कैसी उज्जवल हँसी थी उस साँवले आकर्षक मंत्री की इसी बंकिम टोपी से निकला या पूर्वाभ्यास की यत्नपूर्णचेष्टा से निकाला गया वह केशों को मोहक गुच्छा, उस बुद्धदीप्ति चेहरे का आकर्षण द्विगणित कर देता था।"[2]

---

1. *सुरंगमा, पृ0 7*
2. *वही, पृ0 139*

दिनकर के बाह्य पाठ्येत्तर क्रिया कलाप और उसकी दर्पपूर्ण मुद्रा का उल्लेख शिवानी ने कई बार किया है। "अपनी असाधारण प्रतिभा, सौम्य, आचरण और स्वयं अपने सुदर्शन व्यक्तित्व के कारण पूरे कैम्पस में दिनकर का अनोखा रौब था, सीधा ढ़ीलम ढ़ाल कुर्ता और धोतीदार वह अद्भुत आत्मविश्वासी, युवक हाँथ बाँध तेजस्वी नरसिंह सी ग्रीवा उन्नत किये मंच पर खड़ा होता तो उसके पूर्व प्रशंसकों की तालियों से हाल गूँज उठता"[1] शिवानी ने उसके मोहक भाव भंगिमा युक्त मृदुल हँसी और झलकती श्वेत दंत पंक्ति का उल्लेख इस प्रकार किया है –"वह हँसा और साँवले रंग में उसके मोती के से दो दाँतों की उजली झलक ने उसकी वयस की मरीचिका में सुरंगमा को एक बार फिर भटका दिया।"[2] इसी भोली और निष्कपट हँसी से सुरंगमा आश्वस्त हो गयी थी। "उसकी गुनगुनाहट बहुरूपिया हँसी में खो गयी। कैसे स्निग्ध, स्नेही स्मृति का आह्वान था इस बार उस भोले निष्कपट शिशु की सी हँसी ने उसकी सारी घबराहट दूर कर दी।"[3]

इसी प्रकार अपनी पुत्री मिनी और सुरंगमा के साथ कार में बैठे दिनकर के मुखमण्डल की आभा अनामिका उँगली में पड़ा हीरा, आनन्दी तरूण की सी उज्जवल हँसी सुरंगमा के मन को भटका देती थी। शिवानी ने लिखा है "उसकी मजबूत मोटी अगुलियों के पकड़ के बीच अनामिका की अँगूठी का बड़ा सा हीरा, सहस्र जुगुनुओं सा चमक रहा था, शायद जानबूझ कर ही उसने टोपी उतारकर गोदी में रख ली थी और हवा में झूमते उसके घुँघराले केश पूरे ललाट पर बार-बार फैलते जा रहे थे। योर डैडी लुक्स सो यंग ही इज द मोस्ट हैण्डसम मिनिस्टर दिनकर ने जोर से हँसकर पुत्री की ओर गर्दन झटकी उस आकर्षक झटके में उसकी आनन्दी तरूण की सी उजली हँसी देख सुरंगमा को लगा कि वह एक नये ही व्यक्ति को देख रही है, कितनी ही बार इस रहस्यमय व्यक्ति की पल-पल बदलती इस मुख छवि उसके कलेजे में कुछ अटका सा दे रही थी, क्यों बार-बार अपनी एक ही चावनी से उसकी समस्त चेतना हर ले रहा था।"[4] इसी तरह ग्वाल देव के गर्भ गृह में आँख बन्दकिये

1. सुरंगमा, पृ0 146
2. वही, पृ0 8
3. वही, पृ0 9
4. वही, पृ0 165

दिनकर की मुख छवि का चित्रांकन शिवानी ने इस प्रकार किया है –"वह गम्भीर मुँह बना मन्दिर के गर्भ द्वार से सिर झुकाए भीतर चला गया था। देवालय के कोने में जल रहे घृत दीप के धुँध से प्रकाश में नतमस्तक आँखे मूदे अडिग मुद्रा में बैठा दिनकर दिख गया। दिनकर अचल मुद्रा में बैठा रहा। क्षण भर पूर्व चेहरे पर पड़ी शीतल जलधार ने उसकी श्यामल कान्ति को और भी सुचिक्कन बना दिया था, खादी के कुर्ते के बटनों से चमकती नान लोमश छाती को देख सुरंगमा का हृदय बार-बार धड़कने लगा।"[1]

तात्पर्य यह है कि शिवानी ने दिनकर के बाह्य रूप सौन्दर्य आनुपातिक द्विआंगिक विस्तार मुख मण्डल के शोभा, कान्ति, दीप्ति, स्निग्धता और विभिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न मनोविकारों के दर्पण बने मुख सौन्दर्य का चित्रांकन अनेंक स्थानों पर किया है। उसकी सरल निर्दोष दृष्टि चेहरे के उतार-चढ़ाव पत्नी और पुत्री को एक साथ देखकर जिस द्विअर्थक भंगिमा का उल्लेख शिवानी ने किया है वह बहुत ही प्रभावी है। क्योंकि उसमें एक ओर वात्सल्य का अगाध सागर दिखाई देता है तो दूसरी ओर उसमें याचना, तृषा, काम, राग की चटुल लहरियाँ भी दर्शक को मंत्र मुग्ध कर देती है।

2. अभावग्रस्त जीवन :-

प्रतिभा का कमल अभाव-पंक में खिलता है। दिनकर का बाल्यकाल अत्यन्त अभाव ग्रस्त रहा। शिवानी ने लिखा है – "कुमाऊँ के दरिद्र ग्राम का वह अनाथ युवक अनेंक अभावों में पलकर बड़ा हुआ था। पराए खेतों की गुड़ाई, खुदाई कर उसने अपनी स्कूल शिक्षा पूर्ण की थी। वजीफे की वैशाखियाँ टेकता वह युनिवर्सिटी तक पहुँचा था।"[2]

3. देश भक्त :-

दिनकर छात्र जीवन से ही देश की समस्याओं से अवगत हो चुका था। वह उसके लिए जेल भी गया। शिवानी लिखती हैं – "इसी बीच छात्रावस्था में देश के लिए झेली गयी जेल यात्रा ने उसे चट अपना वीसा थमा दिया। सोमेश्वर के चनौंदा आश्रम में जिन किशोरों को गोरे सिपाहियों के उद्दण्ड बैटनों ने गम्भीर शाप से आहत किया उनमें दिनकर अग्रणी थी।

---

1. सुरंग्रमा, पृ0 167

2. वही, पृ0 149

अभी उसकी पीठ में कंधे में, माथे में, उन विदेशी बैटनों के अनेक अमूल्य स्मृति चिन्ह भरे पड़े थे।[1]

4. राजनेता :-

दिनकर के जीवन में विनीता का आगमन उनके सौभाग्य द्वार को एकबारगी खटखटाता गया। देशहित, की गई जेल यात्रा, बेंत की उद्दण्ड मार को वह अपना सौभाग्य सूचक चिन्ह मानने लगा क्योंकि सुअवसर देख खान में छिपे वे अनमोल हीरे वे स्वयं ही जगमगाने लगे। गुणी जौहरियों को कब और कैसे उन धूमिल रत्नों की जगमगाहट से मोहा जा सकता है यह वह सरल युवक सम्भवतः उतना ही नहीं समझता था, किन्तु मारवाड़ी सहचरी की प्रखर व्यापार कुशल बुद्धि ने पति की बाँहे थाम उसे ठीक उसी जौहरी के द्वार पर खड़ा कर दिया, जो उन हीरों का उचित मूल्य आँक सकता था। शिवानी ने उसके नेतृत्व गुणों का आँकलन और उसके व्यवहार की झलक इस प्रकार दिखायी है 'दिनकर को राजनीति के अखाड़े में अपना स्थान बनाने में कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ा। एक नेता के जन्मजात गुण उसके रक्त मज्जा में बसे थे। आकर्षक व्यक्तित्व, ओजस्वी वाणी, रहस्यमयी मुस्कान, मुस्कराते अधरों पर संशय का कभी न खुलने वाला ताला। वह हाँ कर रहा है या ना कभी-कभी उसकी पर्यंकशायनी पत्नी विनीता भी नहीं समझ पाती। समय के साथ-साथ उसका व्यक्तित्व किसी वेगवती नदी के निरन्तर सहवास से चिकने बन उठे पहाडी वाल्हाड़ (पत्थर) सा ही चिकना बन उठ था। उसके यौवन का आकर्षण, प्रतिभा सम्पन्न सुन्दर तारूण्य का था, किन्तु उसके प्रौढ़त्व का आकर्षण था।- एक मंजे कुशल राजनीतिज्ञ का। आज वयस में मंत्रिमण्डल का सबसे छोटा सदस्य होने पर भी उसकी विलक्षण बुद्धि के बड़प्पन का लोह सब मान चुके थे।[2] इसी नेता क्षमता सम्पन्न बुद्धि के कारण ही वह गोप्य बात की भनक नहीं लगने देता यही उसका मंत्र है। वह कहता है मैं अब राजनीति के अखाड़े में ताल ठोंककर किसी भी खुरपेंच को ललकार सकता हूँ। मैं आज तक नीतिशतक के एक ही श्लोक की गायत्री जपता रहा हूँ।

1. *सुरंगमा, पृ0 152*
2. *वही, पृ0 153*

सत्याऽनृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंसा दयालुरपि चार्थपरावदान्या।
नित्यव्यथ प्रचुर नित्यधनागमा च।
वेश्यांगनेव नृपनीति नरेक रूपा।।

सत्यवक्ता भी हूँ, झूठ भी, कठोर वचन भी बोलता हूँ और मधुर भाषी भी हूँ, हिंस्र भी हूँ, दयालु भी। तीसरा पद प्रचुर नित्य धनागमा मेरे जीवन में साकार कर दिया वेश्या की भाँति मेरी नृपनीति के भी अनेंक रूप भी हैं।[1]

अपनी राजनीतिक पकड़ की मजबूती हेतु वह यदा-कदा केन्द्र में बुलाये जाने कि मिथ्या-सूचना प्रसारित कर देता। शिवानी ने लिखा है - "प्रखर से प्रखर विरोधी दल का सदस्य भी उसके कुटिल मस्तिष्क के दाँव पेच का ओर-छोर नहीं पा सकता था। कई बार उसे सेण्टर में बुलाये जाने की अफवाह व्यर्थ ही उड़ने पर उसकी राजनीतिक स्थिति को और सबल बना गयी।[2]

5. साहित्य प्रेमी :-

दिनकर कविता का प्रेमी बंगाल के बुद्धदेव बशु उनके प्रिय कवि रहे हैं। वह कविता को गुनगुनाने लगता है - "छोरो घर खनी मने की पड़े सुरंगमा" इस कविता पाठ के पश्चात दिनकर सुरंगमा से कहता है "मेरे शुष्क जीवन को साहित्य बहुत पहले ही छोड़ चुका है। पल भर पूर्व विस्मृत कविता के छन्दों में स्वयं ही पेंगे लेकर झूलता मंत्री सहसा उदास हो गया था।'[3]

इसी प्रकार नैनीताल और कुमायूँ की प्राकृतिक सुषमा देख वह बारम्बार भावुक हो जाता था। अवनीन्द्र नाथ ठाकुर के चित्र को देख वह कहता है - "काँख में पीतल की कलशी लिए उस अद्‌भुत चित्र की जल स्नात सुन्दरी पानी भर पोखर से लौट रही है, एक पैर जल में डूबा है दूसरा सीढ़ी पर सोचता था, ऐसा चित्र अब कोई क्यों नहीं बनाता पर देख रहा

---

1. सुरंगमा, पृ0 154
2. वही, पृ0 8
3. वही, पृ0 187

हूँ विधाता ने उससे भी अधिक मोहक चित्र बनाकर धरती के सब चित्रकारों की तूलिका तोड़कर रख दी है।''[1]

6. पत्नी प्रेमी :-

विनीता दिनकर का प्रथम प्रेम था। वह उसके रूप आकर्षण से कम किन्तु मूलधन से ज्यादा बड़े ब्याज रूपी कृतिम सौन्दर्य से प्रभावित था। अपने प्रथम प्रेम की याद में वह अब तक दृष्टि पथ में आयी हुई स्त्रियों के विविध रूप का चिन्तन करता है – ''आज तक नारी का उसने एक सर्वथा भिन्न रूप देखा था, काले जीर्ण लँहगों में डलिया में दूध पीते शिशु को छोड़ दिन भर कुमायूँ की दुर्गम जानलेवा घाटियों में घास काटती नारी, सास की फटकार मार ही से नहीं गर्म चिमटे के दग्ध छुअन से चीखती चिल्लाती नारी पुरूष के अन्याय, अत्याचार को असीम सहनशीलता से झेलती नारी की यह सर्वथा भिन्न, नवीन मोहक विलास मयी छटा वह पहली बार देख रहा था अलस पदचाप दिव्य पूर्ण स्मित, हाथ में झूल रहा साड़ी से मेल खाता पर्श, उलुंग एड़ियों पर सुदीर्ध देह का पल-पल बदलता रूप उसे बाँधता चला गया।''[2] ऐसी प्रेमिका से उसने विवाह किया, उसके लाड़ प्यार का कोई अन्त नहीं रहता। विनीता कहती है –''कभी तो आपके लाड़ दुलार का अन्त नहीं रहता, वह बहुरूपिया सहचर उसे बाँहों में बाँधकर उसके कान से अधर सटा लेता।''[3] बीच-बीच में उसके नारी सम्बन्धों अफवाहों को सुनकर सजग विनीता के आँखों में तैरते शक की परछाई को भाँपकर उसका प्रेमी विनीता को हवाई अड्डे में जाकर स्वागत करता, और कभी अपने मन में संकल्प करता ''जिस पत्नी ने उसे हाँथ पकड़कर वसुन्धरा पर प्रेम का पहला कदम रखना सिखाया था, जिसके पितृगृह की महिमा ने उसके जीवन की बंजर भूमि को सींच-सींचकर लहलहाती फसल से समृद्ध किया था। उसे वह नहीं छलेगा।''[4]

वह जब भी बाहर जाता अपनी पत्नी के लिए कुछ न कुछ उपहार अवश्य लाता विनीता के रूष्ट होने पर दिनकर का आचरण किस प्रकार बदल जाता है, शिवानी ने लिखा है –

1. सुरंगमा, पृ0 187
2. वही, पृ0149
3. वही, पृ0 153
4. वही, पृ0 195

"उसने पत्नी का हाँथ उठा अपनी छाती से लगा लिय, रूठी पत्नी को मनाने के लिए अब जिह्वा की कोई भी दलील अब कारगर नहीं सकती यह वह समझ गया, ड्राइवर की उपस्थिति में जितना प्रेम प्रसंग सम्भव था उतने से ही तनी विनीता को बाँधता, सहलाता वह गन्तब्य आवास पर पहुँचा था। किस माननी पत्नी के उपालम्भ के रोड़े कंकड़ प्रेम प्रदर्शन की सशक्त बन्या में नहीं बह जाते।"[1] बात यह है कि पुरूष नारी की प्रेम प्रदर्शन की इसी दुर्बलता का तो दिन-रात लाभ उठाता है। वह अक्षम्य अन्याय से नारी को कितना क्यों न सता ले जहाँ उसे बाँहों में भर मैं तुमसे प्रेम करता हूँ इस पंच मृत्युजयी शब्दों का अमृत घूँट पिलाता है, नारी सारा रोष भूल जाती है। पत्नी यदि चरित्रहीनता होती है तो शायद विरला ही कोई निवीर्य पुरूष ऐसा होता होगा जो उसके कलंक का डंक न पीटे। परन्तु बड़े से बड़े कलंक का विष घूँट भी कंठ में ही घुटक स्वयं नीलकंठी बन पत्नी उसके सुनाम को सेंट लेती है। दिनकर ने अपनी सफाई जिस मनोवैज्ञानिक तर्को से करता है वह उसके पत्नी प्रेम को ही व्यक्त करता है। वह कहता है "राजनीति में केवल कीचड़ है उसी कीचड़ में जव कमल उगता है तब क्या यह सम्भवहै कि उस पर कीचड़ के धब्बे ही न पड़ें। तुम मेरी अर्द्धागिंत्री हो यदि तुम ही मुझ पर अविश्वास करने लगी तो बताओ मेरी स्थिति क्या रह जायेगी। मैं आज अपनी पूरी इर्ष्यादिग्ध बिरादरी की आँखों में किरकिरी हूँ तुम जानती हो मेरी महात्वाकाँक्षा क्या है? मैं जानता हूँ कि एक न एक दिन समग्र देश की सत्ता स्वयं सरसराती हुई मेरी मुठ्ठी में ऐसे ही सिमटकर बन्द हो जायेगी अपनी बुद्धि मुठ्ठिका फिर वह बड़े नाट्कीय कौशल से विनीता के नाक के नीचे ले आया था, मेरा यह अश्वमेघ यज्ञ कैसे सम्पन्न होगा विनीता जी यदि तुम स्वयं मेरे अश्व की लगाम पकड़ कर रोक लोगी। जो पति अपनी पत्नी का विश्वास नहीं पा सकता उस अभागे का फिर संसार का अकर्मण्य से अकर्मण्य व्यक्ति भी विश्वास नहीं करता।"[2] वाकपटु दिनकर ने अपने चतुर प्रेमी रूप मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित तथ्यों से सुरंगमा के प्रति विनीता के मन में उत्पन्न परछाई और अविश्वास के बादल को उड़ा दिया। विनीता सोचने लगी कि ऐसे देव तुल्य पति पर अविश्वास कर उसनें

---

1. सुरंगमा, पृ0 201
2. वही, पृ0 202

मूर्खता का ही परिचय दिया।

7. रसिक प्रेमी :-

दिनकर ने सुरंगमा को पहल दृष्टि में देखकर वशु की कविता सुनाकर अपने हृदय की सौन्दर्य पारखी और रसिकता का परिचय दिया था। दिनकर वयस में प्रौढ़ महिमावान मंत्री और अब तक चरित्र की पूँजी को सुदृढ़ता से सेंतता उसकी मुठ्ठी से कब खिसककर सुरंगमा के मुट्ठी में बँध गया, वह समझ ही नहीं पाया। नैनीताल प्रवास ग्वालदेव के मंदिर में सुरंगमा का सानिध्य उसके समक्ष एकान्त में अपने प्रेम का प्रदर्शन वर्षास्नात सुन्दरी सुरंगमा को आलिंगनबद्ध कर अपने हृदय की करूण किन्तु मार्मिक याचना प्रस्तुत की, जिससे सुरंगमा विवश हो गयी। उससे बचने के लिए सुरंगमा निभृत जनशून्य स्थान में मकान लेकर रहती है। तो दिनकर अर्द्धरात्रि के बाद वेश परिवर्तन कर चोरी-चोरी उससे मिलने जाता है अनेक बहुमूल्य दामी उपहार देकर अपने उद्दाम प्रेम की अभिव्यंजना करता रहता है।

वर्षास्नात सुरंगमा के उत्तेजक रूप को देख दिनकर अधीर हो गया। ''सुरंगमा की वर्षास्नात देह को बाँहों में भरकर उसे उनमत्त अधैर्य से चूमने लगा।''[1] अन्यत्र वह कहता है ''देख लिया न सुरंगमा भागने पर भी तुम नियति को नहीं छल सकती जब-जब ऐसे घबराकर भागोगी, ठोकर खाकर गिरोगी। तुम्हारा यह सेवक, यह दासानुदास तब तुम्हें ऐसे ही सँभाल लेगा। एक बार उसकी दुर्बल देह को काँपती लता सा तरंगित कर वह उसके कानों के पास अधर सटाकर कहने लगा।''[2] दिनकर सुरंगमा से छिपकर रात्रि में मिलने जाता है भागकर आये हुए प्रेमी के रूप को देखकर सुरंगमा हतप्रभ रह गयी। शिवानी ने लिखा है - ''वह बंद द्वार पर अपनी चौड़ी पीठ लगाये खड़ा हो गया, उसका साँवला चेहरा, कोबरा की पीठ सा चमक रहा था, उन्नत ललाट पर घुँघराले बालों के छल्ले फैलकर आँखों तक उतर आये थे, वह अब भी हाँफ रहा था, लग रहा था तेजी से दौड़ लगा सीमा की डोरी थामे हाँफता कोई क्रास कन्ट्री रेश का विजयी धावक खड़ा है।''[3] वह आतुर प्रेमी बनकर

---

1. सुरंगमा, पृ0 187
2. वही, पृ0 187
3. वही, पृ0 226

आत्मविश्वास से नन्हीं बच्ची की तरह सुरंगमा को उठाकर कहता है "यहाँ आओ सुरंगमा, आओ तुम्हें दिखाऊँ मेरा कलेजा अब भी कैसे किसी गेंदा सा उछल रहा है। ऐसी दौड़ लगाकर संसार का कोई भी दुःसाहसी प्रेमी क्या आज तक अपनी प्रेमिका के पास ऐसी तीव्र गति से आ पाया है।"[1]

सुरंगमा की अनिश्चित दशा देख उसका उनमत्त प्रेमी उसके भय को बेवजह बताता हुआ समझाता है वह कहता है – "सुरंगमा, सुरंगमा ईश्वर नहीं हम दोनों की सृष्टि ही एक दूसरे के लिए की है। मैं अब तक अपने को झलता रहा नहीं यह पाप है, पाप है, मेरी पत्नी है, पुत्री है, पर नहीं मैं किसी का सेवक नहीं हूँ , किसी का नहीं, केवल तुम्हारा जिस दिन तुम्हे पहली बार देखा था। उसी दिन से केवल तुम्हारा सेवक बना। उसे छाती से चिपकाये ही वह पागलों की तरह बड़बड़ाता हुआ तखत की ओर बढ़ा। सुरंगमा को बड़े यत्न से उस पर बिठा वह स्वयं जमीन पर बैठ गया, फिर अपना तप्त चेहरा उसने सुरंगमा के थर-थराते गौर चर्ण युगल पर रख दिया।"[2] प्रणयी यह भली भाँति जानता है कि उसकी अनन्य याचना यदि एक निष्ठता से व्यक्त की गयी है तो वह कभी व्यर्थ नहीं जाती है। दिनकर अपने मन के हाँथो विवश होकर कहता है – "सुरंगमा दिनकर ने एक बार फिर उसे खींचकर छाती से लगा लिया। मैं जानता हूँ, कि मैने यह ठीक नहीं किया, पर मैं न आता तो शायद पागल हो जाता। पागलों की तरह तुम्हें पुकार-पुकार कर शायद अपनी कोठी की दीवारें गुँजा देता, अपने इस एकान्त में एक हितैषी मित्र के रूप में मुझे कभी-कभी स्वीकार करोगी मेरी ओर देखो।" फिर दिनकर अपनी दीनता, असहाय अवस्था और अपनी इस उद्दाम भावना को व्यक्त करता हुआ कहता है "तुम नहीं जानती सुरंगमा, कण्ठ में दिन रात, शत्शत् पुष्पहारों को धारण करने वाला प्रदेश का यह महिमामय मंत्री कितना अकेला है, कितना अभागा है। कभी-कभी लगता है पत्नी, पुत्री, इष्ट मित्र सब मेरे मंत्री पद के इर्द गिर्द मँडराते नक्षत्र गण मात्र हैं। मैं अपने इन्हीं उदास रिक्त क्षणों को कभी-कभी तुम्हारे साथ बिताना चाहता हूँ।"[3]

---

1. *सुरंगमा, पृ0 226*
2. *वही, पृ0 226*
3. *वही, पृ0 227*

इस प्रस्ताव को सुरंगमा ने समझा कि दिनकर उसे अपनी रक्षिता बनाना चाहता है। अतः वह कुपित होकर उसे बाहर जाने का आदेश करती है किन्तु धृष्ट दिनकर उसके कंधे धाम अपनी ओर मोड़कर एक ऊर्ध्वमुखी फूँक का संचित धुआँ उसके चेहरे पर फैला दिया। अपने अधर फिर उसके अश्रुस्रिक्त कपोलों से सटा लिया। कैसी मीठी बयार है तुम्हारे सौरभमयी साँस सी मधुर अब इसी रात को याद कर जीवन भर गुनगुना सकता हूँ।

छोट्टो घरखानी मने की पड़े सुरंगमा?

मने की पडे, मने की पड़े?

जानालाय नील आकाश झरे

सारा दिनरात हावाय खड़े

सागर दोला.................''[1]

उसका बहुरूपिया प्रेम कभी चादर ओढ़कर देहाती बनकर चला आता। कभी साइकिल के दायें बायें दूध की रिक्त बाल्टियाँ खनखनाता दूधवाला। शिवानी ने इस प्रेम के कारण दिनकर के मन के उल्लास और चेहरे में आये परिवर्तिन को देखते हुए लिखा है एक ही महीने में दिनकर के चेहरे पर नव तारूण्य हिलोरे लेने लगा था। विनीता इस सौन्दर्य को देख हतप्रभ रह जाती है। ''जिस प्रौढ़ पति के क्लान्त खीझे चेहरे की स्मृति अपने पासपोर्ट में दाब वह साथ ले गयी थी। वह तो यह नहीं था यह तो जैसे बीस वर्ष का मारवाड़ी धर्मशाला की खटिया पर बैठा नोट्स बना रहा उसका लजीला प्रेमी मुस्करा रहा था। गालों पर स्वस्थ्य संतोष की लालिमा थी। कपोल भरने से आँखें कुछ छोटी लग रही थीं। किन्तु तीखी नाक की आकर्षक झुर्रियां और भी आकर्षक बन कितने वर्षो बाद आज फिर उसका कलेजा धड़का रही थीं।''[2] और इस प्रेम-गाथा का सकरूण अवसान हुआ। विनीता उसके इस गुप्त रहस्य से परिचित हो सुरंगमा को अपना स्थानान्तरण कराकर बाहर जाने का आदेश दे दिया।

---

1. सुरंगमा, पृ0 228
2. वही, पृ0 228

8. पत्नी हन्ता :-

दिनकर हाईस्कूल प्रथम श्रेणी में पास कर वजीफे की वैशाखियों से आगे इण्टर कर ही रहा था कि उसकी काखी ने टाउन स्कूल के दरिद्र हरदत्त मास्टर की पुत्री साँवली नाक सुड़कने वाली परू से उसकी सगाई कर दी। यद्यपि दिनकर ने गुलेरी की कहानी "उसने कहा था" पढ़कर कर कैशोर्य के मीठे सपने थे। तथापि सन्नपात ज्वर से पुनः जीवित होकर परू के कुरूप रूप को देख उसका मन विरक्त होकर उसे छोड़ शहर भाग गया। ब्राम्हण की वधू परू का किसी अन्य पुरूष से अचल ग्रन्थि का प्रश्न ही नहीं उठता था। अतः मास्टर पिता ने उसे पढ़ा लिखा अध्यापिका बना दिया। दिनकर के अपराधी चित्त के पश्चाताप ने उसकी असमय पदोन्नति करवा हेड मिस्ट्रेस बनवा दिया था। उसकी पत्नी जब मंत्री दिनकर से मिलने आती है तो दिनकर अपने सचिव दीक्षित से कहता है कि इन्हें सभी आर्थिक सुविध ाएँ दे दो परन्तु, अपने हक को मेरा पहूँचा पकड़ने की कोशिश करे तो दीक्षित को क्या करना है यह उसे पता है। परिणाम यह हुआ कि हेड मास्टरनी के आकस्मिक मृत्यु की सूचना प्रसारित हो गयी। इस हत्या के पीछे दिनकर की कोई आन्तरिक मनसा नहीं थी। वह स्वप्न में उसे दिखाई पड़ती। शिवानी ने लिखा है "कभी-कभी आधी रात को उसके काँटों भरे ताज की चुभन किसी दुस्वप्न के बीच उसे झकझोर कर जगा देती। उस दुस्वप्न की मुख्य भूमिका में परू ही सदैव अवतरित होती थी। हाँथ में बीड़ी लिए उस पगली भिखारनी की भाँति वह अपने छोटे-छोटे केश दग्ध करती मुस्कराकर उसकी टोपी को भी जली बीड़ी के दाग नन्हें-नन्हें सुरागों से भर देती। क्यो अब तुम सुख से हो न पर तुमने ठीक नहीं किया, जानते हो मेरी चाह में घोले गये उस विष ने मेरे कलेजे में कैसी आग फूँकी थी। ठीक वैसे ही एक दिन तेरा कलेजा भी फूँकेगा हत्यारे, वैसे ही ज्वाला से तू इधर-उधर जलता भागेगा और जीवन भर तेरे ही हृदय की लपटें तुझे झुलसाती रहेंगी।"[1]

9. प्रायश्चित कर्ता :-

मनोविज्ञान में यह कहा जाता है कि व्यक्ति जाने-अनजाने अपने किये गये

---

1. सुरंगमा, पृ0 182-83

अपराधों को याद रखता है और सामाजिक स्थिति तथा अपराध में जब अन्तर्द्वन्द्व होता है तो अर्न्तमुखी व्यक्तित्व इन कर्मो के प्रति ग्लानि अनुभव करता है। दिनकर को स्वप्न में आई परू के अभिशाप और अपने पत्नीहन्ता होने के अपराध के प्रति ग्लानि उत्पन्न होती है तो वह प्रायश्चित स्वरूप बड़बडाने लगता है। शिवानी ने लिखा है –"नहीं, नहीं मैने यह सब करने को तो दीक्षित से नहीं कहा था, मैं निर्दोष हूँ, मैं निर्दोष हूँ। कहता वह कभी उत्तेजित हो अकेले कमरे में ही खड़ाखड़ा ऐसे बड़बड़ाने लगता। अपने निर्दोष होने की अदृश्य अर्जी वह चितय मन्दिर की फड़फडाती अर्जितयों के बीच टॉंग आया था। हस्ताक्षर किये थे उसके शुद्ध अन्तःकरण ने सचमुच ही उसने परू की मृत्यु कामना नहीं की थी। उस न्यायप्रिय देवता की अदालत से लौटने पर उसका चित्त फूल सा हल्का हो गया था।"[1]

10. प्रतिक्रियावादी :-

दिनकर का बाल्यकाल दरिद्रता में बीता है उसके कक्का और काखी उसे बहुत प्रताड़ित करते। एक बार रात्रि को पेट दर्द की दवा लेने के लिए कक्का ने मोतीराम वैद्य के पास उसे भेजा था। रात्रि के अंधकार से डरा दिनकर नाली के पानी में कुछ कीचड़ मिलाकर कक्का को पिला दिया था। रहस्य खुलने पर उन्होंने दिनकर का सारा शरीर मार-मारकर लहूलुहान कर दिया था। ऐसे कक्का काखी से बदला लेने के लिए वह मंत्री बनने के बाद भी गॉंव की उन्नति नहीं चाहता था। गॉंव का एक पुराना वृद्ध कहता है "दिनुआ एकदम दो कौड़ी का निकला हुजूर। आज मनिस्टर की ऊँची कुर्सी पर बैठा अपने बैठाने वाले को भूलकर रह गया है। क्या किया इस गॉंव के लिए कभी आता है तो चोरों की तरह मुँह छिपाकर नैनीताल भवाली से लौट जाता है। जिस स्कूल में अ, आ सीखे उसे आज तक हाईस्कूल नहीं बना पाया, सब गॉंव बिजली से जगमगा रहे हैं यहॉं साले ने बिजली के खम्भे ही गाड कर रख दिये हैं। जिस चाचा ने पाला पोषा वरमपट ब्याह किया उस अभागे पर मक्खियाँ भिनक रहीं है। कभी एक पॉंच रूपये का मनीआर्डर भी तो नहीं भेजा।"[2]

---

1. सुरंगमा, पृ0 183
2. वही पृ0 174

11. ईमानदार नेता :-

राजनीति वरांगना के समान जटिल, दुरूह अनेक रूपा होती है। साम, दाम, दण्ड, भेद, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी उसके कार्यसिद्धि के साधन होते हैं किन्तु दिनकर अन्तःकरण शुद्ध था। विपक्षी नेताओं ने उसके विरूद्ध कुछ भ्रष्टाचार और चन्दे की रकम खाने का आरोप लगाया था। दिनकर स्वयं कहता है "मुझ पर एक बार सशक्त विरोधी दल ने लांच्छन लगाया था कि मैं चुनाव का चन्दा खा गया हूँ और विदेश के कई बैंकों में मेरा भारी खाता खुला है। मैं स्मगलरों के यहाँ दावतें खाता हूँ और मेरी पत्नी सिंचाई इंजीनियरों से खुले आम घूस लेती है।"[1] दिनकर अपने को निर्दोष सिद्ध करने के लिए उग्र, तेजी महादेव के प्रतिरूप ग्वालदेव के समक्ष अपनी अर्जी लिखकर दोषमुक्त होने की प्रार्थना करता है। दिनकर लिखता है "मैं निर्दोष हूँ ग्वालदेव एकदम निर्दोष, आपही न्याय करें और इस मिथ्या कलंक से मुझे मुक्ति दें। मैं मान्यता हूँ कि विदेश के बैंकों में मेरा भारी खाता है किन्तु वह रूपया मेरी निजी सम्पत्ति है, श्वसुर कुल से अर्जित सम्पत्ति। तुम्हारे नाना के वैभव को कौन नहीं जानता मैं स्वीकार करता हूँ कि मैने स्मगलरों से रूपया वसूला है किन्तु किसलिए क्या अपने लिए? नहीं, अपनी पार्टी के लिए एक पैसा भी मैने यदि अपने पर खर्च किया हो तो मेरे अंगअंग में गलित कुष्ठ फूटे और यदि मैं निर्दोष हूं तो आप मुझे दोषमुक्त करें। मैं जानता हूँ मैं डाकू हूँ, किन्तु ऐसा डाकू हूँ, जो अमीरों का लहू चूस गरीबों को जीवन देता है। मुझे गर्व है मैने अपनी इस टोपी पर आज तक कीचड़ का एक छीटा भी नहीं लगने दिया है।"[2] और ग्वाल देव ने आरोपकर्ता को कठोर दण्ड देकर दिनकर को आरोप मुक्त किया था। यद्यपि दिनकर ने ऐसे कठोर दण्ड की याचना नहीं की थी। क्योंकि संसद का वह छोटा सदस्य अर्जी टाँगने के दूसरे दिन ही ट्रेन से उतरते समय कटकर जवान पत्नी और दुधमुँहे बालक को अनाथ बना गया था।

12. वत्सल पिता :-

दिनकर किशोरी मिनी का पिता है। उसकी पढ़ाई-लिखाई की सम्यक् व्यवस्था हेतु

---

1. सुरंगमा, पृ0 168
2. वही, पृ0 169

ट्यूटर की नियुक्ति करता है। पति-पत्नी दोनों घर से प्रायः बाहर रहते हैं। अतः कोई महिला ट्यूटर ही उनके यहाँ उपयुक्त है। यह बात भली भाँति जानता है। पुत्री को लेकर उसे नैनीताल घुमवाने ले जाता है। यद्यपि पुत्री के कुछ अबाध्य आचरणों से वह आन्तरिक रूप से रूष्ट रहता है तथापि अपने मन की अप्रसन्नता को अव्यक्त ही रहने देता है। वह सुरंगमा से कहता है "नहीं, नहीं आप को जैसे भी हो, समय निकालकर बेबी को पढ़ाना ही होगा मिस जोशी, देखिए साफ ही कह दूँ आपसे इकलौती पुत्र होने के कारण और कुछ हम दोनों के अधिकतर बाहर रहने से लड़की एकदम ही हाथ से निकली जा रही है। मेल ट्यूटर मैं रखना नहीं चाहता। इसीलिए मैं आपसे बार-बार अनुरोध करूँगा कि आप ही उसका भार ग्रहण कर हमें उबारें।" छात्राावास में रहते मिनी नींद की गोलियाँ खाती, सिगरेट फूँकती उस अत्याधुनिका छात्रा की आस्वाभाविक रूप से प्रगतिशील गतिविधि देख दिनकर पत्नी से कहता है- "विनीता अब तुम अपनी बेकार की समाज सेवा त्यागकर घर पर रहो लड़की बरबाद हो रही है। मुझे कहाँ इतना समय है जो इसकी लगाम खींचू"[2] दिनकर अपनी पुत्री से भावुक होकर अपने पूर्व जीवन के भावुक क्षणों को सुनाता रहता है। तात्पर्य यह है कि दिनकर अपनी पुत्री के अबाध्य आचरण से भयग्रस्त अवश्य है किन्तु वह उससे असीम दुलार भी करता है।

13. साधक :-

प्रारम्भ से ही दिनकर के संस्कारों में ईश्वर भक्ति प्रमुख थी। उस पर जब-जब संकट आता ग्वाल देव के गर्भ गृह में उग्रतेजी महादेव के सम्मुख आँख बन्दकर प्रार्थना और समस्या के समाधान के लिए आत्म निवेदन करता था। वैवाहिक और राजनीतिक जीवन में अप्रिय प्रसंग आने पर अपने मन को संयमित करने के लिए वह पूजा-पाठ साधना में अधि क समय लगाने लगता। शिवानी ने लिखा है "नित्य प्रातःकाल घण्टे भर का पूजापाठ उसका दैनिक नियम था। अब उसी अवधि को उसने और प्रलम्ब कर दिया, ललाट पर रोली चन्दन के तिलक को यत्न से सॅवार उसने चंचल चित्त पर संयम की मुहर और सुस्पष्ट कर दी थी।"[3]

---

1. सुरंगमा, पृ0 141
2. वही, पृ0 154
3. वही, पृ0 197

तात्पर्य यह कि दरिद्र पहाड़ी ग्राम का दिनुआ ब्राम्हण प्रतिभावान छात्र किशोर अवस्था में मिशनरी कम्पाउन्ड में रहने वाली छोकरियों को झाड़ी के छिपकर पीछे देखने वाला दिनकर स्वावलम्बी बनने हेतु उच्च शिक्षा पाने की अभिलाषा से कलकत्ता पहुँचता है विनीता से प्रेम विवाह कर राजनीति के रेश का सबसे तीव्रगामी अश्व ही नहीं बनता, अपनी कर्तव्यनिष्ठा, दूरदर्शिता, ईमानदारी और स्वच्द चारित्रिक छवि के कारण प्रदेश का महिमावान मंत्री बन जाता है। प्रौढ़ वयस उसके जीवन में रिक्तता लेकर आयी और वह अपूर्व सुन्दरी सुरंगमा से अनुरक्त हो उसे अपनी रखैल बना लेता है। एक से एक दामी उपहार के गुप्त सूत्र पत्नी विनीता के हाँथ अचानक ही लगते हैं और इसकी गुप्त प्रणय गाथा का करूण अवसाम हो जाता है। शिवानी ने सुरंगमा के माध्यम से दिनकर के आंगिक वाह्य सौन्दर्य, वेशभूषा, मनोविकारों की अभिव्यंजना हेतु, मुख मुद्राओं का उल्लेख, आन्तरिक गुण-अवगुणों की व्याख्या परिस्थिति सापेक्ष रूप में की गयी है। वह प्रेमी भी है, पति भी, पिता भी है, कुशल स्वच्छ छवि वाला एवं चरित्र सम्पन्न नेता भी है, यदि यह कहा जाय कि दिनकर आधुनिक नेताओं का प्रतीक है तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं।

कौस्तुभ

यह 'स्वयंसिद्धा' का नायक और प्रधान पुरूष पात्र है। कथानायिका माधवी से विवाह कर जब उसे अपने घर लाया इसके पूर्व राधिका ने माधवी को पत्र लिख यह सूचित किया था कि वह माधवी की सौत है। कौस्तुभ के समझाने पर माधवी प्रथम रात को ही पति गृह परित्याग कर पिता के यहाँ आ गयी और कौस्तुभ का विवाह एक कुरूप स्त्री से हो गया। कौस्तुभ सपत्नी यात्रा कर रहा था कि अचानक उसकी भेंट पूर्व पत्नी माधवी से होती है अन्त में असाध्य रोग से कौस्तुभ की मृत्यु हो जाती है। उसके चरित्र की कुछ विशेषताएँ शिवानी ने इस प्रकार अंकित की है :-

1. सुदर्शन रूप :-

'स्वयंसिद्धा' में कौस्तुभ के दर्शनीय रूप का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ। माधवी ने जब पहली बार मौसेरी बहन की शादी में देखा था उस समय कौस्तुभ ऊँची काठी का सुदर्शन,

तरूण लगा था।[1] राधिका भी उसकी सोने की काया का उल्लेख करती है।[2] प्रथम मिलन की रात्रि में माधवी कौस्तुभ सुदर्शन और विकार रहित युवक प्रतीत हुआ था।[3]

2. सरल स्वभाव :-

ट्रेन यात्रा के दौरान कौस्तुभ की भेंट पूर्व पत्नी माधवी से हुई। माधवी उसकी सरल, संयमित आचरण सौम्य चेहरा देखकर आश्चर्यचकित रह गयी। "उस रहस्यमय व्यक्ति का संयमित आचरण देख वह दंग रह गयी थी। न उस सौम्य चेहरे पर विकार की एक रेखा उभरी न उसने दूसरी बार आँख उठा उसकी ओर देखा। माधवी की उपस्थिति से एकदम ही उदासीन बना अचल मुद्रा में अखबार पढ़ता रहा।"[4]

3. सरल पति :-

माधवी के अचानक पलायन के पश्चात् कौस्तुभ का विवाह मेद प्रथुल, कुरूप स्त्री से हुआ किन्तु कौस्तुभ उसे सरलता से स्वीकार कर लेता है। यात्रा के दौरान चाय, बिस्कुट एवं अधीरा पत्नी के आचरण को चुपचाप सहन करता रहा। पत्नी से इस प्रकार लाड़ लड़ाते देख माधवी की रक्त मज्जा दग्ध हो उठी। "छी-छी ऐसी मोटल्ली पत्नी से कोई क्या इतना लाड़ लड़ा सकता है।"[5] पत्नी के निरर्थक वार्तालाप से खीझकर बाहर निकल जाता है। शिवानी ने लिखा है "इस बार मूर्खा पत्नी की बकर-बकर से खीझकर उसका पति बाहर चला गया। और कारीडोर में निरर्थक चहल कदमी करने लगा।"[6]

तात्पर्य यह कि कौस्तुभ सुदर्शन दो पुत्रों का पिता सरल स्वभाव वाला था। मूर्खा राधिका के अतिशय उत्साह एवं अविवेकी पत्र ने माधवी को पलायन के लिए तो विवश ही किया। कौस्तुभ के व्यवहार को जड़ बना गया था।

---

1. स्वयंसिद्धा, पृ0 12
2. वही, पृ0 13
3. वही, पृ0 14
4. वही, पृ0 19
5. वही, पृ0 21
6. वही, पृ0 22

देवेन्द्र

यह 'कालिन्दी' का प्रधान पुरूष पात्र है। कथानायिका का मामा देवेन्द्र पुलिस अफसर है अपनी ईमानदारी और कर्मठ्ता के लिए वह प्रसिद्ध है। भांजी को अपने पास लाकर निःसंतान देवेन्द्र अपने वात्सल्य भाव की पूर्ति करता। उसे डाक्टरी परीक्षा पास करा श्रेष्ठ व्यक्ति से विवाह निश्चय करता है किन्तु परिस्थितिवशात् दहेज के कारण डाक्टर कालिन्दी द्वारचार के समय पति और श्वसुर को लौटा देती है कि वह विवाह नहीं करेगी। स्थानान्तरण और उच्चाधिकारी की कोप दृष्टि को समझकर देवेन्द्र नौकरी से त्यागपत्र देकर अपने घर पहाड़ आ जाता है और वहीं अपने मित्रों, समवयस लोगों की सहायता कर अपना जीवन व्यतीत करता है। उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है -

1. ईमानदार पुलिस अफसर :-

देवेन्द्र ईमानदार पुलिस अधिकारी था। शिवानी ने लिखा है "देवेन्द्र को पुलिस की ऊँची नौकरी मिली वह ट्रेनिंग में गया। अन्नपूर्णा ने ही एक अच्छी सुन्दरी लड़की देख उसका घर बसा दिया। देवेन्द्र की नौकरी उसे उसकी कर्मठ्ता, निष्ठा एवं ईमानदारी का सर्वोच्च पुरस्कार दे चुकी थी।"[1] दिल्ली में उसकी बहुत बड़ी कोठी थी, हाथ बँधे अर्दली, संगीन ताने द्वार पर खड़े पुलिस के द्वारपाल, बरसाती में खड़ी कार, सजा सँवरा बैठा उसके नौकरी के ही अंग थे।

2. चतुर अफसर :-

देवेन्द्र कालिन्दी को अपने पास लाकर उसकी शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था कर उसका विवाह तय करता है तभी व्यवधान डालने के लिए कालिन्दी का पिता उपस्थित हो जाता है। अब देवेन्द्र को अपनी मातहतों की चिन्ता थी क्योंकि इससे उसकी मर्यादा में धब्बा लगता था। उसने चतुराई से प्रार्थना की। शिवानी ने लिखा हे "देखिए आप कृपा कर पिता होकर पुत्री के विवाह में विघ्न मत डालिये। देवेन्द्र ने दोनों हाथ जोड़कर विनती की और दोनों घुटने टेक जमीन पर बैठ गया।"[2] महेन्द्र के यह कहने पर कि इसे थाने पर बन्द करवा दो। देवेन्द्र

---

1. *कालिन्दी, पृ0 18*
2. *वही, पृ0 27*

कहता है "कैसे बाते कर रहे हो दादा, थाने पर बन्द करवाने ही उसका मुँह क्या बन्द करवा पाओगे। वह तो पूरे थाने के सामने मुझे नंगा कर देगा कैसी बदनामी होगी कि लड़की के बाप को मामा थाने में बेकसूर ही बन्द करवा दिया।"[1] और फिर देवेन्द्र उसे विदेशी मदिर का लालच दिया उसकी इस चतुरता को शिवानी ने इस प्रकार रेखांकित किया है "देवेन्द्र ने बड़े छल-बल से उसे शान्त किया फिर स्वर को और भी विनम्र बनाकर उसने कहा आपको पीने की भी हुड़क लगी है। व्हिस्की, रम, जिन, जो चाहे वह आपको पेश करेगा जी में आये तो दो चार बोतलें अखत बखत के लिए इस थैली में डाल दीजिएगा"[2]

3. ममतालु :-

देवेन्द्र कालिन्दी को पुत्रीवत स्नेह ही नहीं करते थे। दुर्घटना के कारण खाली हाँथ बारात लौट जाने के सब लोग कालिन्दी को कोस रहे थे किन्तु देवेन्द्र अपनी ममता से कालिन्दी को पश्चाताप के बोल एवं ग्यानि से उबारा। मामा के घुटनों में सिर सटा पालतू बिल्ली की भाँति कालिन्दी दुःख की जब बात कहती तो निःसंकोच देवेन्द्र कहते हैं "पगली कहीं की मामा ने बड़े लाड़ से उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा "मैं तेरी जगह होता मैं भी शायद यही करता। कालिन्दी तूने वही किया जो तुझे करना चाहिए था। तेरा साहस मुझे गर्व से बह गया है। पर बेटी यह संसार क्या ऐसे साहस को सराह पाता है"[3] कालिन्दी द्वारा दहेज की बात पूछने पर संयत स्वर में देवेन्द्र कहता है "हाँ बेटी तू तो जानती है हमारे लिए तू ही सब कुछ है। एक तूने ही हमें संतान का समस्त सुख दिया है। तेरे लिए यदि अच्छा योग्य पात्र जुटा और उसकी कीमत भी हमें चुकानी पड़े तो हमें आपत्ति नहीं थी।"[4]

4. अभिलाषाएँ :-

देवेन्द्र उच्च महात्वाकाँक्षी व्यक्ति था। अपने परिवार और गाँव के प्रति वह अपनी अभिलाषाएँ इस प्रकार व्यक्त करता है "कैसे-कैसे कल्पना के महल बनाये थे देवेन्द्र ने।

---

1. कालिन्दी, पृ0 27
2. वही, पृ0 31
3. वही, पृ0 35
4. वही, पृ0 40

कन्यादान पर वह पहले शीला और दीदी को लेकर जायेगा। बनारस वहाँ गंगा नहाकर फिर जायेंगे तिरूपति, कन्याकुमारी, रामेश्वर उसके बाद दीदी को चारो धाम करा वह पहाड़ चले जायेंगे। वर्षो से अवहेलित पडे खड़हर पैतृक गृह को सर्वथा नवीन रूप देकर सँवारेंगे जिस गृह में उसकी बाल स्मृतियाँ ईंट, चूने, गारे के साथ रिसी, बसी धरी थीं उन्हें खोद-खोदकर निकालेगा।''[1]

5. स्वाभिमानी :-

देवेन्द्र कर्मठ, ईमानदार और स्वाभिमानी अधिकारी थी और यही ख्याति नवीन सत्ता परिवर्तन के समय उसके लिए काँटा बन गई। उसे अधीनस्थ के नीचे काम करने के लिए स्थानान्तरित कर दिया गया। शिवानी ने लिखा है -''शासन में नये परिवर्तन का प्रचण्ड झंझावात वर्षो से जमे सुदीर्घ वृक्षों को धराशायी कर चुका थ। देवेन्द्र जानता था उसे कभी भी धराशायी किया जा सकता है। एक ईमानदार कर्मठ अफसर के रूप में उसकी प्रचुर ख्याति थी पर सौत तो सौत ही होती है। भले ही आटे चूने की क्यों न हो। किसी नगण्य विभाग के अन्धे कुएँ में ससम्मान फेंक दिया जायेगा यह वह जानता था।''[2] और उसने ऐसा अवसर आने पर त्याग पत्र देकर अपने सम्मान की रक्षा की। देवेन्द्र अपनी मातृभूमि में वापस लौट आया।

6. भावुकता :-

देवेन्द्र की बड़ी बहन अन्ना ने ही अपने भाइयों का पालन पोषण कर शिक्षित किया था। अतः देवेन्द्र स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर अन्ना के साथ पैतृक गृह में निवास करना चाहता है। वह भाव विह्वल स्वरों में कहता है - मैं अपने पुराने ही घर को आबाद करूँगा। सच बता दीदी तेरा मन नहीं तरसता वहाँ जाने को। कितने सुख का बचपन बीता है वहाँ हम बहन भाइयों को और फिर मैं सोचता हूँ जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है अपनी मिट्टी मनुष्य को उतनी तीव्रता से अपनी ओर खीचती है।[3]

1. *कालिन्दी 40*
2. *वही, पृ0 28*
3. *वही, पृ0 54*

7. दृढ़ निश्चयी -

देवेन्द्र सेवा के दौरान अनेक दुःसाहसी कार्यो को सकुशल सम्पन्न किया हे। इस कुशलता के पीछे उसका दृढ़ निश्चय ही काम करता था। एक बाद दिग्गज नेता के प्रख्यात सिपहसालार आत्मीय को अपने पुष्ट प्रमाण सहित खून के अपराध में ऐसा बन्दी बनाया था जमानत भी नहीं हुई थी। इसी तरह अन्ना उसे समझाती है कि यहाँ रहकर हम जिन सुख–सुविधाओं के अभ्यस्त हैं। अब घर लौटने पर कष्ट ही होगा। पर अब देवेन्द्र अपने निश्चय में अटल रहा। शिवानी ने लिखा है – "पर यह क्यों भूल जाता है देवी वह पहाड़ जो है पहचानता था ओर जिसे हम पहचानते थे वह क्या जाने पर वैसा ही मिलेगा जैसा हम छोड़ आये थे फिर यहाँ रहकर जिन सुविधाओं की आदत पड़ गयी है वह क्या वहाँ जुटेगी। उन सुविधाओं के बिना क्या अब हम वहाँ रह पायेगें वह भी इस उम्र में जब तन में शक्ति रह गयी है और न मन में धैर्य पर न उसे अन्ना ही अपनी दलीलों से रोक पायी न कालिन्दी।"[1]

8. मित्रता :-

अपने बाल्यकाल जीवन में देवेन्द्र की मित्रता ईसाई एल्फी, बसन्त आदि से रही है। सिगरेट का पहला कश उसने विधर्मी मित्र के सौजन्य से खींचा था। एल्फी के सौजन्य से बहुप्रशंसित देव दुर्लभ आमलेट का रसस्वादन भी पिछवाड़े की ऊँची दीवाल फाँदकर किया थां अब आज उसके ये मित्र दीनहीन विगलित दशा में हैं। किन्तु देवेन्द अपनी मित्रता को यादकर उनकी सहायता करता। एल्फी के अन्तिम जीवन के पूर्व देवेन्द्र ने उसके सिरहाने रूपयों से भरा एक लिफाफा छोड़ आया था। जिसमें लिखा था। एल्फी तुमने अपने मित्र की तुच्छ भेंट स्वीकार नहीं की तो मुझे बहुत दुःख होगा। एल्फी की मृत्यु उसे गहन शोक में डुबों गयी थी। अब वह न तो शतरंज खेल पा रहा था। न शायंकालीन भ्रमण का ही साहस जुटा पा रहा था। अल्मोड़ की हर सड़क, हर मोड़ दूर जंगल में उस जिन्दादिल मित्र के हस्ताक्षर ज्यों के त्यों धरे थे।"[2]

---

1. *कालिन्दी, पृ0 54*
2. *वही, पृ0 110*

9. देवेन्द्र का वार्धक्य :-

स्वैच्छिक सेवा निवृत्त होकर जब पहाड़ आया तो वहीं का होकर रह गया। इस परिवर्तन को कालिन्दी ने अनुभव किया। शिवानी ने लिखा है ''परिवेश के साथ-साथ शीला मामी ने ही नहीं मामा भी एकदम बदल गये थे। मामा तो जन्म से ही साहबी रूचि के व्यक्ति थे, पायजामा, कर्ता ही क्यों न हो पर न नहीं सिकुडन , वर्दी की तो कहना ही क्या, एक एक पीतल के बटन, स्टार चमकाते अर्दली, पसीना-पसीना हो जाते। फिर भी मामा को संतोष नहीं होता वही मामा एकदम पहाड़ी बन गये थे। सिर पर लपेटा मफलर, पायजामा के पैंचों पर फूहड, दुःसाहस से चढ़े गर्म मोजे, मुठ्ठी में भरे सिगरेट की ठेठ पहाड़ी दमें और बार-बार नाक पर झूलता चश्मा।''[1] और इस प्रकार जीवन का बड़ी निश्चिन्तता से व्यतीत हुआ।

तात्पर्य यह कि कालिन्दी का देवेन्द्र बचपन में अपनी बहन अन्ना के अनुशासन में बढ़ा और पला था। ईमानदार, कर्मठ पुलिसअफसरा बना और उसकी पुत्री कालिन्दी को गोद ली बेटी बनाया । उसके विवाह के लिए अपना सम्पूर्ण धन भी खर्च करने को तत्पर था। अन्याय को न सहन कर सकने के कारण अपने पद से त्यागपत्र देकर अपनी मात्र भूमि वापस लौटने वाला देवेन्द्र सरल, निर्दोष, भावुक, विनम्र, आदर्श रूप में चित्रित हुआ है।

---

1. कालिन्दी, पृ0 120

अध्याय चतुर्थ

शिवानी के उपन्यासों में गौण पात्र
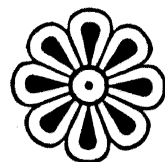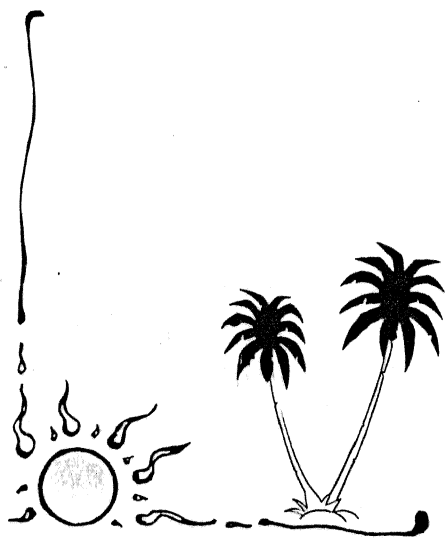
हरदत्त वैद्य

रथ्या उपन्यास का यह सहायक पात्र है। नायक विमलानन्द का पिता हरदत्त प्रकाण्ड ज्योतिषी था। पूजा-पाठकर वह अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। इसी विद्या से वह असहायों की सहायता करता था। वह श्रेष्ठ दैवज्ञ एवं ज्योतिषी था। बसन्ती के पुत्रवधू बनाने के प्रस्ताव को सुनकर वह कहता है – "कुण्डली का साम्य हो गया तो मुझे कैसी आपत्ति जैसी विष्णु की बेटी वैसी मेरी पर विमल को अपने पैरों पर खड़ा तो होने दो। वैद्यकी पढ़ ले तब देखी जायेगी। हाँ हम वाग्दान दे देंगे।"[1] बसन्ती की कुण्डली देख वह कहता है- "दो कौड़ी की ग्रह स्थिति है छोकरी की उस पर साम्य नहीं हो रहा है भरपूर नाड़ी वेग षणस्टक योग बन रहा है। जान-बूझकर कैसे गहरे नदी में ढ़केल दूँ।"[2] उसने साधारण रूप के कन्या से विमल का विवाह कर उसके भविष्य को सँवारने का प्रयास किया था।

मुत्थू स्वामी

यह रथ्या का गौण पात्र है। मूलतः यह मद्रासी है। सर्कस का मैनेजर था। बसन्ती को बेटी-बेटी कहकर पान के पत्ते सा फेरता है। इसकी पत्नी को शेर खा गया था। पागल मुत्थू स्वामी बन्दूक उठाकर हत्यारे को सजा ही नहीं दी अपने सर्कस को भी विसर्जित कर दिया। पत्नी विरही उसका स्वाभाव बेहद चिड़चिड़ा और शक्की हो गया था। घण्टों चुपचाप बैठ समुद्र की लहरों को देखता रहता था।"[3] पुत्रियों के भाग जाने पर मुत्थू स्वामी कुपित होकर बसन्ती को पीटने लगा और अन्त में काला भुजंग सा रक्षक मुत्थू स्वामी बेटी-बेटी कहकर वासना विभूति होकर बसन्ती का भक्षक बन जाता है। इस प्रकार मुत्थू स्वामी के चरित्र में मनोवैज्ञानिक मार्गान्तरीकरण प्रक्रिया का उपयोग कर शिवानी ने काम ग्रन्थ की दुर्दमनीयता का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कविराज गोस्वामी

कविराज गोस्वामी 'चल खुसरो घर आपनें' का गौण पात्र है वे केवल चिकित्सक

---

1. रथ्या, पृ0 16
2. वही, पृ0 16-17
3. वही, पृ0 30

ही नहीं थे परम सिद्ध भक्त भी हैं स्पर्श मात्र से ही व्याधि दूर करनें में समर्थ हैं।''[1] राजा राज कमल सिंह की नाड़ी को देख रोग का निदान, नक्षत्र उसके आधान और नाड़ी के आधार पर तुरन्त कर लिया कुमुद उनके विषय में सोचती है। '' सूर्य की प्रखर किरणों उनका खल्लार दर्पण सा चमक रहा था कैसा अद्‌भुत व्यक्तित्व था उनका देखकर ही श्रद्धा होती है।''[2] उनके भक्तिरूप को चित्रित करते हुए शिवानी नें लिखा है ''वे स्वयं प्रतिष्ठित मूर्त से लग रहे कविराज की नग्न पीठ पर उगते सूर्य की पीताभ आभा पड़ उसे सुवर्णमय दण्ड के ऊपर धीर निश्छल निश्कम्प मंगल प्रदीप की लौ कुमुद की निर्भीक दृष्टि उस तेजस्वी के चेहरे की ओर उठी नवजात शिशु की सी चिकनी त्वचा वही निष्पाप भोली चावनी दन्तहीन निर्दोष हँसी, परमहंस क्या ऐसे ही संतो को कहतें होंगे ?''[3]

रोगी की आकृति देखकर कविराज नें कहा ''नहीं! रोगी की आकृति से मैं संतुष्ट नहीं हूँ। रोगों के साथ नक्षत्रों को भी घनिष्ट रूप से जुड़ा मानते हैं। हम चार्ट नहीं देखते हम केवल नाड़ी और नक्षत्र देखते हैं''[4]

'' कुमुद की समस्या सुनकर बड़ी देर तक आँख मूंदे कविराज निःशब्द बैठे रहे घन श्वांस निःश्वास में उनके गौर उदर की गोलाकार परिधि रह रह कर उठ गिर रही थी।''[5]

उनकी बेधक दिव्यदृष्टि का अनुभव कुमुद को हुआ ''उसे लगा उस तीव्र रेडियम लगी दृष्टि का तेज व सह नहीं पायेगी। दहकती लौ सलाका सी वह दृष्टि उसके अन्तर तक धसती चली गयी।''[6]

कुमुद की जिस सदासयता से कविराज नें समस्या का समाधान किया वह उन्हें दूरदर्शी कायिक रोगों का धनवन्तरि ही नहीं कायिक रोगों के साथ ही मानसिक रोगों का धनवन्तर सिद्ध करता है।

---

1. *चल खुसरो घर आपने, पृ0 88*
2. *वही, पृ0 91*
3. *वही, पृ0 100-101*
4. *वही, पृ0 90*
5. *वही, पृ0 102*
6. *वही, पृ0 102*

कृष्ण कमल सिंह

राजकमल सिंह के छोटे भाई कृष्ण कमल सिंह 'चल खुसरो घर आपने' का सहायक पात्र है। वे पुरानें सामन्त शाही के प्रतीक हैं जिसमें मनोरंजन, विलासता, शिकार, पार्टियों का आयोजन, क्रूरता प्रदर्शन के लिए अमानषिक अत्याचार आदि प्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं उनकी वाह्य रूप रेखा का चित्राँकन शिवानी नें वर्णनात्मक पद्धति से किया है – "चेहरा बहुत कुछ अपनें छोटे भाई से मिलता था वैसे ही बड़ी बड़ी आँखें वही रंग उँची काठी एक बार ही कुटिल आँखों की चाबुक की मार उस पर पड़ी थी। शिकार करते समय उनकी कोहनी हाथ से अलग हो गयी थी।"[1]

रमेन्द्र

माणिक का गौड पुरूष पात्र है। यह रम्भा का पति है इंजीनीयरी पासकर किसी विदेश फर्म में उँची तन्ख्वाह पाता था। नलिनी से रूष्ट रम्भा को दुनियादारी के बातें समझाकर अपनी समझदारी का परिचय देता है। उसके सुदर्शन रूप के साथ कठोर गाम्भीर्य का परिचय शिवानी नें दिया है :-

"जितना ही देखनें में सुन्दर था उतना ही विनम्र किन्तु उस विनम्रता के नीचे लड़के के उग्र कठोर गाम्भीर्य का अनिक परिचय पाकर नलिनी प्रसन्न ही हुई थी और जो हो वह कभी दब्बू पति नहीं सिद्ध होगा।"[2]

1. व्यवहार कुशल :-

रमेन्द्र बहुत व्यवहार कुशल और दुनियादारी दृष्टि वाला था – रम्भा के रूठनें पर वह कहता है ' जीजी से ऐसे रूठनें से तुम्हारा ही अनिष्ट होगा रम्भा व्यवहार कुशल संसारी रमेन्द्र नें कहा था तुम अब वहाँ जाकर उन्हें मनाकर समझा आओ। पिता द्वारा छोड़ी गयी धनराशि वह भले ही फूँक डाले मणिक की अँगूठी एक न एक दिन बिन्नू को ही मिलेगी। इसी से पति नें ठेल ठाल कर रम्भा को जीजी से मिलनें भेज दिया।"[3]

2. हँसमुख :-

रमेन्द्र हँसमुख और वाचाल है। रम्भा से वह कहता है। यदि मणिक की अंगूठी

---

1. चल खुसरो घर आपने, पृ0 70
2. माणिक, पृ0 36
3. वही, पृ0 39

बिन्नू के नाम कर दें तो नलिन इसे गोद भी ले सकती है, रम्भा के किंचित रूष्ट होनें पर वह कहता है :- "तुम्हें आपत्ति न हो तो में स्वयं उस अँगूठी के बदले तम्हारा जीजा बनने को तैयार हूँ। उसका सुर्दशन पति फिर उठाकर हँस पड़ा।"[1]

3. रसिक :-

दीना बाटली वाला का चेहरा ऐसा था जिसका संसार की कोई भी नारी विश्वास नहीं कर सकती इसलिए रम्भा अपने पति रमेन्द्र को साथ नहीं लायी थी क्योंकि निरामिषभोजी सात्विक पति को सामिषभोजी बनते कई बार देख चुकी थी। अपने पति की नारी सौन्दर्य लोलुप जिह्वा को तो वह एक नहीं कई बार निर्लज्ज लपलपाहट देख चुकी थी।[2]

इकबाल नारायण

नन्हें के पिता इकबाल नारायण पुराने जमीदार राजसी प्रवृत्ति के थे। देखने में सुदर्शन किन्तु वेश्याओं के संगत में रहने से कोढ़ी होकर दुर्दशा को प्राप्त हुए। शिवानी ने उनके आन्तरिक सौन्दर्य व्यक्तित्व एवं बाह्य क्रिया कलापों की झाँकी मनोवैज्ञानिक पद्धति पर की है। उनके चरित्र गत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

1. सौन्दर्य :-

इकबाल नारायण के सौन्दर्य का चित्रांकन करते हुए लेखिका ने कहा है :- "रेशमी अंगरखे के दो सुनहले फीते शायद जान बूझकर ही खोल दिए गये हैं। जिससे गौर लोमश वक्ष स्थल पर पड़ी यज्ञोपवीत की डोरी की स्पष्ट उभर आये। पिता जी की यह रहस्यमयी मुस्कान उनके पान दोख्ते से रक्तिम बिलासी अधरों पर खेल रही थी। दीर्घाघित ग्रीवा, अनुनन्त चिबुक, गर्वोधूत मस्तक और खडग के धार की सी नासिका जिस पर उन्हें सर्वाधिक गर्व था।[3]

2. संगीत प्रेम :-

जर्मीदार राय बहादुर इकबाल नारायण संगी के रसिया थे। गाजीपुर वाली कोठी संगीत की महफिल से गुलजार रहती थी जिसका दशहरा दरबार बड़ा भव्य होता था -

---

1. माणिक, पृ0 40
2. वही, पृ0 41
3. कस्तूरी मृग, पृ0 17

कभी इस हवेली में संगीत की प्रस्तुति मेरे पिता के संगीत के जलसे की विशेषता थी। एक से एक परम्परा समृद्ध गायक हमारे गृह के राधा गोविन्द मन्दिर के प्रांगण में संगीत प्रस्तुत करते थे। जनाब गुलाम मोहम्मद मेरे संगीत गुणग्राही पिता के परम मित्रों में थे।[1]

उनकी संगीत प्रियता एवं तपजन्य विलक्षणता का उल्लेख नन्हें के माध्यम से शिवानी ने इस प्रकार किया है – "सहसा राग विस्तार के बीच रियाज करने वाली पंचम शुद्ध गांधार में ऐसे पटीय सी कौशल से उतरी कि लगा शुद्ध कल्याण का आँचल थाम रही है यही तो मेरे पिता भी किया करते थे ऐसे ही चतुर नर के कौशल से वे मीणों की डोर थाम शाखा मृग से एक राग से दूसरे राग की शाखा प्रशाखा पर कूदते श्रोताओं को मुग्ध कर देते थे।"[2]

3. कोढ़ी रूप इकबाल नारायण राय का :-

विलासता और वेश्या प्रेम की परिणति शारीरिक विकृता में ही होती है। कुष्ठ का छूत रोग इकबाल नारायण को आक्रान्त कर लेता है। उसके वीभत्स रूप का चित्रांकन शिवानी ने इस प्रकार किया है :- "दोनों आँखों की पलकें झड़ गयीं थीं। जिन विलासी जुल्फ पट्टियों को दर्पण के सम्मुख खड़े होकर पिता घण्टो विदेशी बिलक्रीम की चिकनाई से बिठाते थे वह सब नियति ने एक ही मूठ में न जाने कब उखाड़ लिये थे। खल्लाट पर तीन-चार बाल कुश से काँप रहे थे। और नाक कैसे बताऊँ केवल दो कोटर जैसे गहन तिमिराच्छन गुहा द्वारा हों दोनो होंठों पर थे बड़े-बड़े छाले, दन्तहीन पोपलें मुँह के एकदम भीतर धँस गये कपोल और मासहीन दुबली बाँहे एक विचित्र दुर्गन्ध सहसा मुझे पीछे ढ़केल गयी। क्या कहीं को मरी छिपकली गँधा रही थी।"[3]

4. क्रोधी :-

रूप, धन, विलासिता, वेश्या प्रेम और क्रोध का चोली दामन का सम्बन्ध होता है। नन्हें के पिता इकबाल नारायण वैश्या रखते थे जिनके वैभव का सूर्य कभी अस्त नहीं होता था। उस प्राणप्रिया वैश्या राजेश्वरी बाई को राय साहब ने अपनी पत्नी का पन्ना मोती जड़ा कण्ठा निकाल कर दे दिया। रहस्यमय ढ़ंग से इस हार के गायब होने की सूचना

---

1. कस्तूरी मृग, पृ0 17
2. वही, पृ0 25
3. वही, पृ0 22

पाकर उनका क्रोधी स्वरूप प्रकट हुआ। "पूरी कोठी में तहलका मच गया। मेरे पिता के क्रुद्ध, गर्जन, तर्जन से घर के नौकर ही नहीं घोष बाबू भी काँपने लगे।"[1]

उनके गर्जन तर्जन से पुलिए के बुलावे की सूचना मिली किन्तु गरजते बादल बिना बरसे ही सिमट गये।

5. प्रायश्चितकर्ता :-

रायबहादुर इकबाल नारायण सुदर्शन एवं रौबदार व्यक्तित्व के मालिक थे। वैश्याओं को रखना वह अपनी शान सौकत समझते थे। इसी वैश्या प्रेम एवं विलासिता के कारण वे अपनी पत्नी की घोर उपेक्षा की अपने इस कुकृत्य का उन्हें बोध था उसका वे प्रायश्चित भी करना चाहते थे। "अपराध भावना निश्चित रूप से मनुष्य को अधिक प्रगल्भ बना देती है। मेरी इस हालत के लिए तुम्हारी मूर्खा अम्मा ही दोषी है। वह कायदे की होती तो आज मेरी यह हा़लत होती जिसे अपने ही घर में भरपेट भोजन नहीं मिलता वही भूख लगने पर दूसरों की जूठी पत्तले चाटने लपकता है। मेरे मन प्राण, संगीत में बसे थे वह दिन रात गहने कपड़े फेंक कैकेयी बनी कोप भवन में विसूरती रहती मुझे खाने-पीने का शौक था उसे बस मूँग की खिचड़ी पसन्द थी।"[2]

घोष बाबू

यह कस्तूरी मृग का गौण पात्र है। रायबहादुर इकबाल नारायण के जमींदारी के कार्यो को देखने वाला मैनेजर है। यह मूलतः बंगाली और नन्हें पर बहुत सहृदय था। इनका नाम पंचानन घोष था। इसके पिता राखल दास घोष वर्षो तक बडौदा महाराज के पेशेदार रहे इसके बाह्य सौन्दर्य और चिन्तन की झलक इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है।

1. रूप :-

शिवानी ने उसके रूप का चित्रांकन इस प्रकार किया है – "घोर कृष्णवर्णी अमावसी रंग गोल-मटोल चेहरे पर सब समय लगी अलमस्त दूधिया हँसी और बहुत बड़ी-बड़ी लाल डोरीदार आँखे बातें करने का ढ़ंग भी परिहास पूर्ण।[3]

---

1. कस्तूरी मृग, पृ0 15

2. वही, पृ0 26

3. वही, पृ0 12

2. संगीत ज्ञाता :-

पंचानन घोष के पिता राखालदास दरबार में थे। अतः पंचानन घोष को संगीत की प्रारम्भिक जानकारी घुट्टी के रूप में प्राप्त हुई। जिसको उन्होंने झाड़ पोछकर, सवारकर चमका दिया। उनकी शिक्षा तो हाई स्कूल तक थी उनके संगीत ज्ञान के सन्दर्भ में शिवानी ने लिखा है -''पंचानन घोष ने दिन-रात दरबारी मायकों को सुनते-सुनते समझने की योग्यता प्राप्त कर ली थी आगरा घराने की गायिकी बोल विस्तार तीन प्रकार का व्याकरण कंठस्थ कर वे स्वयं अपनी सुरीली दानेदार तलमाला से श्रोताओं को स्तम्भित करने लगे थे मेरे पिता ने किसी कान्फ्रेस में उनका गाना सुना और साथ ले आये। मेरी नींद बड़े भोर घोष बाबू के मन्द्र सप्त की रियाज से ही टूटती थी जैसे गरम गला था वैसे ही नरम मिजाज।[1]

3. वात्सल्य रूप :-

घोष बाबू का परिवार नहीं था। विवाह हुआ नहीं वे अपने वात्सल्य भाव की पूर्ति नन्हें को दुलरा कर करते थे। नन्हें के बीमार पड़ने पर वे रजाइयों के स्तूप से ढ़ककर उस पर स्वयं लेट जाते। दुर्गा-दुर्गा का जाप करते फिर वे मेरे तप्त ललाट को सहलाते और बड़बड़ाने लगते -

''आहा रे छेले अमन अ सुखे भुगछे,
आर अनी नौका विहोर छाबू इबू खाच्छेन।[2]

4. सेवक रूप :-

घोष बाबू निश्छल हृदय के सेवक थे। बीमार पड़ने पर वे नन्हें की माँ के मरने पर वे उनके पिता के पास गये किन्तु उस वेश्या ने उन्हें खोटे सिक्के सा लौटा दिया। यद्यपि वे जानते थे कि वे वहीं छिप बैठे हैं। नन्हें के पूँछने पर वे बहुत मार्मिक बात करता है -

''हाँ रे खोका तुम्हारे पिता को ही अपनी देह गंध का आभास है। पर पहचानते नहीं अगरू चन्दन मिली सुगंध एक दिन मैने कहा मालिक आपको दूर से ही सूँघ लेता हूँ में शिकारी कुत्ते की तरह।[3]

---

1. कस्तूरी मृग, पृ0 12
2. वही, पृ0 13
3. वही, पृ0 20

गदाधर भट्ट

'कैंजा' के नायक सुरेश भट्ट के चाचा गदाधर भट्ट हैं वे संगीतकार और रामलीला के बड़े रसिक थे। रामलीला के समय हारमोनियम पर वादन निपुण उँगलियाँ जब थिरकती गदाधर भट्ट अपने उस्ताजी गले से रामचरित मानस की पंक्तियों का सस्वर परायण कर वातावरण को जीवन्त बना देते थे। उन्होंने सुरेश भट्ट के जीवन सुधारने का भरसक प्रयास किया। किन्तु बात बनी नहीं। शिवानी ने उनके चरित्र की संक्षिप्त सी झलक प्रस्तुत की है।

हेमचन्द्र तिवारी

'कैंजा' उपन्यास की नायिका नन्दी तिवारी की पिता ने नेपाल के राणाओं के वे राज्य ज्योतिषी थे। शिवानी ने लिखा है –"उनकी अचूक भविष्यवाणियों से प्रसन्न होकर ही उनके समृद्ध यजमानों ने उन्हें एक छोटी-मोटी जागीर भी दे दी थी।"[1]

हेमचन्द्र तिवारी अपनी ख्याति के कारण नेपाल छोड़कर कुमायूँ मण्डल में आकर बस गये। शान्त स्निग्ध स्वभाव और नियमित पूजा-पाठ के कारण गाँव वाले उन्हें शास्त्री जी मानकर गाँव का मुखिया बना दिया। नन्दी के दुष्ट वैधव्य योग से आतंकित होकर हेमचन्द्र तिवारी उसे पढ़ा-लिखाकर समर्थवान भी बनाना चाहते थे। शिवानी ने लिखा है –"तू घबड़ा मत बेटी तुझे मैं पढ़ा-लिखाकर एक दिन ऐसी बना दूँगा कि जीवन भर किसी पुरूष के कन्धे का सहारा तुझे नहीं लेना होगा।"[2] अन्ते में पीलिया के रोग से ग्रस्त हो जाते हैं और इसी रोग में उनका शरीर पात हो जाता है।

मि0 फोर्टीन

शिवानी ने अपने उपन्यासों में रहस्यमयता का पुट देने के लिए कभी-कभी ऐसे पात्रों की अवतारणा करती है कि वे अपनी क्षणिक चकाचौंध से पाठ्कों को अभिभूत कर विलुप्त हो जाते हैं। कृष्ण वेणी के दिव्य दृष्टि के प्रसंग में यह गौण पात्र मि0 फोर्टीन का अवतरण हुआ है शान्ति निकेतन के आश्रम आया हुआ यह रहस्यमय व्यक्ति प्रखर मेधा, प्रतिभासम्पन्न भविष्यवक्ता है। जिसकी दुर्गति की सूचना कृष्ण वेणी ने पूर्व ही कर दी थी।

---

1. कैंजा, पृ0 16
2. वही, पृ0 20

1. भव्य व्यक्तित्व सम्पन्न :-

आश्रम में आये रहस्यमय व्यक्ति का सौन्दर्य निरूपित करती हुई शिवानी ने लिखा है – "लगभग खल्लाट मस्तक बड़ी–बड़ी तांत्रिक सी लाल–लाल आँखे, गहरा नारंगी रंग का लबादा, पैरों में खड़ाऊँ जिनकी खटर–खटर सुन दूर से ही देखने में लगता कोई नारंगी ट्रैक्टर चला आ रहा है। उनके पूरे चेहरे पर उनकी नाक ही सबसे रहस्यमय अवयव थी। ऐसी मोटी और इतनी लम्बी नाक मैने कभी नहीं देखी। दोनों नथुनों के गह्वर से निकले सफेद बालों के गुच्छे और वैसे ही केश गुच्छ कानों से निकलकर देखने वालों को सहमा देते थे।"[1]

2. अध्ययनशील :-

यह रहस्यमय व्यक्ति का तकिया कलाम "आई एम ओनली फोर्टीन" था। इसी से ये उसका नाम पड़ गया। शान्ति निकेतन में दुर्लभ ग्रन्थों के पठन–पाठन के लिए आया हुआ था।

3. विलक्षण स्मरण शक्ति सम्पन्न :-

यह रहस्यमयी व्यक्ति की स्मरण शक्ति का उल्लेख करते हुए शिवानी ने लिखा हे – "उसकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी कहीं से भी किसी पुस्तक का पृष्ठ एक बार उसके सामने खोलकर बन्द कर दें एक–एक शब्द ज्यों का त्यों सेमीकोलन सहित दोहरा देगें।"[2]

4. हस्तरेखा विद्‌ :-

इस व्यक्ति की ख्याति हस्तरेखा पण्डित के रूप में थी। शिवानी ने लिखा है –"और लोगों का कहना था कि हाँथ की रेखाओं से पूरा भूत, भविष्य और वर्तमान का ऐसा खरा लेखा–जोखा देने वाला वह व्यक्ति सामान्य मनुष्य नहीं कोई त्रिकालदर्शी महापुरूष है।"[3]

इस व्यक्तित्व का उद्‌घाटन अत्यन्त नाट्कीयता से हुआ क्योंकि उसकी कुटिया में शराब की बोतले पायी गयी थीं और वे आश्रम से पीट कर निकाला गया।

---

1. कृष्णवेणी, पृ0 31–32
2. वही, पृ0 32
3. वही, पृ0 32

धरणीधर

'श्मशान चम्पा' की नायिका का पिता धरणीधर उच्च पदस्थ अफसर था जिसने सरकारी गाड़ियों का दुरूपयोग अधीनस्थ अधिकारियों से अपनी भव्य कोठी का निर्माण हेतु जिसने रिश्वत लिया जिसने निलम्बित होने पर मृत्यु को प्राप्त होता है। शिवानी ने इन्हीं रेखाओं के द्वारा उसके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मूल्यांकन किया है।

1. भ्रष्टाचारी अफसर :-

धरणीधर भ्रष्ट अफसर था इसीलिए वह मंत्रियों का लाड़ला था। शिवानी ने लिखा है "और फिर कैसे उन्होंने मिट्टी के मूल्य उस अलम्भ्य जमीन का मुरब्बा खरीद लिया था। लगता था भ्रष्टाचार किसी महामारी की भाँति पूरे प्रदेश को अपने मुँह में ले चुका है।"[1] उसकी पत्नी भगवती उसके कृत्यों को निखारती शिवानी ने लिखा है "लम्बे अनवरत् दौरों से लौटने पर घर भर के लिए उपहार आये दिन की दावतें, पचास रूपयों की सरकारी चौथ जमा कर सरकारी मोटर को पाँच-पाँच सौ मील भगाकर उसका सरासर दुरूपयोग भवगती कभी क्षमा नहीं कर सकी। भगवती कई बार अपने विलास प्रिय पति को समझाया भी था किन्तु वह एक कान से सुन दूसरे कान से निकाल देता।"[2]

2. वैभव सम्पन्नता :-

धरणीधर आज की भ्रष्टाचारी व्यवस्था से पनपे प्रशासनिक अफसर का प्रतीक है जो इस लोकतंत्र मे अफसर का प्रतीक है। जो इस लोक तंत्र में जनता के धन से सम्पन्न वैभव प्रिय नव कुबेर बनता है। उसका महल चीनी, पैगोड़ा की शैली में बना था। प्रत्येक कलाकृति में एक प्रकार ऐतिहासिक सूक्ष्म प्रतिकात्मकता थी। अपने वैभव और रोबदाब के प्रदर्शन के हेतु वह सरकारी तंत्र का दुरूपयोग करता है "धरणीधर का बिना आधे दर्जन अर्दलियों के काम नहीं चलता है एक साहब की मोटर पोंछ रहा है। दूसरे कपड़े निकाल रहा है। तीसरा जूतों की धूल झाड़ रहा है।"[3]

3. धरणीधर की ग्लानि :-

कालावसात् धरणीधर सी0बी0आई0 के जाल में फँस गया और वह निलम्बित हो

---

1. श्मशान चम्पा, पृ0 60
2. वही, पृ0 28
3. वही, पृ0 29

गया। इस निलम्बन के समय उसका कोई साथी नहीं था। साथ ही पिता के असामयिक मृत्यु होने पर धरणी धर को अपने पिता के प्रति किये गये दुर्व्यवहार और उपेक्षा ने उसे अपराध बोध से ग्रस्त कर दिया। सम्भवतः इसीलिए इस मानसिक अवसाद में हृदय का दौरा पड़ा। शिवानी ने इस अपराध बोध मनो वैज्ञानिक विश्लेषण किया है। वे लिखती हैं। "अपने दुर्भाग्य के उन कठिन क्षणों में क्लान्त धरणीधर जब पत्नी की बाँहों में क्षणिक क्लान्त की धारणा से प्रेरित होकर उसे क्षीर्ण आहट कण्ठ से पुकारता है। पुरूष अवसाद के कठिन क्षणों में भी स्त्री संग की कामना में व्याकुल हो सकता है यह वह जानती थी। अबोध बालक की क्षुधा की ही भाँति पुरूष के शरीर की क्षुधा समय-असमय की परिधि को कभी छँलाग लगाकर लाँघ जाती है।"[1]

तात्पर्य यह है कि धरणीधर लोकतंत्र से उपजे अफसर साही के प्रतीक रूप में श्मशान चम्पा में चित्रित हुआ है।

रामदत्त पाण्डेय

कथानायक मधुकर के पिता रामदत्त पाण्डेय अपनी कुल गरिमा के प्रति बहुत सचेत रहे हैं। उनका पुत्र मधुकर डाक्टर था। ऐसा देव दुर्लभ जामाता पाने के लिए पहाड़ के एक से एक सम्पन्न व्यक्तित्व उनके दरवाजे पर अपने माथे का स्पर्श करा लौटते थे। शिवानी ने उनके इस पक्ष का निरूपण करते हुए लिखा हैं। "एक से एक लड़कियों की कुण्डलियाँ रामदत्त पाण्डेय के अक्षत पर आजकल ओले से बरसी चली आ रही है। पर बुढ्ढ़ा है एक नम्बर का घाघ। एक ही बेटा है किसी से चाहता है कि घी की ऐसी छलाछल छलकती ठेकी मिले जिसमें जीवन भर पाँचों उँगलियाँ डूबी रहे।[2]

1. वाक्पटु :-

चतुर रामदत्त पाण्डेय कथानायिका की छोटी बहन जूही की कलंक गाथा सुन अपनी वाक्पटुता से इस सगाई को तोड़ दिया। "शादी होगी तो कभी बहू के बहन बहनोई भी मिलने आयेगे तो हमारे घर के खूँटियों में तो धोती-टोपियाँ लटकती है। वहाँ हम ऐसे अतिथियों के बोरके तुर्की टोपियाँ कैसे लटकायेंगे। जिन्होंनें कभी गंगा जल से गूथे आटे की रोटी के बिना गस्सा नहीं तोड़ा। वह क्या कभी ऐसा रिश्ता ले सकता है।"[3]

1. श्मशान चम्पा, पृ0 29
2. वही, पृ0 14
3. वही, पृ0 38

2. क्रोधी :-

पिता रामदत्त चम्पा की काली करतूते केसर सिंह से सुनकर उग्र हो उठे शिवानी ने उसके उग्र तेज का निरूपण करते हुए लिखा है "क्रोध से वह सुदर्शन चेहरा विकृत हो गया था। खिड़की से आ रहे हवा के झोंके ने सहसा गाँठ बँधी शिखा को प्रश्न के चिन्ह सा ही सतर्क कर दिया था। प्रखर ललाट पर लगी वैष्णवी त्रिपुण्ड की चन्दन चर्चित रोली रूद्र के तीसरे उग्र नेत्र सी फड़क रही थी।"[1] और वह चम्पा के कुकृत्य पर कुपित होकर कहते हैं "मधुकर की सगाई जया से हो गयी है तो फिर उस पर डोरे डालने बम्बई क्यों पहुँची। गयी ही नहीं उस कँवारे लड़के के साथ चार दिन बिता भी आयी। मेरी लड़की ऐसा करती तो विद्या कसम अभागी का गला अपने हाथ से घोटने में मुझे एक पल भी नहीं लगता।"[2]

3. दृढ़ एवं सत्यवादी :-

रामदत्त पाण्डेय अपने विचारों और संकल्प पर बहुत दृढ़ रहे। जया ने सूचित किया था कि उन्होंने अपनी शिखा में गाँठ लगाकर शपथ ली है यदि आपने यह विवाह नहीं किया तो वह प्राण दे देंगे। ऐसा दृढ़ संकल्पवान व्यक्ति अपने जीवन में सत्यवादी भी रहा है किन्तु चम्पा से मिलने के लिए उसे अपने पुत्र से विरत करने के लिए उन्हें झूठ भी बोलना पड़ा। "कभी रामदत्त ने झूठ नहीं बोला पर तेरे लिए झूठा भी बना। तेरी माँ के पास भागा गया। भवाली यह यह कहकर तेरा पता माँगा कि मेरा बेटा तुझसे ही शादी करने की जिद ले बैठा।"[3]

4. विद्वान पण्डित :-

रामदत्त संस्कृतज्ञ विद्वान पण्डित ही नहीं अच्छे ज्योतिषी भी थे उन्होंने चम्पा के राजषी वैभव की तुलना संस्कृत के मृक्षकटिक नाटक की गणिका बसन्त सेना के वैभव से किया है और श्मशान चम्पा सामान्य लोगों के द्वारा अभिगमनीय नहीं है। ऐसा कहकर चम्पा को श्मशान चम्पा कहा है।

---

1. श्मशान चम्पा, पृ0 29
2. वही, पृ0 130
3. वही, पृ0 130

राबर्ट

यह 'सुरंगमा' उपन्यास का गौण पात्र है किन्तु चरित्र की दृष्टि से बड़ा आकर्षक और प्रभावी है। यह ट्रेन में टिकट चेकर है, ईसाई परिवार से सम्बन्धित है। ट्रेन में कटने जा रही राजलक्ष्मी को बचाकर यह अपने घर लाता है और निराश्रित समझ अपनी बहन म्यूरी बैरोनिका के संरक्षण में लखनऊ छोड़ देता है। बहन उसे मुसीबत में देख उसके आगत शिशु को पिता का नाम देने के लिए राबर्ट से विवाह करने का परामर्श देती है। राबर्ट और लक्ष्मी गिरजा घर में जाकर विवाह करते हैं और राबर्ट दक्षिण भारत की यात्रा के लिए निकल जाता है। संत राबर्ट राजलक्ष्मी के रूप से आकृष्ट होकर पुनः लखनऊ लौटता है। जहाँ राजलक्ष्मी का पूर्व पति गजानन जोशी उससे लड़ भिड़कर राजलक्ष्मी को अपने पास ले जाने में सफल होता है। राबर्ट उदार, जीवनदाता, दार्शनिक, विनम्र व्यवहार कुशल और संत पति के रूप में सुरंगमा में चित्रित हुआ है। शिवानी राबर्ट के रूप में ऐसे विरागी पति और गृहस्थ संत का चित्र प्रस्तुत किया है जो गीता में स्थिति प्रज्ञता के अनुसार अपना जीवन जीने में विश्वास रखता है। जिसके वाह्य सौन्दर्य, कर्म सौन्दर्य और आन्तरिक सद्गुणों की चर्चा शिवानी ने इस प्रकार की है :-

1. वाह्य सौन्दर्य :-

शिवानी ने विदेशी ईसाई राबर्ट का गोरा रंग, उसकी आँखे चेहरे की कान्ति आकर्षण आदि का चित्रांकन अनेक स्थानों पर किया है। अपने जीवनदाता राबर्ट को जब लक्ष्मी पहली बार देखती है।[1] नीली वर्दी उसका गोरा चेहरा और भी ललछौंहा लग रहा था और उसकी फिरोजवर्णी आँखे निश्चय ही किसी विदेशी की थी।[2] उसने अपनी स्निग्ध हँसी से सँवार कर पूछे गये प्रश्न से लक्ष्मी को चौंका लम्बा ओवर कोट वही आकर्षण स्निग्ध चेहरा, अधरों पर द्विधास्नात स्मित और फिरोजी पुतलियों में वही अन्तर्भेदीय निवीणता''।[3] दिया उसकी आँखें चिबुक पर हँसी लक्ष्मी को हाथ पकड़कर किसी

---

1. सुरंगमा, पृ0 23
2. वही, पृ0 23
3. वही, पृ0 23

अबोध शिशु के भाँति डगमगाते चरण धरना सिखा रही थी।''[1] सुर्य के प्रकाश में लक्ष्मी ने उसके रूप को देखा बोस्की की नीली कमीज में उसका गोरा रंग और निखर आया था। ग्रीक सौन्दर्य की रूपरेखा से गठे चेहरे पर तीखी नाक के नीचे लाल अक्षरों पर ममतामयी मुस्कान थी और फिरोजी आँखों में था गहन वात्सल्य।''[2] शिवानी उसके सरल स्वभाव और निष्कपट हँसी का उल्लेख करते हुए लिखा है – फिर पल-पल रूप बदल रहे उस आनन्दी बहुरूपिये ने अपने देवदूत के से चेहरे को निष्कपट हँसी से उदयासित कर।''[3]

2. जीवनदाता :-

राबर्ट म्यूरी ने ट्रेन में जा रही राजलक्ष्मी को बताता ही नहीं उसे अपने कमरे लाकर आस्वस्त करता है। दूसरे दिन लेकर उसे अपनी बहन बैरोनिका के पास छोड़ देता है और उसका सबसे बड़ा त्याग तो यह है कि वह लक्ष्मी को जीवन के प्रति आशा भरी दृष्टिकोंण को प्रस्तुत कर कहता है – ''सुनो लक्ष्मी,प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कभी-कभी ऐसा अवसर आता है जब मौत के अलावा उसे और कोई रास्ता नहीं सूझता, किन्तु हम मनुष्यों को यह दुर्भाग्य नहीं है कि बुलाने से मौत कभी नहीं आती। सुबह उठोगी तो निश्चय ही नया प्रभात तुम्हे जीवन के प्रति आशावान बना देगा। जीवन इतना बुरा नहीं है लक्ष्मी।''[4] इस जीवनदाता के चरमोत्कर्ष रूप को प्रस्तुत करते हुए शिवानी ने लिखा है ''बाइबिल की शपथ खाकर कहता हूँ लक्ष्मी, तुम्हारा पकड़ने पर भी किसी प्रकार की कामवासना ने मुझे रूद्ध नहीं किया। बैरोनिका चाहती है तुम्हें पढ़ालिखाकर वह तुम्हें आत्मनिर्भर बना दे। तब तक तुम्हारी शिक्षा, तुम्हारी संतान का भरण-पोषण का भार मैने सहर्ष स्वीकार किया है।''[5]

3. विनम्रता :-

राबर्ट म्यूरी अपने व्यवहारिक जीवन में बहुत विनम्र दिखता है। इसी सौजन्यवश

---

1. सुरंगमा पृ0 25
2. वही पृ0 35
3. वही, पृ0 56
4. वही, पृ0 27
5. वही, पृ0 55

वह रात्रिभर जगता है और उसके कमरे में राजलक्ष्मी सोती है। उसके लिए चाय बनाना, भोजन की व्यवस्था करना, यात्रा के मध्य बीच-बीच में मृदुल स्वर में लक्ष्मी को दिलाशा दिलाना उसकी विनम्रता के ही उदाहरण हैं।

4. संत -

राबर्ट स्वभाव से ही संत था। उसकी बहन बैरोनिका कहती है - "राबर्ट को तुम नहीं जानती ईश्वर ने उसे गलती से ही प्रथ्वी पर भेज दिया है। बचपन में मेरे पिता उसे जेबियर कहकर पुकारते थे छुटपन में जब हम उसकी चीज छीन लेते उसने कभी भी मुँह खोलकर हमारी शिकायत नहीं की। अन्याय का उसके जीवन में कोई अर्थ नहीं रहा।"[1] इसी तरह राबर्ट से विवाह की बात सुनकर राजलक्ष्मी के इनकार करते ही बैरोनिका कहती है "राबर्ट संत है, एसेन्ट पर्सनीफाइड वह केवल तुम्हे पति का आरक्षण ही नहीं देगा तुम्हारी भावी संतान को अपना नाम देगा, पिता का वात्सल्य देगा। पिता की छत्र-छाया देगा।"[2] और राबर्ट ने भी राजलक्ष्मी को मातृ पति का संरक्षण देने के लिए वचन बद्धता का निर्वाह किया।

5. परिहास प्रियता :-

लक्ष्मी से विवाह के पश्चात् वह उससे परिहास करते हुए कहता है "आई एम योर मोस्ट हम्बल सक्रेट मैडम, अपने स्वभाव सिद्ध परिहास की अनूठी झलक दिखाता वह फारसी सलाम की बन्दिश में दोहरा हो गया था। फिर उसने हँसकर सामने रखी कुर्सी खींच ली।"[3]

6. राबर्ट की अन्तर्व्यथा :-

बहन बैरोनिका ने अपनी मान प्रतिष्ठा एवं धूमकेतु की तरह सहसा पारिवारिक जीवन में उथल-पुथल मचाने वाल लक्ष्मी के आगमन को वह एक प्रकार से शुभ सूचक भी मॉन रही थी। क्योंकि बैरोनिका के गहरे मन में क्षीण आश का द्वीप टिमटिमा रहा था। कि शायद उसका संत वैरागी भाई, राबर्ट लक्ष्मी के अबाध्य सौन्दर्य से प्रभावित होकर

---

1. *सुरंगमा, पृ0 48*
2. *वही, पृ0 48*
3. *वही, पृ0 80*

गृहस्थ धर्म स्वीकार कर ले। यद्यपि वह जानती थी कि उसका भाई मात्र लक्ष्मी को पति का आश्रय एवं उसके होने वाले शिशु को पिता का संरक्षण मिल जायेगा। इसीलिए राबर्ट ने जान अनजान व्यक्ति की परिणीता को अपनी पत्नी बनाने पर सहमत हुआ। धीरे-धीरे राबर्ट लक्ष्मी के आकर्षण में बँधने लगा। इस आकर्षण से मुक्त होने के लिए राबर्ट उसे छोड़कर गोखा चला गया। जहाँ से वह पाँच वर्ष बाद लौटा। वह स्वयं कहता है "क्यों आ गया था वह मूर्ख लौटकर जिस कठोर साधना से वह निर्लिप्त फकीर बनकर जिस अविवेकी चित्र को उसने पालतू पशु सा बनाकर संयम से श्रृंखला में बाँधकर रख दिया था। वह लक्ष्मी को देखते ही फिर विद्रोही क्यों बना। बन्धन तोड़ने को छपपटाने लगा। पाँच वर्षो की अनुच्चारित व्यथा सहसा किस यंत्रणके आवेग से उसका हृदय से मथने लगी थी। इस अज्ञात भय ने उसे अब तक ऐसे नहीं सहमाया था। अपने ही हृदय का निःशब्द आर्तनाद उसे झकझोर गया। मैंने तुमसे बाइबिल की शपथ कहाकर कहा था कि तुम्हें देखकर किसी भी विकार ने मुझे तृस्त नहीं किया। पर अनजाने में ही बहुत बड़ी भूल कर गया था। जिस दिन गिरजा घर में कापता हाँथ पकड़कर मैने शपथ ली थी वह शपथ शायद मेरे मुँह से ही नही निकली थी, निकली थी हृदय के कोने से। जिस दिन मैं तुम्हें पहली बार घर लेकर गया मैं पागल हो गया था, लक्ष्मी, एकदम पागल! जानती हो, किस मर्मान्तक चेष्टा से मैंने अपने को रोकर? मेरे भीतर जैसे कोई शैतान बैठा मुझे उकसा रहा था। प्रत्येक बार तुम्हारा स्पर्श मेरी समस्त शिराओं को झनझना रहा था। जब मैं तुम्हें लेकर दुबारा लखनऊ लौटा तभी मुझे लगा कि मैं अपने को अधिक छल नहीं सकता। तुम मुझसे बहुत छोटी थी फिर परिस्थितियों ने तुम्हें मेरी पत्नी बनाया था। तुम्हें केवल पति की मान्यता देने की ही मैंने शपथ ग्रहण की थी, पर जितनी ही बार मैं तुम्हे देखता मेरा अविवेकी, स्वार्थी, पाशविक चित्र अपने अधिकारों की माँग से मुझे पागल बना देता। ईसी से मैं भाग गया, यह जानकर भी भाग गया। लक्ष्मी, कि माँ की तरह मेरा पालन-पोषण करने वाली मेरी बहने के लिए मेरा पलायन एक ऐसी चोट होगी जिसे शायद वह सह नहीं पायेगी सोचता था इन पाँच सालों में गोआ के उस संत पादरी के चरणों में बैठ मैने अपने चित्त को जीत लिया है पर नहीं। लौटा, तो देखता हूँ, मेरा मूर्ख हृदय पहले से भी अधिक दुर्बल हो गया है, पहले से भी अधिक मूर्ख। न यहाँ चैन है, न वहाँ शान्ति। वहाँ मुझे बारबार मेरी कायरता धिक्कारी रहती। तुम्हारी अजन्मा संतान का भार

ग्रहण करने का आश्वासन देकर ही मंने तुम्हारा हाथ थामा था, उसे मैं भूला नहीं हुआ लक्ष्मी। मैं एक दो दिन में फिर गोआ लौट जाऊँगा पर जाने से पहले मैं पूरा प्रबन्ध कर जाऊँगा कि जिस नादान बच्ची ने मुझे डैडी कहकर पहचाना है। वह जीवन भर मुझे इसी नाम से पहचानती रहे। आज तुमसे झूठ नहीं बोलूगा लक्ष्मी, मैने तुम्हे प्यार किया है। अपनी इस मूर्खता पूर्ण स्वीकृति के लिए मैं आज कोई कैफियत नहीं ढूँढ़ पा रहा हूँ। शायद उसी क्षण मैं तुम्हें प्यार करने लगा था। जब तुम वीभ्रान्त दृष्टि से क्रमशः निकट आती इंजन की सर्च लाइट को देखती निर्भीक खड़ी थी। तुम्हारे उस अद्‌भुत चेहरे को मैं कब्र में जाने तक नहीं भूल सकता – ओह माई गाड।"[1]

प्रेमी रूप -

राबर्ट लक्ष्मी के सामीप्य से चाहे जितना घबराकर भागे किन्तु उसके मन में लक्ष्मी की भयाक्रान्ति मूर्ति बस गयी थी। वह कहता है आज, तुमसे झूठ नहीं बोलूँगा लक्ष्मी, मैने तुम्हें प्यार किया है। अपनी इस मूर्खतापूर्ण स्वीकृति के लिए मैं आज भी कोई कैफियत नहीं ढूँढ़ पा रहा हूँ। शायद उसी क्षण मैं तुम्हे प्यार करने लगा था जब तुम विभ्रान्त दृष्टि से क्रमशः निकट आती इंजन की सर्च लाइट को देखती निर्भीक खड़ी थी। तुम्हारे उस अद्‌भुत चेहरे को मैं कब्र में जाने तक नहीं भूल सकता – ओह माई गॉड।[2]

क्रोध :-

ऐसे सन्त विरागी व्यक्ति को क्या कभी क्रोध आ सकता है? आँधी की तरह नशे में चूर गजानन लक्ष्मी को पकड़कर अपने साथ ले ज़ाने के लिए तैयार हो गया था। उसकी इस उद्‌दण्डता को देख राबर्ट को क्रोध आ गया "राबर्ट ने इस बार उसकी निर्लज्ज चोरी और सीना जोरी विक्षिप्त कर गई। उसने झुककर फिर उसने उसकी गर्दन थाम उसे खड़ा कर दिया और एक घूँसा मारा। फिर तो उसी घूँसे के साथ जैसे राबर्ट को स्वयं नशा चढ़ गया। अन्मत्त बना वह दायें-बायें उसे मारता चला गया।2 तात्पर्य यह है थ्क शिवानी ने राबर्ट के आकर्षक वाह्य रूप उल्लिसित मधुर हँसी स्निग्ध निर्दोष दृष्टि आदि के साथ मुख भंगिमा के विविध रूपों के चित्रांकन कर उसके सरल सादगी और निश्छल त्याग, उदारता और प्रेमी रूप को चित्रित कर एक श्रेष्ठ ईसाई फादर के व्यवहारिक रूप को प्रस्तुत

---

1. सुरंगमा, पृ0 77
2. वही, पृ0 77

किया है।

गाड़ोदिया जी

यह सुरंगमा उपन्यास का गौण पात्र है। मारवाड़ी उद्योगपति है। विनीता इसकी पुत्री है। जिसने कथानक दिनकर से प्रेम-विवाह किया। गाड़ोदिया जी पहले इस विवाह के विरूद्ध गर्जन तर्जन करते रहे किन्तु पुत्री की निष्ठा कर्तव्य परायणता और दृढ़ता देख उसे अपना आशीर्वाद दे दिया। उसके चरित्र व्यवहार की कुछ झलकियाँ इस उपन्यास में इस प्रकार चित्रित हैं :-

1. दूरदर्शिता :-

गाड़ोदिया जी दूरदर्शी उद्योगपति ही नयी सामाजिक जीवन में भी उनकी दृष्टि बहुत पैनी थी। उनके द्वारा बनाये गये धर्मशाला में रहने वाले तेजस्वी युवक दिनकर को जब विनीता अपने कोठी में ले आयी और पिता से दबाव डालकर उसके लिए पार्टटाइम की व्यवस्था की तो गाड़ोदिया जी चौंके। शिवानी ने लिखा है मन ही मन वह पुत्र की उस विजातीय युवक के प्रति दुर्बलता को ठीक ही पहचान गए थे। एक दो बार उन्होंने समझाने की चेष्टा भी की थी "देखो मुनिया, तुम कहती हो दिनकर तुम्हारा मित्र है। पर हम अनपढ़ भले ही हों बेटी, हमने भी दुनियां देखी है। आदमी और औरत के बीच, हमारी जानकार में तो कुल तीन ही रिश्ते सच्चे हैं। बाप-बेटी का, भाई-बहन का, और पति-पत्नी का। चौथे किसी भी रिश्ते की दुहाई दे लो, वह दुहाई केवल आड़ की दुहाई होती है।[1]

चतुर व्यवसायी :-

गाड़ोदिया जी शेयर मार्केट और अपने पैत्रिक व्यवसाय में बहुत सफल और चतुर माने जाते हैं, किन्तु प्रेम दुरूह और जट्लिलिपि को वे नहीं पढ़ सके। "दिन रात लाखों का वारा न्यारा करने वाला सम्पूर्ण शेयर मार्केट की सनकी नाड़ी के लिए एक-एक धड़कन को एक ही अनुभूति कनरती की पकड़ से पहचानने वाले उस चतुर व्यवसायी की सजग बुद्धि को भी विनीता। अँगूठा दिखा गयी।[2]

---

1. सुरंगमा, पृ0 150
2. वही, पृ0 150

चरित्र के पक्षधर :-

गाडोदिया जी की प्रतिष्ठा कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में बहुत ऊँची है। उनकी मान्यता यह है कि चरित्रवान व्यक्ति सामाजिक क्षेत्र हो या राजनीतिक अथवा व्यापारिक अपने चरित्र नौका से इस अगाध समुद्र का संतरण सफलतापूर्वक कर सकता है। "तुम जानती हो, कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में आज तक मेरी कैसी प्रतिष्ठा है। मेरे सामने भले ही कुछ ने कहे पीठ पीछे तुम्हारे दोस्त को लेकर दस बातें करने लगे हैं। तुम कहती हो, तुम राजनीति में नाम कमाना चाहती हो, पर इतनी बात हमारी गाँठ बाँध लो मुनिया, किसी भी बड़े प्रतिष्ठित होनहार राजनीतिज्ञ की भी किसी क्षण हो गई अकाल मृत्यु का एक मात्र कारण होता है, उसके चरित्र में का दुर्बल पक्ष। सुनाम बिना राजनीति कभी टिक नहीं सकती, जिसे तुम लोग अंग्रेजी में कहते हो रेप्युटेशन यही रेप्युटेशन एक सफल राजनीतिज्ञ के लिए अनिवार्य है। तुम तो राजनीति में अपना स्थान बनाने से पहले ही यह गुण गँवा रही हो।[1]

क्रोधी :-

गाड़ोदिया जी ने अपनी पुत्री विनीता को चारित्रिक दृढ़ता का जो उपदेश किया था। विनीता सब का मुँह बन्द करने का संकल्प लेकर कालीवाड़ी मन्दिर में दिनकर जी स्वयंवर रचा आशीर्वाद लेले हेतु उनके पास आयी। पले गाडोदिया जी उस विवाह को लेकर आषाढ़ के प्रथम मेघ से ही गरजे थे। "निकल जा बेहया मेरे घर से। अपनी दौलत कलकत्ते के भिखमंगों को बाट दूँगा। पर तुम्हें एक पैसा भी नहीं दूँगा।[2]

वत्सल रूप :-

इकलौती सन्तान किस पिता को दंश नहीं देती किन्तु पिता अन्त में पिता ही होता है। शान्त होते ही गाड़ोदिया जी ने स्नेह विगलित हो उन्हीं पिताओं की भाँति विजातीय जमाता को कंठ से लगा पूरा राजपाट सौंप दिया था। जो सन्तान के ऐसे ही स्वेच्छाचारी विवाहों के पश्चात् ऐसी ही गरज तरज अन्त में स्नेह दृष्टि की सहस्रधाराओं में बरसाते बिन्दकी सन्तान को फिर गले से लगा लेते हैं। शिवानी ने लिखा है "यह भी संसार का कैसा विचित्र नियम है कि सन्तान माता-पिता को लाख सताले माता-पिता दुर्मुख संतान

---

1. सुरंगमा, पृ0 150
2. वही, पृ0 152

का मुँह जीवन भर न देखने की लाख कसमें खा लें एक न एक दिन उसी सन्तान की ममता उन्हें चुम्बक की भाँति खींचकर अपने सौ खून स्वंय माफ करा लेती है।[1]

गुणग्राही :-

गाडोदिया जी व्यापार और राजनीतिक जीवन में गुणग्राहक रहे। अपने पूर्व के जीवन में उन्होंने अग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष करने वाले नेताओं के अभावों को उन्होंने पूर्णकर उस यज्ञ में अपनी आहुति भी यथा सामर्थ देते रहे हैं। शिवानी ने लिखा है "कभी विनीता के पिता ने ही उस जौहरी के पूरे परिवार का उसकी सुदीर्घ जेलयात्रा के दौरान भरण पोषण किया था। यही नहीं चुनाव के चंदे पुत्रियों के विवाह पुत्र की नौकरी दिलाने के महायज्ञ में सबसे बड़ी आहुति उसके पिता ने दी थी।1 इसी प्रकार विनीता और दिनकर का अर्न्तजाती में विवाह के प्रति दुर्भावना रखने वाले गोड़ोदिया जी ने दिनकर की प्रतिभा को देख उसके गुण ग्राहक बन गये। वे स्वयं कहते हैं "अब आप ही बताइय, ऐसा ही समाज दामाद मुझे अपने समाज में जुट सकता था। अलग हमारे समाज का वैभव ही तो हमारे कुलदीपकों को स्वयं अधः पतन के गर्त में धकेल देता है। जानते हैं कि चाहे पढ़े या लठ्मूसल से घूमे, पिता की दाँतों से पकड़कर जोड़ी गयी अटूट सम्पत्ति का उत्तराधिकारी एक न एक दिन उन्हें ही बनाना है। अब मेरे इस दामाद को लीजिए, सड़क के लैम्पपोस्ट के उजाले में पढ़-पढ़कर हाईस्कूल पास किया उस पर भी सब विषयों में डिस्टिंकशन, कुमाँऊ सिनेटरी का सोने का तमगा जीता इण्टर पास किया, तीन घरों में बर्तन मलकरा ऐसी आग में तपा खरा सोना भला किस कसौटी पर नहीं चमकेगा।"[2]

जानकी प्रसाद

यह पात्र 'सुरंगमा' उपन्यास का गौण सहायक पात्र है। इसके माध्यम से शिवानी ने साहित्य जगत में प्रच्छन्न चुनौती को स्वीकार कर लिखा है "बात यह है कि समाज के निबिद्ध क्षेत्र में रहने वाली वेश्याओं के चरित्र चित्रण का वास्तविक चित्रांकन विश्व के सभी साहित्यकारो के सामने एक टेढ़ीखीर रही है। साहित्यकारों ने वास्तविकता के नाम पर कुत्सित वीभत्स काल्पनिक स्थितियों का चित्रांकन कर या तो यथार्थवाद श्रेणी के साहित्यकार कहलाने में गौरव का अनुभव करते थे या तो कुछ छदम् और सरसरी तौर

---

1. *सुरंगमा, पृ0 150*
2. *वही, पृ0 152*

पर दिखने वाली घटनाओं का चित्रांकन कर एक आदर्श रूप की स्थापना करने का दिवास्वप्न देखते थे। शिवानी ने चाहे वह कस्तूरी मृग या रथ्या अथवा सुरंगमा या चौदह फेरे अथवा कृष्ण कली उपन्यास हों वेश्याओं की वास्तविकता का पुरूष चरित्र के माध्यम से करने का एक नया दृष्टिकोंण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जानकी प्रसाद ऐसा ही ब्रम्हतेज सम्पन्न नर्तक था जो कलकत्ते की प्रसिद्ध वेश्या को नृत्य सिखाते, अपने ब्रम्ह तो को भूल ही नहीं गया अपितु जो संगीत गायन और नर्तन के दुरूह राग के अलंकारों की व्यंजना करता था। वह नवाब के आकर्षण में बँधकर उसके लिए ईदगारा लोहा, सीमेन्ट की गिनती करने लगा। शिवानी ने उसके चरित्र के माध्यम से सामाजिक परिवेश संगीत कला की बारीकियों और उनके मध्य रहने वाले जानकी प्रसाद के व्यक्तित्व कर सटीक मूल्यांकन किया है।

बाह्य सौन्दर्य :-

शिवानी ने जानकी प्रसाद के रूप सौन्दर्य ओर कोठों में रहने के कारण युवावस्था में ही उसके शरीर में जो स्त्रौणता आ गयी थी उसका चित्रांकन शिवानी ने बड़ी बारीकी से किया है। सुरंगमा उपन्यास का गजानन जोशी जब गायन का अभ्यास करने नवाब जान के हयाँ पहुँचा तो वह जानकी प्रसाद के वर्तमान रूप और उसके भूतकाल के सौन्दर्य की कल्पना कर अभिभूत हो गया। शिवानी ने लिखा है ''पण्डित जानकी प्रसाद की जिन्दगी भी उन्हीं रेशमी पर्दो से ढ़के पिंजरों में बन्द तोता मैना की नीरस जवानी की ही भाँति कोठे के उस बंद पिंजरे में दम तोड़ चुकी थी। उनके सूरते पिचके चेहरे की कुटिल झुर्रियों को पहली बार गजानन ने देखा कभी वह चेष्टा निश्चय ही सुंदरी युवतियों की मूरत भगाता होगा किन्तु अब कलश विलासपूर्ण जीवन ने उस प्रतिमा दीप्ति आँखों की चमक धुँधली कर दी थी। होठों के कोनों से बह रही पान की पीक से सनी हँसी में सब समय एक क्षमा माँगने का जो भाव रहता, चलने में उठने, बैठने, में सुदीर्घ नारी संसर्ग से एक स्त्रियों चितलटका आ गया था। आँखों में सुरमें की रेखा चेहरे की और भी कुटिल बनाकर प्रस्तुति करती थी। प्रतिपल अपने आत्म सम्मान ही व्यक्तित्व की पराजय स्त्री कारता वह लौड़ियों नौकरानियों से भी दुरदुराया जाता।[1]

---

1. सुरंगमा, पृ0 98

श्रेष्ठ नर्तक :-

जानकी प्रसाद नृत्यु गुरू हैं। नृत्य की बारीकियाँ उसे ज्ञात हैं नृत्य सिखाते समय उसकी आंगिक चेष्टाओं एवं उसकी शिक्षण कला पर प्रकाश डालती हुई शिवानी ने लिखा है ''पर जहाँ न नवाबजाने के पैरो के घुँघरू झनकते जानकी प्रसाद की पश्चाताप से धुँधली आँखे सूखी सोंठ सा चेहरा गिरगिट का सा रंग बदल लेता। झुकी कमर एकदम सतर हो जाती और वह उसे नाच सिखाने खड़े होते तो लगता वह बूढ़ा जानकी प्रसाद नहीं स्वर्ग से सद्यः अवतरित कोई नृत्यारता अनुपम सुन्दरी अप्सरा है। पान से रक्तिम अधरों पर अनोखे स्मित का जाला फैलाता जानकी प्रसाद नवाब जान के पेशेवर कटाक्षों को सँवारता, सुधारता, कभी-कभी उसे बुरी तरह डपट देता। इस इल्म को सीखने के लिए बहुत बड़ी कुर्बानी देनी होती है बिट्टो! यह नहीं कि पैर धुँधरू झमका रहे हैं और मन कोमल, मद्सम ग़ान्धार में उलझा है। ऐसी सस्ती मटकन थिरकन सीखनी है तो किसी और गुरू का गण्डा बाँधों जानकी प्रसाद न ठगना जानता है न कभी इस विद्या में ठगा गया है।''

वह उदाहरण देकर समझाता है कि नृत्य में कैसे भावों की व्यंजनना की जाती है। वह कहता है कि यह नहीं कि नाच और गाने की दोनों नावों में एक साथ पैर रखकर चलो, नाच ऐसा हो नवाब जान कि हाथ में मुरली न हो फिर भी देखने वाले को उसकी अनदेखी तान हिरन सो मोहकर बाँध ले मुरली ऐसी बजी मुरली ऐसी बजी कहकर वह कालपुण्य की मुरली थाम इधर-उधर विभ्रान्म दृष्टि से देखते स्वयं नृत्य में विभोर होकर सुध बुध खो बैठते।''

ब्रम्ह तेज सम्पन्न :-

जानकी प्रसाद जन्मना ब्राम्हण थे। अभी भी उनमें ब्रम्हतेज जीवित है। यद्यपि वह बीच में सो जाता है। नवाब जान की मुँहलगी दासियाँ जानकी प्रसाद को बड़ा गोस्त खाने का निमंत्रण देती हुई छेड़ती रहती है। उनका ब्रम्ह तेज ऐसे समय उदीप्त हो जाता है ''चल हट करमजली मैं कब तक खाता हूँ बड़ा गोस्त नवीन सगोत्रीय ब्राम्हण अतिथि की उपस्थिति में उस धर्म भ्रष्ट ब्राम्हण का ब्रम्ह तेज एक पल को बुझते दिये की लौ सा ही दप से सुलग उठता।''

ग्लानि :-

जानकी प्रसाद को अपने ब्रम्ह तेज में गर्व था। यद्यपि वह वेश्याओं को नृत्य सीखाना जैसे हीन कार्य कर रहे थे। फिर भी उन्हें अपने ज्ञान पर गर्व था। वे सद्यः आये संगीतकार गायव, गजानन जोशी से अपनी ग्लानि व्यक्त करते कहते हैं।

'देख रहे हो बेटा गजानन, आज यहाँ बित्ते भर की छोकरी भी जयपुर के घराने के जानकी प्रसाद को बेवजह ऐसे छेड़े जा रही है एक लम्बी साँस खींचकर बोले – तुम यहाँ से चले जाओ गजानन, रियाज ही करना है तो किसी मंदिर में करो नहीं तो एक दिन तुम्हारी भी यहर गति होगी, एक दिन तुम्हे भी ये बदजात छोकरियां सगी साली, सरहजों की तरह छेड़ने लगेगीं और तुम कुछ नहीं कह पाओगे इस घर के नमक का यही गुण है बेटा। रीढ़ की हड्डी को धीरे-धीरे गला देता है इस नमका का जहर।''

मद्यप – नवाब ज़ान के यौवन मण्डिता देह का आकर्षण उसे मद्यपी बना बैठा। शिवानी ने लिखा है परसंध्या होते ही नवाब जान अगर चन्दन का लेप कर कोठे में बैठेने जाती तो शराब के नशे में चूर जानकी प्रसाद अपनी कोठरी में औधे पड़े महाबेसुरी लय में घण्टो गाते रहते।

प्रबोधरंजन राय

प्रबोध रंजन राय 'सुरंगमा' उपन्यास के अन्य पात्रों के अर्न्तगत आने वाला पुरूष हैं वे राजा हैं और राजाओं के गुण-अवगुण सभी उसमें मिलते हैं। वह उदार भी है, रसिक संगीत प्रेमी भी है, वह शराबी और क्रोधी भी है। कथानायिका सुरंगमा की माँ लक्ष्मी की वह पति हैं। उनके कुछ क्रिया कलापों का रेखाकंन इस उपन्यास में आकर्षक रूप में हुआ है –

1. वैभव सम्पन्न राजा -

प्रबोधरंजन राय राजा तो थे ही कलकत्ते में उनका बहुत बड़ा व्यापार था। उनके महल में सैकड़ों सिपाही रहते थे। फ्रन्च गर्वनेस मादाम क्रस्टीन घर की व्यवस्था करतीं। पिता के मोनोग्राम अंकित कट्लरी में साहबी छोटा हाजिरी बीसों दास दासियाँ, चार-चार घोड़ा जुटी फिटन उनके वैभव को प्रदर्शित करते।

2. रसिक :

राजा प्रबोधरंजन राय स्वभाव से रसिक थे। उनकी पत्नी को राजयक्ष्मा हो गया

था। वे गौहर जान वैश्या को अपने मनोरंजन के लिए बुलाते थे और धीरे-धीरे मादाम और गौहर जान प्रबोधरंजन के जीवन में इतनी घुलमिल गयी कि वे उनसे उबर नहीं सके।

3. संगीत प्रिय :-

प्रबोधरंजन राय संगीत प्रिय राजा थे, वे स्वयं अच्छे गये थे। राजलक्ष्मी अपनी माँ की याद और राजा के गायन की प्रशंसा करती हुई कहती हैं "भाव विभोर होकर उस दिन उसके पिता ने जो गाना गया था उसे फिर उसने बड़ी होने पर न जाने कितनी बार सुना।"[1] इसी प्रकार गौहड़ जान का संगीत कार्यक्रम प्रबोधरंजन राय की सबसे बड़ी उपलब्धि होती। इसी गौहर जान के कहने पर उनके दरबार में गजानन जोशी का प्रयोग हुआ राजा उसके गायन से प्रभावित होकर उसे सभी सुविधा सम्पन्न कर दिया। गजानन स्वयं हांथ की घड़ी, सोने का तोड़ा, अचकन का कपड़ा, शाल दुशाला और नगद पाँच सौ रूपये लेकर उस विराट प्रासाद से बाहर निकला तब मन ही मन दृढ़ निश्चय कर चुका था कि जैसे ही हो इस प्रासाद के उदार संगीत रसिक स्वामी का संरक्षण उसे पाना ही होगा।

क्रोधी :-

प्रबाधेरंजन राय की पुत्री राजलक्ष्मी थी। जिसे संगीत की शिक्षा देने गजानन जोशी उनके महल में आता था। और उसने संगीत की शिक्षा के साथ ही लक्ष्मी को प्रेम की अलियों गलियों का भी पता दिखा दिया। परिणामस्वरूप सत्रह वर्ष की अबोध किशोरी कुटिल प्रेमी का हाथ पकड़कर निकल गयी। राजा प्रबोधरंजन के क्रोध की कोई सीमा नहीं रही। उन्होंने फिर लक्ष्मी को कभी क्षमा नहीं किया। कुपित होकर वह अपनी सारी सम्पत्ति भिखरियों को बाँटने को कहता। राजलक्ष्मी सोंचती है "पिता की मर्यादा पर उसका निर्लज्ज पलायन जो कलंक अमिट धब्बा लगा गया था। पिता की सम्पत्ति भी उस कलंक को अम्लान नहीं कर सकती। इस अपमान की तीव्र दहन को क्या उसका प्रत्यावर्तन पिता के लिए और भी असह्य नही होगा।"[2] तात्पर्य यह है कि उदार प्रबोधरंजन रसिक, संगीत प्रेमी, अनुशासित पिता और उदार गुण ग्राही थे। शिवानी ने लिखा है राजा प्रबोध रंजन

1. सुरंगमा, पृ0 31
2. वही, पृ0 34

राय स्वयं संगीत रसिक थे उन्होंने गजानन को प्रत्येक सुविधा ही नहीं दी अच्छी खासी तनख्वाह भी बाँध दी थी। उसके स्वयं के रियाज के लिए उन्होंने सबसे ऊपर की मंजिल का एकान्त कमरा खुलवा दिया था। परिश्रमी संगीत गुरू कितने यत्न से उनकी पुत्री को गाना सिखा रहे हैं यह देख राजा साहब ने तीसरे ही महीने गजानन की वेतन वृद्धि कर दी।[1] उन्होंने अपने कमरे लखनऊ के फिरंगी महल का नक्शा उतार कर बनवाया था। खिड़कियों पर पत्थर की कटाव झालरें थी। जो काँच स्थापत्य कला का अनुपम आभूषण रही हैं। पत्तियों और लता गुल्मों के प्राकृतिक पर्दे स्वयं ही लटकते नीचे तक लहरा गये थे। सरल प्रबाधेरंजन अपनी लक्ष्मी और आँख न उठाकर बात करने वाले गजानन को सरीफ ही समझते रहे।

रोहित

'कैंजा' की नायिका नन्दी तिवारी का दत्तक एवं पालित पुत्र रोहित है उसके शिशु रुप का चित्रण करते हुए लेखिका ने लिखा है ''खिड़की से आती सूर्य की नव रश्मियाँ रोहित के गोरे गोल चेहरे पर सुनहला जाल से विखेर रही थी। लच्छेदार सुनहले केश नन्हें-नन्हें कुण्डल बन पूरे ललाट पर विखर गये थे। नन्हें खुले अधरकुट से सिमट छिटकर कर गोल चिबुक पर झलक गया था।'' नौ-दस वर्ष के बालक रोहित की दृढ़ता गम्भीरता और उसके सौन्दर्य का चित्रांकन करते हुए शिवानी ने लिखा है - ''घुँघराले सुनहले बालों और नीली आँखों वाला वह ब्लान्ड बालक चेहरे मोहरे से एकदम विदेशी लग रहा था। उम्र कठिनता से नौ-दस की होगी किन्तु चेहरे पर किसी अनुभवी प्रौढ़ पुरुष की सी दृढ़ता थी न उसकी चाल में बाल सुलभ चापल्य था न व्यवहार में। माँ की अँगुली पकड़े वह ऐसे उस ठसके से कबूतर सा अपना नन्हा सीना ताने चल रहा था। जैसे भीड़ की रेल-पेल से बचाती माँ उसे नहीं। वह ही माँ को लिये जा रहा हो। नीले कार्ड राय की हाफ पैण्ट से निकली उसकी गोरी पुष्ट टाँगे दर्पण सी चमक रही थी। माता-पुत्र के चेहरे में कोई साम्य नहीं था। फिर भी दृढ़ता से भीचें गये नन्हें ओठों में भीड़-भडक्के के प्रति उदासीन तटस्थता में वयस्क का व्यवधान दोनों को स्पर्श भी नहीं कर पाया था। लगता था प्रौढ़ा माँ के आस्वाभाविक गाम्भीर्य ने उस बालक की स्वाभाविक चंचलता को असमय ही ग्रस

1. सुरंग्रमा, पृ0 108

लिया है।''

1. सजगता :-

शिवानी ने रोहित को अतिशय प्रतिभावान बालक के रूप में चित्रत किया है। ''बाल मनोविज्ञान वेत्ताओं का मानना है। कि अतिशय प्रभावशाली कुशाग्र बुद्धि के बालक अत्यन्त सजग होते हैं। उनकी जानकारी एवं मानसिक योग्यता सामान्य बालकों से अधिक होती है। लेखिका के अनुसार आठ-दस वर्ष का बालक रोहित मानसिक बुद्धि परिलब्धता में किशोरावस्था को पहुँच चुका है। लेखिका ने लिखा है - ''यही उस बालक के विचित्र स्वभाव की विशेषता थी। कभी-कभी पलक झपकते ही तितलियों के पीछे भागने वाला मित्रों की टोली के साथ छत पर धमाचौकड़ी मचा कटी पतंग की डोर लूटने वाला वह चंचल शोख नन्हा दस्यु न जाने किस सोंच-विचार में उलझ एक अजीब दार्शनिकता के गाम्भीर्य से अपना काना चेहरा प्रौढ़ बना लेता था।'' बालक जब विकास की अवस्था में होता है आस-पास के वातावरण, सामाजिक पर्यावरण से अप्रभावित हुए बिना नहीं रहता है। समवयस्क बालकों द्वारा पिता के विषय में पूँछने पर तथा निरूत्तरित रोहित को देख हँसते हुए जब बालक कहते हैं कि उसके कोई डैडी है भी या नहीं। इस कौतूहल पूर्ण प्रश्न और पिता के अभाव के कारण कुछ-कुछ अवास्तविक काल्पनिक कारणों और सन्देह से बालक रोहित का मन व्यथित हो जाता था। यद्यपि पति-पत्नी के सम्बन्ध पिता के वास्तविक स्थिति का अनुमान किशोर बालक करते हैं किन्तु रोहित अभी उसका काल्पनिक जिज्ञासा उसके चेहरे में एक गाम्भीर्य ला देती है। लेखिका ने लिखा है -''रोहित ने कमीज की बाँहो से आँखे पोंछ ली पिता की संदेहास्पद अस्तित्व ने उसके नन्हें कलेजे को बुरी तरह आतंकित कर दिया है। दस वर्षो में नन्दी क्या इस विचित्र बालक की विलक्षण प्रतिभा का यथेष्ट परिचय नहीं प्राप्त कर चकी थी। गर्न्धव किन्नर सा वह देवदत्त बालक, क्या साधारण मानव शिशु सा भोला अन्जान था। न जाने क्यों कभी-कभी उसकी मायावी आँखों की चमक नन्दी को बुरी तरह सहमा देती थी। मन की भाषा पढ़ लेने वाले इस अलौकिक पुत्र की उपस्थिति में मिथ्या भाषण उसके लिए सर्वथा असम्भव हो उठता। किसी अनुभवी घाघ थानेदार की सी उसकी सर्वव्यापी दृष्टि वर्षो के फरार खूनी को भी देखते ही पहचान लेती थी। कभी-कभी तो नन्दी को लगता कि उसके कुछ न बताने पर भी वह स्वयं सब कुछं जान गया है। वहाँ होकर भी वह जैसे कहीं दूर चली गयी थी।'' जैसे ही नन्दी रोहित

को पिता का नाम बताती है। रोहित की मनोदशा एकदम से बदल जाती है। ''ओह जानती हो, अब मेरे नाम के आगे क्या लिखा जायेगा। उसका उत्तेजित स्वर एकदम तीखा हो गया था। रोहित कुमार सुरेश कुमार भट्ट और फिर वह दूसरे ही दिन अपने सहपाठियों से सीना तानकर कह आया था कि वह अपनी माँ के साथ अपने पिता को लाने पहाड़ जा रहा है।''

2. प्रतिक्रियावादी :-

युंग और एडलर मनोविज्ञान वेत्ताओं का मत है कि किशोर होते बालकों के शरीर में आंगिक परिवर्तन आते ही उसके मानसिक विकास की दशा अत्यन्त तीव्र हो जाती है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए किशोर सजग होकर प्रतिक्रियावादी बन जाते है। विधवा मालदारिन की पगली कन्या का अवैध पुत्र रोहित है इसका पिता सुरेश भट्ट था जनसमाज में पिता की सामाजिक मान्यता नहीं थी। अचानक नन्दी पुत्र को लेकर जब पहाड़ पहुँची अपने पिता को देख रोहित परिस्थितियों से समझौता कर रहा था। ''एक बार सहमी सकुची दृष्टि से अपने उस विचित्र डैडी के भाव शून्य चेहरे को देख रोहित ने माँ की छाती में अपना मुँह छिपा लिया।''2 दुर्भाग्यवशा सुरेश भट्ट की मृत्यु के बाद अचानक आ गयी विधवा मालदारिन ने रोहित के जन्म का रहस्य खोल उसे जड़ स्तब्ध ही नहीं कर गयी अपितु उसे प्रतिक्रियावादी बना गयी। रोहित को जब पता लगा कि वह मातृहीन ही नहीं पितृहीन हो गया और नन्दी उसकी विमाता है ऐसे अवसर पर रोहित की प्रतिक्रिया का चित्रांकन शिवानी ने किशोर मानस की प्रतिक्रिया के रूप में इस प्रकार किया है –''रोहित कब उसकी गोदी से उठकर चला गया। वह जान नहीं पायी। तभी टूटे काँच की झनन से वह चौककर उठी नन्हा अपराधी नतमस्तक खड़ा था। अभी भी उसकी बँधी मुट्ठी में एक तीखा दासी पत्थर था। माँ के रोकने से पहले ही खींचकर उसने अपना दूसरा सधा निशाना मारा। नन्दी ने विद्रोही पुत्र को बाँहों में बाँधने की चेष्टा की तो वह पहले छटपटाया फिर उसकी छाती में मुँह छिपाकर जोर-जोर से सिसकने लगा। मैं तुमको कैंजा नहीं कहूँगा।''

बात यह है कि किशोर मानसिकता की प्रतिक्रियावश ही रोहित ने अपने आन्तरिक क्रोध का प्रस्फुटन सीसा तोड़कर किया और नन्दी के सामीप्य उन्हें उसे पुनः आस्वस्त ही नहीं किया पूर्व स्थिति में ले आयी।

इस प्रकार शिवानी ने वयः सन्धि के उम्र में पहुँचे हुए बाल किशोरों की

मानसिकता परिवर्तित सौन्दर्य एवं शारीरिक गठन, मानसिक योग्यता क्रिया व्यवहार का ऐसा मार्मिक हृदयग्राही चित्रण किया है कि वह प्रतिभाशाली पात्र के साथ ही साथ आकर्षक सिद्ध हुआ है।

अध्याय पंचम

शिवानी के उपन्यासों में पुरुष पात्रों का वर्गीय रूप
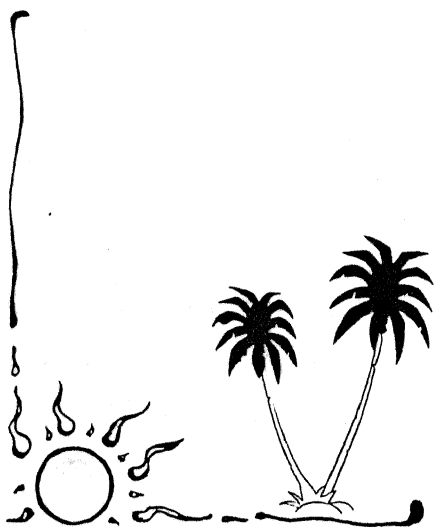
कहा जाता है कि साहित्य जनता की चित्त वृत्तियों का प्रतिफलन होता है, साहित्य समाज का दर्पण है। यह बात जितनी यथार्थ रूप में खरी उपन्यासों में उतरती है, साहित्य की अन्य विधाओं में कम, बात यह है कि उपन्यास विधा, कुछ मनोरंजक, कुछ चरित्र चित्र, कुछ आंचलिक, कुछ राजनीतिक, और मनोविज्ञान से सम्बन्धित होने के कारण सामाजिक गतिविधयों का सम्यक निदर्शन कराने में पूर्ण सफल हुआ। कहानी जीवन के एक निश्चित अंश को लेकर एक दो समस्याओं का ही निरूपण करती है। उपन्यास आधुनिक भौतिकवादी, प्रतियोगितावादी समाज की मूलभूत आवश्यकताओं, उसकी अनुभूतियों, समाज की सीमा और उसकी सामर्थ्य का सही चित्रण करने में समर्थ हुआ है। इसीलिए हिन्दी में उपन्यासों का विकास बहुआयामी है।

वर्तमान समाज में नारी, पुरूषों को समान अधिकार दिये गये हैं । नारी ने अपने सामाजिक, आर्थिक अधिकारों को प्राप्त कर वैयक्तिक स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए प्रयास किया है, तो दूसरी तरफ पुरूष वर्ग भी अपने स्वत्व और क्रिया कलापों में अपना वर्चस्व बनाये रखने का प्रयत्न किया है। शिवानी के अधिकांश उपन्यास नायिकाओं की जीवनगाथा, उनकी स्वतन्त्रता, स्वायत्ता, महत्ता का दिम दिम घोष इन उपन्यासों में मिलता है। लघु बडे उपन्यासों में पुरूष समाज की बहुआयामी प्रतिछवियॉ चित्रित हैं। जिस प्रकार जीवन्त समाज पुरूष के सामाजिक वर्गीय रूप, पिता, प्रेमी, पुत्र, पति, भाई, सहयोगी, नैाकर, इत्यादि रूप होते हैं उसी प्रकार उपन्यासों में भी जिस समाज का चित्रण होता है उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एसी ही वर्गीय रूप उनके गुण-अवगुण चित्रित किये जाते हैं।

पिछले अध्याय में प्रमुख और गौण पात्रों के चरित्र , व्यक्तित्व, आन्तरिक, वाह्य विशेषताओं का मूल्यांकन कर उनकी योगदान की चर्चा की गयी है । प्रस्तुत अध्याय में सामाजिक वर्गीय इस रूप के स्वरूप की चर्चा की जा रही है।

1. पिता रूप-

शिवानी के उपन्यासों में प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपें में पिता का उल्लेख है। यह पिता पुत्र और पुत्री दोनों रूपों में उल्लिखित है कही यह नायक और कही प्रमुख पात्र रूप में भी अवतरित हुअ है। हरदत्त वैद्य, विष्णुदत्त, बद्री काका नलिनी के पिता (माणिक)

इकबाल नारायण (कस्तूरी मृग) सुरेश भट्ट गदाधर भट्ट , हेमचन्द तिवारी (कैंजां) भास्करन (कष्णवेणी) माधव बाबू, श्यामा चरण, उनके ताऊ बिग्रेडियर हंसराज (अतिथि) महिम तिवारी (भैरवी) रामदत्त पाण्डेय, नारायण सेन. (श्मशान चम्पा) शिवदत्त पाण्डेय कर्नल उनके पिता (चौदह फेरे) दिनकर पाण्डेय, प्रबोधरंजन राय, गाडोदिया (सुरंगमा) विद्युतरंजन, असदुल्ला खान (कृष्णकली) सत्येन्द्र के पिता(अभिनय) करसनदास कापडिया (रतिविलाप) शिवदत्त (स्वयंसिद्धा) मेजर रोहिताश्वदत्त (गैंडा) प्रतुल के पिता शिवशंकर इंजीनियर (पाथेय) जनार्दन, तिवारीजी, (मायापुरी) कमल वल्लभ और देवेन्द्र, बसन्त (कालिंदी) इत्यादि पात्र पिता रूप में उल्लिखित हैं । इनमें विष्णुदत्त, बद्रीकाका, नलनी के पिता, गदाधर भट्ट, ब्रिगेडियर हंसराज, सत्येन्द्र के पिता, शिवदत्त, रोहिताश्वदत्ता के पितृत्व और उनके तजजन्य अनुभूतियों का चित्रांकन शिवानी ने किया है वस्तुतः पितृत्व में जन्म देने के साथ सामाजिक आर्थिक संरक्षण वात्सल्य, पुत्र की उन्नति हेतु प्रयास यह पिता का धर्म कहा जाता है इस दृष्टि से अतिथि के माधव एवं श्यामाचरण, श्मशान चम्पा का रामदत्त, चौदह फेरे का कर्नल शिवदत्त पाण्डेय प्रमुख व्यवसायी पत्नी नन्दी के नाम से विशाल प्रासाद का निर्माण कराकर अपनी पुत्री अहल्या का पालन पोषण शिक्षा दो करा की व्यवस्था करता है। अपनी पुत्री अहल्या को नंगे पैर बाल भूतनी से फैलाए बीडी खरीदते देख अपनी पत्नी को डॉटता हुआ कर्नल कहता है- ''क्योंजि तुमसे इतना भी नहीं होता कि लडकी सड़क में जाने से रोक सको अभी-अभी इतने कपडे सिलवाकर दिये है, पिनाहे तो थे लाल फिराक तो पहने थी लौडिया और उसके नीचे तुमने जो हरी सलवार पहनाकर एकदम गार्ग की झंडी बना दिया है गॅवार ही नहीं जंगली हो एकदम, बीडी खरीद रही है छोकरी मेरी इज्जत का तो ख्याल किया होता। ''[1] और कर्नल ने उसे मद्रास के सम्पन्न स्कूल में भेज दिया, जहॉ उसके महीने का खर्चा ही दो सौ रूपये होता है। कर्नल की तव्वर व्यवस्था से ही अहल्या सुरूचि सम्पन्न आकर्षक युवती के रूप में अवतरित हुयी है। कर्नल ने अहल्या को हर तरह की सुविधा और स्वतन्त्रता दे रखा था, उसके विवाह की चर्चा होते ही उसकी रक्षिता मल्लिका अर्न्तजातीय विवाह की पक्षधर थी , जबकि कर्नल उसको अपने पहाडी संसकारों में रचे बसे वर से करना चाहता था। इस हेतु वह उसे पहाड

---

1. चौदह फेरे, पृ0 18

ले जाकर वहाँ के रीति रिवाजों से परिचय कराता है और उसका विवाह, सरकारी अफसर सर्वेश्वर तय करता है। यद्यपि पिता पुत्री में इस बात को लेकर मनमुटाव है, अहल्या अपरिचित व्यक्ति से विविाह नहीं करना चाहती जबकि कर्नल की दशष्टि में वह पहाड का जगमगाता हुआ हीरा है । वह कहता है - ''किसी भी विपत्ति के आने के पहले मै किसी योग्य पात्र. के हाथ में सौप दू और सर्वेश्वर से अधिक योग्य लडका मुझे कभी नहीं मिल सकता। फिर एक बात और है बेटी मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा विवाह अपने ही समाज में हो और हमारे समाज में सर्वेश्वर ही सबसे जगमगाता रत्न है, कुछ ही दिनों में वह फस्ट सिक्रेटरी के पद पर पहुँच जायेगा। तुम्हें तुम्हारी वे सब सुविधाएँ मिलती रहेगी, जिनका तुम्हें अभ्यास है मुझे तुमसे बहुत आशा है बेटी।।''[1]

कर्नल पिता के रूप में हीरे की एक अंगूठी दामाद को देकर शगुन करता है। अहल्या सगाई के समाचार को सुनकर अपनी नौकरी पर चली जाती है और अन्त में पिता के न चाहते हुए भी अहल्या विवाह के दिन ही भाग कर राजेन्द्र से शादी कर लेती है, इस स्थिति में कर्नल की दशा का चित्रांकन शिवान ने इस प्रकार किया है-''पहले कुछ देर तक कर्नल क्रोध से बौखला गया कनपटियों पर उसका बढता हुआ रक्तचाप अपने कडे हथौडे चलाने लगा वह अब क्या करेगा।''[2]

तात्पर्य यह है कि कर्नल सहृदय उदार आधुनिक दृष्टि सम्पन्न पिता है जो अपनी कन्या का विवाह अपने समाज में ही करना चाहता था। चौदह फेरे में दूसरा पिता कर्नल पाण्डेय के पिता जज साहब थे जिनका बाल्यकाल बहुत सुविधा का नहीं रहा इसलिए अपने पुत्र कर्नल की शिक्षा बाहर करने की व्यवस्था की, शिवानी ने पिता के रूप में उनकी महत्वाकांक्षा का उल्लेख इस प्रकार किया है- ''इसी से चाहते थे कि पुत्र नैनीताल के साहबी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करे जहा काले झब्बेदार लबादे पहने आयरिश ब्रदर समृद्ध पिताओं के भाग्यवान पुत्रों को चाबुक से चमडी उधेडकर अंग्रेजी अदब कायदे सिखाते थे फीस बडी तगडी थी पर जाडों की छुट्टियों में शिवदत्त स्कूल के कलेवर में चमकता घर आता तो जज साहब का सीना गर्व से तन जाता , किसी तरह लडका सीनियर कैम्ब्रिज पास कर के फिर विलायत भेज दूँगा, जज साहब अपने मित्र से कहते पर पुत्र को

---

1. चौदह फेरे, पृ0 166

2. चौदह फेरे, पृ0 166

विलायत भेजने का स्वप्न साकार नहीं हो पाया।''[1]

कर्नल के पिता ने अपने पुत्र का विवाह नहान की रमणी सुन्दरी नन्दी से किया। इस विवाह में उन्हेंाने जिस तरह की व्यवस्था की थी वह पिता को उत्साह उसकी उदारता का जीवन्त नमूना था।

शिवानी ने पिता के दूसरे रूप का चित्रांकन 'अतिथि' के माधव बाबू और श्यामाचरण के रूप में किया है दोनों की आर्थिक स्थितियों में 36 की दशा है। श्यामाचरण सरल , सात्विक, अध्यापक , ज्योतिषी और कन्या जया के पिता है तो माधव बाबू मंत्री, राजनेता अर्थ से सम्पन्न कार्तिक के पिता है। धन, रूप, यौवन, चाटुकार जहॉ एक साथ मिल जाय ऐसा पुत्र कदाचारी, मद्यप, दुराचारी, हत्यारा न बने इसी में आश्चर्य है। चतुर माधव बाबू जया के अप्रतिम सौन्दर्य को चारा के रूप में प्रयुक्त करना चाहते थे, उनकी मान्यता थी कि अबाध्य, उदण्ड, दुस्साहसी पुत्र, जया के सभ्य, शिष्ट, मारक सौन्दर्य के सामने अपनी अबाध्यता भूल जायेगा। अपने किशोर पुत्र कार्तिक के रूप और उसके अनियंत्रित आचरण को देख पिता रूप में माधव बाबू का चिन्तन और आचरण कितना स्वाभाविक है। दृष्टव्य है। -''कमरे में पहुँचे तो स्तब्ध होकर देहरी पर ही खडे रह गये पूरी दीवार पर नग्न विदेशी सुगंधित चित्र पूरे कमरे में बिखरे सिगरेट के अवशेष औधे पडे खाली गिलास दुर्गन्ध का भभका उन्हें दुस्साहस से पीछे धकेल गया था तब क्या लडका चरस गॉजा भी पीने लगा था।''[2] ऐसे समय उनका पितृत्व जागृत होकर पुत्र की उस छवि को याद करता है।

शिवानी ने लिखा-''वे सोचते हैं कि यह बचपन का वही गुनाह है माधव बाबू के कण्ठ में सहसा ममता बनकर अटक गया, इसी चेहरे को देख तो उन्होंने इसका नाम धरा था, कार्तिकेय उन्हेंने क्या सोचा था कि उनका यह दुलारा बेटा अपने यौवन तरू पर स्वयं अपने हाथों ऐसा कुठाराघात कर उसे पत्रहीन ठूठ बना दिया।''

वे अपने मित्र श्यामाचरण को सपरिवार निमंत्रित कर जया को पुत्रवधू बनाने का प्रस्ताव करते है। पत्नी और पुत्री के विरोध के बावजूद वे उसे अपनी पुत्रवधू बना लाते है। वे बडी कुशलता से पुत्र और पुत्रवधू को भ्रमण हेतु भेज देते है। जब उन्हें पता लगता

---

1. चौदह फेरे, पृ0 2-3

2. अतिथि, पृ0 13

है उनके पुत्र की उदण्डता और मुखरता ने जया को आहत किया है, तो उनका श्वसुर रूप आगे हो आता है और वे जया को संरक्षण प्रदान करने के लिए दृढ प्रतिज्ञ हो जाते है। माधव बाबू ने जहॉ एक ओर पुत्र की दुस्कीर्ति हत्या और बलत्कार को छिपाने का प्रयास किया वही दूसरी ओर वे वधू को अधिक प्रश्रय देत हैं। वह पुत्र को समझाते हुए कहते है–

''बेकार की बाते सुनने के लिए मेरे पास वक्त नही है मुन्ना, तुम कोई बच्चे नही हो पेट की भूख से भी बदतर शरीर की भूख होती है। मै नहीं चाहता कि मेरा बेटा, इध ार उधर नालियों में पडे जूठे पत्तल चाटे मेरे पास तुम्हारी एक-एक बात पहुॅचती है। मैं ही जानता हूॅ कैसे -कैसे मैने तुम्हें दातों के बीच जीभ सा सेत कर बचाया है पर यह अब सब नहीं होने दूॅगा।''[1]

अपनी बात़ मनाने के लिए वे पुत्र के दुस्साहसिक अपराधिक कृत्यों का उल्लेख करऩे से भी नहीं चूकते। माधव बाबू को लगा कि उनका पुत्र उनके लिए दुस्कीर्ति का धन बन गया है। शिवानी ने इस व्यथा को इस प्रकार निरूपित किया है।'' देखने में मोम का सा पुतला बेटा इधर उनके जीवन पथ का गोखरू कॉटा बन गया था। बाहर भी रहते तब भी यह कॉटा धप-धप कसकता भला अपनी ही समज्जा के टुकडे को कैसे नहीं पहचाते।''[2] माधव और कार्तिक में पीढी का ही अन्तराल नहीं था। वैचारिक मतभेद में राजनीतिक मदान्धता भी थी। शिवानी ने पीढियों के इस अन्तराल का निरूपण पिता की दृष्टि से किया है। माधव बाबू के पिता का एक रूप और भी दिखाई देता है उनकी पुत्री लीना, नशे की अभ्यस्त हो गयी थी। कुॅवारे मातृत्व की स्थिति उनके लिए बहुत कष्ट कर बनी। भला जिसके पुत्र और पुत्रियॉ आसामाजिक कार्यो में लिप्त रहे हो पिता को घातक रोग हृदयाघात न पडे ऐसा कैसे सम्भव है। इस प्रकार अतिथि में माधव बाबू के माध्यम से चतुर किन्तु राजनीतिक स्वार्थी पिता का रूप सामने आया है जो रूप सौन्दर्य को चुग्गा गनाकर पुत्र को ठीक करना चाहता है।

पितृत्व की साकार प्रतिमूर्ति अतिथि के श्यामाचरण है। वे अपरूप सुन्दरी उपन्यास नायिका जया के पिता है उन्हें अपनी पुत्री के रूप तेज और चरित्र पर पूर्ण विश्वास है।

1. *अतिथि, पृ0 16*

2. *अतिथि, पृ0 17*

श्यामा चरण कहते है-''मेरी जया सचमुच जया है 'सिंह स्कंधाधि रूढा त्रिभुवन अखिलं तेज सा पूरयन्ती' सदा सिंह के कंधे पर चढी मेंरी बेटी अपने तेज से तीनों लोकों को पूर्ण करती रहेगी। तुम क्यों इस विवाह की चिन्ता करती हो, देख लेना इसे मॉग कर सर माथे पर बिठायेगा।''[1] श्यामाचरण के एक पुत्री जया पुत्र बंटी है। अपने बच्चों का पालन पोषण उन्होंने बडी ईमानदारी से किया था पुत्री जया के विवाह का प्रस्ताव सुनकर कोई दूसरा साधारण पिता होता तो गदगद हो जाता किन्तु श्यामाचरण जया की सहमति लेकर ही, विवाह की बात करते हैं।

पिता के सर्वथा नवीन अस्वाभाविक रूप का उदाहरण 'कस्तूरी मृग' के इकबाल नारायण है, कुष्ठरोगी इकबाल नारायण जब कुष्ठा आश्रम बलात भेजा जाता है, तो अपने पुत्र नन्हें को ऐसा शाप देता है कि उसका वंश भविष्य में न चले। ऐसे पिता का रूप कम देख्ने को मिलता है स्वार्थी और नीच विशेषण ऐसे ही पिता के लिए मिलते है। अपने पुत्र का न तो उसने लालन पालन ही ढंग से किया था अपने पुत्र को अपने लाड-दुलार वात्सल्य से वंचित रखा था और उसे अभिशाप देता हुआ कहता है- ''मैं जानता हूँ मैंने तेरे साथ अन्याय किया है तू मुझे कभी माफ नहीं कर सकता है पर वह बदला अपने अपाहिज बाप से मत ले XXX भगवान करे तू भी कभी घर ग्रहस्थी का सुख न भोगे अंग अंग में कीडे पडे तेरे।''[2]

इसी प्रकार 'श्मशान चम्पा' का रामदत्त पाण्डेय है। जो अपनी पुत्र की सुख शान्ति के लिए मोह ग्रस्त हो चन्पा को चेतावनी देता है। पिता के अच्छे और कठोर रूप का स्वरूप सुरंगमा उपन्यास के दिनकर पाण्डेय और राजा प्रबोधरंजन राय के रूप में दिखाई देता है। सुन्दर किशोरी पुत्री का पिता दिनकर पाण्डेय अपनी और पत्नी की व्यस्तता देख पुत्री की शिक्षा हेतु सुरंगमा की नियुक्ति करता है। उसे अपने साथ ले जाकर अपने जीवन के सरल , पवित्र और गरीबी के स्थितियों का उल्लेख करता है। किन्तु प्रेमी रूप के कारण उसके ममत्व रूप का चित्रांकन नहीं हो सका। प्रबोधरंजन राय राजा, उदार और खुले विचारों के थे किन्तु पुत्री राजलक्ष्मी के पलायन की घ्टना को सुन वे मर्माहत हो उठे। मारवाडी उद्योगपति गाडोदिया चतुर, दूरदर्शी पिता है। जिसकी पुत्री ने दिनकर पाण्डेय से

---

1. अतिथि, पृ0 8

2. कस्तूरी मृग, पृ0 28

प्रेम विवाह किया था, प्रारंभिक गर्जन–तर्जन के बाद उन्होंने पुत्री को क्षमा कर दिया। पिता के आदर्शरूप की झॉकी 'पाथेय' उपन्यास के शिवशंकर रूप में मिलती है। जिनका पुत्र प्रतिभावान था उस पुत्र के मुमूर्ष अवस्था और उसकी आत्मा की शान्ति हेतु वे तिलोत्तमा से आकर यह बात कहते है कि उनके पुत्र ने यह बताया है कि तिलोत्तमा उसके पूर्व जीवन की पत्नी है। अतः तिलोत्तमा से उसके पास चलने का आग्रह करते है। 'मायापुरी' के जनार्दन ईमानदार पिता है जिन्होंने अपनी अचल सम्पत्ति गिरवी रख पुत्र को उच्च शिक्षित किया, तो महामहिम तिवारी ऐसे पिता है, जो अपनी उदण्ड, अबाध्य पुत्री सरिता के लिए सतीश जैसे श्रेष्ठ युवक का चयन करते है और फिर भूल जाते है कि पति पत्नी की भी कुछ आकांक्षा भी होती है। 'कालिंदी' का पृथ्वीवल्लभ ऐसा ही अकर्मण्य पिता है जो पुत्री के पालन का दायित्व तो नहीं निर्वाह करता किन्तु विवाह के समय कन्यादान देने के बहाने मामा से अपने हक के लिए लडने आ जाता है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि शिवानी के उपन्यासों में पिता के जिन रूपें की चर्चा है। वह वत्सल, निस्वार्थ, त्यागी उदार और सरल सात्विक पिता है। साथ ही क्रूरता , क्रोध, लम्पटता, लिप्सा, दर्भावनायुक्त पिता है। पिता पुत्र के सम्बन्धों में कहीं सरलता, निकटता, आदर तो कही अन्तराल, क्रोध, अश्रद्धा, कृतघ्नता दिखाई पडती है। प्रायः पिता के ममत्वपूर्ण सहृदयता, विवेकशीलता इष्टमित्र और पुत्र मोह से पीडित व्यथित स्थितियों का चित्रांकन शिवानी करने में समर्थ हुई है।

2 पुत्र रूप :-

धार्मिक और नीतिग्रंथों में यह मान्यता है कि पुॅम नामक नरक से उद्धार या रक्षा करने के कारण उसे पुत्र कहा जाता है। तो मनोविज्ञान के क्षेत्र में यह मान्यता बृद्धमूल है, कि पत्नी के गर्भ में जाकर पिता ही पुत्र रूप में उत्पन्न होता है। संवेगों की दृष्टि से वंश विस्तार की भावना ही पुत्र रूप में पनपती है। शिवानी ने विमलानन्द, बिल्लू, नन्हे, सुरेश भट्ट, रोहित, कार्तिक, बंटी, धनराज ओबेराय, राजेन्द्र बृजेन्द्र, कुन्दन सिंह उमेश, महेश, दिनेश, मधुकर कर्नल, समीर गॉंगुली, गजानन जोशी, प्रवीर, शेखर, विक्रम, कर्ण, प्रतुल, विनायक, सतीश, देवेन्द्र, महेन्द्र, नरेन्द्र पुत्र रूप में चित्रित किये गये हैं। 'विषकन्या', माणिक, कष्णवेणी, भैरवी, उपप्रेती, श्मशान चम्पा, कष्णकली, अभिनय,

किशुनली, और पाथेय में पुत्र सम्बन्धी कुछ क्रिया-कलापों का उल्लेख मात्र है। पुत्र के सम्बन्धी, गुणो अवगुणों की विस्तृत चर्चा नहीं है। पुत्र रूप में जिन लोगों की चर्चा आयी है उसमें कसरस्तूरीमृग का नन्हे बाबू, 'कैंजा' का रोहित, अतिथि का कार्तिक, मायापुरी का सतीश प्रमुख है। 'श्मशान चम्पा' का मधुकर चम्पा से प्रेम करता है किन्तु पिता रामदत्त के क्रोध और धमकी से विरत हो जाता है, चौदह फेरे का सर्वेश्वर अपने पिता के अनुरूप पुत्र है, जबकि सुरंगमा का गजानन जोशी कुपुत्र की श्रेणी में आता है क्योंकि उसने अपने पिता की रखैल माॅ के सोने का कंगन चुरा कर सरूली के लोटे में प्रेम स्वरूप देता है वह माँ के अन्यायों को सह नहीं पाता इसलिए माता-पिता दोनों को कष्ट देने के लिए घर से भागकर भीख माँगने लगता है। तेजस्वी पुत्र का रूप प्रवीर 'कष्णकली' में दिखाई पडता है, प्रवीर और सुवीर तिवारी जी के दो पुत्र थे प्रेम विवाह कर सुवीर अपने को अलग रखकर परिवार से दूर रखता है। दुर्घटनाग्रस्त होने पर उसकी पत्नी उसे छोड कर भाग जाती है। प्रवीर उच्च पदस्थ आइ0 ए0 एस0 अफसर परिवार में अपना दबदबा रखता है माता-पिता दोनों उसकी जिद के आगे हार जाते है। पिता के अनुनय करने पर ही वह कुन्नी से विवाह करता है। 'रतिविलाप' का विक्रम और करसनदास कापडिया का अबोध शिशु क्षणिक छटा दिखाकर प्रभावित करने में समर्थ रहते हैं। किशुनली पगली का अवैध पुत्र कर्ण अपनी पालिता कॉखी का बहुत ध्यान रखकर पुत्र की मर्यादा की रक्षा करता है। 'मायापुरी' का सतीश व्यवहार कुशल प्रतिभावान पुत्र है, उनके पिता जनार्दन को विश्वास था कि पुत्र उनके ऋण को चुकाकर उन्हें ऋणमुक्त करेगा।

तात्पर्य यह कि शिवानी के उपन्यासों में बाल पुत्रों में रोहित(कैजा) नन्हें (कस्तूरीमृग) कार्तिक (अतिथि) कर्ण (किशुनली) सतीश (मायापुरी) और पिन्टू (कालिंदी) के अच्छे बुरे पात्र हैं। कर्ण आदर्शपुत्र, नन्हें पिता की सेवा करने वाला पितृभक्त, कार्तिक अहमवादी, पिता की अवज्ञा करने वाला, गजानन जोशी अबाध्य पुत्र है, 'रतिविलाप' का विक्रम आस्वाभाविक पुत्र के रूप में चित्रित हुआ है। कुछ पुत्र अवस्था में छोटे शिशु और बाल्य है युवा पुत्रों में प्रवीर, सर्वेश्वर, मधुकर, कार्तिक, नन्हें है जिनका चित्रांकन आदर्श यथार्थ की समन्वित दृष्टि से किया गया है। नन्हें और कर्ण यदि आदर्शवादी पुत्र है तो कार्तिक युवा, उदण्ड एवं कर्नल पाण्डेय, गजानन जोशी प्रौढ पुत्र रूप में अंकित है। पिता पुत्र के बीच अन्तराल का निरूपण शिवानी ने सहज मनोवैज्ञानिक भित्त पर किया है।

3 पतिरूप :-

सामाजिक व्यवस्था के संचालन हेतु नीतिकारों ने स्त्री और पुरूष के दोनों पहियों को पति पत्नी के रूप में परिभाषित किया है। पति ही पत्नी की रक्षा , सम्मान , भरण-पोषण करता है, और इस प्रकार पति-पत्नी दोनों समाज की आधारशिला कहलाते हैं। यद्यपि शिवानी के उपन्यासों में नायिका या पत्नी और उसकी सुन्दरता, कार्यव्यवहार का निरूपण अधिक मार्मिकता से हुआ है तथापि पति उसके स्वरूप अधिकारो की भी चर्चा यथार्थ और आदर्श के समन्वय से चित्रांकन किया गया है। शिवानी के उपन्यासों में रोहित, विमलानन्द राजाराज कमल सिंह, रमेंन्द्र, सुरेश भट्ट, भास्करन, माधव बाबू, कार्तिक, श्यामाचरण, ताऊ, कुन्दन सिंह, उमेश, मधुकर तनवीरबेग नारायण सेन शिवदत्त पाण्डेय ध्रुव सरकार धरणीधर दिनकर पाण्डेय राबर्ट प्रबोध रंजनराय प्रवीर, शेखर, कर्ण, करसनदास कापड़िया, कौस्तुभ, देवदत्त भट्ट रोहिताश्व दत्ता, वेद मेहरा, प्रतुल, सतीश, अविनाश , जनार्दन, देवेन्द्र, कमला वल्लभ, बसन्त इत्यादि पति रूप मे उल्लिखित पात्र हैं। इनमें से रोहित, उमेंश, शिवदतत पाण्डेय, दिनकर पाण्डेय, प्रबोधरंजन, प्रवीर, करसनदास कापडिया, देवदत्त भट्ट , सुरेश भट्ट, रोहिताश्वदत्ता, ऐसे पति है जिनके में अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य नारी का प्रवेश किसी न किसी रूप में हुआ है। विमलानन्द, राजेन्द्र, वेद मेहरा, विनायक ऐसे पति है जिन्हें दूसरी नारी का शरीर सहजता से प्राप्त हो सकता था किन्तु अपने पत्नी प्रेम और संयमित आचरण बल पर वे इस आकर्षण से मुक्त हो सके हैं। इन पतियों में सुरेश भट्ट नन्दी के रूप सौन्दर्य पर आकृष्ट या अवसर, कुअवसर उसे छेडता भी था विवाह का प्रस्ताव अस्वीकृत हो जाने पर वह सेक्समैनीयाक्य बन जाता है और अन्त में वह नन्दी को पत्नी रूप में प्राप्त कर लेता है।

'उपप्रेती' का उमेश सम्भवतः पतियों के रूप में अमानवीय और पतित की श्रेणी में आयेगा क्योंकि 'सप्त पदी' के अवसर पर पत्नी रमा के सॉवले रूप को वह क्षमा नहीं कर पाया और उसक बिना मुह देखे नौकरी पर चला गया, और उसकी पत्नी रमा हताश निराश उसकी राह ही देखती रह गयी, कि उसका निष्ठुर पति उमेश बस दुर्घटना में बचकर अपनी अनुज वधू को जानते हुए भी पत्नी बनाकर एक साइबेरिय के सुदूर अंचल में जीवन यापन करता है, और रमा संयासनी बन जाती है। इसी प्राकार 'श्मशान चम्पा' का

तनवीरवेग असामान्य पति है जिसे स्त्री के पत्नी रूप का पता ही नहीं है। 'चौदह फेरे' का प्रवीर ऐसा पति है जिनमें दूसरी नारी के हस्तपक्षेप सहज स्प में स्वीकार है। चौदह फेरे की नन्दी अपने रंग के लिए अवश्य विख्यात है, किन्तु अपने आचार और व्यवहार से पति को सन्तुष्ट नहीं कर पाती। वह कहता है -"हद है लगता है तुम्हें घर के खूसट बूढे औ बूढियों से मोहब्बत है रात भी वहीं बिता आती।"[1]

शिवानी ने लिखा है कि "कालीदास ने यक्ष पत्नी के जिस अनुपम सौन्दर्य और भाव भंगिमा का वर्णन किा है वह नन्दी में भी रहा होगा, किन्तु कर्नल की ऑखें उसके उस सौन्दर्य पक्ष को नहीं देख पाती। वह तो यही जानता था कि लकडी और कन्डे के बदबूदार धुएँ में लपटी एक सुगृहणी थी, किन्तु कुशल प्रेमिका नहीं। उधर पति के निर्लज्ज प्रणयालाप से ऊबकर नन्दी कभी-कभी कानों में अंगुली धर लेती। दिन मे जिसके गम्भीर चेहरे के आवरण को चीर कर हॅसी की विद्युत छटा सी नहीं दिखती थी, रात को वही संयमी पति अत्यन्त असंयमित आचरण कर बैठा था। कर्नल अपनी बर्फ की शिल सी ठण्डी पत्नी पर कभी-कभी ऐसा उबल जाता कि छुट्टी शेष होन से पूर्व ही स्वयं छुट्टी की छुट्टी कर देता । इसी तरह कर्नल के वैवाहिक जीवन में विष घुलता गया।"[2]

अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बचाने के लिए वह नन्दी को अपने पास रखता है किन्तु उसे अपनी शर्तो पर और कर्नल अपनी पत्नी के अधिकारों में कटौती कर मल्लिका को रक्षिता बना लेता है।

'सुरंगमा' का दिनकर पाण्डेय, पाण्डेय के जीवन में द्विभार्या का योग रहा। उसका विवाह किशोरा अवस्था में कुरूपा परू से किया गया। जिसे छोडकर उसने विनीता से प्रेम और विवाह भी किया। विनीता के प्रति उसका लाड-प्रेम,मान-सम्मान पति का रूप का श्रेष्ठ निदर्शन था किन्तु विनीता की सामाजिक सक्रियता के कारण दिनकर के जीवन में चाहे-अनचाहे सुरंगमा का प्रवेश हुआ, जिसकी परिणति सुखद नहीं रही। 'कृष्णकली' का प्रवीर विवाह तो माता-पिता के अनुरूप कन्या से करता है, किन्तु अपने दुस्साहस और मारक सौन्दर्य के कारण कथा नायिका कली, जिस प्रकार उसके जीवन में प्रवेश करती है, प्रायश्चित स्वरूप प्रवीर संगम जा कर उसकी आत्मा की सान्त्यर्थ अर्द्धदान करता है।

1. चौदह फेरें, पृ0 7

2. चौदह फेरें, पृ0 7

अभिनय का शेखर अपनी पत्नी का परित्याग करता है। किन्तु वही पत्नी जब अभिनेत्री बन जाती है और शेखर को मुकदमा हेतु तीस हजार रूपयों की आवश्यकता है। तब वह इसी पति रूप को ब्लैक मेल कर अभिनेत्री से वांछित धन प्राप्त करने की चतुराई दिखाता है। करसनदास कापडिया का प्रथम दृष्ट्या अच्छे पति रूप में दिखायी देता है। योग और साधना गार्हस्थिक धर्म में ही उसने साध लिया था। पत्नी के दिवंगता होने पर वह उसकी याद में जीवन व्यतीत करने का संकल्प व्यतीत करता है, किन्तु दुर्भाग्यवश पति हत्यारी हीरा युवती के प्रेम जाल में ऐसा फॅस जाता है कि उसे लेकर समाज से पलायन कर जाता है। 'स्वयंसिद्धा' का कौश्तुभ अपनी लापरवाही और अर्न्तमुखी व्यक्तित्व के कारण सुन्दरी पत्नी माधवी से वंचित रह जाता है क्योंकि मुखरा राधिका हॅसी हॅसी में ही अपने को माधवी की सौत कहती है, और बाद में सॉवली मेद प्रथुल, कुछ अनाडी, लापरवाह, पत्नी के साथ बिना किसी उत्साह के जीवन यापन करने पर विवश होता है। 'किशुनली' उपन्यास का देवदत्त , हष्ट पुष्ट वयोवृद्ध है कामोन्मादिनी किशुनली मेनका बनकर उनके विवेक के दुर्ग को ध्वस्त कर गयी या जिसका पश्चाताप, देवदत्त भट्ट को आजीवन रहा वे पत्नी से क्षमा मॉगने का साहस न जुटा रखने के कारण सन्यासी हो गये और अपनी शिष्या को यह भार सौप गये कि वे पत्नी से क्षमा दिला दे।

'गैडा' का मेजर रोहिताश्वदत्त अहमवादी पति है जिसने भृकुटी निश्छेप से फौजियो के साथ-साथ पत्नी को भी उठाता बैठाता था और अपने मित्र वेद मेहरा की पत्नी राज को रक्षिता बनाता है। उसकी मश्त्यु के पश्चात भी अपनी पत्नी से अनबन रखता है तो दूसरी तरफ वेद मेहरा अत्याधिक प्रेम करने वाला पति है जो अपनी पत्नी के बिना नहीं रह पाता किन्तु स्त्रैणता के कारण उसकी पत्नी उसे नहीं मिल पाती। 'पाथेय' उपन्यास का प्रतुल रूग्ण पति है, सतीश, अविनाश, जनार्दन आदर्श और यथार्थवादी समन्वित पति के रूप में दिखाई देते है सुदर्शन सतीश को महामहिम तिवारी अपना जामाता, बनाकर, उसके पिता को उऋण करते है, रूप रंग में साधारण होने के कारण सविता सतीश की पत्नी तो बन जाती है किन्तु स्वैच्छाचार के लिए सतीश को आड रूप में स्वीकार करती है, अविनाश प्रेम में विश्वासघात प्राप्त युवक है। अतः अविवाहित रहने का संकल्प किया किन्तु परिस्थितवशात् वह मंजरी से विवाह प्रस्ताव कर उसका पति बनता है अपने गार्हस्थिक जीवन में अविनाश, मंजरी की रूचि, मर्यादा का बहुत ध्यान रखता है, गोदावरी

के पति इंजीनियर जनार्दन प्रसाद, ईमानदार चरित्रवान संयमी पति थे, पत्नी के अस्वस्थ होने पर उन्होंने उनकी बडी सेवा की । गोदावरी के अधिकारों में कभी हस्तक्षेप नहीं किया ये अनुकरणीय पति थे। पति के इस कम में अतिथि के माधव बाबू श्यामाचरण, तथा कार्तिक महत्वपूर्ण स्थान रखते है। चरित्रवान माधव बाबू प्रदेश के राजनीतिक क्षेत्र में आदर्श नेता थे। उनकी पत्नी चन्द्रा थी, राजनीतिक व्यस्तता के कारण वे धीरे धीरे पत्नी से कुछ विरक्त से दिखाई दिये, चनद्रा धीरे-धीरे महत्वाकांक्षिणी बन कर माधवबाबू को अपने अनुरूप चलाना चाहती थी। वह जया से कार्तिक का विवाह नहीं चाहती थी किन्तु दूरदर्शी माधव बाबू पत्नी के विरोध के बावजूद जया को पुत्रवधू बना लेते है। उनका पुत्र कार्तिक प्रारम्भिक जीवन में दुस्साहसी, हत्यारा, उदण्ड युवक था किन्तु जया जैसी रूपवती सुन्दरी पत्नी को पाकर ठीक हो रहा था उनके पूर्व जीवन में सुधा नामक युवती का प्रवेश हुआ था। शराब के नशे में इसी सुधा की यादकर कार्तिक ने अपनी पत्नी को लॉछित अपमानित किया परिणामस्वरूप पत्नी ने पति को त्याग दिया, कार्तिक अपने अबाध्य आचरणों को छोड पत्नी का प्रेमी बनकर उसके पास स्वतः पहुॅच प्रेम प्राप्त करने में सफल हो जाता है। श्यामाचरण ऐसे ही सात्विक आदर्श पति है जो अपनी पत्नी सुशीला को कार्यो पर हस्तक्षेप कम ही करते है। उन्हेंने शुशीला को गृहलक्ष्मी के रूप में अभिशिप्त कर रखा था। 'कालिंदी' उपन्यास के कमलावल्लभ और देवेन्द्र विपरीत ध्रुवों के पति है कमला वल्लभ ने सामान्य सी भूल के लिए पत्नी को जलती लकडी से पीटकर गृह निर्वासित कर दिया तो देवेन्द्र निःसंतान होने के बावजूद अपनी पत्नी शोभा के साथ त्यागमय जीवन व्यतीत कर आदर्श पति रूप के निदर्शन बने। 'रथ्या' का विमलानन्द साधारण अध्यापक था अपनी पत्नी के प्रेम सेवा सुश्रुषा को याद कर बसन्ती जैसी कालगर्ल के रूप सौन्दर्य का तिरस्कार करता हैं

इस प्रकार शिवानी के विस्तशत औपन्यासिक समाज पर विहंगालोकन करने पर यह सहज ही ज्ञात होता है कि पति अपनी पत्नी पर निष्ठावान नहीं रह पाते, लोभ, मोह, रूपाकर्षण, शारीरिक आवश्यकता या परिस्थितियों के कारण उनके जीवन मे अन्य नारी का प्रवेश हुआ है, फिर भी पत्नी के प्रति अनन्य रहने वाले पतियों ने अपनी पत्नी को सुरक्षा अधिकार समानता एवं स्वतन्त्रता दी है, चाहे ऐसे पतियों की संख्या नगण्य ही क्यों न हो। विमलानन्दशिवकमल सिंह, रमेंन्द्र, भास्करन, श्यामाचरण उनके बडे भाई , ताऊ,

प्रवीर, देवदत्त भट्ट ऐसे ही पति है। पत्नी के गुण-अवगुणों को स्वीकार कर सामाजिक मर्यादा के प्रति माधव बाबू, राजेन्द्र, धरणीधर, अविनाश इस कोटि के पति है। कहना नहीं होगा कि शिवानी ने पति रूप में जिन पुरूषों का चित्रांकन किया है वह बहुरूपिया है। अपनी सामाजिक मर्यादा बनाये रखने में उन्हें सफलता प्राप्त हुई है इतना अवश्य है कि रूपजन्य आकर्षण आधुनिक युग की देन है जिसमे विकारग्रस्त होकर भी प्रायश्चित करने वाले पतियों की कमी नहीं थी।

4 प्रेमी रूप :-

पति-पत्नी के आदर्शरूप के साथ दोनों के जीवन में प्रेम की महत्ता अनिवार्य रूप से मानी गयी है। यह प्रेम ही ओज तन्तु है, जिससे पति-पत्नी आबद्ध हो जीवन समुद्र में अवगाहन करते है, प्रेम पूत और मलिन आचरण के कारण होता है प्रेम के कारण ही दाम्पत्य जीवन में घनिष्ट्ता एकनिष्ठा, सामाजिक समरसता आती है रूपाकर्षण से प्रारम्भ यह प्रेम आत्मिक स्तर पर पहुँकर त्याग और बलिदान की सीमा का स्पर्श करता है स्वकीय और परकीय इस प्रेम के दो रूप होते है। स्वकीय रूप में पवित्रता, अनन्यता गाढ़ अनुरक्ति और त्याग जैसे अलौकिक द्रव्य गुण प्रार्दुभूत होते है वही परकीय प्रेम दैहिक आकर्षण, मलिन, स्वार्थ बुद्धि प्रेरित होता है।

शिवानी इस रचना संसार में प्रेम के इन दोनों रूपों की पुष्कल झाँकी मिलती है। प्रेम जहॉ रूपाकर्षण दैहिक विकार या वासनापूर्ति का साधन है ऐसे प्रेमियों में रोहित, नन्हें, सुरेश भट्ट कार्तिक, मधुकर, शिवदत्त पाण्डेय कर्नल, दिनकर पाण्डेय, विद्युत रंजन, असदुल्ला खान, प्रवीर, विनायक आदि पात्र है। विषकन्या का रोहित विवाहित होते हुए भी अपनी पत्नी के रूप सौन्दर्य के समान सगी छोटी बहन के साथ प्रेम का व्यापार करता है । यद्यपि यह व्यापार भ्रान्तिवश ही हुआ है। 'रथ्या' का विमलानन्द किशोरी बसन्ती के उनमुक्त व्यवहार से आकृष्ट था बाद में कालगर्ल बनी बसन्ती के दैहिक आमन्त्रण को अस्वीकार कर देता है, कस्तूरीमृग काक नन्हें ऐसा प्रेमी है जिसके किशोर अधकच्ची-पक्की अवस्था में उसे मामा कहकर बुलाने वाली किशोरी से प्रेम करता है किन्तु जब अपने अफसरी रथ पर सवार कन्या के पिता के पास प्रेम को साकार कर उसे विवाहिता बनाने का प्रस्ताव करने पहुँचता है तब पिता की कुख्यात उसके मार्ग मे बाधा बनती है।
'कैजा' का सुरेश भट्ट अबाध्य, उदण्ड, उच्छृंखल प्रेमी है जो नन्दी को देख छीटा कशी

करता और विवाह को अस्वीकृत सुनकर विक्षिप्त हो पथ्य, कुपथ्य का ध्यान न रख सैक्स मैनी याक बन जाता है किन्तु उसके जीवन का सौभाग्य सूर्य अस्त नहीं हुआ और नन्दी उसकी पत्नी बनने आ जाती है क्योंकि सुरेश के अवैध पुत्र को मातृत्व पाला पोश अब उसे पिता के अधिकार को देने हेतु ततपर हो गयी थी। 'कृष्णवेणी' का भास्करन साधारण प्रेमी था जिसके प्रेम की परिणति किसी विशेष घटना के विवाह में परिणति हो गया, अतिथि का कार्तिक अबाध्य प्रेमी है जया के प्रस्ताव से प्रभावित होकर संक्षिप्त अवधि के लिए ही वह अपने प्रेम प्रदर्शन करता है। 'भैरवी' उपन्यास का अवधूत गुरू यद्यपि सिद्ध साधक था, किन्तु चन्दन के रूप जन्य आकर्षण के कारण वह उसे भैरवी बनाने हेतु मानसिक रूप से तेयार हो गया था। 'श्मशान चम्पा' का मधुकर कथा नायिका चम्पा की ओर आकृष्ट है किन्तु उसकी बहन जूही ने तनवीर बेग से प्रेम विवाह कर लिया जिसके कारण यह प्रेम प्रसंग बालू में पडे हुए ओश की बूँद के समान विलीन हो गया। यद्यपि टिटनेश रूग्णा चम्पा को मधुकर अपने पास लाकर सेवा सुश्रषा से स्वस्थ करने के साथ प्रेम का प्रदर्शन भी करता है। किन्तु यह प्रेम वल्लरी सूख ही जाती हैं चौदह फेरे का शिवदत्त कर्नल पत्नी के गवारूपन से चिढकर, परिस्थिति का आवश्यकता के कारण मल्लिका को अपनी रक्षिता बना लेता है और उसे अपने घर की मालकिन का पद दे देता है। चैादह फेरे के राजेन्द्र और अहल्या ऐसे प्रेमी युगल है जिनमें प्रेम जन्य आकर्षण तो दोनों तरफ है लेकिन अन्तर्मुखी राजेन्द्र इस प्रेम को दबाए ही रहता है जबहकि अहल्या उसके रूप बाहरी व्यक्तित्व और सूरवीरता पर मुग्ध हो स्वयं वर बन पिता द्वारा नियुक्त वर का तिरस्कार कर उसके पास पहुँच जाती हे। रामनाथन और ललिता चौदह फेरे के ऐसे प्रेमी है जिनके बीच अवस्था का काफी अन्तराल है रामनाथन सम्मोहक विद्या का जानकार है और वह इसका प्रयोग किशोरी ललिता पर कर उसे विवाह के लिए मोहाविष्ट कर लेता है एक तरह से यह एक पक्षीय प्रेम व वय अन्तराल को पीछे ढकेल देता है, प्रौढ किशोरी पुत्री का पिता वरिष्ठ राजमंत्री दिनकर पाण्डेय सुरंगमा के अपरूप मोहक अकृतिम सौन्दर्य से कुछ इस प्रकार अभिभूत हुआ पद और प्रतिष्ठा को भूल गया, हार्दिक काव्ययात्मक अभिव्यंजनाओं में मुखर प्रणयी किसी न किसी बहाने सुरंगमा के प्रति प्रणय याचना करने में सफल रहा, पत्नी के रहते हुए वह अपने को एकाकी और अभागा कहकर बडी धृष्टता पूर्वक सुरंगमा के प्रणय निवेदन करता है और अर्द्धरात्रि क बाद कभी किसान

कभी ग्वाला का रूप धर अपनी प्रेमिका से मिलने का दुस्साहस दिखाता है। वह अपनी प्रिया को रिझाने के लिए कभी उपहार स्त्रीय वस्त्राभूषण आकर्षक चित्र प्रणेय उपहार के रूप में देता है। इस प्रेम की परिणति बडी दुखद होती है दिनकर और सुरंगमा का प्रेम वयस अन्तराल के बावजूद भव्य उदाप्त और आकर्षक रूप में व्यंजित हुआ है भटो ही इसे सामाजिक मान्यता न मिली हो। इसी प्रकार प्रेमी का एक रूप राबर्ट और प्रबोध रंजन राय के रूप में मिलता है। राबर्ट राज लक्ष्मी का जीवनदाता हे उसे पति का संरक्षण और होने वाले पुत्र को पिता का अधिकार देने हेतु चर्च मे जाकर लक्ष्मी से विवाह किया और प्रदत्त दैहिक अधिकारों की मॉग से बचने के लिए वह गोवा चला जाता है। किन्तु लक्ष्मी के रूप आकर्षण और प्रथमजन्य प्रेम की अनुभूति जब उद्दाम रूप लेती है तो राबर्ट लक्ष्मी के पास आ जाता है। प्रबोध रंजनराय राजा है, वे अपनी पत्नी को वैसा प्रेम नहीं दे सके जो उसकी यही इसकी अपेक्षा थी गौहरजान को अपनी दिल की मलिका बनाया। 'कृष्णकली' में प्रवीर और कली का प्रेम अल्पकाल के लिए ही दिखाई देता है प्रेमी प्रवीर रूग्णा कृष्णकली के प्रति आकश्भट होकर पहुँचता है और उसकी आत्मा की शान्ति हेतु संगम में तिलदान करता है। इसी कली का विद्युतरंजन मजूमदार धनाढ्य और राजनीतिक व्यक्ति है, कली की मॉ का वह प्रेमी हैं यद्यपि पन्न ढकी मुदी या प्रचछना वेश्या या रूप की फेरी लगााने वाली स्त्री थी विद्युतरंजन उसे लेकर अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करना चाहते थे और इसी आश्वासन पर वे पन्ना को प्रसव की व्यवसीा भी करते है। किन्तु दोनों के जीवन में किशोरी की अचानक आगमन पर यह प्रेम अव्यक्त ही रह गया। कुष्ठ रोगी असदुल्ला खान पठान भी, उसकी देह यष्टि सुर्शन शरीर से पार्वती जो स्वयं इस रोग से मुक्त हो चुकी आकृष्ट हो जाती है। प्रेमी प्रेमिका चोरी छिपे फिल्म देखते विहार करते रहें। और पार्वती को मातृत्व चिन्हों से युक्त देखकर असदुल्ला खान अचानक तिरोहित हो जाता है। 'पाथेय' का विनायक और तिलोत्तमा की प्रेम कथा विचित्र किन्तु अविश्वसनीय है तिलोत्तमा का विवाह रोगी प्रतुल से हुआ विधवा होकर तिलोत्तमा अपना जीवन व्यतीत ही कर रही थी कि विनायक के पिता शिवशंकर ने तिलोत्तमा के पूर्व पति एवं कुछ ही दिने के लिए बना प्रेमी प्रतुल पुर्नजन्म के रूप में अवतरित हुआ है और वह मृत्यु शैय्या पर पडा है। यहॉ पुनः शिवानी ने विनायक और तिलोत्तमा के प्रेम का मार्मिक निर्दशन कराया है। 'मायापुरी' में सतीश और शोभा का प्रेम अपने आकर्षक रूप में

व्यंजित हुआ है। सुन्दरी शोभा, सतीश के घर में रहकर पढ ही रही थी कि डाक्टरी परीक्षा उत्तीर्ण कर सतीश घर आकर शोभा के प्रति आकृष्ट हो जाता है उसका मित्र अविनाश उसे सावधान भी करता है किन्तु शोभा के रूप आकर्षण से वह मुक्त नहीं हो पाता। सतीश की माँ गोदावरी के कहने पर शोभा अपने प्रेम सतीश को छोड अपने गॉव चली जाती है किन्तु विवाहोपरान्त भ्रमण पर गये सतीश की भेट शोभा से हो जाती है और यह प्रेम मुखरित हो जाता है। इसका पर्यवसान अत्यन्त त्रासद करूणमयी परिस्थित में हुआ मृत सतीश के शरीर में पछाड खाकर शोभ गिर पडती है।

कालिंदी में पिंटू कालिंदी का प्रेम रूपाकर्षणजन्य ही रहा है। बृजेशशाह का कालिन्दी से यह आकर्षण भाई बहन के प्रेम में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार हम देखते है कि शिवानी के समाज में प्रेम के विविध रूप दिखाई पडते है। यह प्रेम कही प्रथम दशभट्या है, तो कही वासना से परे दिव्य और अलौकिक रूप में व्यंजित हुआ है प्रेमी विवाहित रूप में भी दिखाई देते है। प्रेमी अवस्था की दृष्टि से युवक और प्रौढ है, युवकों के प्रेम में अनन्यता, समर्पण, निष्ठा तो प्रौढों के प्रेम में दैहिक आकर्षण और उच्छृखलता भी है परिस्थितिवशात् जो प्रेमी बने है उनका प्रेम त्याग और विरक्त पर आधारित है।

श्वसुर रूप

नीतिशास्त्र और सामाजिक मर्यादा की दृष्टि से पिता के समकक्ष पद श्वसुर का होता है। शिवानी ने अच्छे और बुरे दोनों रूपों को चित्रित किया है। अतिथि का माधव बाबू आदर्श श्वसुर है अपने पुत्र कार्तिक के अबाध्य उदण्डता पर मनोवैज्ञानिक अंकुख लगाने के लिए रूपवती जया का चयन किया और जब-जब जया के अपमानित होने के अवसर उत्पन्न हुए सुदृढ चट्टान की भॉति माधव बाबू उसके समक्ष खडे हो गये। जया जैसी बहू को पाकर वे कहते हे- " आज तो इसे बिना गाजे बाजे के ही लिए जा रहा हूॅ श्यामा पर तैयार रहना जितनी जल्दी हो सकेगा बैण्ड बाजे के साथ ले जाऊॅगा।"1 इसी प्रकार अपने गुरूदेव के समक्ष जया से कहते है।-"दीन हीन याचक बन8 कर मॉग रहा हूॅ बेटी जो मागॅूगा दोगी न जगधात्री तुम्हे मेरे इस गृह की लक्ष्मी बन कर आना ही होगा, कही इस भिक्षुक को खाली हॉथ मत लौटा देना।"2

हृदयाघात पडने पर वे जया को ही अपने समक्ष देखना चाहते है। श्वसुर का उदार

रूप 'रति विलाप' के करसनदास कापडिया में मिलता है। वे अपनी बहू अनुसुइया पटेल को हर प्रकार से स्वतंत्र कर देते हे। यद्यपि उनके निंदक यह कहत देखे गये है। रड्डुए बुढ्ढे ने पागल लउके को छत से ढकेल यिा है जिससे उम्र भर सुनदरी जवान बहू के साथ गुलछर्रे उडा सके।3

वास्तविकता यह थी कि थकी मादी अनुसुइया पटेल दुकान से लौटती तो देखती वार्धक्य जर्जर ससुर गैस जला चाय बना रहे हैं कैसा कठोर प्रायश्चित कर रहे है पिताजी।" 1

पाथेय के ससुर नीच जड पशु रूप में चित्रित है क्योंकि अपनी वंशवृद्धि हेतु वे स्वयं अपने बहू के साथ बलात्कार करने का प्रयास करते है। 2

इसी प्रकार अपनी पुत्री देकर जामाता और श्वसुर के रूप में विरक्त श्यामाचरण अतिथि चौदह फेरे का कर्नल पाण्डेय, 'मायापुरी' के तिवारी जी भैरवी का महिम तिवारी भी श्यामाचरण जैसे श्वसुर है।

भाईरूप :-

सामाजिक सम्बन्धों में भई ममत्व संरक्षण, सहयोग, बन्धुत्व का प्रतीक है। 'चल खुसरो घर आपने' में राजा राकमल सिंह शिवकमल सिंह, कृष्ण कमल सिंह, अतिथि का बंटी श्यामाचरण और उनके बडे भाई, उपप्रेती के उमेश, महेश, दिनेश, कृष्ण कली का प्रवीर, सुनीर कालिंदी के देवेनद्र, महेन्द्र, नरेन्द्र और बश्जेन्द शाह माणिक का रामसहाय भाई रूप में चित्रित है। बहन के भाई के रूप में बंटी सरल, अखण्ड खिलाडी है। भाइयों के हक अधिकार पर कुठाराघात करने के कारण निष्कृट रूप में उमेंश उपप्रेती भाता है क्योंकि उसने अनुज वधू को पत्नी बना लिया था। चौदह फेरे का राजेन्द्र बसंती का ममेरा भाई है जिसकी चुहल और वग्विता से बसंती आनन्दित रहती है। कालिन्दी में पन्न और उसके भाई देवेनद्र महेन्द्र अैर नरेन्द्र की बाल कीडाओं का स्नेह, ममत्व और साख्य, राजा राजकमल सिंह अपने भाईयों का उत्तराधिकार रूप में प्राप्त सम्पत्ति का ईमानदारी से बटवारा कर भाई की गरिमा सुरक्षित रखी है। श्यामाचरण अपने बडे भाई और उसकी पत्नी का जितना ध्यान रखा है समाज के लिए एक आदर्श रूप है।

निश्कर्ष रूप में शिवानी ने भाई के इस रूप में बहन से स्नेह दुलार करने वाला लडकपन में लड भिउ कर अपना रौब जमाने वाला तो प्रौढ होकर अपनी बहन को आश्रय

संरक्षण और उसकी संतान को अपनी संतान मान लडकपन की सुधियों को पुर्नजीवित करने वाले भाई के रूप में चि.त्रित है।

सेवक वर्ग :-

शिवानी के इस विस्तृत संसार में पुष्फल माता में ऐसे पात्र उल्लिखित है जो सेवक या नौकर वर्ग के है इनमें दरबान, माली, द्वारपाल, भोजन बनाने वाला महराज, नौकर आते है। इनमें से डिसूजा भवानी ड्राइवर माली, दरबान 1 बनवारी, आवारा छोकरे2 गुरू मौज सक्सेना राधरमण, कन्हैया, हरिकिशन, किशोरीलाल, मन्नूभईया, मातादीन जौहर, मियाज अहमद, मुन्नालाल, रामस्वरूप होट्ल के नौकर।3 राम सिंह, बेनुपद, केशरसिंह, टेलर मास्टर मसूद अली, 4 अब्दुल रहीम, बिरजू दरबान, उडिया महराज बावर्ची, ध्रुव सरकार रघुवा, बिन्दारीन, डेविड, गोरखा मान बहादुर, भवनिआ,5 दीक्षित, सचिव रौवी, असरूल्ला खान 6 अर्दली, चपरासी, कुंजडा 7 कोंच केडेक्टर, टीटी नौकर, अर्दली, खानसामा 8 – स्वयं सिद्धा और गैडा चपरासी, ए0 डी0 सी0 , सचिव, कर्मचारी 1 तथा थाने का सिपाही, अर्दली, होट्ल के वैरे, डाक बंगले का चपरासी इसी वगै के पात्र है।

शिवानी ने कुछ पात्रों नाम से कुछ उनके कार्य से कुछ की घटनाओं का चित्रांकन कर उनका स्वरूप अंकित किया है जिस घर में गश्ह स्वामी अपनी किसी रमता पर आश्रित हो जाय। गश्हस्वामिनी अस्वस्थ या घर छोडकर चली जाय ऐसे घर में नौकरों बडी स्वच्छन्दता रहती है। शिवानी ने लिखा है " नन्दी के विराट वावर्ची खाने में दिन रात दावतों का आयोजन होता, संयम की शिला किसी सैलाब में डूबकर रह गयी थी अब गश्ह का प्रत्येक सदस्य पूर्ण रूप से स्वतन्त्रतया उडिया महाराज अपने दाल के कटोरे में जी भर कर घी उडेल अपने सूखें शरीर की स्वास्थ्य वश्द्ध कर सकता था, मुसलान बावर्ची अहमद पूरा मुर्ग अपने घर भिजवा सकता था। धोबी जितनी चाहे उतनी कमीजे धुलाई में पार कर सकता था। चतुर नौकरों की श्रेणी में केशर सिंह श्मशान चम्पा दीक्षित सचिव सुरंगमा प्रमुख सेवक हे जो अपनी स्वामी भक्ति के लिए विख्यात है इसी कोटि में अतिथि का गुरूमौज सक्सेना माधव बाबू का वैयक्तिक सचिव है।

श्मशान चम्पा का केशर सिंह हास्यप्रिय और मस्त मौला नौकर है, टिटनिश रूग्णा चम्पा को लेकर जब उसका स्वामी मधुकर आया केशर सिंह अपनी वाचलता और अपने

को ही गाली गलौज देकर काम करने की प्रवृत्ति से चम्पा प्रसन्न होती है। वह कहता है–''अच्छा मेम साहब तु तो इस बार तिथाडा(मसान) से लौटी हो खूब अच्छी पूजा दोगी व जागर लगाना मेम साहब X X X बाप कसम मेम साहब बिमारी ने आपका चेहरा एकदम बदल यिा है X X X उस एकान्त फलैट में केशर सिंह स्वयं ही अपने को गालिया देकर प्रायः ऐसा ही मनोरंजन करता था- अरे बाप रे बाप दूध स्टोव पर धर कर ही भूल गया साला केशरूवा तेरा नाश हो।''[1]

सुरंगमा उपन्यास का दीक्षित स्वामी भक्त होने के साथ ही साथ चतुर स्वामी की भूभंगिमाओं के विशिष्ट संकेतों को भी समझने वाला था। इसी लिए दिनकर के पास आयी हुई उनकी पूर्व पत्नी अपने अधिकारों की बात कहना चाहती थी तो दिनकर ने उसे समझाने की बात सचिव से कही, परिणाम स्वरूप वह असमय काल कवलित हो गयी।

तात्पर्य यह कि शिवानी भृत्त वर्ग अपने सत्कार्यो से अच्छे, आज्ञाकारी, कृतज्ञ रूप में प्रस्तुत है। तो गृह स्वामी के कारण वे स्वार्थी बन गये हैं यही मानव प्रकृति है कि अच्छे बुरे की पहचान प्रकृति और क्रिया कलापों से की जाती है।

---

1. *श्मशान चम्पा, पृ0 114.15*

अध्याय षष्ठ

शिवानी के उपन्यासों में असामान्य पुरूष पात्र
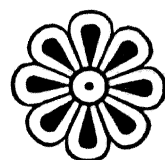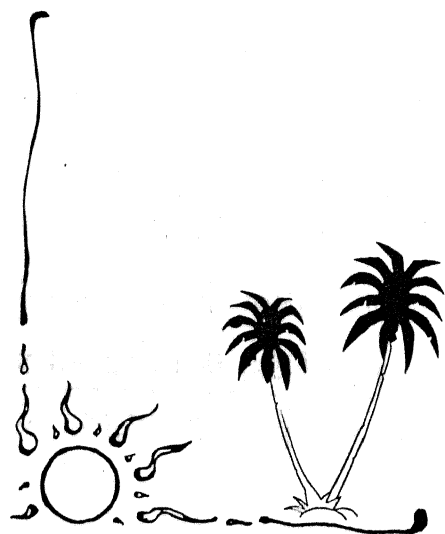
पिछले अध्याय में शिवानी के रचना संसार पर दृष्टिपात करते हुए वैयक्तिक एवं वर्गीय दृष्टि से पुरूष पात्रों का परिचय दिया गया है। प्रस्तुत अध्याय में असामान्य पात्रों पर प्रकाश डाला जा रहा है। जैसा कि हम जानते है कि ईश्वर रचित इस संसार में अच्छे, बुरे, भले, सदाचारी, कदाचारी व्यक्ति होते हैं। जो अपने क्रिया कलापों से समाज को दिशा निर्देश या प्रभावित करते हैं तो कुछ ऐसे भी पात्र होते हैं जो साधारण से विशिष्ट असामान्य होते हैं। ये असामान्य पात्र या तो आंगिक या मनोविकृति के परिणाम स्वरूप शारीरिक अथवा मानसिक विकलांग होते हैं अथवा परिस्थिति, महात्वाकाँक्षा प्रतिभा के कारण असाधारण दुःसाहस, सामाजिक नैतिक मान्यताओं के विरूद्ध आचरण करते दिखाई देते हैं। मनोविज्ञान की दृष्टि से दोनों प्रकार के पात्र असाधारण पात्र होते हैं।

फ्रायड ने यह उपपत्ति प्रस्तुत किया है कि "बाल्यावस्था के दुःखद संघर्ष जो बिना सोचे ही दमित होकर अचेतन में धँस गये होते हैं वे आगे चलकर व्यक्ति के भाव विचार और आचार को प्रभावित करते रहते हैं और उनमें आवेग आदि तनावों को जन्म देकर स्मृति के साथ उसका मानसिक संतुलन नहीं बैठने देते"।[1]

इन्हीं दुखद स्मृतियों तथा संघर्षो को जो उसकी अधिकांश कठिनाइयों का कारण बनते हैं। पात्र के अचेतन से निकलकर चेतन में यदि ले आया जाय तो सम्भवतः ऐसे असामान्य पात्र भी श्रेष्ठ नेता, मार्गदर्शक बनकर समाज को दिशा निर्देश देने में सक्षम हो सकते हैं।

बात यह है कि सामाजिक जीवन का संचालन चेतन मन के द्वारा होता है। मन की अनेंक कामनाएँ क्रिया के माध्यम से सुविधापूर्वक स्पष्ट हो जाती हैं किन्तु मन की कुछ ऐसी वासनाएँ थी हैं जिन्हें सामाजिक मान्यता प्राप्त न हो सकने के कारण चेतन मन को उन्हें डूबाना पड़ता है। ये दमित वासनाएँ, सामाजिक बन्धन या सभ्यता के विधि निदेश जन्य निर्धारित वाह्य प्रतिमानों के कारण व्यक्त नहीं हो पाता तब इनकी पूर्ति के लिए व्यक्ति अप्राकृतिक, अस्वाभाविक मार्ग अपना लेता है कभी-कभी सामाजिक विधि निषेध प्रतिबन्ध इतने तीव्र होते हैं कि यदि ये कामनाएँ स्वप्न के माध्यम से नहीं निकल सकीं तो व्यक्ति विक्षिप्त भी हो जाता है। व्यक्ति का अवचेतन मन में कुण्ठित, दमित वासना ही एक ऐसा उद्दाम वर्ण उद्गार है। जिसका निष्क्रमण, परिशोधन अनिवार्य

1. *साइक्लोजी एण्ड लाइफ : रिच, पृ0 527*

होता है। फ्रायड ने व्यक्ति की लिबडो ग्रन्थि और उसके मूल में निहित जिजीविषा तथा इड का विश्लेषण करते हुए यह कहा है कि व्यक्ति के मौखिक गुदा सम्बन्धी, जननेन्द्रिय स्वभाव तद्जन्य प्रकृति एवं आचरण इसी इड में निहित रहती है और इसके प्राबल्य के कारण ही मनुष्य पशुवत समाज विरोधी और असामान्य कार्य करता है। यहाँ शिवानी के उपन्यासों में असामान्य पात्रों के स्वरूप तथा उनके क्रिया कलापों की चर्चा की जा रही है।

राजाकृष्ण कमल सिंह[1] इकबाल नारायण[2] रोहित भट्ट[3] रघुबर दयाल[4] तनवीर बेग[5] रामनाथन[6] गजानन जोशी[7] एवं नूरी वैरूनिका का शिशु[8] विक्रम[9] प्रतुल के पिता[10] ऐसे असामान्य पुरूष पात्र हैं इनमें नूरी का अनाम शिशु शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग है। राजा शिव कमल सिंह मानसिक विकलांग की कोटि में आते हैं। इसी प्रकार विक्रम कामोन्माद के कारण प्रतुल के पिता की वंश वृद्धि जैसी दुश्चिन्तता के कारण असामान्य पात्र में आते हैं इन सबसे विचित्र पात्र रोहित भट्ट, दिनकर, गजानन जोशी और तनवीर वेग हैं। रोहित भट्ट शेक्समैनियाक हो गया है, तो तनवीर वेग अप्राकृतिक मैथुन का अभ्यस्थ होकर अपनी पत्नी के तिरस्कार का कारण बनता है। रामनाथन सम्मोहक विद्या के जानने के कारण वयस के अन्तराल को भूलकर अपने से बहुत छोटी अवस्था वाली किशोरी छात्रा को सम्मोहित कर विवाह के लिए दबाव डालता है। करनदास कापड़िया वृद्ध श्वसुर है किन्तु किशोरी युवती हीरा के सान्ध्यि के कारण उसके दैहिक

---

1. *चल खुसरो घर आपने*
2. *कस्तूरी मृग*
3. *कृष्णवेणी*
4. *अतिथि*
5. *श्मशान चम्पा*
6. *चौदह फेरे*
7. *सुरंगमा*
8. *रति विलाप*
9. *पाथेय*
10. *पाथेय*

आकर्षण से बँधकर उसके साथ भाग जाते हैं। यहाँ हम पहले शारीरिक और मानसिक विकलांक पात्रों के विवरण देकर फिर मानसिक विकलांगता के कारण अस्वाभाविक क्रिया कलाप करने वाले पात्रों का चित्रांकन करेंगे।

मयूरी वैरानिका का शारीरिक एवं मानसिक विकलांग पुत्र 'सुरंगमा' उपन्यास के राबर्ट की बड़ी बहन मयूरी वैरानिका थी जिसका पुत्र मोरेन विकलांग रूप में पैदा हुआ। उसके रूप रंग आकार प्रकार क्रिया कलापों का उल्लेख शिवानी ने इस प्रकार किया है।

रूप रेखा एवं वाह्य सौन्दर्य :-

बैरोनिका का यह पुत्र गुप्त प्रणय प्रसंग की परिणति थी। शिवानी ने उसके बाल्य सौन्दर्य बाद में उसकी अस्वाभाविक क्रियाओं का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया है। जब वैरोनिका के पुत्र हुआ तब वह अपना सब कलंक भूल चुकी थी, था भी वह ऐसा ही नीली आँखे, तीखी नाक और एकदम गोल मटोल मक्खन की बट्टी से गढ़े भरे-भरे हांथ पैर तब कौन कह सकता था कि वैरोनिका का वही गुलगोथना बेटा एक दिन उसका सबसे बड़ा सरदर्द बन उठेगा। चार-पाँच दिन के बाद ही हमें उसकी गतिविधि देखकर कुछ अटपटा सा लगने लगा। जिन सुन्दर नीली पुतलियों ने हमें पहले ही दिन मोह लिया था वे निरन्तर काँच की गोलियों सी घूमने लगी। गोल मटोल चेहरे की भावहीनता क्रमशः स्पष्ट होती चली गयी। दिन प्रतिदिन उस भोल दन्तहीन शिशु का चेहरा किसी दन्तहीन अनुभवी वृद्ध का सा सिकुड़ता चला गया। एकदिन हम दोनों जान गये कि वह नार्मल नहीं है। उसके साथ के बच्चे घुटनों चलते, आसपास धरी चीजों पर लपकने लगे थे और वह अपनी लट्टू सी घूमती पुतलियों से हमें घूरता हमारे कलेजे में हिमखण्ड बनता जा रहा था। बुआ के कहने से बैरोनिका ने अपनी नर्सिंग की ट्रेनिंग पूरी कर ली थी। दिनभर अब वह माइक को आर्या के पास छोड़ अपनी ड्यूटी पर जाने लगी। नाइट ड्यूटी पर जाती तो मैं उसकी देखभाल करता। कभी अकेले निस्तब्ध रात्रि में उसकी भयावह भावशून्य दृष्टि हण्डा सा सिर और मौनस्टर की सी हँसी मुझे भयभीत कर जाती पर धीरे-धीरे हम दोनों ने उसके अस्वाभाविक अस्तित्व को स्वीकार कर लिया। मैं अब उसके मुख से रोने को पहचानने लगा था। उसके करवट लेने के रोने की भाषा नैपी गीले होने का क्रन्दन सब कुछ पहचान मैं कभी दूध की बोतल उसके मुँह से लगा देता कभी करवट बदल देता और कभी नैपी

बदल उसकी नन्हीं अचल विवश देह को अपनी देह का आश्रय दे सुला देता। मुझे तो आज भी यही लगता है कि वह वैरोनिका से अपने पूर्व जन्म की कोई कठोर शत्रुता निभाने ही आया था। चौबीस सुदीर्घ वर्षो तक वह निरन्तर उसके जीवन को अपने जीवन सा ही निष्प्राण अर्थहीन बनाता रहा। वह तब तक उसके सुख का मार्ग अवरूद्ध किये पड़ा रहा जब तक उसका यौवन जलकर खाख नहीं हो गया। जब वह गया तब उसकी1 अभागिन जननी के दग्ध यौवन की राख ही शेष थी। वैरोनिका मांस के लोथेड़े पर भी जान छिड़कती थी इस प्रकार शिवानी ने शारीरिक और मानसिक विकलांग पात्र का विवरण देकर सम्भवतः यह कहना चाहती है कि युवावस्था में अनियंत्रित उद्दाम स्वेच्छाचार ऐसे ही बालकों को जन्म देता है। जो मातापिता पारिवारिक जनों के लिए कष्ट का कारण ही नहीं बनते अपितु माँ या परिवार जनों के अपमान का जीवन बोध कराते रहते हैं। इसी प्रकार का उदाहरण 'अतिथि' उपन्यास् में चन्द्रा के पुत्र के रूप में शिवानी ने लिखा है।[1] इस असामान्य पात्र का एक दूसरा रूप शिवानी ने तनवीर बेग के माध्यम से प्रस्तुत किया है इस भावना और अप्राकृतिक जीवन निदर्शन के मूल में एडलर की हीनता ग्रन्थि का व्यवहारिक निदर्शन शिवानी इस चरित्र के माध्यम से कराना चाहती है। इस चरित्र के निर्दशन के लिए पृष्ठभूमि के रूप में यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि व्यक्ति की विशिष्ट पारिवारिक अथवा सामाजिक परिस्थितियाँ ही उसकी विशिष्ट या असामान्य मानसिकता के निर्माण का कारण होती हैं अपने अस्तित्व, जिजीविषा और दूसरे पर अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने की भावना मनुष्य के मन में जन्मजात रूप में होती है बाल्या या किशोरवस्था में किसी परिस्थिति या दुर्घटना के कारण किशोर में बद्ध मूल आत्महीनता का भाव यदि आ जाये तो वह या तो इसे समूलोच्छेद कर या फिर उसी को अपनी नियति मानकर कुण्ठा के कारण अस्वाभाविक आचरण कर्ता दिखाई देता है। हीनता की यह ग्रन्थि सभी मनुष्यों में मिलती है। व्यक्ति इसे दूरकर अपने जीवन को समाजोपयोगी बनाने का निरन्तर उद्योग करता रहता है किन्तु परिस्थिति या प्रतिस्पर्धात्मक संयोग के कारण उसके मार्ग में व्यवधान उत्पन्न हो जाते हैं और वह बारम्बार अपनी हीन भावना का दमन कर प्रतिक्रियावादी बन

---

1. अतिथि, पृ0 212

जाता है।

तनबीर बेग

यह ऐसा मुस्लिम युवक है जो कथानायिका की बहन जूही के साथ वह पढ़ता है, युवावस्था में विपरीत लिंगी का रूपाकर्षण सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति है। किन्तु जूही के पारिवारिक संस्कारों के कारण उसे जूही का सानिध्य प्राप्त सम्भव नहीं दिखता अतः वह जूही का राखीबन्ध भाई बनता है। यही राखीबन्ध भाई धीरे-धीरे उसका प्रेमी बनकर हांथ थाम लेता है। दोनों समाज से भागकर दिल्ली पहुँच शादी कर लेते हैं अब तनबीर बेग का वास्तविक स्वरूप सामने खुलकर आता है जिसके कारण जूही ने उसे छोड़ दिया था। तनवीर वेग के अस्वाभाविक प्रकृति का अप्रत्यक्ष चित्रांकन शिवानी ने इस प्रकार किया है। जिसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि तनवीर वेग समलिंगी किशोर बालकों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर अस्वाभाविक अप्राकृतिक मैथुन करने पर विश्वास रखता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में इसे नितान्त असामान्य चरित्र कहा गया है। यद्यपि फ्रायड ने मुनष्य के मूल में कामभाव को आधार माना है और उसकी अभिव्यक्ति के तीन रूप बताने का प्रयास किया है। मौखिक गुदा और जननेन्द्रिय तंत्र सुख प्रथम दोनों सुख शिशु अवस्था के हैं अन्तिम युवावस्था का स्वाभाविक प्रवाह है किन्तु तनवीर वेग का विपरीत आचरण अविकसित होने के कारण ही दिखाई पड़ता है। शिवानी ने इस परिस्थिति का व्यंजनात्मक पद्धति से निरूपण इस प्रकार किया है।

''उसके विचित्र मित्र एक-एक मुझसे मिलने आते और मुझे एक से एक दामी उपहार थमा उसे लेकर निकल जाते। रात-रातभर मैं उसकी प्रतीक्षा में बैठी रहती वह कभी आधी रात को लौटता कभी भोर के धुँधलके में और मुझे गुड नाइट के कागजी फूलों का गुलदस्ता थमा दीवार की ओर मुँह भरके खर्राटें भरने लगता। मैं कुछ-कुछ समझ रही थी कि एक दिन उसी ने मुझे सब समझा दिया। मुझे माफ करना जूही सोंचा था तुमसे शादी कर अपनी पिछली जिन्दगी को भूल जाऊँगा पर अब देखता हूँ कि जहाँ पहुँच गय हूँ वहाँ से चाहने पर भी मैं अब नहीं लौट सकता।'' उसकी जिन्दगी केवल पुरूषों तक ही सीमित थी। दीदी उसके मित्रों को लिखे गये कुत्सित पत्रों की भाषा पढ़कर मैं घृणा से सिहर उठी। जो पुरूष किसी दूसरे पुरुष को प्रेयसी कहकर सम्बोधित कर सकता है वह क्या कभी स्त्री से प्रेम कर सकता है। उसी रात को जूही मर गयी थी रे दीदी।

रिनी खान का जन्म हुआ था उसी दिन किन्तु तनवीर वाज ए जेन्टिल मैंन। लेकिन उसने मुझे पूरी आजादी दे दी थी जहाँ जाऊँ जिसके साथ जाऊँ उसे कोई आपत्ति नहीं थी। मेरी जेठानी नहीद का मायका पाकिस्तान में था, मेरा विवाह हुआ तो वह पाकिस्तान गयी थी जब लौटी तो व्यंग्य से हँसकर उसने पहला प्रश्न मुझसे यही पूछा था क्यों जी तुम लड़की हो या लड़का तनबीर मियाँ के दोस्तों के मासूम जनाने चेहरे देख-देखकर हमें डर लगता है कि कहीं तुम भी उन्हीं मे से एक न हो।[1]

इस असामान्य चरित्र का उदाहरण हमें पाथेय के नायक प्रतुल के पिता के रूप में दिखाई देता है। कथानायिका विलोत्तमा का विवाह टी0वी0 के मरीज प्रतुल से होता है। यद्यपि डाक्टर ने प्रतुल के पिता को सावधान कर दिया था कि उसका विवाह नहीं होना चाहिए फिर भी पिता के मन में वंशधर की चाह थी। शिवानी ने लिखा है "प्रतुल मेरे श्वसुर का इकलौता पुत्र था उन्हें धुन थी वंशधर चाहिए। उत्तराधिकारी नहीं हुआ तो कौन भोगेगा उनकी अटूट सम्पत्ति। पुत्र के जीवन की बलि ही क्यों न देनी पड़े, उत्तराधिकारी चाहिए अवश्य।[2]

इस पृष्ठ भूमि में श्वसुर की मनोविकृतियों का भी चित्रांकन शिवानी ने किया है "दासियाँ जहाँ अधेड़ हुई निकाल दी जातीं सब पूर्ण यौना छैल छबीली अकारण ही हँसती खिलखिलाती एक दूसरी पर गिरी पड़ती थी। धूप निकलते ही संगमरमरी प्रांगण में बड़ी सी चौकी डाल दी जाती और मेरे श्वसुर के विराट वप पर नवोदित सूर्य की अरूण रश्मियाँ को सरसो के तेल में मिलाकर उनकी दो मुँहलगी दासियाँ मालिश कर रगड़-रगड़ चमकाती साथ-साथ चलता अश्लील हँसी ठ्ठठा, कभी इधर-उधर देख मेरे श्वसुर कटोरी से तेल उठा दोनों के कपोलों पर अबीर गुलाल सी मल देते- और वे नाज-नखरों में दुहरी होकर कहती आहा किजे करेन करता! (आहा! क्या करते हैं मालिक)[3] ऐसा श्वसुर यह चाहता था कि सुन्दरी तिलोत्तमा पुत्र के पास जाकर वंशधर उत्पन्न करने की सामर्थ्य प्राप्त कर सके जो श्वसुर पुत्र की आसन्न मृत्यु से निर्लिप्त साठ वर्ष की अवस्था के बाद भी

---

1. श्मशान चम्पा : पृ0 97
2. मेरा भाई, पृ0 104
3. वही, पृ0 106

अपनी साली सोना को अपनी बाँहो में भर गहरी नींद सोता हो उसके चरित्र की किस प्रकार की कल्पना की जा सकती है। दुर्भाग्यवशात् दो, चार, छः दिन के प्रणय प्रलाप के पश्चात् प्रतुल दिवंगत हो गया। तिलोत्तमा का जीवन अंधकार में डूब गया। अब श्वसुर के सामने वंशधर की समस्या विकराल रूप से मुँह खोले खड़ी थी। अस्वाभाविक, असामान्य का चरित्र का श्वसुर, श्वसुर के पद का परित्याग कर निर्लज्जता पूर्वक अपनी बहू से बलात्कार करने का सुअवसर ढूँढ़ने लगा। अपनी नौकरानी हरिबाला से बेहोशी की दवा मिलाने के षडयंत्र श्वसुर ने किया और सुप्तावस्था में इस कृत्य को पूर्ण करने का असफल प्रयास किया। शिवानी ने इस क्रूर असमाजिक स्थिति का निरूपण कर श्वसुर के जघन्य अस्वाभाविक चरित्र का उजागर इस प्रकार किया है। ''अपनी बड़बड़ाहट से मेरी चेतना लौटी पर यह कैसा भार था मेरी छाती पर कौन था यह? प्रतुल कहाँ से आ सकता था। अब मैने डरक़र उठने की चेष्टा की शायद चीखने ही जा रही थी कि किसी के बलिष्ट पंजे ने मेरा मुँह दबा दिया। अपनी दुर्बल देह की पूरी शक्ति लगाकर मैंने उस क्रमशः गुरूतर हो रहे भार को धक्का दिया और होंठो पर पंजे को जोर से दाँत गड़ा दिये। एक दबी चीख के साथ थोड़ी सम्भलकर उठा मैंने सिरहाने धरी लम्बी टार्च निकालकर जला दी और एक पल को लगा कि मैं गिर पडूँगी मेरे सामने मेरे श्वसुर खड़े हाँफ रहे थे। उनकी दोनो मदमत्त कामातुर आँखों से निकलती वासना की लपटें मुझे लीलने को बढ़ी आ रहीं थी। इतना नीच, इतना जघन्य ऐसा पशु हो सकता है मानव? अभी इकलौते बेटे की चिता ठंडी भी नहीं हुई और यह पशु इस नीचता पर उतर आया। अपनी पूरी ताकत से मैने वह भारी टार्च उनके सिर पर दे मारी। वह एक दबी चींख के साथ दोनों हाथों में सिर थामे जमीन पर बैठ गये और मैं खिड़की से छलाँग लगा दी। लगता है दयालु विधाता ने ही मुझे उस दिन गोद पर उठा लिया होगा।[1]

यह रति विलाप उपन्यास की नायिका अनुसुइया पटेल का पति है सम्भवतः वह मिर्गी रोग का रोगी था। देखने में सुदर्शन किन्तु तीव्र, कामोन्माद के कारण यह विक्षिप्त सा हो गया था। शिवानी ने लिखा है ''मिर्गी के दौरे इसे बचपन से ही पड़ते थे पर

---

1. मेरा भाई, पृ0 121-122

इधर दो वर्षों से वह भी बन्द थे। सन्दुरी, सुशील लड़की को बहू रूप में पाकर यह मानसिक रूप से स्वस्थ्य हो उठेगा।''[1] उसके अस्वाभाविक पागलपन और क्रिया कलापों का शिवानी ने इस प्रकार चित्रांकन किया है। ''मेरे पति को निचली मंजिल के एक कमरे में रात दिन बाँध रखा जाता था मैं अपनी खिड़की से देखती वह अपने गोरे-गोरे हांथ जंगले से निकाल लोहे की क्षणों से जूझ रहा है। उसकी दिल दहलाने वाली चीख कभी-कभी मुझ पागल बना उठ्ती। खोल दो मुझे, जाने दो मझे, कहाँ गयी वह? अरे कसाइयो कहाँ छिपा दिया मेरी सुन्दरी बहू को? अरे मैने तो उसका अँगूठा पकड़ा है पापा मैं क्या उसे भगाकर लाया हूँ। फिर वह थककर घण्टों चुप्पी साधे मुर्दा बन जाता और मुझे न जाने कैसी दहशत होने लगती! कहीं कुछ हो तो नहीं गया अभागे को। कभी ठीक आधी रात को उसके सुरीले कण्ठ की तड़क भरी टीस मुझे गाकर फिर अपनी खिड़की के पास खड़ा कर् देती। मैं बता नहीं सकती बहन उस कण्ठ में उसका उन्माद न जाने कौन सी मोहनी घोल गया था।

''ऐ ऐने हैया न कोर मा राख जो
ऐने हाथ नी हथेली मा राख जो
जो बनियू चाल्यू जसे।''[2]

ऐसा कामोन्मादी व्यक्ति कभी-कभी शिशुवत् आचरण करता है शिवानी ने लिखा है ''नित्य घर के दो पुराने नौकर उसे पकड़कर जबरजस्ती नहलतो तो मैं छिप-छिपकर उसी खिड़की की ओट से देखती रहती। कभी पानी छपछपाता वह किसी दुधमुँहे बालक की सी किलकारियाँ मारता और कभी मुँह में पानी की पिचकारी भरकर दोनों नौकरों को भी वह बचकानी ठिठोली से मुझे भी हँसा देता। सहसा मेरा यत्न से छिपाया गया स्मित भी उसकी पैनी दृष्टि के पकड़ में आ जाता और वह एक बार फिर सौराष्ट्र के उस मधुर लोकगीत से मुझे व्याकुल कर देता। ''जुबनियो चाल्यो जसे'' मुझे लगता है जैसे वह बार-बार मुझे झकझोर कर चेतावनी दे रहा है दे मत कर अनू तेरा यह यौवन फिर चला जायेगा।[3] और एक दिन अचानक श्रृंखलामुक्त विक्रम की दृष्टि अपनी पत्नी पर पड़ी

1. रति विलाप, पृ0 11
2. वही, पृ0 12
3.. वही, पृ0 13

और वह उसे अपने अंक में भरने के लिए असाधारण दुःसाहस कर बैठा। अचानक उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी और पल भर के लिए उन रसभरी शर्बती आँखों का उन्माद विलुप्त हो गया। मत्तगयन्द की ही भाँति वह चित्कार मारकर उठा दोनो तगड़े अंचलों को उसने धक्का मारकर गिरा दिया और मेरी ओर भागा इससे पहले कि मेरे हक्का बक्का रह गये। श्वसुर जी मुझे बताते वह फूल की भाँति मुझे गोद पर उठाकर छत की ओर भागा उस स्पर्श में कहीं भी कठोरता नहीं थी बहन कहीं नहीं कितना सोहाग कितना लाड़ दुलार था उस स्पर्श में ओंठ ही ओंठ में वह न जाने क्या बड़बड़ाता सीढ़िया फाँदता चला जा रहा था। छत के एकान्त में उसने मेरे भय से थरथराते अधरों पर अपन अधर रखे ही थे कि पिताजी गर्जे उसे छोड, छोड़ उसे रख नीचे क्रोध और भय से उनकी देह थरथरा रही थी क्योंकि अब उनका पुत्र मुझे गोद ही में लिये छत की ऊँची मुडेर पर चढ़ गया था।1 और इस प्रक़ार छीनझपटी में विक्रम की मृत्यु हो गयी। अपने अस्तित्व की अतिशय चाह आकाँक्षा और दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण लकवाग्रस्त रोगी राजा शिवकमल सिंह जीवन के उत्तरार्द्ध में असामान्य पात्र बन गये शिवानी ने उसके क्रिया व्यवहार और नौकरानी से उनके चरित्र की आकाँक्षा का चित्रांकन इस प्रकार किया है। "एकदम दिगम्बर बने बड़े राजा निर्वस्त्र अपनी कुर्सी पर बैठे थे। उनकी गौर नग्न देह खून से तर थी दो तीन नौकर उसी रक्त को उनके सर्वांग में बार-बार पोतते जा रहे थे और छज्जे पर दिखी ही स्थुलांगी महिला अपने मर्दाने कण्ठ से उन्हें आदेश दे रही थी "पुठ्ठे पर मलो, अब जाँघ पर, जोर-जोर से निरीह गिगिया रहे शिवकमल सिंह न जाने क्या कहने की चेष्टा कर रहे थे। सहसा उनकी दृष्टि नीचे खड़ी कुमुद पर पड़ी वहीं से चीखकर उन्होंने अपने विकृत स्वर को ऐसा चाबुक मारा कि वह तिलमिला गयी। भाग, भाग ....

काहे मिस साहब बहुत डरा गयीं? हम सब सुनत रहे अरे बुढ़्ढ़ा सठिया गवा है। जब से फालिज गिरी है हर अवतार, मंगल, जंगली कबूतर के खून की मालिश करात है बुढ़वा मादरजात नंगा बैठा रहा, तुमका देख लिहिस तो बडबड़ा गवा..........यहाँ का मानुष रहत है सब वनमानुष है मिस साहब बनमानुष असमान्य पात्रों में शिवानी ने सुरेश भट्ट (कैंजा) गजानन जोशी ने दो पात्रों पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया है।

सुरेश भट्ट

कैंजा का सुरेश भट्ट, सुदर्शन अध्यवसायी सुरिचि सम्पन्न वकालत तक शिक्षा प्राप्त युवक था। जो किशोरावस्था में कथानायिका नन्दी तिवारी के रूपाकर्षण में बँधकर छेड़खानी करता है। विवाह प्रस्ताव भेजकर सामान्य सा जीवन व्यतीत करना चाहता है किन्तु असफलता के कारण उसका इगो, आहत हो जाता है। और वह बलात्कार, दुराचार की सभी सीमाओं को पारकर सेक्समैनियाग बनकर रह जाता है। उसके चरित्र के विविध पहलुओं का निरूपण शिवानी ने इस प्रकार किया है।

सुरेश भट्ठ का चरित्र :-

यह "कैंजा" उपन्यास का नायक है। नन्दी के आकर्षण में बँधकर उसे न पाने पर यह आस्वाभाविक पात्र(सैक्समैनी याक्य) बन गया है। फ्रायड ने मन का विश्लेषण करते हुए कहा है कि "मनुष्य जिस व्यक्ति या वस्तु का आसक्ति पूर्वक अत्यधिक चिन्तन करता है। धीरे-धीरे वह बात उसके अवचेतन मस्तिष्क से होकर अचेतन मस्तिष्क में प्रविष्ट हो जाती है। और दमित अवस्था में यह भावना अनेंक सामाजिक बन्धनों को तोड़कर आस्वाभाविक बना देती है।"[1]

सुन्दर सुरेश भट्ट कुलीन, अभिजात सम्पन्न और शिक्षित युवक है। किन्तु अपनी आस्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण वह विद्रोही, आवारा, हत्यारा बन बैठा जीवन के अन्तिम काल में नन्दी से इसका विवाह होता है। और वह नाम मात्र का उसका पति और रोहित का पिता मात्र बन पाता है। उसकी बाह्य रूप रेखा, आन्तरिक चिन्तन और सामाजिक परिस्थितियों या परिवेश का त्रिआयामी रूप शिवानी ने ऐसा चित्रित किया है जो उनके ही लेखनी से सम्भव था।

1. सौन्दर्य चित्रण :-

शिवानी ने सुरेश भट्ट के कद्दावर शरीर और उसके सौन्दर्य का चित्रांकन करते हुए कहा है "उस कद्दावर जवान का रंग कुमायूँ के शाहों और ऊँचा कद वहाँ के क्षत्रियों का था। गोरी चिट्टी सिल सी छाती पर पड़ी यज्ञोपवीत की उज्जवल डोरी बिना पुन्छी

---

1. विस्तृत अध्ययन के लिए मनोविश्लेषण, दृष्टव्य है : सिंग मंग क्रायउ

शुभ्रवर्णी रजत देह पर रजत देह पर मोती सी चमकती पानी की बूँदे और स्वयं ही सीधी माँग में विभक्त हो गये। चिकने भींगे केश।''[1]

2. उच्छृंखलता :-

सुरेश भट्ट का कुल गोत्र सौ फीसदी विशुद्ध था। उदण्डता धीरे-धीरे उच्छृंखलता में परिवर्तित हो गयी। कभी-कभी सनक सवार होने पर वह कोसी नदी की धोखेबाज तीखी ताल की पुष्टि मछली सा ही उद्‌म्ता और किसी पेशेवर गोताखोर की भाँति डुबकी लगा बड़ी दूर तक निकल जाता।''[2]

ऐसे ही वह धोती की लाग लगा किनारे बैठ नाक के नथुने मूँद वको ध्यान लगाता और मेनका नन्दी तिवारी को देख जोर से चिल्लाता ''नाश हो इस स्वर्ग की मेनका का जिसने मुझ जैसे विश्वामित्र की तपस्या भंग की।''[3]

किसी कारणवश नन्दी तिवारी के न आने पर वह पूछ्ता -''अरी छोरियों मेरी मेनका को कहाँ छोड़ आयी।''[4]

3. वैवाहिक जीवन -

सुरेश भट्ट का वैवाहिक जीवन भी अल्प काल के लिए किन्तु बड़ विचित्र था। ग्राम की कुख्यात पार्वती से उसनें विवाह किया जिसका एक बेटा मिशन में पल रहा है। लोगों के आपत्ति करनें पर उसनें उत्तर दिया।

''क्यों परेशान होते हैं? उसके तो शादी से पहले ही है मेरे तो शादी से पहले ऐसे ही जाने कितने हैं?''[5]

वैवाहिक जीवन के विचित्रता का उल्लेख कर शिवानी ने लिखा है -

''और सचमुच ही वह दुःसाहसी वैश्या दुराचारिणी पार्वती को वह ब्याह लाया था। एक दो महीने के अजीम लाड़-दुलार के पश्चात् फिर उसने अपने उसी नवेली को पहाड़ी

---

1. कैंजा, पृ0 13
2. वही, पृ0 13
3. वही, पृ0 13
4. वही, पृ0 13
5. वही, पृ0 12

दमा से पीटना आरम्भ कर दिया। और साल वीतते न बीतते पीट पाट उसकी धज्जियाँ उड़ा दी थी।''[1]

पार्वती की मृत्यु के बाद वह फिर किसी नागा साधुओं की टोली के साथ दिगम्बर वना बद्रीनाथ की ओर निकल गया।

4. शराबी एवं जुआरी :-

एम0ए0 एवं वकालत पास करने के बाद सुरेश भट्ट पिता के पश्चात् घर का मालिक वना शिवानी ने लिखा है – ''कभी जमीन जायदाद घर-वगीचा सब कुछ था किन्तु द्युत क्रीड़ा का दानव सिन्ध बाला के बूढ़े की भाँति उसके कन्धे पर जहाँ एक बार चढ़ा तो फिर कभी नहीं उतरा। बैंक में जायदाद गिरवी रख दी गयी।''[2] एकाकी जीवन व्यतीत करते योगियों के जमात में भर्ती होने के कारण शराब, गाँजा, चरस की दम की इच्छा भी उसने प्राप्त की। उसकी आसव क्रिया के सम्वन्ध में लेखिका ने लिखा है – ''एक अँधेरे कमरे में उसका छोटा मोटा सेलर भी था। धार चूड़ा जाकर वह प्रायः ही गर्वब्यांग के अनूठे आसव की बोतलें खरीद लाता और अपने सेलर का सँवार कर जाड़े भर का समुचित प्रवन्ध कर लेता।'[3]'

5. अध्ययनशील :-

नौकरी न करने पर भी पुस्तक खरीदने के लिए उसके पास कहाँ से पैसा आ जाता यह रहस्य गाँव भर में कौतूहल का विषय था। उसका पुस्तक प्रेम स्वयं अपने में अनोखी मिसाल वन गया था। वह रात-रात भर बत्ती जलाकर पढ़ता रहता।

6. प्रथम-प्रेम :-

रामलीला में राम का अभिनय करते नन्दी के देहयष्टि को देख सुरेश भट्ट स्थायी रूप से उस पर मोहित हो उठा और उसकी परिणति विवाह के रूप में करने के लिए वे उसके पिता उसके पास जाकर निर्लज्ज प्रस्ताव रखता है। ''शास्त्री जी मैं आपकी कन्या से विवाह करना चाहता हूँ। मैं उसके वैधव्य योग के वारे में सव सुन चुका हूँ और मुझे

---

1. कैंजा, पृ0 12

2. वही, पृ0 14

3. वही, पृ0 15

कोई आपत्ति नहीं है।"[1] किन्तु शास्त्री जी की अकर्मण्य शरावी, जुआरी के हाथ में अपनी कन्या का हांथ देने की अपेक्षा उसे ब्रम्ह कुण्ड की धारा में बहा देना उपयुक्त समझते हैं। इसे सुनकर शरावी मदालस सुरेश भट्ट् कहता है –"यानि मैं अकर्मण्य हूँ, शराबी हूँ, जुआरी हूँ उस ऊँचे कण्ठ स्वर में मदालस अटपटी जिह्वा की तीखी फिसलन एकदम स्पष्ट हो उठी थी। निश्चय ही वह एकाध घूँट चढ़ाकर आया था।"[2]

7. बलात्कारी :-

राघवभट्ट के पुत्र सुरेश से कोई दुष्कर्म छूटा नहीं कर्म काण्डी माँ बाप ने इकलौते पुत्र को सिर पर चढ़ा रखा था। परिणामस्वरूप अनुशासन की डोर ढ़ीली होने पर फिर उसे कसना कठिन हो जाता है। बाहर से लौटे सुरेश भट्ट विधवा मालदारिन की मन्दबुद्धि की किशोरी पगली से बलात्कार किया। पगली उसके बरामदे में पड़ी रहती थी। शिवानी ने लिखा है –"सुरेश चोरों की तरह ताला खोलकर घर आया। क्षुधातुर कंगले भिक्षु के द्वार पर स्वयं विधाता ही छप्पन व्यंजनों का थाल सजाकर धर गया तो वह क्या मूर्ख था जो उस थाल को ठुकराकर रूखा सो जाता।"[3] वह स्वयं अपने पापों की स्वकृति करता हुआ कहता है –"कोई भी कुकर्म मुझसे नहीं छूटा इन हांथों ने एक पगली ही नहीं और भी कितनी पतिताओं को आलिंगन पास में बाँधा है। कुछ भी मुझसे नहीं छूटा है। भगवान कुछ भी नही00000 मार्डर 000000 रेप।"[4] नन्दी के वैवाहिक प्रस्ताव को सुनकर हतप्रभ सुरेश भट्ट का प्रणयी रूप मुखर हो उठा यद्यपि यकृति की पीड़ा से ऐंठता सुरेश भट्ट का लन्बा धड़ पंलग से नीचे लटक गया था। मुमूर्ष अवस्था में वह नन्दी को ही कोष रहा था। जिसने उसकी कंचन की काया को मिट्टी में मिला दिया था।

नन्दी तिवारी के मँदिर मादक नारी देह गन्ध के नैकट्य से वह संज्ञा को प्राप्त हुआ। लेखिका ने लिखा है –"जिसे पाने को वह कई वर्षो तक नैराश्य के अन्धकार में भटकता अपना मानसिक संतुलन खोकर एक भयानक सैक्समैनी याक्य वन उठा रहा था। आज वह स्वयं आकर उसकी बाँहों में सिमट गयी थी।

---

1. कैंजा, पृ0 19
2. वही, पृ0 19
3. वही, पृ0 29
4. वही, पृ0 39

इस प्रकार शिवानी ने काम मनोवृत्ति के दमन के फलस्वरूप उत्पन्न हुई प्रक्रियावश वर्जना अवदमित होकर कैसे-कैसे रूपों से प्रकट होती है इसे मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से दिखाया गया है। उच्च कुलीन ब्राम्हण, सुन्दर कद्दावर देह वाला सुरेश भट्ट जहाँ एक ओर दुःसाहसी, यायावर, अध्ययनशील था वहीं प्रथम प्रेम की निराशा से प्रतिक्रियावश निर्लज्ज सनकी लेडी किलर हत्या व बलात्कारी वन गया। फ्रायड ने कामजनित अवदमित भावनाओं की विवृत्ति सामाजिक विद्रोह के रूप में चित्रित किया है। इसका पूर्ण परिपाक सुरेश भट्ट के चरित्र में मिलता है।

गजानन जोशी

इसी कड़ी में सुरंगमा का गजानन जोशी ऐसा पुरूष पात्र है जो मुख्य कथा के साथ चलने वाली समानान्तर कथा का नायक है। सुरंगमा की माँ राजलक्ष्मी का यह पति है किशोरी लक्ष्मी को संगीत शिक्षा देते ही देते प्रेम की दुरुह गलियों की यात्रा कराई क्योंकि वह कभी नवावजान के कोठे में रहकर इन रूप की फेरी लगाने वालियों का पठ्ठ शिष्य रह चुका था। वयस्कान्तराल लक्ष्मी के साथ अस्वाभाविक आचरण, शराबी बाल्यकाल में माता पर हुए पिता के अत्याचारों से प्रतिक्रियावादी बना गजानन जोशी असमान्य पात्र है इसके चरित्र की सामान्य विशेषताएँ इस प्रकार की हैं-

1. बाह्य सौन्दर्य :-

शिवानी ने इसकी बाह्य रूपरेखा हँसी आदि का परिचय देते हुए लिखा है "साफ सुथरा रेशमी कुर्ता चुन्न्टदार धोती अनामिका में सोने की अँगूठी खुले सुवर्ण बटनों से झाँकती यज्ञोपवीत की डोरी............. एक तो गजानन का चेहरा ही कुछ ऐसा था कि कोई भी उसकी ओर मैत्री का हाँथ बढ़ाने में हिचकता था। हर समय सकपकायी सी दृष्टि उठने बैठने में एक सहमी सी हिचकिचाहट आवश्यकता से अधिक पैनी चतुर आँखें उस विचित्र परिवेश में भी गजानन की कुटिल हँसी की स्मृति लक्ष्मी को रह रह सहमा जाती थी। ओठों से पी के छीटें छिटकाता और वह अपनी मदालस हँसी1 इस वार वह भयानक कुटिलता से मुसकाया। कत्थे से लथपथ वत्ती सी उस मुस्कराहट को और भी वीभत्स वना गयी।[1]

1. चल खुसरो घर आपने, पृ0 69

पहाड़ी चेहरे की निर्दोष गढ़न में सरस हल्की सी ही मौलिक मिठास थी।[1] उसके सुन्दर चेहरे 1आकर्षक पौरूष ने उसे हांथों ही हांथों में लेकर उसे आसमान में उछाल दिया।[2]

विद्रोही रूप :

गजानन के पिता समृद्ध और विलासी थे वे सरूली वेश्या को रखैल बनाये थे। इस कारण गजानन किशोरावस्था में ही विद्रोही बन गया। माँ के गहने बेंच जुआँ खेल गाँव से भाग अपने इसी व्रिदोह का परिचय देता है। शिवानी ने लिखा है "माँ की सीमा हेतु सहनशीलता ने ही किशोर गजानन के उदण्ड हृदय में विद्रोह का प्रथम बीजारोपण किया था उसने अनजाने ही दुराचारी जनक एवं धरती सी सहिष्णु जननी को एक साथ दण्ड देना आरम्भ किया। स्वयं अपने अविवेकी आचरण से पिता को दण्डित किया। पत्नी के प्रति अन्यायपूर्ण आचरण के लिए माँ को दण्डित किया। उस अन्याय को निशब्द झेलने के लिए उसकी उदृद्धि दृष्टि में अन्याय से भी गुरूतर अपराध था। अन्याय को निःशब्द झेलना।[3]

जिस सउली की गर्दन को झटके से काटने की गर्वपूर्ण घोषणा कर माँ को आतंकित करता वही गजानन वयस में बड़ी सरूली के यौनाचार को झाड़ियों में छिपकर देखता और अपने प्रणय निवेदन के लिए माँ के कंकड़ को चुराकर उसे भेंट कर गजानन भाग खड़ा हुआ।

संगीत प्रेमी :-

गजानन का कण्ठ देवदत्त मौलिक प्रतिभा सम्पन्न था और उसे वली मोहम्मद जैसे दयालु गुरू संगीतकार के रूप में मिला किन्तु कृतघ्न गजानन विश्वासघात कर गुरू को मृत्यु के गौहर में पहुँचा दिया और वह वेश्याओं की गली में पहुँच अपने उस प्रतिक्रियावादी रूप को ही व्यक्त किया है तभी उसकी शुभ चिन्तिका गौहर जान कहती है– "तुम ब्राम्हण के वेटे हो उस वदनाम कोठे में क्या सदा कान पर जनेऊ चढ़ाकर रियाज कर पाओगे

---

1. सुरंगमा, पृ0 92

2. वही, पृ0 94

3. वही, पृ0 89

बेटा''[1] और नवाब जान के रूप जाल में बँधा गजानन उसके लिए ईंट गारे की भी व्यवस्था करने लगा।

शराबी :-

वेश्याओं के दैहिक आकर्षण सामीप्य शराब का अभ्यस्त बना देता है गजानन नवाब जान की यौवन मण्डितादेह के चुम्बक से खिंचकर उसके आग्रह पर एकाध पैग ले लिया करता था। किन्तु धीरे-धीरे नियमित सुरापान उसके विलासी जीवन का अभिन्न अंग बन गया था।

प्रेमी रूप :-

नवाब जान की नटखट मुस्कान और प्रणयालाप की अदाओं से गजानन गौहर जान के कहने पर राजा प्रवोधरंजन राय के दरबार में उनकी पुत्री लक्ष्मी का संगीत ट्यूटर हो जाता है और ट्यूनिक पहनने वाली सत्रह वर्षीया लक्ष्मी को अपने रूप जाल में फँसाकर उसें भागने पर विवश कर देता है। दूर गाँव अंचल में वह गजानन लक्ष्मी को रखता उस पर अत्याचार करता, शराब पीकर उसे मारता पीटता भी उसके कामुक व्यवहार से लक्ष्मी त्रस्त्र हो जाती शिवानी ने उसके इस अस्वाभाविक, असामान्य आचरण का उल्लेख कई स्थानों पर किया है ''शिवानी ने लिखा है उस विचित्र परिवेश में भी गजानन की कुटिल हँसी की स्मृति लक्ष्मी को रह-रहकर सहमा जाती थी। ओंठो से पीक के छीटे छिट्काता वह अपनी मदालस हँसी से ही अपनी गालियाँ सँवारता था कुतिया, छिनाल कहीं की नहायेगी पोखर तलइया में यौवन दिखायेगी और हम साले घर आयेंगे तो सकुचाकर बन जायेगी...........सती सावित्री[2]

मैं जब रात को पूछता हूँ कि गौहरबाई ने क्या क्या गुर सिखाये हैं तुझे तो दुलत्ती झाड़ने लगेगी अरी मरद, रात को लाड़ दुलार के वक्त एक आध ऐसी बात नहीं पूछेगा तो क्या रामायण बाचना सिखायेगा तुझे? और फिर वही वीभत्स हँसी जो उसके कत्थे से सनी वत्तीसी को उसके चेहरे के निकट लाते ही उसे वेहोश कर देती थी।''[3]

---

1. सुरंगमा, पृ0 96

2. वही, पृ0 39

3. वही, पृ0 43

इसी प्रकार उसे छोड़कर भागी लक्ष्मी जब दुबारा उसकी कामान्ध दृष्टि में दिखायी पड़ी तो वह राबर्ट पुत्री सुरंगमा आश्रय दाता वैरोनिका की उपस्थिति में ही कमरा बन्द कर पशुवत अपने शारीरिक तुष्टि का प्रयास करता है शिवानी ने लिखा है –''उस कामान्ध ा दृष्टि से टपकती लार लक्ष्मी को भिगो गयी थी। द्वार पर चिटकनी चढ़ा उसे बाँहों में भींच लिया किन्तु उस बन्धन में प्रेम का उल्लास नहीं था। केवल प्रतिशोध का अवधूत. .... उसी पुकार को एक भद्दी गाली में पूर्ण कर गजानन ने अपने छुदार्थ विलासी उधर उसके रक्तरंजित नायक कपोलों पर गड़ा दिये............। कुर्सी पर पसरे अजनबी के चेहरे पर भी परितक्त्य मुस्कराहट और चैतन्य होने पर भी लक्ष्मी अपने अर्ध नग्न देह पर भी अस्वाभाविक रूप से उदासीन बनी पागलों की भाँति छत को घूर रही थी।1 तात्पर्य यह है कि गजानन जोश की वाह्य सौन्दर्य सुदर्शन संगीतकार पारिवारिक परिवेश के कारण प्रतिक्रियावादी बनकर दुर्दान्त असामान्य पशुवत आचरण करने लगता है जो गला द्विपद ख्याल गायिकी में सर्वश्रेष्ठ प्रमाण प्राप्त कर चुका था। नवाब जान के कामुक और पलंग पर विभिन्न सीखे गुरू का सहज सरल पत्नी लक्ष्मी पर उनका प्रयोग उसे अय्यास, विलासी, कामुक, जड़, पशु ही बनाता है कुल मिलाकर यह गजानन असामान्य पात्र की कोटि में आता है।

सारांश यह है कि शिवानी ने अपने रचना संसार में साधारण असाधारण, सुन्दर, कुरूप सदाचारी, दुराचारी सामान्य और असामान्य पात्रों के क्रिया कलापों की झाँकी अंकित कर यह बताने का प्रयास किया है कि साहित्यकार भी दूसरा विधाता सृष्टिकर्ता होता है। शिवानी के असामान्य पात्र एक ओर ईश्वर कृत शारीरिक, मानसिक रूप से अविकसित विकलांग हैं जो स्त्री पुरूष के शारीरिक अस्वाभाविक दुराचार के प्रतीक हैं। तो दूसरी ओर देवदत्त प्रतिभा का दुरूपयोग कर अपने आचरण से विक्षिप्त बनकर कुण्ठा यौज वर्जनाओं की पूर्ति के साधन बनते हैं। कुछ पात्रों में असामान्यता सामाजिक देन है तो कुछ में वैयक्तिक परिस्थितियों के कारण असामान्य आचरण करते हुए कुछ पात्र दिखाई देते हैं। इस असामान्य आचरण की मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के रूप में चेतन, अचेतन, संतुलन का आभाव एडलर की महात्वाकाँक्षा का प्रमुख स्थान है।

अध्याय सप्तम्

पात्रों के चरित्र-चित्रण में प्रयुक्त शैलियाँ
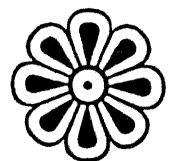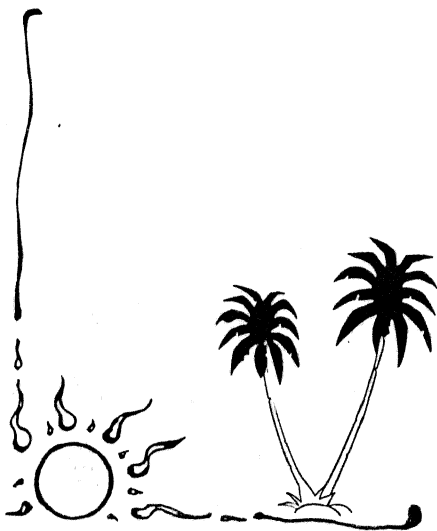
पात्रावधारणा स्वरूप विकास नामक प्रथम अध्याय में पात्रावधारणा की प्रणालियों का संक्षेप में उल्लेख करते हुए कहा गया है कि साहित्य में भाव और वस्तु या अभिव्यंजना प्रणाली का घनिष्ठ सम्बन्ध है। पात्रों की नानाविधि चारित्रिक रंग विच्छित्तियों का समन्वय आयास या अनायास रूप से होता चलता है। यहाँ हम अभिव्यंजना प्रणाली-शब्द विधान-वाक्य विन्यास, अलंकरण इत्यादि की चर्चा न कर पात्रावरतरण की शैलियों और शिवानी के उपन्यासों से उदाहरण प्रस्तुत करेंगे जिसका उपयोग शिवानी ने पुरूष पात्रों के चित्रांकन हेतु प्रस्तुत किया है यद्यपि शैली का सामान्य अर्थ अभिव्यंजना प्रणाली से है जबकि हम पात्र चरित्रांकन की प्रणाली पर प्रकाश डाल रहे हैं। कुछ विधि ायाँ इस प्रकार की हैं :-

विश्लेषणात्मक विधि :

उपन्यास में लेखक अपने पात्रों का चरित्र-चित्रण जिन निश्चित विधियों के अनुसार करता है उनमें से प्रथम विश्लेषणात्मक है। यह शब्द सौन्दर्यशास्त्र, आलोचना और भाषा-विज्ञान आदि क्षेत्र में प्रयुक्त होता है किन्तु हमारा इस प्रकार का मनतब्य नहीं है। वस्तुतः उपन्यासकार द्वारा पात्र के विविधि स्थितियों आचार-व्यवहार का मनोविलेश्षण करने हेतु इस शैली का प्रयोग किया जाता है। इस शैली के सम्वन्ध में डॉ0 प्रताप नारायण टंडन का मत है - ''इस प्रणाली में लेखक को अपने पात्रों के चरित्र की पूर्ण व्याख्या करनी पड़ती है और उनकी सम्पूर्ण विशेषताओं को उभारकर प्रकाश में लाना पड़ता है।'' शिवानी ने पुरूष पात्रों चित्राकंन हेतु इसी शैली का बहुत प्रयोग किया है। इसके अन्तर्गत पात्रों के नाम उनकी आकृति, वेश-भूषा, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रणाली का प्रयोग किया है। 'रथ्या' में नायक विमलानन्द के प्रेम का चित्रांकन इसी पद्धति से हुआ है। ''उस मधुर आह्वान में डूबा विमलानन्द फिर असहाय तिनके सा बहकर वड़ी दूर निकल गया था। आधी रात को एक वार नींद टूटी तो पास में सोयी गहन निद्रा मग्न सहचरी के शान्त निरूद्वेग चेहरे को देखते ही आँखे छलछला उठी। बड़ी ममता से उसे खींचकर उसने छाती से चिपटा लिया। ललाट पर मत्त प्रणयी के ओंठो का तत्प स्पर्श से एक पल को वह जगी फिर नींद में ही छोटे वैद्य छोटे वैद्य बड़बड़ाती। अलस बिल्ली सी उसकी छाती में सिमट गयी। नित्य के अभ्यास से विमलानन्द की आँखे सूर्य का प्रथम स्पर्श पाते ही खुल गयीं।

अभिनयात्मक विधि :-

उपन्यास के पात्रों में चरित्र-चित्रण की दूसरी प्रमुख विधि अभिनयात्मक शैली कहलाती है। इसे नाटकीय शैली भी कहते हैं। इसमें उपन्यासकार स्वयं किसी पात्र के विषय में कुछ नहीं कहता कुछ नहीं बल्कि या तो वे पात्र एक-दूसरे के विषय में चरित्र या क्रिया व्यवहार पर कुछ कहते या स्वयं कुछ अपने सम्बन्ध में विवरण देते हैं। उपन्यास में इस विधि द्वारा चरित्र चित्रण का विशेष महत्व है। नाट्य शास्त्र में चतुर्विधि अभिनय की चर्चा की गयी है। उपन्यासकार भी इस शैली में पात्रों की आंगिक, कायिक, आहार्य आदि विशेषताओं सरलता से संकेत कर सकता है। डॉ0 प्रताप नारायण टंडन ने लिखा है -'एक पात्र की आंगिक विशेषताएँ उसके चलने-फिरने, उठने-बैठने, बोलने-चालने आदि का ढ़ंग चरित्रगत विशेषताएँ हैं जो अभिनयात्मक विधि के अन्तर्गत रखी जा सकती है। ऐसे अनेंक औपन्यासिक पात्र हमारी स्मृति में घर कर जाते हैं जिनकी विशिष्टता का सम्बन्ध पात्र की किसी निराली भाव-भंगिमा, आंगिक असाधारणता या भाषिक अस्वाभाविकता से होता है।'' जैसे कैंजा में सुरेश भट्ट का किशोरी नन्दी के प्रति की गई छेड़-छाड़ पाठकों के मस्तिष्क को बहुत देर तक झंकृत करती रहती है - ''सुरेश भट्ट धोती की लांग लगा किनारे बैठ नाक के नथुने मूँद बकोध्यान लगा, घडी के काँटे के साथ स्कूल जा रही नन्दी तिवारी की प्रतिक्षा में बैठ जाता। वह जैसे ही आती मुदी पलकों की चिलमन उठा, वह जोर से हाँक लगाता। नाश हो इस स्वर्ग की मेनका का जिसने मुझ जैसे विश्वामित्र की तपस्या भंग की। कभी किसी कारण वश (नन्दी तिवारी) स्कूल नहीं जाती तो वह निर्लज्ज हँसकर हाँक लगाता अरी छोरियों मेरी मेनका को कहाँ छोड़ आयी बीमार है क्या?'' इस नाटकीय प्रणाली का एक दूसरा रूप घटनाओं द्वारा चरित्र चित्रण करना मिलता है जैसा कि हेनरी जेन्स ने लिखा है कि ''चरित्र यदि घटनाओं का परिणाम नहीं है तो और क्या तथा घटना चरित्र की व्याख्या के अतिरिक्त और क्या है। घटनाएँ मानव चरित्र को प्रभावित ही नहीं करती उसे उभारने में भी सहायक सिद्ध होती है। सामान्य अवस्था में पात्र अपने जिस भेद को प्रकट होने से बचा लेता है घटना की लपेट में आकर वह अपने आप प्रकट हो जाता है।'' 'चौदह फेरे' का बसन्ती पति धरणीधर वड़ी नाटकीय शैली में अपनी सरलता, तत्परता, व्यवहारिकता का परिचय देता है ''पंडित जी, चरण छूता हूँ धरणीधर ने गिड़गिड़ाकर दोनो हांथ जोड़कर सचमुच उनके पैर पकड़ लिए। दक्षिणा डवल दूँगा कि यह

लीजिए कहकर उसने सौ-सौ के दो नोट पंडित जी को पकड़ा दिये। इतनी मोटी रकम की फीस पंडित जी के बाप-दादों को भी नहीं मिली थी। साली है पत्नी के चाचा की लड़की और साला है पत्नी के मामा का पुत्र इसी से दोनों में आपसी काई रिश्ता नहीं है यह लीजिए वर राजा स्वयं ही पधार गये हैं।" इसी प्रकार श्मसान चम्पा का नौकर केशर सिंह का वार्तालाप इसी शैली का उदाहरण है। "और क्या! लाऊँ मेमसाहब? केसर की आँखों में नटखट वालक की सी चमक आ गई। भागकर वह एक वड़ा सा लिफाफा लाकर उसे थमा गया और घबड़ाकर चौके की ओर भागा, अरे, बाप रे वाप! दूध स्टोव पर धरकर ही भूल गया। साला केसरूआ। धत् तेरा नाश हो खसिया!" कहीं-कहीं संवादों के माध्यम से एक पात्र किसी दूसरे के गुण-अवगुणों की चर्चा करता है यहाँ माया और श्यामाचरण माधव बाबू के विवाह प्रस्ताव पर चर्चा करते समय कार्तिक की कुख्यात का उल्लेख इस प्रकार करते हैं। "जाने भी दो माया, तुम्हारे दिमाग में तो हमेशा ऐसे ही ऊट पटाँग वाते आती हैं। बाप का नाम पूछ लिया तो क्या वहू बना लेगें? मैं जो कह रही हूँ ठीक कह रही हूँ सुना है लड़का ठीक आदतों का नहीं है। पिछले साल जिस विधायक का कत्ल हुआ था। उसमें भी इसका हांथ था - मुझे नहीं चाहिए ऐसा खानदान-और ऐसी ऊँची हवेली। हमारा खण्डहर ही भला है।"

स्वगत कथन :

अभिनयात्मक शैली का यह दूसरा रूप है। स्वगत कथन में पात्र अपने ही विषय में कुछ कहता है। वे पात्र विशेष के निजी और समान्य व्यवहार में अप्रकट मनोभावों को पाठ्क या दर्शक तक पहुँचाते हैं। राबर्ट लक्ष्मी से विवाह कर उसके रूप आकर्षण से वचने के लिए भाग तो जाता है किन्तु वापस आकर अपनी मनोव्यथा इस प्रकार व्यक्त करता है - "आज तुमसे झूठ नहीं बोलूंगा लक्ष्मी, मैंने तुम्हे प्यार किया है। अपनी इस मूर्खता पूर्ण स्वीकृति के लिए मैं आज भी कोई कैफियत नहीं ढूँढ़ पा रहा हूँ। शायद, उसी क्षण मैं तुम्हे प्यार करने लगा था, जब तुम विभ्रान्त दृष्टि से क्रमशः निकट आती इंजन की सर्च लाइट को देखती निर्भीक खड़ी थी। तुम्हारे उस अद्भुत चेहरे को मैं कब्र में जाने तक नहीं भूल सकता। ओह माई गाड!" कस्तूरी मृग का नन्हे अपने पिता को वासना के गर्त में ढ़केलनी वाली वेश्या और उसकी पुत्री की दुर्दशा देख हतप्रभ रह गया। किन्तु मन में

गड़ी फाँस का कोई उपाय नहीं - वह कहता है -"मेरा प्रतिशोध तो स्वयं विधाता ले चुका है फिर भी मेरा चित्र इतना उद्ववेलित क्यों हैं? आठ दिन बाद मैं अपनी नौकरी पर लौट आऊँगा मेरे मातहत हांथ बाँधे पूर्ववत् मेरी तावेदारी में खड़े रहेंगे। पर कौन सी फाँस साल रही है मुझे? मैने प्रतिशोध की जो योजना बनाई थी उसने तो वह एक झटके में मुक्त हो जाती। किन्तु दयालु न्यायाधीश तो उसे पल-पल मृत्यु दंश दे रहा था। सहस्त्रो वर्ष पूर्व मिश्र की किसी कब्र से निकली ममी की सी देह जो प्राण रहते भी निष्प्राण बन चुकी थी। अंधी आँखों में तैरती अभिशप्त अतीत की दुर्वह स्मृतियाँ पक्षाघात से पंगु बन गयी देह-फिर वैश्या का आखण्ड अहिवात ही तो दे पायी है इकलौती पुत्री को" इस प्रकार शिवानी ने स्वगत कथन को आत्मालाभ शैली के रूप में भी प्रयुक्त किया है कैंजा में सुरेश भट्ट के स्वगत कथन के अन्तर्गत उसके गुण-दोषों का वर्णन शिवानी ने इस प्रकार किया है - पर कभी तुमने अपनी अर्न्तआत्मा से पुछा है नन्दी तिवारी कि क्या मेरे एक-एक पाप के पीछे स्वयं तुम खड़ी हो? तुम्हारे उस घमंडी पिता ने मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया होता तो मेरी यह दुर्दशा न होती। मैं मानता हूँ कि मैं शराबी हूँ, जुआरी हूँ और प्रेमोदधि में मैंने कई बार रस की डुबकियाँ भी लगाई है। कई बार तो मुझे ऐसा लगता है कि संसार भर की युवतियों के मोहक बाहुपाश लक्ष-लक्ष नारी अधर पुट भी मेरे नारी लोलुप हृदय के प्यास को नहीं बुझा सकते। आखिर क्यों ऐसा हुआ, क्यों? जानती हो क्यों? एक बार फिर वह दुःसाहसी दस्यु अपना क्रोध से तमतमाया विलासी चेहरा उसके एकदम निकट ले आया। भय से सहमी नन्दी ने फिर आँखे बन्द लीं। भागने की चेष्टा करने पर भी वह नहीं भाग सकी थी। लगता था किसी ने लोहे की मोटी जंजीर से उसके दोनों पैरों को जकड़ किसी मंत्रपूत कीलक से उसे गाड़ दिया है। इसलिए नन्दी तिवारी की जिस प्यास को आज सहस्त्र अधरों की नित्य नवीन सुधा से छलकते मधु पात्र भी नहीं बुझा सकते। चाहने पर बुझाने वाली कभी उसे एक ही घूँट से वुझा सकती थी। मोहपासाँ मैंने खूब पढ़ा है नन्दी जानती हो वह क्या कहता है, अब हँस कर उसने फिर नन्दी को वाँहों में घेर लिया। नारी और जल की तृषा जब कभी घातक रूप से तीव्र हो उठ्ती है तो उसे बुझाने के लिए मनुष्य जघन्य से जघन्य अपराध भी कर सकता है। तब क्या एक न्याय प्रिय न्यायाधीश का यह कर्तव्य नहीं है कि विवशता में किये गये अपराध के लिए अपराधी को क्षमा कर दे। जब प्यास वहुत गहरी हो उठ्ती है तो मनुष्य

अन्ध बन गंदी नाली के अंजलि भर उस पानी से अपनी प्यास बुझाने में भी नहीं हिचकता।

विवरणात्मक विधि :

डॉ0 प्रताप नारायण टंडन ने लिखा है "कि इस विधि के अनुसार उपन्यासकार अपनी कृति में नियोजित किसी पात्र का चरित्र-चित्रण करते समय उसके स्वभाव और विशेषताओं से सम्बन्धित विविध प्रकार के विवरण उपस्थित करता चला जाता है। इससे पात्र के व्यक्तित्व के सभी पक्ष उभर कर स्पष्ट हो जाते हैं। परन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोंण से इस शैली में कलात्मकता की सम्भावना बहुत कम रहती है।" शिवानी के उपन्यासों में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। "सर्वेश्वर सुदर्शन नहीं तो बदशक्ल भी नहीं था उसका चौरस काठी का शरीर खूब भरा-भरा था। अँगुलियाँ किसी कलाकार की ही नहीं थी किन्तु एक यथार्थवादी स्थिर चित्त पुरूष की थीं। पंजे की पकड़ एक बार मन चाही वस्तु को पाकर सहज में छोड़ने वाली वस्तु नहीं थी। आँखे छोटी पर बुद्धि की चमक से जुगनू सी चमकती रहती थीं। माथा चौड़ा था पर बालों के एक ऐसे प्राकृतिक व्यूह से घिरा था कि देखने में उतना प्रभावशाली नहीं लग पाता था। नाक तीखी और सुडौल थी पर ओंठ इतने पतले थे कि उसकी सामान्य सी स्मित रेखा भी उनका अस्तित्व ही विलीन कर देती थी। उसका काश्मीरियों सा शुर्क था और दाँत मोती से उजले थे जिन्हें वह जानबूझकर ही बार-बार निरर्थक हँसी के दर्पण में झलकाता रहता था।" इसी प्रकार सुरंगमा में दिनकर अपने बाल्यकाल की घटनाओं का वर्णन करता है। राम लीला में लक्ष्मण बनता दिनकर परशुराम रूपी भट्ट जी का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत करता है - "गाकर उसने एक दिन अपनी तर्जनी सचमुच ही उनकी आँखों में कोंच दूसरे हाँथ से उनकी धोती का कोंचा सरका दिया। टूटी दीवार सी ही ढ़ीली धोती भरभराकर स्टेज पर गिर पड़ी। अद्भुत सज्जा, क्रुद्ध उन्मत्त दृष्टि और लाल तमतमाया चेहरा होने पर भी परशुराम की स्थिति हास्यास्पद हो उठी थी। फुर्ती से पैतरा वदल वह छिटक न जाता तो शायद वह सनकी परशुराम असली फरसे का कौशल दिखा ही वैठता। दर्शक उसके इस नवीन मौलिक अभिनय पुट से पुलकित हो हँस-हँस कर धरा पर लोट रहे थे कि वह घर भाग गया। काखी ने उसे बेहद लताड़ा था, छोकरे तेरी क्या मौत आयी थी? भट्ट जी

को कौन नहीं जानता? इस गुस्सेबाज छछूँदर ने अपनी पत्नी को पहाड़ से धक्का देकर नीचे गिरा दिया और फिर कह दिया कि भैंस चराने गयी थी। गिरकर मर गई और उस गऊ सी सीधी भट्याणी का अपराध केवल इतना ही था कि अपने इस परशुराम से बिना पूछे बीमार माँ को देखने मायके चली गयी थी।

मनोविश्लेषणात्मक शैली :

आधुनिक युग में उपन्यास के अन्तर्गत नियोजित पात्रों के चरित्र चित्रण की विविध विधियों में मनोविश्लेषणात्मक विधि को सर्वप्रमुख कहा जा सकता है। इसके माध्यम से पात्रों की न केवल चारित्रिक विवृत्ति हो जाती है वरन् उनके मानस में एक-एक वस्तु का सन्यक विश्लेषण भी सम्भव हो पाता है। डॉ0 प्रताप नारायण टंडन का अभिमत है ''इस शैली के अन्तर्गत कथानक का सूत्र मूलतः पात्रों के विविध मनः स्थितियों के द्वारा निर्देशित होता है चरित्र चित्रण की दृष्टि से मनोविश्लेषणात्मक शैली रचनात्मक तथा क्रियाशील होती है। पहले कहा जा चुका है कि फ्रायड ने मन के मूल प्रवृत्तियों के पीछे काम भावना को पाया है। इड, इगो, सुपर इगो, लिबडो आदि ग्रन्थियों तथा अचेतन मन में प्रयुक्त अवदमित कामवासनाएँ विभिन्न रूपों में प्रस्फुटित होती हैं। इन्हें ही मनोविज्ञान की विविध प्रणाली द्वारा व्यक्त किया जाता है।

1. स्वप्न संघनन :-

फ्रायड ने कहा है कि ''प्रत्येक स्वप्न का एक अर्थ होता है उनका विश्वास है हमारे अचेतन संघर्ष के कारण जो जागृत अवस्था में चेतन मन में नहीं व्यक्त हो पाते वहुधा हमारे स्वप्न में अभिव्यक्ति पा जाते हैं। शिवानी उल्लिखित पाथेय उपन्यास में तिलोत्तमा के श्वसुर की काम ग्रन्थि का वास्तविक चित्रांकन हुआ है। काम की भयावहता में श्वसुर सामाजिक सम्वन्धों की तिलांजलि देकर अपने वंशधर की प्राप्ति हेतु सामाजिक सम्बन्धों की मर्यादा भूल जाता है। घोर अंधकार में वह अपनी बहू से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर उससे वंशधर की आस लगाता है। तिलोत्तमा अपने पति के मृत्यु के पश्चात् भी अक्षत् यौवना थी। रात्रि में स्वप्न देखती है कि उसका पति उसके पास आ गया है कि अचानक अपने छाती पर किसी के भार का अनुभव किया शिवानी ने लिखा है -''मैने डरकर उठने की चेष्टा की शायद चीखने ही जा रही थी कि किसी के वलिष्ठ पंजे ने मेरा

मुँह दाब दिया। अपनी दुर्बल देह की पूरी शक्ति लगाकर उस क्रमशः गुरुतर हो रहे भार को धक्का दिया और अपने ओंठो पर धरे पंजे पर जोर से दाँत गड़ा दिये। मेरे सामने मेरे श्वसुर खड़े हाँफ रहे थे। उनकी दोनों मदमत्त कामातुर आँखों से निकलती वासना की लपटें मुझे लीलने को बढ़ी आ रही थीं। इतना नीच, इतना जघन्य, ऐसा पशु हो सकता है मानव।"

इसी प्रकार सुरंगमा में दिनकर के जीवन में पार्वती प्रसंग उस समय आया जब उसकी ख्याति चरम सीमा पर थी और वह चेतन अचेतन में संतुलन नहीं रख पाया। फ्रायड कहता भी यही है कि सुप्ताअवस्था में अपूर्ण अतृप्त कामनाएँ, आकाँक्षाएं या वासनाएं नाना रूप आकार ग्रहण कर प्रगट होती है। दिनकर के समझाने पर कि यदि अगर पत्नी के अधिकारों को माँगने के लिए उसकी पूर्व विवाहिता परू यदि दिनकर का पहुँचा पकड़ने की कोशिश करेगी तो उसके सचिव दीक्षित को जड़ सहित रोगी को नष्ट करने में विलम्ब नहीं लगता। परिणाम स्वरूप यह परू मर गई इस सूचना को सुनकर दिनकर का अन्तर्मन व्यथित होता है क्योंकि स्वप्न में बार-बार परू जागृत अवस्था में देखी गई भिखारिणी के रूप में दिनकर के अन्तर्मन को व्यथित करने लगी। शिवानी ने स्वप्न के माध्यम से दिनकर के व्यक्तित्व, आन्तरिक मनोभाव और आकाँक्षाओं का निरूपण इस शैली से किया है - "दिनकर अब निश्चिन्त होकर मूँछो में ताव दे अपना राज-पाट सम्भाल सकता था, किन्तु ऐसा वह नहीं कर पाया। कभी-कभी किसी राजसी सहभोज के पश्चात् वह तकिये पर सर रखते ही गहरी नींद में डूब जाता किन्तु आधी रात को उसके काँटे भरे ताज की चुभन किसी दुःस्वप्न के बीच उसे झकझोर कर जगा देती। उस दुःस्वप्न की मुख्य भूमिका में परू ही सदैव अवतरित होती थी। हांथ में बीड़ी लिए उस पगली भिखारिणी की भाँति वह अपने छोटे-छोटे केश दग्ध करती मुस्कराकर टोपी को भी जली बीड़ी से दाग नन्हे-नन्हें सुरागों से भर देती। क्यों अव तो तुम सुख से हो ना? पर तुमने ठीक नहीं किया जानते हो मेरी चाय में घोले गये उस विष ने मेरे कलेजे में कैसी आग फूँकी थी ठी वैसे ही एक दिन तेरा कलेजा भी फुकेगा हत्यारे। वैसी ही ज्वाला से तू इधर-उधर जलता भागेगा और जीवन भर तेरे ही हृदय की लपटे तुझे झुलसाती रहेंगी। कोमल दग्ध धवल शैय्या पर बैठे-बैठे ही दिनकर सारी रात काट देता था। नहीं-नहीं मैंने यह सब करने को तो दीक्षित से नहीं कहा था। मैं निर्दोष हूँ ग्वाल देव मैं निर्दोष

कहता वह कभी उत्तेजित हो अकेले कमरे में ही खड़ा-खड़ा ऐसे बड़बड़ाने लगता जैसे वे चित्तै के ग्वालदेव की मूर्ति समझ खड़ा हो।" इसी प्रकार का एक उदाहरण और दृष्टव्य है तब ही दिनकर की उल्लसित दृष्टि भीड़ पर छिपी सुरंगमा पर पड़ी हृदय की वह सुलगती दावाग्नि जिसे वह अपने विवेक से कुचल अपने जानते बुझा चुका था। सहसा फिर सहस्त्र लपटों में प्रज्जवलित हो उठी चारों ओर उसे अपने हृदय की वही उद्दाम लपटे दिखने लगीं। एक क्षण को उस दाह से विचलित हो असमर्थता के वशीभूत दिनकर उस चेहरे से दृष्टि फेरने के उपक्रम में हारकर रह गया। वर्षास्नात् उस आद्रकरूण चेहरे के चुम्वनों की स्मृति उसे पागल बना गयी। बुरूश की छाया में प्रस्तर खण्ड पर बैठी उस प्रेयसी के कपोल, ललाट, अधरों का स्वाद उसे फिर उसी अविवेकी की ओर अब वह एक क्षण भी वहाँ रूका तो उसका अगाध चित्त न जाने क्या अनर्थ कर बैठेगा। वह जिस आँधी के वेग से आया था उसी वेग से पूरे सामियाने को झकझोरता बाहर निकल गया।"

विस्थापन :-

जब वाह्य परिस्थित और मनोभावों में विरोधाभास होता है और मन वाह्य परिस्थिति से विद्रोह कर अपने मूल भाव की ओर लौटता है तब उसकी अनुभूतियाँ और संवेदनाएँ उस व्यक्ति से हटकर किसी अन्य व्यक्ति से सम्बद्ध हो जाएँ यही विस्थापन कहलाता है।" कृष्णकली में उपन्यास नायिका कली के मारक अपरूप सौन्दर्य मे उसे उसकी माकान मालिक का पुत्र प्रवीर गहरे अंन्तस से प्रभावित होता है किन्तु अपने व्यवहारिक जीवन में प्रवीर रूक्ष, गम्भीर और नीरस व्यक्ति था। अतः जब-जब वह अपनी होने वाली पत्नी के रूप, गुण या सौन्दर्य की प्रंशसा करता है तो पत्नी के स्थान पर दुःसाहसी कली का चित्र उसके मन में अंकित हो जाता है। शिवानी ने लिखा है - "वाह! बड़ा सुन्दर रंग है और आपको सूट भी करता है प्रवीर ने चित्र में उमड़ी लाल साड़ी का आँचल फहराती दुःसाहसी किशोरी की मूर्ति को भगाने के लिए ही शायद सम्मुख बैठी कुन्नी की प्रशंसा का पहला पुष्प निवेदन किया।" यहाँ हृदयस्थ दमित सौन्दर्य आकर्षण को विस्मृत करने के लिए प्रवीर अपनी भावी पत्नी के रूप की प्रशंसा करता है।

दमन :-

पात्रावधारणा एवं चरित्र के सम्बन्ध में प्रथम अध्याय में कहा गया है कि अचेतन मन में पड़ी हुई कामनाएँ समय पाकर व्यक्ति के चेतन मन को उद्विग्न करती हैं। ऐसे

चरित्र से मेल न खाने वाली कामनाओं को दबाने के लिए व्यक्ति या तो उदात्तीकरण कर कामनाओं के आत्म बल से सामाजिक विहित सम्बन्ध जोड़ लेता है या फिर समय या विवेक के कारण अपनी कामनाओं को दबाने का प्रयास करतमा है। मनोविश्लेषक इस प्रकार की दमित वासनाओं का पता कर व्यक्ति की समस्या को दूर कर देते हैं जबकि साहित्यकार पात्रस्थ वासनाओं को किसी न किसी माध्यम से वर्णित करता है। इसका उदाहरण सुरंगमा में द्रष्टव्य है "क्यों आ गया वह मूर्ख लौटकर जिस कठोर साधना से वह निर्लिप्त फकीर बनकर दूसरी ही पगडंडी पकड़ बड़ी दूर निकल गया था। वहाँ से क्यों फिर इस परिचित पथ को ढूँढ़ स्वयं दुर्भाग्य का वरण करने लौट आया। जिस अविवेकी चित्त को उसने पालतू पशु सा बनाकर संयम की श्रृंखला से बाँध रख दिया था वह लक्ष्मी को देखते ही फिर क्यों विद्रोही बना बन्धन तोड़ने को झटपटाने लगा था। पाँच वर्षों की अनुच्चारित व्यथा सहसा किस यंत्रणा के आवेग से उसका हृदय मथने लगी थी। इस अज्ञात भय ने तो उसे अब तक ऐसा नहीं सहमाया था! अपने ही हृदय का निःशब्द अर्न्तनाद उसे झकझोर गया था।"

निराधार प्रत्यक्षीकरण परख शैली – (हेल्युसिनेशन एनालिसिस)

हेल्युसिनेशन में व्यक्ति उद्दीपन की अनुपस्थिति में भी उसे प्रत्यक्ष देख लेता है। स्वप्न की भाँति यह भी निरीमात्र मनोरचना होती है। होती यह भ्रान्ति ही है किन्तु गहरे अचेतन मन में जमी वस्तु या व्यक्ति उसे किसी न किसी प्रकार प्रत्यक्ष कर देता है। कैंजा में नन्दी तिवारी से गहरी आशक्ति रखने वाला सुरेश भट्ट नन्दी के चले जाने पर गम्भीर रूप से व्यथित हो जाता है उसके मन की लालसा निराशा में परिवर्तित होने लगती है और वह रोग ग्रस्त जो जाता है। मरते समय जब उसकी ताई उसके कान में ईश्वर क ा नाम सुनाने पहुँचती है तो पता लगता है कि वह राम नाम की जगह किसी स्वर्ग की अप्सरा को याद कर रहा है। शिवानी ने लिखा है –"ताई ने झुककर बड़बड़ा रहे होंठो से कान सटा लिये नाश हो उस सुरग की अपसरा का कह रहा है बेटी, न जाने किस सुरग की अपसरा को कोस रहा है हरामी।" पाठ्क जानते हैं कि यह मुमूर्ष सुरेश भट्ट कभी युवावस्था में नन्दी तिवारी को देख कहा करता था कि 'नाश हो उस स्वर्ग की अप्सरा का' जिसका प्रत्यक्षीकर वह मुमूर्ष अवस्था में कर रहा है।

पत्थरात्मक शैली :

इस शैली के अन्तर्गत पात्र हृदयस्थ मनोभावों को दूसरे तक सम्प्रेषित करता है। कभी-कभी पात्र का व्यक्तित्व आदरास्पद हो जाता है। ऐसी अवस्था में जाने अनजाने कर्मों को बोझ को हल्का करने के लिए वह पत्र लिखता है। यह शैली कुछ नाट्कीय और कुछ घट्नाओं के पूर्वदीप्ति (फ्लैशबैक) शैली में वर्णन करता है। किशुनली उपन्यास का हरदत्त शास्त्री कक्का प्रतिष्ठित उपन्यास, पुरोहित थे। उनके गम्भीर किन्तु सुदर्शन व्यक्तित्व से कामोन्मादिनी किशनुली अचानक रात्रि में उनके पलग पर चढ़ आती और उनके मन में काम विकार उत्पन्न करती। किशुनली की अवैध सन्तान कर्ण के पिता यही कक्का जी थे। अपनी इस कुकर्म की स्वीकृति इन्होंने लेखिका से की है। ''उसके (अपनी पत्नी) पैरों पर सिर रखकर स्वयं कहना चाहता था। कैसे कहूँ उससे कह देना किसनी का डाँट, डाँट नहीं है तेरी काखी का यह अधम पति ही उसका जनक है। दोष केवल मुझ दुरात्मा का ही नहीं थी। उत्कट, उन्माद के क्षणों में ही अभागिनी किशुनली मेनका सी ही साक्षात् रति रूप में आकर मुझे विवेक भ्रष्ट कर गयी थी। मेरे जी में आता उस भोले बच्चे को छाती से लगाकर चीख-चीख कर कहूँ हाँ हाँ बेटा मैं ही तेरा बाप हूँ। पर ऐसा बाप, ऐसा अभागा बाप जो कभी बेटे को बेटा नहीं कह सकता। पुत्र के रहते आज तर्पण पिण्ड की अतृप्त लालस लिए ही जा रहा हूँ। यही क्या किसी ब्राम्हण के लिए कुछ कम दण्ड है। किन्तु उस सती लक्ष्मी ने हृदय से क्षमा नहीं किया तो मेरी प्रेत मुक्ति नहीं होगी।'' इसी प्रकार 'स्वयंसिद्धा' में नायिका माधवी का पिता पत्र लिखकर अपने कर्तव्य को पूरा करता है ''माधव, तुमसे कुछ कहने का अब अधिकार नहीं रहा फिर भी कर्तव्यवश आज तुम्हे लिखना जरूरी हो गया है। मैने तुम्हारा कन्यादान किया था। तुम्हारे इस श्लोक की आवृत्ति का साक्षी मैं भी हूँ ''आरते आर्ता भविष्याम सुख दुःखानुगामिनी आज कौस्तुभ मृज्यु शैय्या पर है इसी से तुम्हारे कर्तव्य से अवगत कराना अपना कर्तव्य समझता हूँ।'' इसी तरह कैंजा में सुरेश भट्ट के कक्का ने नन्दी को सुरेश भट्ट की गतिविधियों का इस प्रकार वर्णन किया है – बड़ी दुर्दशा है उसकी न जाने किस असाध्य व्याधि को लेकर लौटा पर पी पिलाकर चौपट कर दिये गये यकृत की यंत्रणा उसे अस्वभाविक रूप से शान्त बना गयी है। बड़ी चेष्टा से लाठी टेककर थोड़ा बहुत टहल आता है। मैने उसे सबकुछ बता दिया है। तेरा पता माँग रहा था मैने नहीं दिया क्या करूँ सगा भतीजा है एक मात्र वंशधर?

इसी से उसके पास रहने चला आया हूँ। कोई और होता तो शायद मैं थूकता भी नहीं। मुझें तो पता है कैसे इसने मुझे घर से बाहर कर दिया था। चिन्ता एक ही है बेटी अगर मुझे कुछ हो गया तो इसे कोई पानी देने वाला भी न रहेगा।''
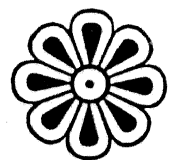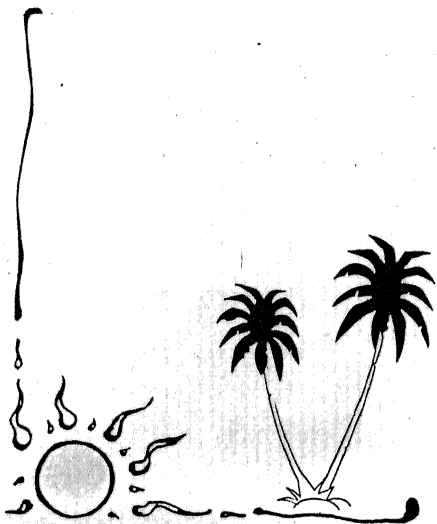
सहायक ग्रन्थ-सूची

1. शिवानी के आलोच्य उपन्यास :

1.चौदह फेरे, 2. सुरंगमा, 3. कृष्णवेणी, 4. कालिन्दी, 5. मायापुरी, 6. रति विलाप, 7. विष कन्या, 8. कैंजा, 9. भैरवी, 10. कृष्णकली 11. चल खुसरों घर आपने 12. गैंडा, 13. मणिक, 14. अतिथि 15. कस्तूरीमृग, 16. उपप्रेती 17. श्मशान चम्पा 18. मेरा भाई, 19. रथ्या 20. सुरंगमा 21. अभिनय (रति विलाप में संग्रहीत) 22. स्वयंसिद्धा।

सहायक ग्रन्थ

1.	हिन्दी उपन्यास शिल्प विध	-	डॉ0 शान्ति मलिक
2.	हिन्दी उपन्यासा	-	डॉ0 शिवनारायण श्रीवास्तव
3.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	-	आचार्य राम चन्द्र शुक्ल
4.	हिन्दी साहित्य का इतिहास	-	डॉ0 नगेन्द्र
5.	मनोविज्ञान विश्लेषण	-	फ्रायड
6.	हिन्दी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	-	डॉ0 देवराज
7.	पात्र प्रतिमान	-	डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी
8.	हिन्दी उपन्यासों में चरित्र-चित्रण का विकास	-	डॉ0 रणवीर रांग्रा
9.	हिन्दी साहित्य	-	सम्पदक धीरेन्द्र वर्मा
10.	हिन्दी का गद्य साहित्य	-	डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
11.	हिन्दी उपन्यास कला	-	प्रताप नारायण टंडन
12.	हिन्दी नाटक में पात्र कल्पना और चरित्र चित्रण	-	डॉ0 सूरजकान्त शर्मा
13.	पात्रावतरण की अवधारणा	-	डॉ0 रामशंकर त्रिपाठी
14.	मानक हिन्दी कोश	-	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
15.	हिन्दी उपन्यासों में नायक	-	डॉ0 कुसुम वार्ष्णेय
16.	आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान	-	डॉ0 देवराज उपाध्याय

17. कुछ विचार - मुंशी प्रेमचन्द्र
18. साहित्य का श्रेय और प्रेय - जैनेन्द्र
19. साहित्यालोचन - श्याम सुन्दर दास
20. साहित्य सिद्धान्त - डी0एस0पालीवाल
21. मनोविज्ञान - डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे
22. मनोविश्लेषण और मानसिक क्रियाएँ - डॉ0 पद्मा अग्रवाल
23. शील निरूपण सिद्धान्त और विनियोग - डॉ0 जगदीश पाण्डेय
24. काव्य प्रकाश - मम्मट
25. साहित्य दर्पण - आचार्य विश्वनाथ
26. दशरूपक - धनंजय
27. अरस्तू का काव्यशास्त्र - डॉ0 नगेन्द्र
28. ए स्टडी ऑफ सोल्फो क्लीन ड्रामा - जी0एम0किर्कवुड
29. अरिस्टार्टल थ्योरी एण्ड फाइन आर्ट - एस0बी0बूचर
30. इन्ट्रोडक्टरी लेक्चर्स आन साइको एनालिसिस - डॉ0 फ्रायड
31. इनसाइक्लोपीडिया - कूलियर्स
32. द थ्योरी ऑफ ड्रामा - ए निकोल
33. ए स्वेट ऑफ नावेल - ई0एम0फास्टर